

स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ

(प्रथम खण्ड)

समिति का अर्द्ध-शताब्दी इतिहास एवं परिचय

लग्गक

डा० कुञ्जविहारा लाल गुप्त

एम० ए० (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान) पी-एच० डी

समसामान्य-यातिगमय



श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

स्थापित १८१७ ई०

प्रकाशक

मदनलाल बजाज, प्रधान मंत्री

हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

संवत् २०१७

आभार प्रदर्शन

आज स्वर्ण जयंती के उम मुअवमर पर समिति के गत ५० वर्षों के इतिहास का सिद्दाबलाकन करने में विशेष प्रकार का आनन्द तथा गौरव का अनुभव हो रहा है। अपने स्वल्प मावना में अनन्त कठिनाइयों का सामना करते हुए भी समिति ने जो अपना वर्तमान रूप ग्रहण किया है, वह आज आपके सम्मुख है। प्रारम्भ काल से ही हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रचार एवं प्रसार का कार्य ही समिति का मुख्य ध्येय रहा है और इस कार्य में समिति ने सफलता भी प्राप्त की है। यह ग्रन्थ भी इसी ध्येय की पूर्ति की एक कड़ी है। समिति के पिछले एवं वर्तमान साहित्य सविद्या के प्रति जिनके अहर्निश परिश्रम एवं लगन ने फलस्वरूप समिति आज इस स्वरूप का प्राप्त कर सकी है आभार प्रदर्शन करते हुए मुझे परम हृय हो रहा है।

इस ग्रन्थ के लेखन में समिति के अध्यक्ष डा० कुजविहारी लाल गुप्त, एम० ए० (हिन्दा एवं राजनीति विज्ञान), पी०एच० डी० न जा अथक परिश्रम किया है उनका मैं परम आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ के प्रकाशन एवं अंतिम रूप देने में श्री राम दत्तजी गर्मा एम० ए०, बी० एड० साहित्यरत्न गाम्थी, भूतपूर्व प्रधान मंत्री एवं वर्तमान केंद्र व्यवस्थापक न जा भूतवान योग देकर इस कार्य का सफल बनाया है, उसके लिए भी मैं उनका अत्यन्त वृत्त हूँ।

मैं अथक समस्त सहयोगियों एवं कार्यकर्त्ताओं का भी मैं आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन में यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। इस महज एवं सामयिक महायत्ना के लिये समिति उनका मदक ऋणी रहगी।

श्री विन्दा साहित्य समिति,

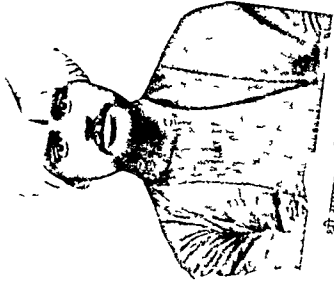
भरनपुर

१० फरवरी १९६१

मदनलाल बजाज

प्रधान मंत्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के जन्मदाता
समिति के सस्थापक (सन् १९१२)



श्री गगाप्रसाद जी शास्त्री



श्री अधिवारी जगताथ दास जी विद्यारत्न (राज्यगुरु)

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
१ वक्तव्य	१
२ स्थापना	३
३ नाम उद्देश्य और अधिकार	७
४ मगठन	१०
५ पुस्तकालय	११
६ समिति भवन (प्राचीन)	१६
७ नवीन भवन	१६
८ हिन्दी प्रचार और जन सेवा अधिवेशन	२२
पराधा	२२
प्रौढ शिक्षा	२६
नागरी पाठशाळा	२७
कवि-गोष्ठी	२६
नाट्य-समिति	२६
राज्य-स्तर पर हिन्दी की प्रगति के लिए प्रयास	३०
समाज-सेवा	३३

परिगणित-क्रम

परिगणित १—वापिस सप्तस्य-संख्या-सूचक	३६
परिगणित २—आजीवन सदस्य-सूची	३७
परिगणित ३—संरक्षक-सूची	३७
परिगणित ४—विषयानुसार पुस्तक-संख्या	३८
परिगणित ५—पाठक विवरण	३८
परिगणित ६—भवन निर्माण के लिए ज्ञान देने वाला का सूची	३८
परिगणित ७—समिति के पदाधिकारी (१९१२ से १९६१ तक)	४२
परिगणित ८ (अ)—विवरण पुस्तक आगमन प्रदान (१८४२-६०)	४७
परिगणित ८ (ब)—सूची दानदाता-नवीन भवन निर्माण (१९५७-५८)	५८
परिगणित ९—समिति का ५० वर्षीय आय-व्यय-सूचक	५
परिगणित १०—परीक्षार्थी विवरण	५२
परिगणित ११—वर्तमान विविध यंत्रिया की सम्मनिया	५२
परिगणित १२—स्वर्ण जयन्ता महोत्सव	५५

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

संस्थापक

- १—श्री अधिकारी जगन्नाथनाथ जी विद्यार्त्त
- श्री प० गंगाप्रसादजा शास्त्री
- २—श्री डा० आचारमिह प्रसार एल एम एम (महोक्ल आहीसर)
- ६—श्री प० नारायणनाथ मुपरिष्कार पी डब्ल्यू डी

संरक्षक

- १—श्री महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा नवरत्न राजगुरु, मालरापाटन
- २—श्री मठ मन्तापीलान महोपाध्याय वाते
- ३—श्री मठ हरिचरणलाल नई मण्डी
- ४—श्री मठ जगन्नाथप्रसाद शीपक गुरु नानक आइरन स्पाल क० भरतपुर

वर्तमान पदाधिकारी

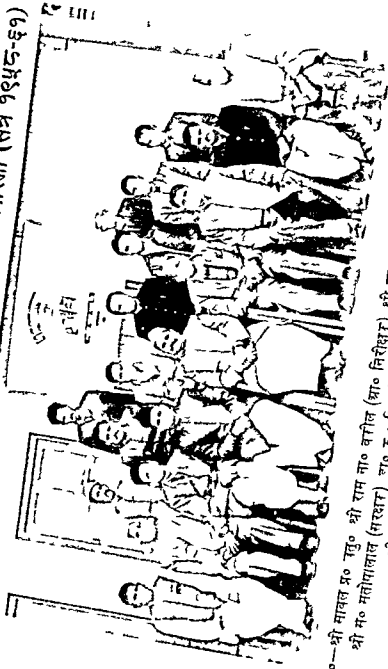
- १—डा० कुजबिहारनाथ गुप्ता एम ए (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान)
पी एच डी अध्यक्ष
- २—श्री माताजीलाल जी अग्रवाल (उपाध्यक्ष)
- ३—श्री मन्तलाल जा बजाज (प्रधान मंत्री)
- ४—श्री आनंदप्रकाश जा दुब (उप-मन्त्री)
- ५—श्री रामचन्द्र जी शर्मा एम ए बी एड साहित्यरत्न (केंद्र
व्यवस्थापक)
—श्री प्रभुचान जा दयालु साहित्यरत्न (पुस्तकालयध्यक्ष)
—श्री भगवाननाथ जी शर्मा (काषाध्यक्ष)
- ६—श्री रामनारायण जा वकील बा ए एन-एन बी (आय-व्यय
निराक)

सदस्य वर्तमान काषकारिणा (१९५८ से १९६१)

- (१) डा कुजबिहारनाथ गुप्ता
- (२) श्री माताजीलाल जी अग्रवाल
- (३) श्री मन्तलाल जी बजाज
- (४) श्री आनंदप्रकाश जी दुब
- (५) श्री रामचन्द्र जी शर्मा
- (६) श्री प्रभुचानजी शर्मा

- (७) श्री भगवान्महादेव श्री गणेशाय नमः ।
 (८) श्री गणेशाय नमः ।
 (९) श्री गणेशाय नमः ।
 (१०) श्री गणेशाय नमः ।
 (११) श्री गणेशाय नमः ।
 (१२) श्री गणेशाय नमः ।
 (१३) श्री गणेशाय नमः ।
 (१४) श्री गणेशाय नमः ।
 (१५) श्री गणेशाय नमः ।
 (१६) श्री गणेशाय नमः ।
 (१७) श्री गणेशाय नमः ।
 (१८) श्री गणेशाय नमः ।
 (१९) श्री गणेशाय नमः ।
 (२०) श्री गणेशाय नमः ।
 (२१) श्री गणेशाय नमः ।

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की कार्य-कारिणी (सत्र १९५८-६१)



- प्र० प०—श्री मावल प्र० तनु० श्री राम ना० वगील (आ० निरीक्षण) श्री नरपत नाल शर्मा श्री मदनलाल वजाज (प्र म)
 श्री म० मतोपालाल (मर्यादा) ल० कु० विहारीलाल गुप्त (अध्यक्ष) श्री माती नान शरोडा (उपाध्यक्ष)
 श्री भगवानदास गोडा (कोषाध्यक्ष) श्री प्रभूदयाल (पुस्तकालयाध्यक्ष)
 श्री प्रभूदान (ला० वक्त०) श्री रामान्त गर्मा (नेत्र व्यवस्थापक) श्री गिरीज प्रसाद म० व० रामनरग शास्त्री
 श्री ग्रामप्रसाद इ० (उप मंत्री) श्री गणेशलाल गर्मा श्री प्र० प्रसाद मा० ★ वृ० प० श्री मोहर सिंह श्री नानग राम

वक्तव्य

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ (प्रथम खण्ड) आपक सम्मुख है। समिति की कार्यकारिणी के नियमानुसार बहुत कुछ प्रयत्न करते हुए भी सम्पूर्ण ग्रन्थ एक बार मुद्रित न हाकर दो खण्डों में विभाजित करना पडा इसके लिये क्षमा-याचना करता हूँ। जिस समय इस ग्रन्थ के लेखन तथा प्रकाशन की याचना बनाई गई थी उस समय मैं उन कठिनाइया की कल्पना भी न की थी जा लेखन-कार्य प्रारम्भ करने के बाद मामन आई। मोचा यह था कि दो तीन माम म ही यह ग्रन्थ प्रकाशित हो जायेगा किन्तु पीछे जात हुआ कि स्वर्ण जयन्ती महात्मव क अति व्यस्त कार्यक्रम क साथ-नाय लगभग ५०० पृष्ठों का ग्रन्थ लिखकर प्रकाशित करना मरल काय नही है। पाठका का यह जानकर सन्तोष होगा कि सम्पूर्ण ग्रन्थ को पाडुलिपि ता बनकर तैयार हो चुकी है किन्तु ममयाभाव के कारण मुद्रित न हा सकी है। इस समय कवल प्रथम खण्ड प्रकाशित हो सका है। ग्रन्थ का विभाजन निम्न प्रकार दो खण्डो म किया गया है —

(१) प्रथम खण्ड में समिति के विगत लगभग ५० वर्षों का सिंहावलोकन है।

(२) दूसरे खण्ड में भरतपुर क विगत २५० वर्षों में हान वाले कविया का संक्षिप्त जीवनवृत्त है।

इस ग्रन्थ का लिखते समय मेरे सामन प्रमुखत दो उद्देश्य थे —

एक तो यह कि ग्रन्थ म हिन्दी साहित्य समिति के विगत जीवन का विस्तृत सर्वेक्षण किया जाये जिसस यहाँ के नागरिका का समिति के संस्थापका कर्णाधारा एवम् उत्साही कायकर्ताओं क साहित्यानुराग स समिति की सेवा करने की प्रेरणा मिले।

स्थापना

भरतपुर व्रजभाषा का प्रमुख गढ़ है। यह स्थापन-काल में ही व्रजभाषा के उच्चवाटिका के कवियों का निवास-स्थान रहा है। महाकवि सामनाथ और सूदन आदि ने अपनी काव्य प्रतिभा में इस क्षेत्र की श्रुति का भारत के कोने-बाने तक पहुँचा दिया था। अनक महाकवियों के आश्रयदाता भरतपुर के नरेशों ने व्रजभाषा के प्रचार और प्रसार में मदद में योग दिया पर काल की गति का राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव भाषा पर भी पड़े बिना न रहा। मुगल और अंग्रेजों से टक्कर लेने वाले फारसी उर्दू और अंग्रेजी में अप्रभावित न रह सक। शासन पर इन दोनों भाषाओं का क्रमशः दबदबा रहने की वजह से नौकरी की भूमी जनता अपनी मातृभाषा के महत्त्व का भूल सी गई। ऐसा समय आया जब व्रजभाषा (हिन्दी) का प्रभाव केवल घरों के चारदीवारा तक ही सीमित रह गया किन्तु इस स्थिति का जनमानस ने स्वीकार नहीं किया। समय ने करवट बदली। हिन्दी के हितपी मातृभाषा की हीनावस्था में तिनमिला उठे। २०वीं शताब्दी के आरम्भ काल में उत्तर भारत के नगर-नगर में हिन्दी के प्रति स्नेह और आस्था उत्पन्न करने के लिये सभा और समितियाँ की स्थापना होने लगी। राष्ट्रभाषा प्रेम की इस लहर में भरतपुर के नागरिकों का मानस भी प्रभावित हुआ। मातृभाषा के कुछ उत्साही नागरिकों ने समाचार पत्र और पुस्तक पठन पाठन के कार्यक्रम का जारा करने की चेष्टाएँ आरम्भ कीं। पहिले रामचन्द्र और मुंगी जानकीप्रबन्धन एक स्थान पर समाचार पत्रों और पुस्तकों के पठन की व्यवस्था की। कहा जाता है कि वह प्रयास अपनी तरह का अनूठा था। नये ज्ञान में वायचनन भी लगा परन्तु कुछ कारणों से वह अकाल मृत्यु का प्राप्त ही अपने अस्तित्व की ही गयी उठा। पर जागा जनमानस आमानी ने

स्थापना

भरतपुर ब्रजभाषा का प्रमुख गढ़ है। यह स्थापन-काल में ही ब्रजभाषा के उच्चकाटि के कवियों का निवास-स्थान रहा है। महाकवि सामनाथ और सूदन आदि ने अपनी काव्य प्रतिभा से इस क्षेत्र की ख्याति का भारत के काने काने तक पहुँचा दिया था। अनवरत महाकवियों के आश्रयदाता भरतपुर के नरणा ने ब्रजभाषा के प्रचार और प्रसार में मदद से योग दिया पर काल की गति का राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव भाषा पर भी पड़े बिना न रहा। मुगल और अंग्रेजों ने टक्कर लेने वाले फारसी उर्दू और अंग्रेजी में अप्रभावित न रह सके। सामन पर इन दोनों भाषाओं का क्रमशः दबदबा रहने की वजह से नाकरी की भूखी जनता अपनी मातृभाषा के महत्व का भूल सी गई। ऐसा समय भी आया जब ब्रजभाषा (हिन्दी) का प्रभाव कवन घरा की चारदीवारा तक ही सीमित रह गया किन्तु इस स्थिति का जन मानस ने स्वाकार नहीं किया। समय ने करवट बदली। हिन्दी के हिन्दी मातृभाषा की हीनावस्था में तिनमिला उठ। २०वीं शताब्दी के आरम्भ काल में उत्तर भारत के नगर नगर में हिन्दी के प्रति स्नेह और आदर उत्पन्न करने के लिये सभा और समितियों की स्थापना होने लगी। राष्ट्रभाषा प्रेम की इस लहर में भरतपुर के नागरिकों का मानस भी प्रभावित हुआ। मातृभाषा के कुछ उत्साही नागरिकों ने सभाचार पत्र और पुस्तक पठन पाठन के कार्यक्रम का जारो करने की चेष्टाएँ आरम्भ कीं। पंडित गणेशचंद्र और मुनी जानकीवल्लभ ने एक स्थान पर सभाचार पत्र और पुस्तक के पठन की व्यवस्था की। कहा जाता है कि वह प्रयास अपनी तरह का अनूठा था। नये ज्ञान में काम चलायें भाषा परन्तु कुछ कारणों से वह अकाल मृत्यु का प्राप्त हो अपने अस्तित्व का ही रस बठा। पर जागा जन मानस सामान्य में

दूमरा यह कि हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के विगत २५० वर्षों में ज्ञान वाले सभी कवियों एवं साहित्यिका का संक्षिप्त जीवन वृत्त प्रकाशित कर उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें, जिन्होंने अपना समस्त जीवन हिन्दी में ज्ञानवद्धक वाङ्मय की सृष्टि में व्यतीत किया। इससे न केवल भावी कवियों को नूतन वाङ्मय सृजन की प्रेरणा ही मिलेगी अपितु समिति अपने उत्तरदायित्व का भा पूरा करेगी।

समिति के इस इतिहास में अधिकतर तथ्या का ही संग्रह किया गया है। मैंने प्रत्येक विषय का यथाम्थान यथावश्यक और यथासंभव रूप में सामान्य ज्ञान का प्रदान किया है। यद्यपि अन्त में दिये गये परिशिष्ट में यथासाध्य उन सभी हिन्दी प्रसिद्धि के नाम उद्धृत किये हैं जिन्होंने आर्थिक सहायता स्वरूप समिति के विनाश भवन के निर्माण में सहायता दी अथवा अपना अमूल्य समय देकर उसके उद्घाटन की पूर्ति में योग दिया। ११वें परिशिष्ट में स्वर्ग जयन्ती महानन्द का जिनका उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम डॉ० मन्मथ प्रसाद द्वारा किया गया कार्यक्रम दिया गया है। इस महानन्द का विस्तृत वर्णन दूमरे खण्ड में दिया जायगा।

इतिहास के अन्त में मर पुरान मित्र श्री प्रमनाथजी त्रिवेदी जी० ए० का अन्तिम सम्पादन नवभारत टाइम्स नई दिल्ली में कराया गया। उनके निवेदन धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में उन सभी साहित्यिका तथा समिति के राष्ट्रिय श्री प्रभूतन सचिव का जो महानन्द प्राप्त हुआ है उसमें निवेदन अपना धन्यवाद प्रकटित करना है।

स्थापना

भरतपुर ब्रजभाषा का प्रमुख गढ़ है। यह स्थापन-काल से ही ब्रजभाषा के उच्चकाटि के कविया का निवास-स्थान रहा है। महाकवि सामनाथ और सूदन आदि ने अपनी काव्य प्रतिभा से इस क्षेत्र की ब्याप्ति का भारत के कान काने तक पहुँचा दिया था। अनेक महाकविया के आश्रयदाता भरतपुर के नरगा न ब्रजभाषा के प्रचार और प्रसार में सदैव स योग दिया, पर काल की गति का राज नीतिक और सामाजिक प्रभाव भाषा पर भी पड़े बिना न रहा। मुगला और अंग्रजा में टक्कर लेने वाले फारसी उर्दू और अंग्रेजी से अप्रभावित न रहे। शासन पर इन दोनों भाषाओं का क्रमशः दबदबा रहने की वजह से नौकरी की भूखी जनता अपनी मातृभाषा के महत्व का भूल सी गई। ऐसा समय भी आया जब ब्रजभाषा (हिन्दी) का प्रभाव कवल घरा की चारदीवारी तक ही सीमित रह गया किन्तु इस स्थिति का जन मानस ने स्वीकार नहीं किया। समय न करवट बदली। हिन्दी के हितैषी मातृभाषा की हीनावस्था में तिलमिला उठे। २०वीं शताब्दी के आरम्भ काल में उत्तर भारत के नगर नगर में हिन्दी के प्रति स्नेह और आदर उत्पन्न करने के लिये सभा और समितियाँ की स्थापना होने लगी। राष्ट्रभाषा प्रेम की इस लहर में भरतपुर के नागरिका का मानस भी प्रभावित हुआ। मातृभाषा के कुछ उत्साही नागरिका न समाचार पत्र और पुस्तक पठन-पाठन के कार्यक्रम का जारी करने की चेष्टाएँ आरम्भ की। पंडित रामचंद्र और मुंगी जानकीवल्लभ ने एक स्थान पर समाचार-पत्रा और पुस्तक पठन की व्यवस्था की। कहा जाता है कि वह प्रयास अपनी तरह का अनूठा था। नये जोश में कार्य करने भी नगा परन्तु कुछ कारणों से वह अकाल मृत्यु का प्राप्त हो अपन अस्तित्व को ही खो बैठा। पर जागा जन मानस आसानी से

मान वाला नहीं या अधिक उत्साही आर जीवट क हिन्दी प्रेमिया का उदय हुआ। अनक कठिनाइयो का सामना करत हुए भी कतिपय हिन्दी प्रेमिया न १३ अगस्त १९१२ को श्री हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना कर दी। नवस्थापित हिन्दी मस्या के प्रथम मत्री पंडित मुन्टरनाल जानी की प्राप्त प्रथम विनप्ति (१३ = १९१२) का मून अग अविक्कन रूप म नीचे उद्धृत किया जाता है —

प्रिय हिन्दी हिनपागण

क्याचित् आपका अवित्ति न हागा कि हमारी मातृभाषा सब गुण आगरी नागरी क प्रचार क लिये प्राय भारतवष क सभी नगर निवासो उन्नति कर रहै परन्तु खद है कि हमारा भरतपुर राजभाषा का कद्र हान पर भी इस ओर स मवथा पीछे हटा हुआ है। अवश्य ही हम तागा का कत्तव्य है कि हम श्रुति का दूर करन का प्रयत्न कर। हम सह्य आपरा मवात् देन है कि यहा क कतिपय हिन्दी हिनपा मञ्जना न यता पर हिन्दी प्रचार क लिये एक हिन्दी साहित्य समिति स्थापित करनी है जिमका स्थान घममभा में है। आप जानत हैं कि ममत्त काय अयम्नक ढूँडा करत हैं फिर इसर लिये द्रव्य जाना अत्यन्त आवश्यक है किन्तु या कह सकत है कि इस पीध का आप द्रव्य जल म मिचित न करेग ता यत् कुम्भना ना न जायगा किन्तु नष्ट भ्रष्ट ना ना जायगा। हमम निश्चित हा चुता है कि हिन्दी प्रचार क विनाय माधन समाचार पत्र मगाय जाय। जन हिन्दी का महादता क माथ-माथ हम सामागिय समाचार तथा उत्तम लग पत्न का निरग हमर तान म वृद्धि ना जाना ना स्वयमिद्ध है फिर हम स्वाध आर परमाय क माधक काय म कौन महानुभाव हा ना महादता न नग। हम आपका मवा म मरितय मान्तर प्रार्थी है कि आप ना हमम महादक उन हम तार आर परनाक म यगा नाना जन।

श्री हिन्दी साहित्य समिति के आधार स्तम्भ

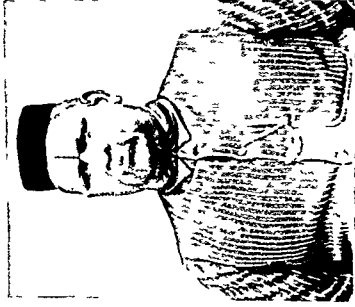
(मवप्रथम मभाषति सन् १९१२ से १९१९ ई० तक)



श्री ब० भानुप्रसाद मिश्र जी प्रमार एल० एम० एस०
(चीफ मेडीकल आफिसर)

(जिनने राय-नाल मसमिति की म्थापना हुई)

(सवप्रथम उपसभाषति सन् १९१२ से १९१९ ई० तक)



श्री नारायण दास जी

सुपरिगटेन्टे पी० डब्ल्यू० डी०

(जिनके निरीक्षण म सन् १९१८ म समिति भवन का निर्माण हुआ)

एक स्वर म मस्था की स्थापना का स्वागत किया और नामकरण हुआ श्री हिंदी साहित्य समिति, भरतपुर ।

समिति के जन्मदाताओं में पंडित गंगाप्रसाद गान्धी और अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न का नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है । इनकी ही व्यक्तियों की कल्पना भावना और उत्साह के परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य समिति की स्थापना हुई तथा अन्यान्य योग्य और प्रभावशाली व्यक्तियों का आरम्भ से ही मस्था का महयाग प्राप्त होने लगा । उपरोक्त सभा में मस्था के संचालन के लिये निम्नलिखित महानुभावा को पदाधिकारी निर्वाचित किया गया —

श्री १० जाकारमिह प्रसार एन०एम०एस०, मडिबल औफीमर
(प्रधान)

श्री ५० नागयनदाम सुपरिन्टेंडेंट पी० डब्ल्यू० डी०
(उप प्रधान)

श्री अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न (मंत्री)

श्री ५० गंगाप्रसाद गान्धी, साहित्याचार्य (महायक मंत्री)

श्री ५० गुनाजी मिश्र (पुस्तकालयाध्यक्ष)

श्री गायनदान पाट्टार आनंदरी मजिस्ट्रेट (कोषाध्यक्ष)

श्री ५० सुंदरलाल त्रिपाठी एकाउंटेंट पी० डब्ल्यू० डी०

(आय व्यय निरीक्षक)

दिनांक १५ सितम्बर १९१२ का पुनः एक सावजनिक सभा बुलाई गई जिसमें समिति के उद्देश्य एवं नियम निर्धारित किये गये तथा कार्यकारिणी का संगठन किया गया जिसमें निम्न महानुभावा का निर्वाचित किया गया —

श्री भट्ट मधुसूदन गमा मरदार राज्य

श्री ५० नातागम गान्धी मस्किन अध्यापक, मरदार हाई स्कूल

श्री ५० मुन्दरलाल जानी

श्री ५० गंगाशंकर पंचानी, हैडमास्टर मरदार हाई स्कूल

श्री ५० ब्रजविहारीलाल हैडमास्टर नोबिल्स स्कूल

- (व) इस समिति का कायक्षेत्र भरतपुर जिला हागा। इस जिले के अतिरिक्त यदि किसी जय स्थान का मस्था समिति से सम्बन्धित होना चाहगी तो उस पर भी विचार किया जा सकेगा।

उद्देश्य

- (क) हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि की उन्नति एवं प्रचार करना।
 (ख) हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिये आवश्यक विषयों तथा संसद अलंकृत करना प्राचीन ग्रन्थों की सजावट करना तथा उन्हें संग्रहालय में सुरक्षित रखना।

अधिकार

- इस संस्था का अधिकार हागा कि अपने उद्देश्यों का पूर्ति के निमित्त संपत्ति एवं जगह सम्पत्ति एकत्रित कर तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि करने के लिये उचित रूप में परिवर्तन कर। म्यादा सम्पत्ति जम दुराना में क्रय कर धन सम्बन्धी पत्रों का जन-जन कर तथा जय एम व्यवहार कर जिनमें जायिक उन्नति के साथ साथ एक उद्देश्यों का पूर्ति में किमा प्रकार का बाधा न पड़े।
- समिति का समस्त आय और सम्पत्ति एक उद्देश्यों का पूर्ति में लगाया जायगा। समस्त सम्पत्ति अथवा समस्त आय अथवा किमा सम्पत्ति अथवा पत्राधिकारों के किमा प्रकार के लाभ के आय के लिये नष्ट दिया जायगा किन्तु समिति के किमा कमचांग अथवा सम्पत्ति या किमा अन्य व्यक्ति का या समिति का कार्य का बन्धन या परस्पर तन में एक त्रिभुज का न टूटना। सदस्यों के लिये समिति के कमचांगियों के अर्थ में या नष्ट।
- समिति का एक सम्पत्ति काय हागा जिनमें वष के धन में

- वचन का वह अंश जिसे समिति की कार्यकारिणी स्वीकार करे प्रति वष जमा हुआ करेगा ।
- ४ स्थायी कोष की धन राशि में से कोई व्यय तथा स्थावर सम्पत्ति का रूपांतर तब तक नहीं किया जायेगा जब तक समिति की कार्यकारिणी व कम से कम दो तिहाई सदस्यों की स्वीकृति प्राप्त न हो जाये ।
- ५ समिति व आय व्यय का वार्षिक लेखा जाय व्यय निरीक्षक के प्रमाण पत्र देन व पश्चात् प्रति वष कार्यकारिणी व समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा । तदुपरांत यह लेखा समिति व सदस्या व सूचनाय प्रकाशित किया जायेगा ।

नियम

समिति की पूरा नियमावली प्रथम स प्राप्त है ।

सगठन

मावजनिक मध्या का शरीर उमके सभासद हात ह । जिम प्रसार मनुष्य त जावन में अनक उताव चढाव हात हैं उसी प्रकार मध्या त मध्या रा मध्या एकमी नही रहती उमम घटा गती हाता स्वाभाविक ३ । जिम दिन समिति की स्थापना हुई उस समय वयत ५ मदानुभाव उपस्थित थे और वही इसके सबप्रथम मदस्य थे जिनु प्रथम माम त अन म हा ७० ७५ मदस्य हा गये और वय का समान्ति तक यह मध्या २०२ पहुँच गई । फिर यह मध्या ६ वय तक निरंतर वरती ही गत । मन् १९१६ म २०५ सभामद थ जिनु एक बान यह मध्या घटन गी और १९२६ ई० तक उगाउर घटना गत । इसका मुख्य कारण भरतपुर नगर पर प्रथम महापुद्ध का महंगा वन्फ्लूएन्जा महाभारा और पानी की बान आति व प्रकाय थ जा क्रमग एक पर एक एक प्रकार आत रहे जस पानी म नरग रा जावग हाता है । दूमरा कारण यह भा था कि १९१८ म भासिक मगयता उताकर ६ आन करती गत । मन १९२७ स यह मध्या वरन गी जा १९६१ म २६१ तक पहुँच गई । मन १९४५ व बान एक मध्या म और ना वृद्धि गान लगी जा उराउर वर गी ३ ।

समिति क मदस्य तान प्रकार क है —

- १ मापारग
- २ जातवन धार
- मदस्य ।

धर तक क सभामद का मध्या धाजीवन मदस्य तथा मदस्य का नानावता धार एताधिकारिया का नाम-मूचा परिगिष्ट (३) म ग ग है ।

पुस्तकालय

हिंदी साहित्य समिति की स्थापना के पश्चात् पुस्तकालय की आवश्यकता का अनुभव होना स्वाभाविक ही था। स्थापना के १८ दिन बाद श्रावण शुक्ला ८ संवत् १९६६ विक्रम मंगलवार (२० अगस्त १९१२) का समिति के तत्वावधान में पुस्तकालय की स्थापना की गई। प० गंगाप्रसाद शास्त्री के यहाँ से श्री दक्कीनन्दन आचार्य ने ११ पुस्तक लाकर श्री मनानन्द धर्म मभा की १ काठरी में रखकर पुस्तकालय का श्रीगणेश किया। उसके तुरंत बाद ही अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न आदि उत्साहा व्यक्तिगत रूप से लगभग २५० पुस्तकें एकत्रित कर पुस्तकालय की श्रीवृद्धि का प्रयास आरम्भ कर दिया।

गडकविलास प्रेस, बाकीपुर के अध्यक्ष कु० रामदीनमिह ने अपने प्रेम की तथा राजपूत औरिण्टल प्रेस के स्वामी कु० हनुमंत मिह ने अपनी पुस्तकें अधभूतय में देकर पुस्तकालय की परिपुष्ट किया। प्रथम वर्ष की समाप्ति होने होते पुस्तकालय में इतिहास जीवन चरित्र, वेद, नाटक चिकित्सा श्री शिक्षा, साहित्य वेदान्त, शिल्पकला उपयाम कहानी, अथगास्त्र, विज्ञान कृषि भूगोल धर्म, वाद्य आदि आदि सभी प्रमुख विषयों की लगभग १,४०० पुस्तकें संग्रहित हो गई। इनमें अधिकांश पुस्तकें दानदाताओं द्वारा प्रदत्त थीं जिनमें धाऊ रामशरण की धर्मपत्नी, प० भालानाथ, प० नारायणदास लाला किशोरीलाल व्यानियॉ प० गंगाप्रसाद शास्त्री जगन्नाथदास अधिकारी गकरलाल वर्मा, प० मुन्दरलाल त्रिपाठी वार चक्कनलाल, गाबुलचन्द दीक्षित प० गुलाब मिश्र, प० बानाप्रसाद प० द्वारकाप्रसाद, प० बालकृष्ण दुबे रामनारायण वर्मा सचीवान्त भट्ट डा० ओकारसिंह प० नन्दकिशोर ननेमल

गोस्वामी हरिनारायण प्यारलाल शमा गिर्राजप्रसाद शमा (कुम्हर), प० मदनलाल मिश्र ज्योतिषी एव निरजन शर्मा अजित शर्मा के नाम उल्लेखनीय है ।

इस प्रकार पुस्तका की सख्या तो उत्तरोत्तर बढने लगी किन्तु समिति क पास उहे रखन के लिए उपयुक्त स्थान का अभाव था । पुस्तकालय क साथ ही वाचनालय भी आरम्भ कर दिया गया । यद्यपि स्थान छाटा था किन्तु जनता की साहित्यिक अभिरुचि के कारण प्रथम वर्ष ही ५००० पुस्तका का आदान प्रदान हुआ । इसी बीच हिन्दी साहित्य समिति के कारण और सनातन धर्म मभा के संचालना म कुछ मनमुटाव हो गया । परिणामस्वरूप समिति का पुस्तकालय २४ नवम्बर १९१३ को मभा म हटाकर निकट क भवन म न जाया गया । नये स्थान म भी पुस्तकालय पर्याप्त प्रगति करता रहा । दिनांक २७ २८ एव २९ सितम्बर १९१३ का हिन्दी साहित्य समिति का प्रथम वार्षिकसम्मेलन यही धर्मधाम म मनाया गया । इस सम्मेलन म जनता न पूरा सहयोग दिया ।

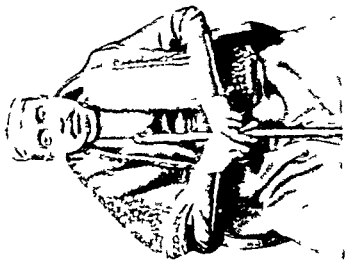
इस प्रकार समिति का पुस्तकालय अनरानर वृद्धि करने लगा । मन् १९०३ म चतुर्वेदी उमरावमिह मिश्र न अपन पूर्वज कविवर मामनाथ क स्मृतिमित्र ग्रन्थ भट किया । मन् १९०४ म हाराणकर पचासी न श्री गंगाणकर पचासी का स्मृति म १०१ पुस्तका का मसह पुस्तकालय म न किया । १९४२ में भगतपुर क सुप्रसिद्ध विद्वान् ०० रामचन्द्र (महागज ना) न १०४ पुस्तका का मसह अपन पुत्र पितामह श्री १० धामाराण म नाम पर समिति का प्रदान किया । इस पाना मसह पृथक पृथक अनुमात्रिका म मजाकर रखे गये हैं ।

कुछ समय बाद शिवा प्रसी जनता का मासिक तथा त्रिमासिक का मुद्रण का ध्यान म रखन शुरू यह आवश्यक प्रदान पाने लगा कि सामग्री नवान् अनुसन्धान पुस्तकों का क्रय कर । एत पान वर्षों न प्रत्येक वर्ष कायकारिणी समिति न १५०० शब्दा पुस्तक क्रय क

श्री हिन्दी साहित्य समिति के त्यागी एव कर्मठ सेवी
 (जिनने समय म समिति ने आगतीत प्रगति की)



श्री प० नारायण जी दुबे एम० डी० ब्रा०
 म० १९२१ मे ३४ तर मभापति मन् १९३८ मे ५२ तर



श्री प० युनाय जी मिश्र (पुस्तकालय ने वरुधार)
 पुस्तकालयाध्यक्ष मन् १९१२ म १९२६ तर

लिए स्वीकृत किये हैं। मन् १९५१ म १९६० तक ३,१११ पुस्तक क्रय की गई, जिनमें गाय मन्वन्धी पुस्तकें पचास मन्व्या म हैं। इस समय ममिति म लगभग १०,३०० पुस्तकें ह जिनम हस्तलिखित भी हैं (दक्षिण पश्चिम)। हम खद ह कि कुछ हस्तलिखित पुस्तकें मन् १९५५ के बाद म जब से जनमुनी श्री कान्नीमागरजी महाराज ने उनका वर्गीकरण किया है ममिति में दिखाई नहीं देती।

मन् १९४३ म ममिति न एक चलता फिरता पुस्तकालय खोला जिमका उद्देश्य नगर की पदान्गीन महिनामा का नाम पहुँचाना था। उस काय क तिस एक महिना का रखा गया जा घर घर जाकर पुस्तकें वितरित करनी और पुन एक मप्ताह बाद उन्हें ले आती थी। यह पुस्तकालय एक वष तक चलता रहा, किन्तु अधिक मफतता न मिलन पर बंद कर रना पडा। इसका मयमन व्यय मठ मनाहरलाल कलकत्ता वाला न दिया।

पुस्तकालय का काय पुस्तकालयायक्ष की देख रेख में होता ह जा ममिति की कायकारिणी क मदम्य हैं। पुस्तकालय के लिये मन् श्री गुनावजी मिश्र तथा प्रभूलाल गायल एक म० प्रभूदयाल त्पालु तथा प० देवरीनन्दन आचाय (वर्तनिक कमचारी) की मवाण विवेक रूप म उल्लेखनीय हैं।

मन् १९६० स म पुस्तकालय म काड प्रणाली आरम्भ की गई जिनस पुस्तका क आदान प्रदान म सुगमता हा और इस पुस्तकालय का गगना जाधुनिक रूप क पुस्तकालया में हो सक। यद्यपि इस नवीन (या) प्रणाली क प्रचलन म अनर कठिनाया जाट किन्तु ममिति क प्रधान मत्री श्री मन्नाल वजाज क धय याग्यता तथा परिश्रम न उन पर त्रिजय पा और म नवीन प्रणाली का प्रचलन मफत हुआ।

म वष पुस्तकालय म एक भा पुस्तक एमा नहा जिमकी जिद न रधी हा। पुस्तका का सूची क मुद्रण का काय नेप है जो धनाभाव क कारण पूरा नहीं हा सका ह। त्रिपय क्रम म सूची की न हस्तलिखित प्रतियाँ तयार करा ली गई हैं।

इस पुस्तकालय का प्रयाग प्रति वष बढ़ता ही जा रहा है। गान्ध्याय के लिए ममय-ममय पर गहर के विद्वान् ममिति म पघार वर लाभ उठात रहत हैं।

१८५० म सुधीद्र रवि सामनाय मर खाज जाग अनुशीलन के निग दिल्ली म आये और यथेष्ठ लाभ उठाया। ममिति अनुसंधान वरन वान एम विद्यार्थिया का यथामम्भव हर प्रकार की सुविधाएँ दती है।

हस्तनिविन एव मुद्रित पुस्तका का विशाल भण्डार होन के कारण यह ममिति मदव म हिंदी के सुप्रसिद्ध विद्वाना का आर्कषित करती रही है। परिशिष्ट (१०) म कुछ मम्मतिर्षा उद्धृत की गट हैं।

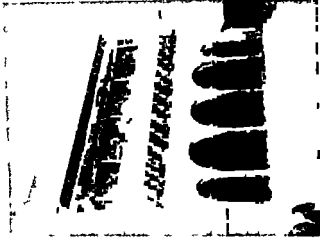
ममिति भवन म वाचनालय भी है। पुस्तकालय में प्रथम वष २६ समाचार-पत्र तानस्वरूप आये जिनमें २० मासिक ८ साप्ताहिक, १ अद्य-साप्ताहिक आर १ दैनिक था। इन पत्रा क पढने वाला का सख्या प्रथम वष म ७६०० रही। दूसरे वष समानार-पत्रा की सख्या ३० टा गई। यह सख्या उत्तरात्तर बढन लगी। मन् १९६० म आने वाल पत्रा का सख्या ५३ है जिनम दैनिक ४ साप्ताहिक १४ मासिक २६ पाक्षिक ३ और त्रमासिक ३ हैं। परिशिष्ट (५) को दमन मे नात होगा कि गत १० वर्षों मे कितने पाठक इसमे लाभ उठाते रहे हैं ?

समिति भवन (प्राचीन)

श्री हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना श्री मनातन धम सभा भवन के एक छोटे से कमरे में की गई थी। यह कमरा इतना छोटा था कि समिति की बृहत् बठक अधिकारी श्री जगन्नाथदाम के स्थान विरक्त मन्दिर पर सम्पन्न करना पड़ती थी। समिति के सचालको का यह बात बहुत अखरती थी किन्तु धनाभाव के कारण वह कुछ कर सकने में असमर्थ थे। कुछ समय पश्चात् सभा के निश्चयानुसार समिति पुस्तकालय को सभा भवन से हटा लिया गया और सभा भवन के पादवर्ती मकान में श्री सुदेश भट्टारी कुम्हार वाला से २॥॥) मासिक किराये पर नवर मिति भाद्रपद शुक्ला ११ सवत् १९७० वि० क्रि० २४-११-१३ ई० का पुस्तकालय स्थानांतरित कर दिया गया। जनवरी १९१४ की मकर मङ्गलान्ति के दिन श्री धाऊ बस्ती रघुवीरमिह सी० आद० की अध्यक्षता में एक महती सभा का आयोजन किया गया जिसमें समिति के संरक्षक श्री प० गिरधर रामा नवरत्न (भालरापाटन) ने उपस्थित जनता के सामने समिति भवन निर्माण का आवश्यकता का मार्मिक एवं प्रभावात्पान्त वादा में प्रतिपादित किया। फलस्वरूप उसी समय (१९००) के बचन जनता से प्राप्त हुए। निर्माण कार्य का सम्पादित करने के लिए कुछ उल्हाहा एवं प्रभावशाली व्यक्तियों का एक समिति का गठन कर लिया गया जिसमें रामानुज व लगेन से अपना कार्य आरम्भ कर दिया। समिति के पुस्तकालय में पुस्तकों के आदान प्रदान और पाठना की समस्या निम्न प्रनिर्दिष्ट तन्त्रों अर्थात् दत्ता जा रहा था कि वर्तमान स्थान भी अपना त प्रताप हाना था अतः समिति भवन के लिए स्थान का खोज गान नहीं आर क्रि० २०-१३ का २०२) में ही स्थान तथा कुछ भूमि जहाँ समिति का वर्तमान भवन स्थित है खरीद कर ली गई।

श्री हिन्दी माहित्य समिति भरतपुर क भवन क दोनो रूप

प्राचल भवन



निमित्त मन् १८१८ रु

रत्नमाल विगान भवन



गा निमिा मन् १६१० रु

समिति भवन बनवाने के लिए चन्दा एकत्रित करने का उद्योग प्रारम्भ हुआ जिम्मे लिये दिनांक १८-२ १७ का कार्यवाहिणी की बैठक में दो उप समितियाँ बनाई गई। इन समितियों में निम्न लिखित महानुभाव निर्वाचित हुए—

मन्त्री सुन्दरलाल त्रिपाठी प० गुलाबजी मिश्र अधिकारी जगन्नाथदास, प० ज्ञानकृष्ण दुर्गा ग्यावनलाल पालर गंगाप्रसाद गाम्भी प० द्वारकाप्रसाद एवं वल्लभ सदानन्द ।

यह समिति मन्त्रमाधारण में चन्दा एकत्रित करने का कार्य करती रही तथा विशिष्ट जना में चन्दा प्राप्त करने के लिए मन्त्री डा० आचार्यसिंह प्रसाद नारायणदास कहेयालाल बनन जुगल सिंह वारू उरदवप्रसाद एवं अधिकारी जगन्नाथदास का चुना गया। इनकी समितियों ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया और थोड़े ही समय में (१२००) की धनराशि एकत्रित करनी। ज्येष्ठ पुनरा १० स० १८७८ का समिति भवन का शिलान्यास श्री गंगाप्रसाद गाम्भी के कर कमलों द्वारा उन्नाम सहित सम्पन्न हुआ। भवन का निर्माण कार्य श्री नारायणदास सुपरिन्टेण्डेंट पी० डब्ल्यू० डी० तथा शास्त्रीजी की देखरेख में होना लगा। अभी समिति का हान तथा सामन का भाग ही बन पाया था कि अचानक गाम्भीजी का असामयिक स्वर्गवास हो गया। समिति का अपना एक कमठ कार्य बनाने और मस्थापक की मृत्यु में अपार क्षति पहुँची। निर्माण-कार्य कुछ समय के लिये अवरुद्ध हो गया। पुस्तकालय एवं वाचनालय का कार्य नवान भवन में मुचाए रूप में चलने पर ध्यान में रखते हुए माधारण निर्माण-कार्य पूरा करा दिया गया।

यद्यपि समिति भवन का जो नक्का प्रारम्भ में साचा गया था वह पूरा न बन पाया था किन्तु समिति का हॉल पुस्तकालय एवं वाचनालय के लिए पर्याप्त था। दिनांक २३ ११ १८ की समिति का पुस्तकालय तथा वाचनालय अपने नवीन निजी भवन में धरा गया। यह गृह प्रवेगात्मक उदा धूमधाम में मनाया गया। भरतपुर में गण्यमान व्यक्तियों ने अतिरिक्त सरकारा अधिकारागण तथा

ममिति भवन बनवान क निग चला एकरित करन का उद्यान
आरम्भ हुआ जिसके लिये दिनांक १८-२-१७ का प्रायश्चित्त की
बठक में ता उप-ममितियाँ बनाए गइ। उन ममितिया म निम्न
लिखित महानुभाव निवाचित था—

मवश्री सुन्दरलाल निपाठी ५० गुलाबजा मिश्र अग्रिमारी
जगन्नाथलाल ५० जालकृष्ण द्रव स्वामिनलाल पाण्डर, गंगाप्रसाद
शास्त्री ५० द्वारकाप्रसाद एवं वद्य सदान्त ।

यह ममिति मवमाधारण म चन्द्रा एकरित करन का काय
करती रनी तथा विविष्ट जना म चन्द्रा प्राप्त करन क निग मवश्री
डा० आकारमिह प्रसार नारायणलाल सन्धैयाना ननल जुगल
मिह बाबू प्रवप्रसाद एवं अग्रिमारी जगन्नाथदाम का चुना गया ।
ताना ममितिया न अपना प्राय प्रारम्भ कर दिया और थाड ही
ममय म १२००) की धनराशि एकरित करली । ज्येष्ठ शुक्ला १२
स० १९७८ ता ममिति भवन ता गिरायाम श्री गंगाप्रसाद शास्त्री
क कर कमला द्वारा उन्नाम महित मम्पन हुआ । भवन ता निर्माण
काय श्री नारायणलाल सुपरिटेंडण्ट पी० डब्ल्यू० डी०, तथा
शास्त्रीजी की दरसन म हान रगा । अभी ममिति का हान तना
सामन का भाग ही उन पाया था कि अचानक शास्त्रीजी का
अमामयिक मगवाम हा गया । ममिति का अपन मम कमठ काय
कता और मस्थापन की मृत्यु म अपार क्षति पहुँची । निमाण प्राय
कुछ ममय क लिये अरुद्ध हा गया । पुस्तकालय एवं वाचनालय
का काय नरीन भवन म सुचारु रूप म चल मव तम ध्यान म रखते
हूँ माधारण निमाण-काय पूरा करा लिया गया ।

यद्यपि ममिति भवन का जा नवगा प्रारम्भ मे सोचा गया था
वह पूरा न उन पाया था किन्तु ममिति का हाल पुस्तकालय एवं
वाचनालय क निग पर्याप्त था । दिनांक २३ ११ १८ को ममिति
का पुस्तकालय तथा वाचनालय अपन नरीन निजी भवन म र्हा
गया । यह ग्रह प्रवगात्मन उडा धूमसाम म मनाया गया । नरन्तुर
क गण्यमान व्यक्तिया क अनिरिकन सरकारी अधिकारी म म

श्री भारतभूषण भागव

श्री भगवानदाम गाठी

श्री बाबू गाविन्द्रप्रसाद श्रीवरनीयर

निर्माण का आरम्भ हुए कुछ ही दिन अतीत हुए हागे कि विघ्न उपस्थित होन लगे । सबसे प्रथम मनातन धर्म मभा क पदाधिकारिया न भवन निर्माण की भूमि पर उठत बड़ी आपत्ति उठान् किन्तु श्री सठ स तांगीताल आर श्री हरिदत्त वकील की मध्यस्थता से यह झगडा शांत न गया । दूसरी बाधा ममिति के दक्षिणी भाग क जा सेठ चिरजीलान मानानी जाला क गृह की तरफ है साधे करन सी थी किन्तु यह ममस्या भी उक्त सेठ जी का उदारता एवं याग क कारण बड़ी सरलता से हल हा गयी । ममिति क हाल म दक्षिणी भाग म श्री राधेनाथ मरफि क मकान की मारा ममिति भवन क अन्दर आती थी जिमम भवन का भारी क्षति पहुँचती थी और भवन निर्माण म बड़ी बाधक थी । श्री राधेनाथ जी न उसे बन्द कराकर अपनी उदारता का परिचय दिया ।

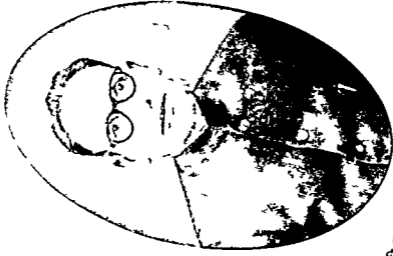
निर्माण काय पुन द्रुतगति म चलन लगा किन्तु म्पया इक्ठठा करन की ममस्या पूववत् विघ्न-बाधाआ स वही अथिक् जटिल मालूम नान लगी । म्म गाणे ममय म ममिति क उत्साही काय कर्ताआ न अहर्निशि नगर म भ्रमण करव जा धन राशि इक्ठठी का वह कपना म कती अथिन थी । म्म काय म सब श्री डा० कुज प्रिहारी नाथ गुप्ता मातीलान प्रजाज मदनलान बजाज रामदत्त ममा मत्रा भगवानदाम गाठी गिराजप्रसाद मरफ मदनमोहन नाथ पाठार भारतभूषण भागव गापादाम गायल ५० सुरा कुमार मूयन्जि माताराम खून्टिया मारागकर नान लक्ष्मीकांत ममा कु० अनमिह चम्पानाथ कविगेवर क नाम विशेष उल्लेखनीय ह । सबम अधिन महायना श्री विष्णुदत्त ममा जिलाधीन भरतपुर न विराम कण म म्म अनगणि दिना कर म ।

म्य प्रसंग में सब श्री विद्यानन गाम्त्री जीर गकरलान ठक्दार क नाम ना विशेष म्म म विषयना उचित है जिहान अपना

श्री हिन्दी साहित्य समिति के वर्तमान विशाल भवन के निर्माणकर्त्ता
(जिना निरीक्षण एवं ग्रहणित् परिश्रम से समिति का वर्तमान भवन निर्मित हुआ)



श्री जे० महामाहन लाल जी मोहार
(समिति के वर्तमान भवन निर्माण समिति का १९५७)



श्री गाव् गोविन्द प्रसाद जी श्रीवर्सीयर
(नवीन भवन निर्माण योजना के निर्माता)

अमूय समय द्रव्य ममिति का पत्पर उ इट विगेष कमीगन क माथ दिनान म महायता की ।

कवल मात आठ महान क अथक परिश्रम क पत्रस्वरूप भवन ता उन कर तयार हा गया तिल्लु भवन क अनुत्प फग नही उन पा रहा था जिमका श्री भवननाल वजाज "पाध्यक्ष क मत्प्रयत्ना म मठ मा मतागानान जी महगाया जाला न पूरा करा कर ममिति भवन म चार चाद जगा लिये । ममिति क गार्गी हिम्म का मठ था हरिचरननाल जी नई मढी न अपन स्वर्गीय पिताजी की स्मृति म नवीन रूप रर रह मह काय का पूरा करा लिया ।

भवन निमाण म कुल लगभग २७००००) रु० व्यय हुआ जस दि आरम्भ म कवल (२००००) रु० हा यय जाना गया था । इम उली राणि का देन वाल गनाआ न नाम परिशिष्ट (८) म लिय गये हैं ।

भवन क नव निमाण का ममन्न काय श्री मदनमाहन नान पाठार तथा गार्गाविन्प्रमाट आवरसीयर का मौपा गया था जिमका गन्तान श्री याग्यता परिश्रम आर लगन क माय पूरा लिया । ममिति क कमचाग प० कुन्नाल न भी रान दिन उमाट क परिश्रम म काय लिया जिमक लिये ममिति न उह (१००) रु० पाणितापिक प्रदान किया ।

मुख्य भवन के अतिरिक्त ममिति की अवन ममिति म तान दुवानें आर है जा भवन क निकट ही गहर क मुख्य गजार म स्थित है । इन दुवाना को श्री गान्तिस्वरूप जी वाटर (श्री गली) न अपन पूज्य पिता श्री हीरालानजी वीहर की पुण्य स्मृति म ममिति का मठ किया । इम काय म ममिति तत्वानान उपाध्यक्ष श्री डा० गापातनान गमा का प्रयन उत्पनीय है ।

रा द्विगुणित कर दिया । जय तीन दिन के कार्यक्रम में जनता मन्तुष्ट न हुई ना अधिवेशन एक दिन के त्रिये आरंभ रण किया गया । इस अधिवेशन के स्वागतार्थ श्री राज्यपुराहित प० कृष्णवर्मा जी थे । जिन मन्तुभावा न मभापति पत्र ग्रन्थ किया । उनका नाम निम्न प्रकार है —

प्रथम दिन—रायबहादुर श्री धाऊ वर्मा रघुवीरमिह जा

द्वितीय दिन—प० श्री ग्युनाथमहाय जा

तृतीय दिन—गाडश्वराकाय गास्वामी श्री मधुसूदनलाल जा

चतुर्थ दिन—स्वामी मलयदव जी परिव्राजक

द्वितीय वार्षिकोत्सव सन् १९१६ में मनाया गया । वह भी अद्वितीय रहा । सम्मिलित हान वान महानुभावा में स निम्नलिखित के नाम विशेष उल्लेखनीय है —

१ श्री प० श्रावृष्ण गास्त्री प्राक्मर पटियाना

२ श्री प० गौरीशंकर हीराचन्द आभा जजभेर

३ श्री प० गिरधर गर्मा नवरत्न राजगुरु भानगपाठन

४ श्री प० लक्ष्मीधर वाजपया कानपुर

५ श्री प० सत्यनारायण जी कदिरत्न धाधूपुरा जागरा

६ श्री प० श्रीगमाजी मामवदा जागरा ।

इस प्रकार वार्षिक उत्सव मनान की पद्धति चत्र निरुली । अब तक समिति में चवालीस वार्षिक उत्सव मनाये जा चुके हैं । कम तो सभी अधिवेशन बड़ी धूमधाम में मनाय गये किन्तु तत्काल जा चवा नामके अधिवेशन के समय विशेष जनात्माह दखा गया । तत्काल वार्षिक उत्सव १९४५ में आरंभ के बाद गुनाउराय के मभापतित्व में मनाया गया । इस अवसर पर कवि वीरिन का अभिनय अत्यंत रोचक रहा जिसका श्रेय स्वर्गीय गाकुचन्द्र जा आशित का है । इस अनिखित रमदरशाह श्रिणी न्द ममानाथक पराक्षा व कवि सम्मेलन का कार्यक्रम भी अधिक आकर्षक रण । इस अधिवेशन के सयावक तत्कालीन उप-भा श्री श्री मन्तुलाल वनाज थे ।

समिति के इतिहास में मन्तु अधिका आकर्षक ६४वा अधिवेशन

श्री हिन्दी साहित्य समिति के कर्णधार

(जिन्होंने भागीरथ प्रयत्न से समिति का विद्यालय अखण्ड १९५७ से पुनर्निर्मित हुआ)
वर्तमान अध्यक्ष (सन् १९५५ से १९६२ तक)



श्री डॉ० उ० खड्गारोसा० गुप्त,
॥५०, (दिल्ली) एम् एच पीएल विद्यालय की एण्ट्री की



श्री मोतीलालजी बजाज

या जा १६ १७ व १८ मितम्बर १९२६ २० का १० रामविनाम
 गमा व सभापतित्व म सम्पन्न हुआ । यह अधिवेशन १६ मितम्बर
 का राखरवि रमिथा व प्रमृति हान ही गति एव उन्नामपूग
 वानावरण म मिति न घर मे प्राग्भ विया गया । वाद्यना की
 मनाहारी ध्वनि न गीच हिला साहिय मिति का पानाम्बरी ध्वज
 स्वच्छ आवाग म भरतपुरा गीग गी वजेद्रमिह जी व कर कमना
 द्वारा पहगया गया । स्वागताग्र्य था डा० कुत्रिहारीनात गुप्ता
 न भगतपुर नगर व महत्त्व वा वगन रगत हृण वताया कि यह
 स्थान व्रजभाषा साहिय एव ममृति का वाद्र रहा है और इस व्रज
 भू-भड का व्रजभाषा व उच्चकारि व वरि मामनाथ आर सुदन न
 ज म लकर गौगान्वित रिया है । रत म अरिवान म पवार गृण
 मभा हिदा प्रमिया का स्वागत रगत हृण उन्नाम जागा व्यवन की वि
 हिदा की बहुमुखी प्रगति जगत की भाषाआ व गीच मवाच्च आमन
 ग्रहण वगन म समन हागी ।

माघनात का डा० कमलज जा का प्रभावपूण भाषण तथा
 एक विराट कवि-सम्मेलन हुआ । व्रजभाषा आर खटीनाती व
 वरिया की मरम, मुदर एव प्रभावात्मादर कविताजा न जनमानस
 का मय मुग्य कर दिया । इस वृहन कवि-सम्मेलन व अनिर्विकन
 दूनर व तासग दिन गाता प्रवचन अनामरी, वादीववाद गायन
 आदि वा भा जायाजन रिया गया । मरम अधिक आकषर ससदीय
 रूपक था जिसम मसनाय परम्पराजा पर पूण प्रकाग डाना गया ।
 इस रूपन म गच्छपति का भाषण, प्रन्तानर मरवाग विधयव
 गरमरवारी प्रिधयव, स्वगत प्रन्ताव मभा आरपन टग म प्रम्नुत
 विये गये थ । मरवागी पक्ष और विगना पक्ष व उत्तर प्रयानर
 एव जय वार्ते दिन्ना म हान वाती ममद वा वायवाही म विगी
 प्रकार कम न था । इस प्रदान म निम्नलिखित महानुभाषा व
 भाषण विशेष सराहनीय रहे —

मव श्री १० कुत्रिहारीनात प्रा० हरमहाय प्रा० विगन
 विगार महर्षि, मा० उन्नमगापान मा० नगीनात मा० अनूपमिह

प० सुशेखरकुमार गुरुध्वज श्री गमन्त गाम्त्री श्री मुकुटप्रिहारीनान वकील ।

विशेष अधिवेशन

समिति का मुख्य लक्ष्य जनता में हिन्दी का प्रचार करना रहा है । इसके लिये उपयुक्त वार्षिक अधिवेशनो में अतिरिक्त माच १९४४ में विक्रम द्विमहत्त्वादि समाराह का भी आयोजन किया गया । समिति के इस बृहद कायक्रम का मफल बनान में ममस्त स्थानीय सस्थाओं में पूण सहयोग दिया । राज्य की आर में भी राजकीय सायानया में पूरे दिवस का जनसाग रहा ।

नगर में एक बृहत् जुलूम निशाला गया जिसमें समस्त स्थानीय सस्थाओं के भण्डे थे । यह जुलूम समिति के अहात में वन विशाल पडाल में पहुँचकर सभा के रूप में परिवर्तित हो गया । श्री गान्कुलचन्द दीक्षित द्वारा आयोजित विक्रम दरवार का रूपक प्रदर्शित किया गया । इस रूपक के कविरत्ना का परिचय दीक्षित जी द्वारा (वर्तनीजन स्वरूप में) किया गया । यह अभिनय इतना सुन्दर वन पडा कि उपस्थित जनता मात्र मुग्ध सी हो गई ।

इस उत्सव में सम्मिलित हान वाले विविष्ट व्यक्तियों में भरत पुर नरंग श्री वृत्तद्रमिह जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

स्वण जयन्ती महोत्सव

इस वर्ष तिनार १२ २ ६१ से १४ २ ६१ तक समिति स्वण जयन्ती महात्मव उडा धूमधाम में मना रही है । इसी अवसर पर माहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा आयोजित मत्स्य क्षेत्राय एक उपनिषद् समिति के तनावधान में हागा जिसका विषय है लोक रचि और माहित्य । इस महात्मव का उद्घाटन भारत के उप राष्ट्रपति महामहिम डा० मवपलना राधाकृष्णन् के कर कमला द्वारा हागा (समना कायक्रम परिगिष्ट में दमिय) ।

२ परीक्षा

समिति ने हिन्दी भाषा के प्रचार एवं पानवृद्धि के हेतु जा

जनक प्रयत्न किये उनमें सम्मनन की परीक्षा का कन्द्र न्यापित करना भी एक है। तिनका १९८०६ का हिन्दी नाहिय सम्मलन प्रयाग न हम ममिति का प्रथमा तथा मप्रमा परीक्षा का कन्द्र खीरा विद्या। मिनम्बर १९२९ म प्रथम वा परीक्षाएँ आम्भ हूट जिनम कवल न परीक्षार्थी प्रविष्ट हए जा दाना उत्तीण ना हूए। गज्वनापा उर हान स उन त्तिना उन परीक्षाका म मफलता प्राप्त करन म काइ राजकीय नौकरी प्राप्त नही हाती थी वत परीक्षाका म ममिति हान वाले परीक्षार्थी की मन्धा वहत कम थी। गमी स्थिति म ममिति गुल्क र्क भी विद्याधिया का परीक्षाका म ममिति हान क त्तिना उत्साहित करनी थी। धीर धी विद्याधिया का मन्धा म वृद्धि हान लगी जा १९८३ क वात्तराज्वर वती ही गइ। मन् १९४७ म हिन्दी राज्यभाषा धापित करनी गइ। मन् १९५० में प्रा० कुज्रिहागीतान गुप्ता कद्र व्यवस्थापर नियुक्त हूए और उनर प्रयत्ना म हिन्दी नाहित्य सम्मनन न १९५१ म ममिति का उत्तमा का कद्र भी स्वीकार कर लिया। तव म परीक्षार्थिया की मन्धा प्रति वप वती ही गर्त। मन् १९६० की परीक्षाका म ममिति होने वाल परीक्षार्थियों की मन्धा २२० है जिनका विवरण इस प्रकार है —

उत्तमा ५३ मध्यमा ४२ प्रथमा ६ वद्य विगारद ८६ कृषि विगारद ८ एक उप वद्य २४। यह मन्धा पिछ्तर ४ वर्षों म रही सन्धा म मप्रस अधिन है जिनर लिए ममिति कद्र क वनमान कद्र व्यवस्थापक श्री रामन्तजा गमा एम० ए० बी० एड० की व्यवस्था मराहनीय ह। परीक्षार्थिया की सुविधा क लिए परीक्षा होने म लाभग २ मास पूव रात्रि पाठशाला की व्यवस्था की जाती है जिनरा मचालन इस वप वद्य रामगारन जी शान्नी तथा श्री रामन्त जी शान्नी एम० ए० बी० एड० कद्र-व्यवस्थापक न किया। इस बीच परीक्षार्थियों का पाठय-मुक्तका की विशेष सुविधा भी दी जाती है।

३ प्रौढ-शिक्षा

अक्टूबर १९४४ म ममिति का गिष्ट मण्डल राजकीय महायत्ता

समिति ने कार्यालय में भेजा जायेगा और उसका जमाना-बच भा समिति व हिमाचल में दिया जायेगा ।

३ हिन्दी साहित्य समिति नाट्य समिति का किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं देगी प्रत्युत नाट्य समिति का कर्तव्य होगा कि वह अपने प्रत्येक खर्च की आय का कम से कम १०वाँ अंश समिति का दे ।

४ आवश्यकता पड़ने पर समिति का कर्तव्य होगा कि वह नाट्य समिति को शारीरिक एवं प्राविधिक सहायता दे ।

५ नाट्य समिति का यह कर्तव्य ठहराया गया कि वह प्रत्येक वर्ष अपने अभिनयों का पूरा विवरण समिति का भेजे ।

ज्याही इस समिति की स्थापना हुई इसके उत्साही कार्यकर्ता इसके कार्य में जुट गये । जिन नाटकों का अभिनय किया गया वे सब शुद्ध हिन्दी में लिखे हुए थे । अभिनयों को देखने के लिये भरतपुर की जनता बतनी उत्सुक रहती थी कि पडाल में बठन को स्थान बड़ा कठिनता से मिलता था । तत्कालीन भरतपुर नरेश श्री कृष्णसिंहजी इस नाट्य समिति में विशेष महानुभूति रखते थे । थोड़े समय में ही इस समिति ने आगातान सफलता प्राप्त कर ली और अपने ध्येय के अतिरिक्त सक्का रूप का आवश्यक सामान भी एकत्रित कर लिया । वार्षिक अधिवेशन पर तो नाटक होते ही थे किन्तु अन्य अवसर पर भी निष्ठाप्रद नाटकों का अभिनय की व्यवस्था का जाता । प्रथम दिवस युद्ध में आर्थिक सहायता देने के लिये समिति ने एक नाटक खन और उनसे प्राप्त आय को युद्ध की सहायता हेतु भेज दिया गया । इन नाटकों का नेयन के लिए भरतपुर नरेश बाबू में आन वाल अग्रजा एवं भारतीय अतिथिया महित सम्मिलित हुए थे । इन सभी अतिथियां ने नाट्य समिति के कार्यों का मुक्तमठ में प्रशंसा की ।

स्व० श्री गणेश साहिब और गिराज वार नाट्य समिति में पूरा महानुभूति रखती थी और प्रत्येक अभिनय में पधार कर समिति का उत्साहबद्धन करती थी ।

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के उत्साही एव कर्मठ पदाधिकारी

वर्तमान प्रधान मंत्री

जिनकी गाय प्रणाली एक सम्बन्धपूर्ण समिति न अभूतपूर्व
उत्पत्ति की है।

भूतपूर्व प्रधान मंत्री

जिनके मन्त्रित्व काल में समिति का विशाल
भवन पुनर्निर्मित हुआ।



श्री महान लालजी बाजाज

उपाध्यक्ष

(१९५५ से ५८ तक)

(मरणोपरान्त प्रथम के प्रसादान तथा भवन पुनर्निर्माण के प्रारम्भ)



श्री रामदुत्तजी शर्मा एम ए बी एड साहित्य डॉन, शास्त्री

प्रधान मंत्री

(१९५६ से ५८ तक)

वेद-यवःथापक

(१९५६ से ६१ तक)

बना रहती थी। अतः कुछ उत्साही नवयुवका न समिति की दम रख म एक विधवाश्रम की स्थापना की जिसम स्त्रिया का 'यायालय' में लेकर रखा जाता था। कुछ काल तक यह आश्रम ठीक प्रकार चलता रहा परन्तु महिनाआ के विवाह कर लेन क पश्चात् जायम रिक्त हा गया और समिति का धनाभात्र क कारण भी इसे बंद कर रना पडा।

मन् १९२६ म हिन्दी साहित्य समिति क, संरक्षण म श्री गिराज सवादल नामक एक दल की स्थापना की गई। इस दल का उद्देश्य गज्य और जनता की सेवा करना था जसे पीडित जनता म आपधि प्रितरण, आग बुझाना, पानी म डूबे व्यक्तियों का निकालना मफाट मफ्ताहा का आयोजन, श्रावण मास मे हान वाली स्थानीय मदिरा का रामलीला के अवमरा पर उचित प्रबध एक स्वाथे विछुडे बालका का उचित स्थाना पर पहुँचाने का प्रयथ आदि।

मन् १९२७ म हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग क १७ व अधिवेशन पर भी इस दल न विगण सेवा की यद्यपि उत्साही युवका क बाहर चले जान के कारण यह दल एक वर्ष की अल्पावधि क पश्चात् ही छिन्न भिन्न हो गया। किन्तु समिति ममाज सेवा क लक्ष्य का भुला न सकी आर ऐसे दल की स्थापना के लिये निरंतर प्रयत्न गीन रही।

दिनांक १० अप्रैल १९२३ का तत्कालीन दीवान कु० श्री हीरामिह क इगित पर इस दल का पुनर्जीवित किया गया। इस समय इस दल के मभापति स्वयं श्री कु० माहब ही निवाचित किये गये। स्थापित होते ही यह दल ममाज सेवा म तन्लीन हो गया किन्तु विन्तु कारणो स दल का काय अधिक न चल सका।

वाणिज्य मन्त्रालय-गणना सूचक

क्रमांक	मन्त्र	मन्त्रालय गणना	क्रमांक	मन्त्र	मन्त्रालय गणना
१	१८१ १	०४	३	१९ ६ ६०	१६
	१८१ १६	३३१	२६	१९६० ६१	१०
	१९१६ १४	००	४४	१९६१ ६	८१
६	१९११ १९	४	५६	१९६६ ६	८१
१	१८१९ १३	१३०	७	१८६६ ६६	४९३
	१८१३ १८	१४३	८	१८६६ ६१	१९
३	१९१८ १९	१६१	२९	१९६६ ६६	३ ३
८	१८१९ २०	१३०	३०	१९६६ ६७	३८३
८	१८२० २१	१७३	३१	१९६७ १८	६८२
१०	१९२६ २३	२२८	३२	१८६८ ६९	२९०
११	१८२७ २८	२०४	३३	१८६८ ६०	६६
१२	१९२८ २८	१६६	६	१९४० ५१	३३५
१३	१९२९ ३०	१००	५	१८५१ ६	६ ३
१६	१९३० ३१	१७६	३६	१८५२ ६३	३९८
११	१८३१ ३२	१८६	३७	१८६१ ५१	५८८
१६	१९१ ३३	१३०	३८	१९५६ ६६	२५६
१७	१८३३ ३६	२१८	३९	१९६६ ५६	६०८
१८	१८ ६ ३१	२ ५	६०	१९६६ ५७	८६
१८	१८ १ ६	५३६	६१	१८५७ ६८	६३०
२०	१८ ६ ७	५५८	६२	१९६६ ६८	६५६
१	१९ ७ १८	५ ३	४	१८५९ ६०	५०१
४४	१९ ८ ९	२०७	६६	१९६० ६१	५५०

परिशिष्ट २

आजीवन सदस्य-सूची

- १ श्री श्यामनाथ धीया
- २ श्री श्रीरागवर पचाली
- ३ श्री चतुभजनास चतुर्वेदी
- ४ श्री मास्टर प्रभूनाथ गायन
- ५ श्री चिन्मीलाल पाटार
- ६ श्री जवान्तरनाथ नाथ
- ७ श्री पूनचन्द जन ठक्कर याना
- ८ श्री रायबहादुर सत भागचन्द मौनजी अजमर
- ९ श्री यामलान गुप्ता मुपुत्र श्री किराडीनाथ मुनीम
- १० श्री डा० हरिचन्द्र श्रीवास्तव
- ११ श्री नत्थीनाथ गर्मा टाटानगर
- १२ श्री भम्भनलाल रिटायर् स्टेशन मास्टर
- १३ श्री हराराम श्रीराम एजन्ट वर्मा गल
- १४ श्री रामजीलाल मट्ठगाय वान
- १५ श्री मजर धीरामिह चौधन
- १६ श्री रामस्वरूप मातानाथ वजाज
- १७ श्री पल्लाराम बद्रीप्रसाद याना
- १८ श्री मुरारीनाथ चतुर्वेदी
- १९ श्री नक्षमीन्वी गुप्ता धमपत्नी वाडू हरिस्तजी एडवोकेट
- २० श्री गगामणय मन्तमुरारी ग्वन्तार

परिशिष्ट ३

सरक्षक सूची

- १ श्री महामहापाध्याय गिरधर गर्मा नवरत्न राजगुरु भातरापाटन
- २ श्री मठ मतागानाथ मन्गाय वान
- ३ श्री मन्ट्रिचरनलान नर्म मण्नी
- ४ श्री मन्ट्र जगन्नाथप्रसाद श्रीवन्त गुरु नानन्त आइरन म्डीन्त व०

परिणत १

वार्षिक सदस्य-गत्या-सूचक

क्रमांक	सत्र	सदस्य-सत्या	क्रमांक	सत्र	सदस्य सत्या
१	१९१० १३	२००	२३	१९३८ ४०	०१६
२	१९१३ १४	३५१	२४	१९४० ४१	०००
३	१९१४ १५	३००	२५	१९४१ ४२	०८१
४	१९१५ १६	२२५	२६	१९४२ ४३	०९१
५	१९१६ १७	१७०	२७	१९४३ ४४	०९३
	१९१७ १८	१५३	२८	१९४४ ४५	०१९
७	१९१८ १९	१४५	२९	१९४५ ४६	३३७
८	१९१९ २०	१३०	३०	१९४६ ४७	३९७
९	१९२० २१	१७७	३१	१९४७ ४८	४८२
१०	१९२१ २२	०२८	३२	१९४८ ४९	३९०
११	१९२३ २४	००४	३३	१९४९ ५०	१६४
१२	१९२४ २५	१६४	३४	१९५० ५१	३७५
१३	१९२६ २६	१००	३५	१९५१ ५२	४३३
१४	१९२७ २७	१७४	३६	१९५२ ५३	३९९
१५	१९२८ २८	१८६	३७	१९५३ ५४	३८८
१६	१९२९ २९	१७०	३८	१९५४ ५५	३५५
१७	१९३० ३०	०१८	३९	१९५५ ५६	६०८
१८	१९३१ ३१	२३५	४०	१९५६ ५७	२९६
१९	१९३२ ३२	२३४	४१	१९५७ ५८	४३०
२०	१९३३ ३३	००८	४२	१९५८ ५९	४५५
२१	१९३४ ३४	-	४३	१९५९ ६०	५०१
	१९३५ ३५	००७	४४	१९६० ६१	५५०

परिगिष्ट २

आजीवन सदस्य-सूची

- १ श्री अय्यामनाल धीया
- २ श्री हीरागवर पचाली
- ३ श्री चतुभजनाम चतुर्वेदी
- ४ श्री मास्टर प्रभूलाल गायल
- ५ श्री चिन्नीलाल पाटार
- ६ श्री जवाहरनाल नाहटा
- ७ श्री पूनचंद जन ठक्कार ज्ञाना
- ८ श्री रायवहाटुर मठ भागचंद मौनजी अजमेर
- ९ श्री अय्यामनाल गुप्ता मुपुत्र श्री किराडीलाल मुनीम
- १० श्री डा० हरिचंद्र श्रीरामस्तव
- ११ श्री नत्थीनाल गमा टाटानगर
- १२ श्री मम्मनलाल रिटायर स्थान मास्टर
- १३ श्री हरीराम श्रीराम एजट वर्मा गन
- १४ श्री रामजीलाल महगाय बाल
- १५ श्री मजर धीरामिह चौथान
- १६ श्री रामस्वरूप मानानाल वजाज
- १७ श्री रत्नाराम बन्नीप्रसाद याना
- १८ श्री मुगरीलाल चतुर्वेदी
- १९ श्री लक्ष्मणा गुप्ता धमपती बाबू अग्नित्तजी एम्बोकर
- २० श्री गयामहाय मदनमुगरी टक्कार

परिगिष्ट ३

सरक्षक सूची

- १ श्री म अय्यापाध्याय निरघर गमा नवरत्न राजगुर भालरापादन
- २ श्री मर मनागानाल मन्गाय वान
- ३ श्री मर हरिचरनलाल नर मण्डी
- ४ श्री मर जगन्नाथप्रसाद श्रीपत्र गुर नानक आइरन स्टील क०

आय-व्यय निरी ११

- (१) श्री गुरुदेवता श्री निरी (१९११ -)
- (२) श्री वा क प्रमाण श्री (१९११ -)

सन् १९३६ ३०

श्री वा गुरुदेवता श्री निरी (१९११ -) (प्रधान)
 वच गानीमान श्री (उप प्रधान)
 श्री वाणीप्रमाण श्री (उप प्रधान)
 जगन्नाथप्रमाण श्री प्रसादा (मन्त्री)
 रमादात श्री गर्मा (३५) (मन्त्री)
 युधिष्ठिरप्रमाण श्री चतुर्वेदी (उप मन्त्री)
 प० रामस्वरूप श्री मिश्र (पुस्तकालयाध्यक्ष)
 श्री प्रभुनाथ गायन (उप-पुस्तकालयाध्यक्ष)
 काठारी जगन्नाथदास श्री (आय-व्यय निरी ११)

सन् १९३६ ३८

श्री वा गुरुदेवता श्री निरी (१९११ -) (प्रधान)
 श्री वाणीप्रमाण श्री उप प्रधान
 कटैयादात श्री
 रमादात श्री गर्मा मन्त्री
 युधिष्ठिर प्रमाण श्री चतुर्वेदी उप मन्त्री
 पुस्तकालयाध्यक्ष श्री
 वच दत्तप्रमाण श्री अवस्थी पुस्तकालयाध्यक्ष
 प० प्रमोदनिधि श्री गान्धी उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
 रामस्वरूप श्री मिश्र उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
 काठारी जगन्नाथदास श्री आय-व्यय निरीक्षक

सन् १९३८ ४०

श्री वा नृसिंहाय श्री दुर्ग प्रधान
 मुन्दादात श्री जानी उप प्रधान
 चिरजानात श्री पादार
 काठारी जगन्नाथप्रमाण श्री आय-व्यय निरीक्षक
 श्री चम्पाराम श्री मन्त्री
 युधिष्ठिरप्रमाण श्री चतुर्वेदी उप मन्त्री
 प० नन्दकुमार श्री

श्री चम्पालान जी कवीन्दर पुस्तकालयाध्यक्ष
प्रभुलाल गायन उप-मुस्तकालयाध्यक्ष
जयानकर जी चतुर्वेदी

सन् १९४० ४३

श्री बालकृष्ण जी दुव प्रधान
सुन्दरनाल जी जाना उप प्रधान
चिरजीनाल जी पाठार
प० नत्थनरान जी गर्मा मन्त्री
युधिष्ठिरप्रसाद जी उप मन्त्री
मदननाल जी बजाज
प्रमनिधि जी गाम्त्री पुस्तकालयाध्यक्ष
प्रभुश्याल जी उप-मुस्तकालयाध्यक्ष
तुनमीराम जी
काठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय निरीक्षक

सन् १९४३ ४६

श्री बालकृष्ण जी दुव प्रधान
चिरजीनाल जी पाठार उप प्रधान
चतुर्भुजनाम जी चतुर्वेदी
पुरुपात्तमलान जी मन्त्री
प्रभुश्याल जी श्यालु उप मन्त्री
प्रमनाथ जा चतुर्वेदा पुस्तकालयाध्यक्ष
प्रभुलाल गोयन उप-मुस्तकालयाध्यक्ष
काठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय निरीक्षक

सन् १९४६ ४९

श्री बालकृष्ण जा दुव (प्रधान)
चिरजीनाल जी पाठार (उप प्रधान)
चन्नामर जी गर्मा
पुरुपात्तमलान जी मन्त्री
प्रा० हरमहाय जी उप मन्त्री
प्रमलान गायन पुस्तकालयाध्यक्ष
श्याचन्द्र जी उप-मुस्तकालयाध्यक्ष
बनवागीरान जी आय-व्यय निरीक्षक

१९	१६५७ ४८	१२११
१७	१६१८ ५६	१६८१७
१८	१६५६ ०	१७८११
१६	१६ ६१	२१६५७

टिप्पणी—गा १६६ ग ग्रुप का विवरण उपरोक्त पृष्ठी है ।

गमिगण्ट = (५)

सूची दानदाता—नवीन भवन निर्माण हेतु (सन् १९५७)

१	विक्रम विभाग राजस्थान	३५००)
२	नगरपालिका भरतपुर	३००)
३	श्री मन्नालाल जी मॅन्गाय वान	गमिति भवन का गण
४	श्री हरिचरनचान जी नई मण्डी	१५५१)
५	महन्त श्री नारायणदास जी मन्दिर श्री मोहनजी विना	७०१)
६	श्री रामजी जगन्नाथ जा नगर गुरु नानक स्मिन्ट नई मण्डी	५ १)
७	श्री मुरारीचान जी धनुर्वेदी	१५२)
८	श्री तोनाराम रामजीलान जी महगाय वान	१५१)
९	कोठी हरभानसिंह जी	१५१)
१०	श्री धीरीसिंह जी चौहान	१५१)
११	श्री मुरलीधर महेशकुमार जी मधुरा	१५१)
१२	श्री भरतपुर आन्दोलन एण्ड मिडीकट गगामन्दिर	१५१)
१३	श्री हरीराम श्रीराम बर्मा गल	१५१)
१४	श्री बलनीराम बट्टीप्रसाद जी याना	१५१)
१५	श्री रामस्वरूप मोतीचान जी अरोडा	१५१)
१६	श्री रामचन्द जी माधुर	१५१)
१७	श्री भगवानदास जी गोठी	१५१)
१८	श्री लक्ष्मीदेवी गुप्ता धमपत्नी बा हरिचान जी एण्डबोवट	१५१)
१९	श्री रामजीचान बट्टीप्रसाद सराफ	१ १)
२०	श्री रामचरन गावि चरन जी सराफ	१ १)
२१	श्री भजनचान जी प्रसीडेण्ट नई मण्डी	१ १)
२२	श्री प्राहित विद्याधर जी	१ १)
२३	श्री मन्मथचान जी वकील	१०१)
२४	श्री सूरजमत प्रभुचान जी छात्र	१०१)
२५	श्री साधुराम जी ठकदार	५१)

२६	श्री दुर्गाप्रसाद निरजनलाल बजाज	५१)
२७	श्री रामचन्द्र कृष्णलाल बजाज	५१)
२८	श्री राधेनाथ जी गणगीलाल जी मराफ	५१)
२९	श्री रामनारायण मन्गरीरामजी मन्गाय वान	५१)
३०	श्री नन्दालाल जा गमा टागनगर	५१)
३१	श्री नन्दालाल प्यागलाल श्रावतिया	५१)
३२	श्री कन्हैयालाल बन्दीप्रसाद जी उच्चन	५१)
३३	श्री मिश्रनलाल जगन्नाथप्रसाद महगाय वान	५१)
३४	श्री मावर्गमिह पन्नालाल जी उच्चन	५१)
३५	श्री सामन्तियाराम रामचरननाथ जी कमर	५१)
३६	श्री कन्हैयालाल छत्रविहारी जी मौगगर	५१)
३७	श्री चुन्नीलाल रामप्रसाद जी बजाज	५१)
३८	श्री ठा० मन्ाराम जा रिटायर अपसर काठा खास	५१)
३९	श्री गापायलाल जी गायन एम काम०	२१)
४०	श्री बजनाथ जी मराफ	११)
४१	श्री प्यागलाल जी मराफ	११)
४२	श्री बानूलाल जी हनवाइ	११)
४३	श्री तन्तूलाल जी मार्चिकन वान	११)
४४	श्री स्वामचन्द जी गुप्ता महल खास	११)
४५	श्री छोटलाल नारायणलाल जी परचूनिया	११)
४६	श्री मोहनलाल जा मराफ गप्पी न० ६७	११)
४७	श्री कलागचन्द जी गप्पी न० १८१	११)
४८	श्री चौ० लोनतराम जी चतुर्वेणी	११)
४९	श्री रमनलाल जी बजाज गप्पी न० १८१	१२)
५०	श्री राधारमन बूरे वान गप्पी न० ८२	७)
५१	श्री राधारमन बूरे वाल गप्पी न० ४६०	७)
५२	महत श्री गगनालाल जी महाराज	७)
५३	श्री स्यावन्ग जी पटवारी	५)
५४	प० गौरीगकर जी श्रागा	५)
५५	श्री राममहाय जा नागनी	५)
५६	श्री बेलावन्गजी गायलग	५)
५७	श्री रामकिशन जा अनाह ग	५)
५८	श्री मूरजमान चन्धान	५)
५९	श्री ब्रजगमिह जी गापालग	५)
		२)
		२)

६०	श्री मा नगा । श्री प्रसाद	१)
६१	श्री मा नी गग श्री गानागगद	१)
६२	श्री गृह नगद श्री गत्राणी	१)
६३	श्री गगुणनस श्री गान्धी	१)
६	श्री गगयीप्रगाद श्री	२)
६१	श्री बार्सात श्री गगग	२)
६	श्री ग गगि श्री गगगगद	१)
६७	श्री गगगि श्री गगगगद	१)
८	श्री मा गगगगगग श्री	१)
६८	श्री गगगीप्रगाद श्री गगगग	१)
७	श्री गगगगग श्री गगगगग	१)
१	श्री गगगगग श्री गगगग	१)
७२	श्री गगगगग श्री	१)
७	श्री गगगगग श्री	१)
७८	श्री गगगगग श्री	१)

परिगण ६

आय व्यय श्री हिंदी साहित्य समिति भरतपुर

क्रम	सत्र	आय	व्यय
१	सन् १९१२ १३	८ ६ ७२	६६० ४१ न प
२	१९१३ १४	१०२५ ६	१ २७ ३७
३	१९१४ १५	५५६ ०	५४५ १२
४	१९१५ १६	३ ८ ८८	३६१ ००
५	१९१६ १७	३ १ ७	२७६० ७३
६	१९१७ १८	२७७४	३१३६ ५८
७	१९१८ १९	१८४१ ६२	१८७४ ८८
८	१९१९ २०	२५५ ८८	२३७ ५६
९	१९२० २१	६६६ ३७	४०४ ८८
१०	१९२१ २२	१४४ ६१	३८७ ७१
११	१९२२ २३	५७३ ०२	५६० ८६
१२	१९ २४	४४६ २२	३१६ २७
१३	१९२५ २६	६५१ ८८	३६६ ५३
१४	१९२६ २७	४०७ ६२	८ ८ ७८
१५	१९२७ २८	६१२ ३३	१६३१ ३

୧୧	୧୧୨୭ ୬୩	୧୧୦୭ ୧୦	୧୧୧୩ ୧୩
୧୨	୧୧୪୩ ୯	୧୧୧୬ ୭୪	୧୧୪୭ ୧୭
୧୩	୧୧୨୧ ୩୦	୧୧୧୧ ୨୪	୧୧୪୭ ୧୭
୧୪	୧୯ ୪୧	୧୧୧୩ ୨୪	୧୧୪୭ ୧୭
୧୫	୧୧୩୧ ୩୨	୧୧୧୭ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୧୬	୧୧୩୨ ୩୩	୧୧୧୮ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୧୭	୧୧୩୩ ୩୪	୧୧୧୯ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୧୮	୧୧୩୪ ୩୫	୧୧୨୦ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୧୯	୧୧୩୫ ୩୬	୧୧୨୧ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୦	୧୧୩୬ ୩୭	୧୧୨୨ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୧	୧୧୩୭ ୩୮	୧୧୨୩ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୨	୧୧୩୮ ୩୯	୧୧୨୪ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୩	୧୧୩୯ ୪୦	୧୧୨୫ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୪	୧୧୪୦ ୪୧	୧୧୨୬ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୫	୧୧୪୧ ୪୨	୧୧୨୭ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୬	୧୧୪୨ ୪୩	୧୧୨୮ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୭	୧୧୪୩ ୪୪	୧୧୨୯ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୮	୧୧୪୪ ୪୫	୧୧୩୦ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୨୯	୧୧୪୫ ୪୬	୧୧୩୧ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୦	୧୧୪୬ ୪୭	୧୧୩୨ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୧	୧୧୪୭ ୪୮	୧୧୩୩ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୨	୧୧୪୮ ୪୯	୧୧୩୪ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୩	୧୧୪୯ ୫୦	୧୧୩୫ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୪	୧୧୫୦ ୫୧	୧୧୩୬ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୫	୧୧୫୧ ୫୨	୧୧୩୭ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୬	୧୧୫୨ ୫୩	୧୧୩୮ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୭	୧୧୫୩ ୫୪	୧୧୩୯ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୮	୧୧୫୪ ୫୫	୧୧୪୦ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୩୯	୧୧୫୫ ୫୬	୧୧୪୧ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୦	୧୧୫୬ ୫୭	୧୧୪୨ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୧	୧୧୫୭ ୫୮	୧୧୪୩ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୨	୧୧୫୮ ୫୯	୧୧୪୪ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୩	୧୧୫୯ ୬୦	୧୧୪୫ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୪	୧୧୬୦ ୬୧	୧୧୪୬ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୫	୧୧୬୧ ୬୨	୧୧୪୭ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୬	୧୧୬୨ ୬୩	୧୧୪୮ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୭	୧୧୬୩ ୬୪	୧୧୪୯ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୮	୧୧୬୪ ୬୫	୧୧୫୦ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୪୯	୧୧୬୫ ୬୬	୧୧୫୧ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୦	୧୧୬୬ ୬୭	୧୧୫୨ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୧	୧୧୬୭ ୬୮	୧୧୫୩ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୨	୧୧୬୮ ୬୯	୧୧୫୪ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୩	୧୧୬୯ ୭୦	୧୧୫୫ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୪	୧୧୭୦ ୭୧	୧୧୫୬ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୫	୧୧୭୧ ୭୨	୧୧୫୭ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୬	୧୧୭୨ ୭୩	୧୧୫୮ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୭	୧୧୭୩ ୭୪	୧୧୫୯ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୮	୧୧୭୪ ୭୫	୧୧୬୦ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୫୯	୧୧୭୫ ୭୬	୧୧୬୧ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୦	୧୧୭୬ ୭୭	୧୧୬୨ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୧	୧୧୭୭ ୭୮	୧୧୬୩ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୨	୧୧୭୮ ୭୯	୧୧୬୪ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୩	୧୧୭୯ ୮୦	୧୧୬୫ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୪	୧୧୮୦ ୮୧	୧୧୬୬ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୫	୧୧୮୧ ୮୨	୧୧୬୭ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୬	୧୧୮୨ ୮୩	୧୧୬୮ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୭	୧୧୮୩ ୮୪	୧୧୬୯ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୮	୧୧୮୪ ୮୫	୧୧୭୦ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୬୯	୧୧୮୫ ୮୬	୧୧୭୧ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୦	୧୧୮୬ ୮୭	୧୧୭୨ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୧	୧୧୮୭ ୮୮	୧୧୭୩ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୨	୧୧୮୮ ୮୯	୧୧୭୪ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୩	୧୧୮୯ ୯୦	୧୧୭୫ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୪	୧୧୯୦ ୯୧	୧୧୭୬ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୫	୧୧୯୧ ୯୨	୧୧୭୭ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୬	୧୧୯୨ ୯୩	୧୧୭୮ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୭	୧୧୯୩ ୯୪	୧୧୭୯ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୮	୧୧୯୪ ୯୫	୧୧୮୦ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୭୯	୧୧୯୫ ୯୬	୧୧୮୧ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୮୦	୧୧୯୬ ୯୭	୧୧୮୨ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୮୧	୧୧୯୭ ୯୮	୧୧୮୩ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୮୨	୧୧୯୮ ୯୯	୧୧୮୪ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭
୮୩	୧୧୯୯ ୧୦୦	୧୧୮୫ ୧୦	୧୧୪୭ ୧୭

परीक्षार्थी विवरण, परीक्षा केंद्र स्थापित १ मितम्बर १९२६
प्रथमा, मध्यमा, (उत्तमा १९५१)

गण	प्रथमा	मध्यमा	उत्तमा	१ ति	२ ति	उत्तर
१८५६	१	१				
१९००	१	२				
१९	५	१				
१९ ४			✓	४		<
१८ ६	✓	✓	<	६		✓
१८३७	१		<	७	✓	×
१९ ८	<	१		१		×
१८३९		६				✓
१९६	१	१	<		५	
१९४१	१	४	×	१	×	<
१९४२	१	८	<	१	५	×
१९४	✓	१	×	१	✓	×
१९४४	३	२	✓	<	५	×
१९४५	५	१	<	×	५	×
१९४	×	१०	×	×	५	
१९४७	१०	१६	×	×	×	×
१९४८	२७	४		<		✓
१९४८	२३	१२	×	१८	५	×
१९५	८	४०	✓	१३	×	५
१९११	१८	७१	४३	८	१	५
१९५२	८	९८	६८	१८	३	८
१९५	८	५१	५३	२९	२	७
१८५४	३	३	६२	१९	×	३
१९५५	१०	३७	९	१८	६	९
१९५६	९	१८	३५	२८	३	६
१९५७	७	२५	३१	२४		६
१९५८	२	१९	१९	६	१	९
१९५९	×	१०		६४	२	२९
१९	४	३२	४३	६८	८	२२

समिति में समय-समय पर आने वाले विविध व्यक्तियों की कतिपय

सम्मतियों

अरतपुर का हिन्दी साहित्य समिति का अवनावन किया। चिन यदा
मग्न हुआ। उसका पुस्तकालय भी था। पुस्तकालय का महत्त्व भा यामा है।
समय हिन्दी का प्रचार मत्र म हा रहा है। इसका मवानक व उत्साहा और
वापकुगत है। भगवान कर इसका लिन लिन उग्रति हो।

जन् वृत्तणा २ म० १९७२

—जगन्नाथ चतुर्वेदी कतकता

अरतपुर का हिन्दी साहित्य समिति उन उत्साहिया से मचलित
मग्न है जिनम प्राण है जिह् भाव है और हृत्त्य है। भारत क इस प्रात म
सम मग्न्या का ज्ञाना आवश्यक है यह प्रात कवन सम मग्न्या की सफलता से
प्रमाणित जाना है। समकी अधिक सफलता की आशा करना ता हमारा कन्य
न है परन्तु उमम मपधान कतक्य यहाँ क उमाहा विगना का है जिनक
प्रयत्न पर मारी आशा की पूति है।

आमा-क० १०-७२ वि०

—साहित्याचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

गान्गा सम्पादक प्रयाग

मन स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति का निरीक्षण किया और कायकर्ताओं
क स्वाभाविक उत्साह और कायनिष्ठा देखकर मैं बहुत मनुष्य हुआ हूँ।
सम समिति गरा हिन्दी दवनागरी जगत की बहुत कुछ आशा उग्रति क
निम मग्नता हुआ मगर म समकी दृढता क निय प्रार्थी हूँ।

दि० २० ६ १।

—गणगदत्त शास्त्री

हिन्दी साहित्य-समिति अरतपुर का पुस्तकालय रखन का आज मुझरा
गोभाग्य प्राप्त हुआ-सम कर वहा जान- हुआ—मभाग्य का उत्साह अथवा
प्रगमनाय एक अनुकरणाय है। अरतपुर राय ये अनक उत्तमात्तम हिन्दी कवि
हूँ है—उनक हस्तलिखित बहुमूल्य ग्रन्था का गान और उनक मग्न व प्रमाण
म हिन्दी मगार का बहुत लाभ पत्रक मचना है। आशा है कि समिति यदा

सति ग काय का भी हाथ में लगी—^६ पर ग प्रायना है कि समिति की उमरगत उन्नति पर और हिन्दी की सेवा में लगना पूरा मंगलता प्राप्त है।

दि ११ १

—श्रीधरगुरु मारिज

मम० ल लल लल ली अ।ग।

हि साहित्य समिति भरतपुर व मस्या का क्या बड़ा है प्रगतिपथ है। राजपूताना में यह पहली साहित्य समिति है। उम्मा सा मस्या का बड़ा उत्तरता व साथ स्वयं-स्वयं कर समिति का गुन्तर ममान भी बना लिया है। पुस्तक का मस्या भी अच्छी है। मार्गिक साप्ताहिक और प्रतिपदा की सस्या भी अच्छी है। यहाँ के पुस्तक आदि व पत्रा वाचा की मस्या बन्द बना है। सभी समितियाँ म जानता का बहुत लाभ पहुँच मकना है। धार क्या पत्र मैन इम मस्या का लगा था। उममें जीर आज की लगा म बन्द अतर है जीर जागा है कि एक उत्साही मभामण मकना और भी उन्नति स्वर जनता व पान-मपात्र म महायत्न हाँगे। प्रत्यक्ष हिन्दी प्रमो का लगी मगायता करनी चाहिए। एक समिति की वनमान उन्नत लगा लगर मभ बड़ा हय हुआ।

दि ०१

—गौरीगकर श्रीरावड ओभा

हि साहित्य समिति भरतपुर का स्वर मुभ बड़ा प्रगतिपथ है और इसक इतिहास को जानकर इमक सचालका के प्रति मर मन म उदा का आविर्भाव हुआ। उनक हिन्दी प्रम लगन और मरसात्म व निय मे उनक चरणा म उदाञ्जनि अर्पित करता है।

समिति निस्सन्देह राजपूताना की उष्ट सस्याआ म म है। इसक लारा जो काम हुआ है वह अभिनन्दनीय है और अब भविष्य म उमक द्वारा जा हिन्दी साहित्य की सेवा हान वाली है जागा है वह हिन्दी समाज व लिए प्रममय गव की चीज हागी।

ईश्वर म यही प्रायना है कि समिति उत्तरात्तर उन्नति कर जीर इसके सचानकगण अपन सौभाग्य के हिन्दी म उन दिव्य गुणा का न भूत जिनक वन पर वह समिति को एक रूप म लाने म समथ हुए है।

समिति का प्रबन्ध जल्दा है। प्रबन्धक स्वयं विचारमिक् है इसलिये वे वने ही प्रम म काम करत है जम मानी अपने लगाय हुए कृशो की ममता व साथ स्वरम करता है।

भरतपुर

४ २७

—क्षमानन्द राहत

भरतपुर जिनकी माहिल्य समिति का निगमण करने पर यह पता चला कि समिति का काय काम है। पुस्तकालय और वाचनालय का प्रबंध जिसे उत्तमता से किया जाता है वह एक आत्मा की वस्तु है। यहाँ समिति का गहरा बड़े बड़े धनीमानी मज्जना का महयाग प्राप्त है और वह लाग बड़े मवाभाव से उमक प्रत्येक काय में याग देते हैं। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि समिति में समिक मभाए हाता है और उनका द्वारा माहिल्य की समस्याओं पर विचार सामिक मभाए हाता है। समिति का अपनी इन मभाओं में कुछ रचनात्मक काय भी जाहना चाहिए। विभिन्न यक्तियों के जिम्मे माहिल्य के प्रमुख अंगों का अध्ययन और परिशीलन का काय सुपुत्र करके स्थायी काय का प्रयत्न भी करना चाहिए। साथ ही आगरा और मथुरा के निकट हान का नाम भी वहाँ के माहिल्यिका म मन्व रचनात्मक काय के लिये आमन्त्रित करके प्राप्त करना चाहिये। भगवान समिति के काय का उत्तरोत्तर बढ़ावें यही कामना है।

भरतपुर
१४/६/११

—पद्मसिंह शर्मा

भरतपुर माहिल्य समिति का काय दृष्टकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ के कायकत्ताओं का मदभाव मन्त्र और सेवा का आत्मा भी वस्तु है। समिति का भी एक मजीब मस्था के रूप में पिछले ३२ वर्षों से काय करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मन्व पाम अपना भवन है पुस्तकालय है वाचनालय है। २०० से अधिक मन्व्य हैं और सरस अधिक जनता की महानुभूति प्राप्त है। भरतपुर राज्य में माहिल्य सेवा का जो सराहनीय काय समिति कर रही है उसकी अधिक प्रशंसा न कर मैं यही कहना चाहूँगा कि वह अपना कायक्षण बढ़ावें। राज्य के स्थान-स्थान ग्राम ग्राम में साहिल्य के केंद्र स्थापित कर और अपने सम्पक को राज्य के बाहर भी स्थापित रखें। मैं समिति की पूरा मफलता चाहता हूँ।

—जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
ब्रज माहिल्य मन्त्र मथुरा

जिनकी माहिल्य समिति भरतपुर के वापिकात्सव पर मरा यहाँ आना हुआ। समिति का काय दृष्टकर बड़ी प्रसन्नता हुई। समिति की उत्तरात्तर उन्नति के लिए दृष्ट्य से शुभाकांशी हूँ। यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि समिति सम्मान की परीभाषा का लाकप्रिय बनाने में याग कर रही है। आगा है कि यह समिति जिनकी भाषा और माहिल्य के प्रचार तथा अभिवृद्धि में योग देगा।

१४/६/११

—गुलाबराय एम० ए०
प्रो० सेंट जाम कालिज आगरा गिटाप
प्रान्त सक्ती मन्त्रपुर मन्त्र

भात्रि १। गार्ग्य गमिनि के दार्शनिक गणनाएँ व भ्रमण पर उभर
 चारों तरफ तथा पुस्तकालय की गरीब भ्रमण मिता। गमिनि प्रयोग उभ
 योगी काय कर रही है और गण प्रगता का बाण है कि उभका गणनाएँ गुणाएँ
 हाया म है। गणनाएँ गरीब गरीब गणना और गणना हाया गरीब
 गार्ग्य व अप्यरा भ्रमण का और गार्ग्य व प्रमाण का भा
 प्रयोग कर। गणना भ्रमण व गणना उभका गणना है गणना म मयुग
 और गणना व गणना और गणना गणना व गणना म गणना है।

—महर्ष

१६६६१

गणना० गार्ग्य गणना

भरतपुर म स्वर्गीय गणनाएँ जो गार्ग्य व प्राधान पुस्तक व गार्ग्य-वाय म
 अद्या प्रयत्न किया है। गमिनि उभ गणना म गणना व गणना गणना है।

गोपालप्रसाद गणना

मैंने सोभाग्यवश २। भरतपुर गणना गार्ग्य गमिनि गणना। मैं समझता
 हूँ ममस्त प्रांत म गमिनि गणना गमिनि गणना का स्थान है राजस्थान (राज
 पूतान) म गणना गणना का गणना एक मुन्दर-मुषण गणना है। गणना व गणना आ गणना
 का दसकर किस गणना भक्त वी जीव गणना न गणना? राजस्थान व गणना
 गणना निवेत म मैंने एक गणना प्ररणा प्राप्त की है प्रयोग गणना म गणना
 व गणना भरतपुर आश्रम स्थापित हान चाहिये। जहाँ तक राजस्थान गणना
 साहित्य सम्मेलन का सवाल है उसे हम उस गमिनि व वायकत्ताओं व जयन्त
 तथा अद्विराम उत्साह तथा प्रयत्न स उभका गणना ग्रहण करना चाहिये।

आज जब गणना पर चतुमुखा प्रहार हा रहा है गमिनि व गणना की
 गणना भक्ति देखकर यह गणना हाता है कि राजस्थान म गणना का बाल
 वाका न हागा। समृद्ध पुस्तकालय विस्तृत वाचनानय तथा एक मजीव वाता
 वरण एक सावजनिक मस्था के लिए स्थायी प्राणधारण है। म गमिनि व
 कमनिष्ठ अधिकारिया तथा मजीव उत्साही गणना म नम्रतापूर्वक प्राथना
 करुणा कि व गमिनि व अधान गणना पाठगणनाएँ खाल जहा निरक्षर पणाय
 जाय। गमिनि के पास प्राचान साहित्य का अद्या मणना भा है। वगणना अद्या
 हा उनकी एक दित्रिलाग्राफी बन जाय।

वाकी ता मैं सोचकर ही जा रहा हूँ। मैं गमिनि व अतीत और आज व
 सभी तपस्वी वायकत्ताओं का उभका गणना प्रणाम करता तथा उन सबका जभि
 नमन करता हूँ।

—जनादनराय नागर

१६६६१

प्रधान मंत्री राजस्थान हि सा सम्मेलन

बहुत जिना की बात है जब मैं अपने परम सुहृद् श्री अग्रिवारी जा क
 यहाँ भरतपुर में अतिथि हुआ था उस समय भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति
 नरजात गिनी थी। उस घटना के ऊपर मैं डॉ० दशरथ शर्मा से भी अधिक वर्षों का
 प्रवाद प्रवाहित हो चुका है। आज मुझे पुनः इस समस्या के जिसमें जनक तजस्वी
 आत्मा का सबसे जोत प्राप्त है—उस समिति के माननीय मंत्री पंडित
 श्री नरहरालाल जी शर्मा के साथ जब तक बनने का सुअवसर प्राप्त न
 है। समिति के अपने सुहृद् भवन में सुहृद् बृहत् पुस्तकालय का देवकर परमा
 न्त हुआ। वह पुस्तकालय जो राष्ट्र धर्म समाज के पवित्र और आजपूर्ण
 तत्वा के साथ खड़ा है अत्यंत ही प्रजा के उत्पत्ति के सम्पात्क हैं। मैं न
 कि समिति के हम पुस्तकालय में पुस्तक का समग्र विचारपूर्ण उत्तरता के साथ
 हुआ है। बरिद साहित्य का भी समग्र है लौकिक साहित्य का भी समग्र है।
 हिन्दी के प्राचीन और नवान कवियों के काव्य का अधिक मात्रा में समग्र है।
 पुस्तकालय राष्ट्र की एक बड़ा भारी सम्पत्ति होता है। पुस्तकालय राष्ट्रीय
 कवियों के और कला का चिरस्थायी स्मारक होता है। अतः इसके
 प्रति श्रद्धापूर्ण भक्ति का होना स्वाभाविक है। पुस्तक के अतिरिक्त यहाँ न
 साहित्यिक सामग्री के भी समावेश है जिसमें भरतपुर की जनता का
 अधिक लाभ उठाने का सुअवसर मिलता है। यहाँ हमने विभिन्न प्राचीन
 पुस्तक का भी समग्र है। पुस्तकालय की सुव्यवस्था का देखकर यह निष्कर्ष
 प्रतीत होता है कि हमारे कार्यकर्ता उत्साही और महानुभाव हैं। उनके उत्साह
 की वृद्धि हो और यह समिति अनेक नवीन कार्यों के सम्पादन करने में
 सफल हो यह मेरा शुभचिन्ता है।

पा० गु० १ १९६८ वि०

—स्वामी भगवदाचार्य
 चम्पा गुफा माउन्ट आन

भरतपुर में आज प्रसंगिक आकर जो सबसे अद्भुत वस्तु मुझे मानना है
 वह न्यायाय हिन्दी साहित्य समिति है। राजस्थान की यह अतिथि समस्या
 राजस्थान के प्रगतिहीन शासक वर्ग का चुनौती सी देती है न और न
 का वर्तमान आशावादी के सूत्र में समाहित कर रही है और कमजोरी का
 जीवन उत्तरण उपस्थित कर रही है। इस समस्या के समाधान का मैंने
 मुझे उस अध्ययनमानता तथा अत्यंत उमाह का परिचय मिला जिस
 हान पर ही मेहनत कार्यों का सम्पन्नता प्राप्त होती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति उत्तरान्त
 उन्नति करती हुई राजस्थान के अर्थ प्रान्ता में भी जीवन-संचार कर सकेगी।

दि० २५/६

—रामकृष्ण शुक्ल

नवागीण वाचनानय चल रहा है। भरतपुर की यह एक विगिण्ट मस्या है। मम्बार दान का यह उत्तम माधन है। भरतपुर के नागरिका का एसा मस्या बनान के निय धयप्रान् लिय रिना नही रहा जाता। आगा है कि एम मस्या की जनरोत्तर प्रगति हाती रगी। मम मचावका का परिश्रम मुफ्रित हुआ है। भगवान मस्या पर एया वरमाता र ।

भरतपुर
१ १ ५४

—गोकुलनाई भट्ट

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का आज मुभ दमन का अवसर मिता। या ता मरा भरतपुर म वृत्त पुराना यनिठता का मम्बार है परन्तु समिति क मचालका न मुभ पहल यहाँ आने का अवसर नही दिया। आज एम मस्या का विगालिता का एमन हुए यह मरा गिकायत का कारण बन गई एसा म मानता है।

मचमुच ही य एम गौरव की यात है कि यह मस्या पिछन ८१ वष म काम कर रही है और रिनादिन उन्नति करती जा रहा है। यह म्चय म एम मस्या की नाकप्रियता का एक मवूत है। मचावका न मुभ बताया कि एम मस्या न कइ प्रकार के उतार चनाव दम है परन्तु अपना क्त यनिठता क कारण अपना प्रगति जारा रखन म सफन हन है। आज एम राय म भी ठीक मी महायता मिनन नगी है इमीलिंग मस्या क मचालका का गायन यह उल्माह हुआ है कि एमक निय मुन्तर भवन बनाय। इमक निय प्रयाम भी गुत् हा गय है। मैं एमी पुराना और नाकप्रिय मस्या की उतरात्तर उन्नति का कामना करता हू। पूव सवा-वाय और इतिहाम एनी महानुभावा का इम मस्या का और भा उपयागा बनान क काय म महायता कर्न क निय प्रभावित करगा एसा मरा पूण आगा है ?

भरतपुर
१ ४ ५८

—भालानाथ तिवारी
गिना मत्रा राजस्थान

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की प्रमुष सासृतिव मस्या है। यहाँ एक ही हास्कुन है एक ही कानज है एक हा मिनया है और एक हा साहित्यिक मस्या है। समिति क पाम अट्या पुस्तकानय है और उल्माहा कायकर्ता है। यनी का जनता का सासृतिव म्तर उचा कर्न क लिय यह मराहनीय प्रयन कर रही है। मैं उमकी निरन्तर मरनना चाहता हूँ।

१५ अगस्त १९५४

—रामवितान गर्मा

सजागीण वाचनालय चले रहा है। भरतपुर की यह एक विगिष्ट मस्या है। मस्कार लान का यह उत्तम माधन है। भरतपुर के नागरिकों का लमा मस्या चलान के नियम धरवाने नियम बिना नही रहता जाता। आगा है कि लम मस्या की उत्तरात्तर प्रगति हानी रहगी। सब सचानका का परिश्रम सुफलित हुआ है। भगवान मस्या पर लमा बरमाता है।

भरतपुर
११५४

—गोकुलभाई नट्ट

श्री हिन्दा माहित्य समिति भरतपुर का आज मुझ लखन का अवसर मिला। या तो मरा भरतपुर न बरान पुराना घनिष्ठता का सम्बन्ध है परन्तु समिति के सचानका न मुझ पत्रन यहा आने का अवसर नहा मिया। आज लम मस्या का विगतता का लखन हुए यह मरी गिकायन का कारण बन गई लमा ये मानना है।

मसमुच ही यह एक गौरव की बात है कि यह मस्या पिछन ८१ वर्ष के काम कर रही है और निनालिन उन्नति करती जा रहा है। यह स्वयं म लम मस्या की लोकप्रियता का एक सबूत है। सचानका न मुझ बनाया कि लम मस्या न के प्रकार के उनार चलाव लम है परन्तु अपना कल प्रनिष्ठा के कारण अपनी प्रगति जारी रखने में सफल है। आज लम गाय म भी ठीक सी मगाप्रता मिनन गगी है इसीलिए मस्या के सचानका का गायन यह उत्साह हुआ है कि लसक लिये मुत्तर भवन बनाय। इनके लिये प्रयास भी शुरू हो गये है। मैं लमा पुराना और लोकप्रिय मस्या का उत्तरात्तर उन्नति की कामना करता हूँ। पूर्व सवा-नाय और ललिताम दाता महानभावा का लम मस्या का और भा उपयोग बनान के काय म सहायता करन के लिये प्रभावित बग्गा लमा मरा पून आगा है ?

भरतपुर

१०४१४

—भोनाताय तिवारी

गितामत्रा राजन्धान

हिन्दी माहित्य समिति भरतपुर की प्रमुख मासिक मस्या है। यह एक ही हार्मोन है एक ही कानज है एक ही मिनमा है और एक ही माहित्य मस्या है। समिति के पास अल्लु पुम्तरानय है और उत्साह कायकता है। पनी की जनता का साहित्य स्तर उचा करन के लिये यह मराहनीय प्रयत्न कर रही है। मैं उसकी निरन्तर मफचना चाहता हूँ।

१५ अगस्त १९५४

—रामवितास गर्मा

मैंने इस पुस्तकालय का गया। चित्त प्रमत्त हुआ। तबभग ६५ वर्ष में यह मस्था जनता का अनुपम सेवा कर रही है। इस मस्था का राजस्थान की प्राचीनतम मस्थाओं में गणना जा सकता है। पुस्तकालय समाज के बौद्धिक जीवन का प्राण है। इसमें सर्वापयोगी ग्रन्थें हैं। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थें इसमें रखी प्रमत्तता हुई। इस पुस्तकालय के नियम भवनों निमाण का प्रश्न है। मस्था के कार्यकर्ताओं का उत्साह देखकर यह प्रतीत होता है कि यह कल्पना मूलक धारण कर लेगी।

—रामचन्द्र वामन कुमार

१११११

डिप्टी टायरेक्टर शिक्षा विभाग जयपुर

मैंने बहुत समय में लगातार माहिल्य प्रचार का काम करती रही है। पुस्तकालय और वाचनानय का कार्य उत्तरात्तर प्रगति पर है। जो भाई इसमें योग्य हैं वे धन्य हैं। कार्य बहुत उत्तरदायित्व का है। किम पाठक का कमी चीज परन्तु का ली जाय और कौनसी सामग्री पुस्तकालय में रखन योग्य है इस विषय में मन्त्र मतक रहने की आवश्यकता है। पुस्तकाध्यक्ष का अध्ययन और मनावनानिक ज्ञान बहुत उच्च स्तर का होना ही चाहिए। आशा है राज्य और समाज का इस मस्था को यथेष्ट महत्ता मिलना रहेगा।

भारतीय ग्रन्थमाला
दारागज (प्रयाग)

—भगवानदास बेला

१६६५५

मैंने आज इस मस्था को देखा। वास्तव में यह एक ठाम सेवा कर रही है। मैं आशा करता हूँ कि थोड़े समय में यह एक विज्ञान रूप धारण कर लेगी।

१४१२५५

—विक्रमप्रसाद सूद

डिप्टी सत्रटरी शिक्षा विभाग

मुझे आज इस पुस्तकालय और प्रतिष्ठित माहिल्य मस्था और इसके वाचनानय का स्वरूप बहुत स्पष्ट हुआ। कई पुरानी स्मृतियाँ ताजा हुईं। यही मन्त्र रखा कि अजित समय क्यों नहीं ले सका। इसमें नई मन्त्रें दिखी पुस्तकालय का संपन्न है—यह इस बात का सूत्र है कि यहाँ के निवासी समय के साथ हैं। माहिल्य केवल मनावनानय या समय यत्नीय करने का ही आशा मानने नहीं है बल्कि समाज का नई चेतना और निमाण का भी ज्वलन्त प्रवर्धन माधन है। आशा है भरतपुर के निवासी इसमें पूरा लाभ उठाते होंगे। मैं इसकी हर तरह उत्प्रेरणा चाहता हूँ।

दि १३०१

—हरिभाऊ उपाध्याय

वित्त मन्त्री राजस्थान

आज भरतपुर नगर की श्वा हिंदा साहित्य समिति व वाचनालय और उमक पत्राधिकारिया और कमचारियों के उत्साह को देखकर मुझ बहुत हृष्य हुआ । किन्ना भी दण के नियम उमका पुराना इतिहास और मस्तिष्क एक गौरव की बात बताता है । किन्ना अपन साहित्य का जान काइ भाँ यक्ति नग भक्त और दण-मवक जाने का अधिकारी नहीं हो सकता । यह जानकर मुझ और अधिक प्रसन्नता हुई कि यह मस्तिष्क ५० वर्ष से मातृ भाषा की सेवा कर रही है । मुझ पूरी आशा है कि नगर निवासी और राष्ट्रीय कमचाराणय इस मस्तिष्क का उचित सहायता करग ।

दि० १५/६

—महाश्रीर त्यागी
रक्षा मंत्री केन्द्रीय सरकार

आज समिति की मुतावात ली । मुझ बहुत प्रसन्नता हुई । भारतवासियों की हिन्दी साहित्य द्वारा सेवा करन का समिति के सचालका तथा सदस्यों का मनोकामना पूरी हो ।

२७/२/५०

—उच्छङ्कराय नवलशकर दबर
कार्यक्रम अध्यक्ष

आज मुझ हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर व देखने का मौभाग्य प्राप्त हुआ । समिति का भवन एक सुन्दर स्थान है पुस्तक व रखने का ढग बहुत अच्छा है । पुस्तकालय में पुस्तक का संग्रह बहुत लाभप्रद है ।

समिति एक बहुत ही प्रगतिशील काम कर रही है और उम भरतपुर व सभी वर्गों में मन्थन व सहायता मिल रहा है ।

११/११/५०

—जे० डी० वश्य
डिप्टी डायरेक्टर शिक्षा विभाग काटा

आज मन हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर व काम का देखा । मुझ यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि इस समिति व पाम अच्छे कार्यकर्ता हैं और उन्होंने सुन्दर भवन का निर्माण किया है । आशा है शेष काम भी मव व सहायता में सम्पूर्ण हो जायगा और यह स्थान हिन्दी की सेवा का प्रमुख कारण बनगा ।

१०/५/०

—मोहनलाल सुम्राडिया
मुख्य मंत्री राजस्थान

अच्छी मस्तिष्क अच्छे कार्यकर्ता और अच्छे काम । हिन्दी की सेवा विनाश रूप में गराशनीय शक्ति म प्रापना कि मस्तिष्क व विकास में सहायता कर ।

४/१२/५०

—गम्भूलात शर्मा
डिप्टी डायरेक्टर

गणम प्रती वात जा यती गी वर है गीजय आर मदनगर । भरतपुर
हिंदी साहित्य समिति व पुस्तकालय बन पूर ।

—गम्भुप्रसाद बट्टगणा

० ११ ५६

हिन्दी अध्यापक जा^० टी वाचन नमनऊ

आज मन हिन्दी साहित्य समिति का भवन एवं पुस्तकालय दखा । य
दखकर प्रमन्नता हानी है कि यज्ञभूमि व इस साहित्य क म आज भा साहित्य
साधना क निय उपयुक्त स्थान विद्यमान है और उनकी विभिन्न उन्नति की
हाती जा रही है । इस क्षेत्र द्वारा यान इस भरतपुर क्षेत्र क विगत साहित्य
कारा की खाज एवं उनकी कृतिया क संरक्षण और उद्धार का काम किया
जावगा ता एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण कार्य होगा । मैं हृदय स इस समिति का
उन्नति चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि साहित्य प्रचार एवं ज्ञान प्रसार क
साथ ही प्राचीन साहित्य की खाज तथा संरक्षण की भी जाय समिति पूरा-पूरा
ध्यान देनी रटगी ।

—रघवीरसिंह

१२६ ०

सन्स्य राय-सभा

मैंन आज हिन्दी साहित्य समिति का भवन तथा पुस्तकालय दखा । भरतपुर
जमे स्थान में बनता मुख्यवस्थित पुस्तकालय तथा वाचनानय दखकर अत्यंत
प्रमन्नता हुई । समिति क पास पुस्तका तथा हस्तलिखित पुस्तका का एक बड़ा
मूल्य संग्रह है । समिति क कार्यकता इसके निय बधाइ क पात्र है । पुस्तकालय
तथा वाचनानय क अतिरिक्त समिति सम्मन्त परीक्षाआ का कार्य है तथा
परीक्षाआ क निय प्रणिष्ठा की सुविधा भी यती है । य सन्धा भरतपुर की
साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकता का पूरा करता है । एसी उपयागी
साहित्यिक संस्था का राज्य तथा जनता का जाय्य मिनता हो चाहिये ।

—गकरसहाय सक्सेना

१८१ ०

विभा-संचालक राजस्थान

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

का

सक्षिप्त कार्य विवरण

रविवार दि० १२-२-६१

प्रातः १० बजे—

- १ ध्वजा राहण
- २ वज्र वन्दना
- ३ भगवत्पूजा
- ४ स्वागत गायन
- ५ स्वागता यज्ञ का भाषण
- ६ उद्घाटन भाषण
- ७ वज्रपाठ

रात्रि ७॥ बजे स—

- १ गायन
- २ कवि सम्मेलन (कविनाथ स्वतन्त्र हागी)

मामवार दि० १३-२-६१

प्रातः ८ बजे स—

- १ उपनिषद्
- २ श्रुति गी

मध्याह्न ३ बजे स—

- १ गायन
- २ उपनिषद्

रात्रि ७॥ बजे स—

गीता प्रवचन

भगवत्पूजा दि० १४-२-६१

प्रातः ८ बजे स—

उपनिषद्

मध्याह्न ३ बजे स—

- १ उपनिषद्
- २ वात्त निवात्त प्रनिष्ठागिता

रात्रि ७॥ बजे स—

- १ कविनाथ गिवात्त मन्त्री द्वारा
- २ भगवत्पूजा सम्मेलन
- ३ धर्मवाद

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का मञ्चित्त विवरण

— 1 —

भरतपुर के साहित्यिक जीवन में १० फरवरी १९६१ का शुभ दिन विगप उल्लेखनीय है। उस दिन यहाँ की प्रमुख साहित्यिक सभ्या थी हिन्दी साहित्य समिति ने अपना अद्भुत गाना-गीत स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एक उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया था। इस साहित्यिक मन के लगभग ६ मास पूर्व इस मस्था की कार्यकारिणी ने दिनांक ३० ६० की बैठक में यह निश्चय किया था कि राजस्थान साहित्य अकादमी उत्तरपुर द्वारा आयोजित उपनिषद् तथा समिति का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव दाना एक साथ आगामी नवम्बर मन् १९६० में मनाया जावे किन्तु थोड़े ही दिन पश्चात् अकस्मात् क निर्देशानुसार फरवरी मन् १९६१ में इस महोत्सव का आयोजन निश्चित कर लिया गया। मन् १९६१ के आरम्भ से ही महोत्सव की तयारी आरम्भ करदी गई और समिति के उत्साही कार्यकर्ता पूर्व निश्चित योजना के अनुसार कार्य क्रम स्थिर करने में जुट गए।

धन संग्रह — महोत्सव के कार्य क्रम का समिति के आर के अनुरूप सम्पन्न करने के लिए सबसे बड़ा आवश्यकता धन की थी। एतन्मय महोत्सव के कार्य क्रम की निम्न स्तरमा धारित करत हुए जनता में अपील की गई कि इस आयोजन के निमित्त पत्र पुष्प समिति के प्रधान मन्त्री के पास गीघ्र भेज। महोत्सव के प्रमुख आकर्षण इस प्रकार धारित किये गए —

१—भारत के उस राष्ट्रपति डा. मवपलना रावाहृ एन् द्वारा जयन्ती उद्घाटन

२—राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित उपनिषद्

३—स्वर्ण जयन्ती प्रथम का प्रकाशन

४—कवि सम्मेलन एवं अथ गचक साहित्यिक कार्यक्रम

५—गाना प्रवचन

६—मंगल सम्मेलन

भरतपुर का हिन्दी प्रभा एवं जागरूक जनता ने समिति की इस अपील का हार्दिक स्वागत करते हुए आर्थिक सहायता भेजना आरम्भ कर लिया और धीरे धीरे समय में प्रचुर धनराशि एकत्रित हो गई।

मुख्य उद्देश्य — दिनांक १० फरवरी मन् १९६१ का प्रातः काल वाल रश्मिया के प्रशुभित गाने से सम्पन्न नगर में एक अद्भुत उल्लासपूर्ण वातावरण दृष्टि



समिति के अध्यक्ष श्री डा० यु. जवहारिलाल गुप्त,
उप राष्ट्रपति की बाय कारिणी के सदस्या का पत्त्विय देते हुए

गाकर होने लगा। रेलवे स्टेशन से निकल 'समिति' भवन तक मुख्य मार्ग रंग विरगी मुद्र पनाकाश्री म सुमज्जित था और स्थान २ पर भव्य तारण बन हुए थे, जिनका संख्या अठार गतासी महा मंत्र के उपरान्त म १० थी। सक्का नर नारी आवाग वृद्ध समिति' भवन म गद्यनित हात लग।

मव परम १० वजे राद्य यश्री की मनामुत्रकारी ध्वनि क बीच समिति' क पुगन सदस्य श्री राजवहादुर कद्रीय मत्री न समिति' का पीताम्बरी ध्वज फहर कर महात्मव का काय गुभारभ किया। विगाल जन समुदाय ने करतल ध्वनि कर ध्वज का अभिनन्दन किया। इसके अनंतर मध्याह्न ३ वजे स्वरा जयता महा मव के उद्घाटनाव अ नगरातीय रयानिप्राप्त साहित्यकार भारत क उर गल्पति डा० मवपना गधावृष्णान् नगर क प्रमुख वाजाग म होत हुए समिति भवन पधार जहा एक सुमज्जित पडाल बना हुआ था। लाल, पील नील तथा हर रंग की पताकाण मरुप का आच्छादित कर अद्भुत मोदय प्रदान कर रही थी। सुत्र तथा कलात्मक अक्षरा म लिखे हुए साहित्यकारा क अमृत मय उपदान जनता म जागरूकता प्रदान कर साहित्य के प्रति अभिरुचि की अभिवृद्धि कर रहे थे। मममन मरुप नर नारिया म खचाखच भग हुआ था जिनम भगतपुर की मना मस्थाश्री क प्रतिनिधि प्रम प्रतिनिधि, राजस्थान सरकार के मुख्यमत्री श्री माहनलाल सुखाडिया पी० डबल्यू० डी० मत्री महागज नरिदचन्द्र भगतपुर नरग था मवाई वृज द्रमिह राजस्थान साहित्य अकाश्री के अ यक्ष श्री जनादनराय नागर तथा डायरेक्टर श्री मानीतान मेनारिया और राजस्थान विधान सभा के उपाध्य श्री निरजननाथ आचाय प्रमुख थे।

महा मत्र मुख्य प्रतिनि डि डा० मवण्टली राधावृष्णान् अपनी कीर्ति क समानता मत्र अवल अचरन ध्वन धानी और गुभ पगडो क परिधाना स विभूषित थे। उनक स्थान गहण करत हां नगर के सुप्रसिद्ध पंडित श्री रामस्वरूप मिश्र न मस्वर व मत्रा द्वारा भगतानरण किया। इसके अनन्तर मुग्जीत सगीन विद्यालय की राजिताया न मत्रामदिम क स्वागत म एक छाटा कितु मुमपुत्र गायन प्रस्तुत किया। इस साहित्यिक मने क अवसर पर हिन्दी साहित्य समिति क अध्यक्ष १० बुजबिहारीलाल गुप्त न मुख्य अनिवि का अभिनन्दन करते हुए उताया कि यत्र समिति गगभग १० वर्षों से हिन्दी के प्रचार म प्रसार म अनवरत् रूप म लगी हुई है। इस मस्या क गौरवमय अतीत पर प्रकाश डालते हुए उताये तथा कि भरतपुर क लिय यह एक परम श्रीभाग्य की बात है कि राधा और वृष्ण की श्रीशाम्यनी वृज भूमि क म्य प्रदान को अपन चरणा मे प्रविष्ट बनान क लिय स्वयं राधावृष्णान् (राधावृष्णान्) महा पधार हुए थे। क्या इस वृजवागिया तथा गापिया की विरह व्यथा क्रन्दन म ही प्रतिफन

समझा जाव ? राधाकृष्ण क मुद्र साहित्य प्रयाग पर उप गल्पनि मुक्कग गण क्याकि निवन् म वठे ंण कद्रीय मत्री श्री राजगणपुर न उमका रहम्या घाटन कर िया । पुन नही न नी बालिकाघा न अपन मगीनमय नृत्य द्वारा उपस्थित जन समुदाय का मनोरजन िया । इन्ही बालिकाघा न मुजात िप कना विद्यालय द्वारा निर्मित एव विंगय प्रकाश ता गुटिया मुख्य अतिथि का भट की । इनके अन्तर समिति क उप प्रमान श्री मानालान अराडा न भरनपुर का िग विगयात् िप वस्तु चन्दन की चीी, पत्नी तथा स्वण जयती पुस्तिका भट की । हजाग नर नािया स भर हण भटान म जउ मुख्य अतिथि भाषण दन क लिय सठे टुण तत्र नागिया का गगडाहट तुमुन िनि म कुद ममय तव निरन्तर उला रहा । महानिम्न - गाल्पनि न गल एव प्रभावापादक अग्नेजी भाषा म उद्घाटन भाषण िया जिसका हि दी अनुवाक अकादमी क अध्यक्ष श्री जना-राय नागर न तुगन पन्दर मुताया । भाषण का मार ंम प्रकार ह —

साहित्य या तो प्रत्यक् रचना मक कृति का कहा जा मकता हे पर तु स्याइ और शाश्वत महत्व अपन वान साहित्य या अपना विंगय मन्व ह । 'साहित्य समाज का दषण है वानी उक्ति का प्रमुय ंम्य यही ह कि जा तत्कालीन समाज की गति विधिया, उमक रूप और इष्टिहाण का अपन समान ही शाश्वत और अमर बना द वही म साहित्य ह । समाहित्य क निमाण म याग दना जीवन की परम आवश्यकता ं जिम कत य ममभक्क हम अपनाना चाहिय । इहानी कविना आदि लिख दना साहित्य का एक अग अवयव ह पर तु पूरणत साहित्य क ंगन क लिय हम एक ंमर का प्रमत्त रचन का भावना परस्पर आन्तर व सन्तान का िचार और मनुजित व स्वस्थ परामश का आगान प्रदान करन वाला िवंगी म अवगाहन करन पर ता साहित्य का मच्छा आनन् प्राप्त हा सकता है । साहित्य की तरह मानव क मत्काय भा सदव प्रेरणादायक व शाश्वत हान ह किन्तु मत्कार्यों का शाश्वत रूप दान साहित्य पर आधागित है । यह एक अनुभूति है और मधुर अनुभूति है । साहित्य मजन आत्म तुष्टि आमानन् और आम विकास का आन ता है ही िकिन गूढ साहित्य म वह अपार शक्ति भी निम्न ं जा सामाजिक िकारा का दूर करक उम समाज का रूप प्रदान कर मरता है । साहित्य व कार्यों म 'मत् लग जान म व शाश्वत इन जान । ं यम म भी मनानत शाश्वत प्रतीक है जिसका अय अपग्वितनगात नही उरन् अवश्य है । अन् मत् बानावरण क निर्माण क लिय म साहित्य ंकाय व मत् धम का स्वम्य समवय करना होगा । ं० मव पत्नी ंनाभणन् न कहा ि —



महामन्त्रि उप राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन
स्वर्ण जयन्ती का उद्घाटन भाषण करत दृश

‘विभिन्न सस्कृतिया, भाषाया घमों परम्पराया और विचार धारायो वाल दग भारत का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल इस कारण लगता है कि इन्म आई हुई विपमनाया म जल्दी ही सामञ्जस्य स्थापित हा जाएगा और तब भारत ही विश्व नितिज पर पथ प्रदर्शक हागा । या हम नही भूना चाहिय कि कना घम, विनाय व साहित्य मत्र एक ही हैं, जिनक समायोजन से राष्ट्र का वाञ्छ विक विकास मभव है ।’

अत म समिति क प्रमान मत्री श्री मदनलाल बजाज ने मुख्य अनियि एक उपमिथन जनता क प्रति राभाण दर्शिन किया । उप राष्ट्रपति डा० राधा कृष्णन् न समिति नवन तथा पृन्तकालय का निरीक्षण किया और समिति की प्रगति के प्रति माताप प्रसद वरत हुए प्रमान किया ।

कवि सम्मेलन — इसी दिन रात्रि को समिति ने एक विगट कवि सम्मेलन का आयोजन किया जिसक अध्यक्ष श्री जनादनराय नागर थे । इस अवसर पर अनन्त रम भरी तरंग प्रवाहित की गई । कहां शृंगार का आकषण था ता कहीं वीरना का विगुन कनी करण का हृद्य विदारक चित्र उपस्थित किया गया ता कहीं हास्य के फजारे चल रह थे कहां गीता का माधुर्य था ता कहीं आक्षूण कवित्त पढ जा रहे थे मुक्तका की मादकता एव नय प्रयागा की न सुम श्रूक आकषण विदु बन रहे थी । अनन्त रम धाराया स युक्त इम मरावर म अवगाहन करन वाल कविगण न काय सागर की उज्ज्वल तरंगा स काञ्च प्रेमी आनाया की मरावार कर लिया । श्री कुलशर का अमृत ध्वनि का मुनत ही ममस्त पताल करतल ध्वनि स गुज उठा । श्री ब्रजद्रविहारी कौणिक की ‘चीन का चुनीना म युवक हृद्य की उमगा म परिगुण उद्गार थे । ‘तुम क्यों दपण ख रह हा तुमनी अव क्या आका है । दपण तो वह दवा करत जिनका म्प टला करता है”, गाकर श्री वीरमवसना जयपुर न आत्म निरीक्षण की वामुरी वजा दी । मथुरा निवासी प्रा० राका क कठ म निकना गीत “यदि तुम अपन नयनो ने नम के दीप जला दा ना मैं पागल परवाना का प्यार तुम्ह द दू गा” मुनकर आनाया क मन मयूर नृय कर उठ । जहा एक धार श्री ‘भारत रत्न भारद्वाज’ जयपुर तथा प्रा० हरीराम आचाय ‘अमिताभ’ के मुक्तन हृद्य ‘पगी ये कहां दूमरी आर श्री राजावत न राजस्थानी गीता म प्रत्या को मस्कृति का प्रभावाला म्प म प्रस्तुत किया । श्री गानिप्रकाश भारद्वाज ‘राका’ न अपन मरम गीता क अनिरिक्त अत्र कविया पर मूढ टिप्पणी प्रस्तुत कर म सम्मेलन क कार्यक्रम को अघिक रात्र बना दिया । श्री ‘मित्र’ तथा श्री कुजनिहारीनाल पाटेय मन्थ प्रत्या क हास्य म्म क फजारे कई वाग छाड

गये। स्थानीय तथा बाहर के लगभग २५ कवियों ने अपनी सुन्दर २ रचनाएँ सुना कर हजारों श्रोताओं को मन मुग्ध बना दिया। यह सम्मेलन अर्द्ध रात्रि तक शांतिमय वातावरण में चलता रहता।

उपनिषद् — इस त्रिदिवसीय स्वर्ण जयंती महात्सव पर राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित एक उपनिषद् १३ व १४ फरवरी का सम्पन्न हुआ। उपनिषद् का विषय या साहित्य प्रोग्राम रचित। इस कार्यक्रम में मन्त्री श्री प्रो० हरदत्त शास्त्री प्रो० विजे द्रपालसिंह मा० शिवलाल गुप्त मा० गोपालप्रसाद मुद्गल सावलप्रसाद चतुर्वेदी शक्ति त्रिवेदी कुसुम चतुर्वेदी और रामदत्त शास्त्री के निबन्ध पुरस्कृत हुए। उपनिषद् की बैठकों की अध्यक्षता सब श्री जनादनराय नागर, डा० मातोलाल मनारिया, श्री चन्द्रगुप्त वाण्येय और श्री निरजननाथ आचार्य ने की।

अर्थ साहित्यिक कार्यक्रम — इस अवसर पर अत्याक्षरी तथा वाद विवाद प्रतियोगिता का भी सुन्दर आयोजन हुआ जिसमें स्थानीय एम० एस० जे० कालेज तथा अर्थ सभी विद्यालयों के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। कई दिन तक चलती रहने वाली अत्याक्षरी प्रतियोगिता में अतन्त राजकीय बहु उद्देशीय विद्यालय का दल बाजी मार ले गया। वाद विवाद प्रतियोगिता में श्री प्रमिला भटनागर श्री अचला कुमार श्री गायत्री गुप्त और श्री जगदीशप्रसाद भारद्वाज को पुरस्कृत किया गया।

गीता प्रवचन — गीता प्रवचन का कार्यक्रम महोत्सव का विशेष आकर्षण था। यह आयोजन श्री शांतिस्वरूप बोहरे द्वारा प्रदत्त निधि से प्रतिवर्ष किया जाता है। इस अवसर पर भारतविख्यात श्री दीनानाथ दिग्गज ने गीता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओं का अपना जीवन गीतामय बनाने का परामर्श दिया। भरतपुर के प्रतिष्ठित नागरिक श्री युधिष्ठिरप्रसाद चतुर्वेदी ने गीता के १४ व अध्याय में वर्णित गुणातीत हान की साधना पर एक सुन्दर प्रवचन किया तथा श्री सावलप्रसाद चतुर्वेदी ने साधक के स्तर और 'महाप्रकाश' की खोज के विषय में बौद्धिक मन और गीता के मन का सुन्दर स्पष्टीकरण किया।

संगीत सम्मेलन — इस महात्सव के अंतिम कार्यक्रम 'संगीत सम्मेलन' की जनता ने विशेष सराहना की। इस कार्यक्रम में देहली के अनेक स्थानिप्राप्त कलाकारों ने भाग लिया जिनमें श्री नसार अहमद तान कप्तान श्री जहूर अहमद और श्री जफर अहमद के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। भारतीय आवागवाणी के प्रसिद्ध कलाकार श्री सुरजानसिंह तथा श्री जसजितसिंह के गिटार वादन को



उप राष्ट्रपति डा० रावपल्ली राधाकृष्णन् तथा श्री मोहनलाल सुभाषिया
(मुख्य मन्त्री राजस्थान) ने साथ समिति के प्रमुख रायात्त

श्री आताश्री ने बहुत पसन्द किया। भरतपुर के प्रसिद्ध कलाकार श्री मा० दुरगमिह श्री बलचन्द तथा श्री रमनान का कला प्रदर्शन भी विशेष प्रशंसनीय रहा। श्री मानिकचन्द के शास्त्रीय गायन और श्री सरला कपूर के सरल संगीत ने तो इस सभा को इतना आकर्षित बना दिया कि जाड़े की स्थिति में भी रात्रि के दो बजे तक तीन चार हजार व्यक्तियों का विशाल समुदाय मन मुग्ध होकर संगीत का रसास्वादन करता रहा।

चित्र-प्रदर्शनी — स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर एक चित्र प्रदर्शनी का विशेष आयोजन किया गया जो जनता के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। जयपुर के कलाकार श्री हीरालाल सबसेना ने लगभग २५०० रंगीन चित्र बड़े आकार में बने हुए इसमें प्रदर्शित किये। इन चित्रों में हिन्दी और संस्कृत साहित्य के इतिहास तथा १८५७ ई० से १९४७ ई० तक के भारत के सुविख्यात सपूतों और सनानिया के सुन्दर चित्र प्रदर्शित किए गए।

इसी अवसर पर दिल्ली स्थित भरतपुरिया समाज के प्रतिनिधि मंडल ने समिति को ११ नवीन पुस्तक भेट की और समिति की प्रगति की सराहना की।

अन्त में श्री मदनलाल बजाज प्रधान मंत्री श्री हिन्दी साहित्य समिति ने उपस्थित समुदाय के बीच अपनी अद्भुत शताब्दी रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई और उन सभी व्यक्तियों के प्रति आभार प्रदर्शित किया जिन्होंने अपना अमूल्य समय और धन दानर गारदा के इस अद्भुत शताब्दी मंत्र का सम्पन्न कराने में योग दिया।



स्वागताव्यक्ष

डा० श्री कुजबिहारीलाल गुप्त

अध्यक्ष

हिन्दी साहित्य समिति

का

स्वागत भाषणा

तत्र भवान् उपराष्ट्रपति जी

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर के स्वर्ण जयन्ती एवं राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित उपनिषद् समारोह के उद्घाटन अवसर पर ब्रज भाषा के प्रमुख केंद्र भरतपुर शहर में आपका स्वागत करते हुए जिस अपार आनंद एवं गौरव का अनुभव हम हा रहा है उसे गान्गा द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। स्वर्ण जयन्ती मनाना समिति के लिए महत्त्व का विषय हो सकता है परंतु आप जैसे विश्व विख्यात साहित्यिक एवं महान् सांस्कृतिक का यहाँ पधारना उससे कहीं अधिक गौरव की बात है।

यद्यपि साहित्य और मन्त्रिणी की अनंत और अविस्मरणीय सेवाएँ तथा साधना के कारण आपकी गणना भारत के महान् पुरुषों में ही नहीं अपितु विश्व की महान् विभूतियों में की जाती है परंतु हम ब्रजवासियों के त्रियता आप भ्रम की बड़ी साक्षात् मूर्ति राधाकृष्ण ही हैं। तिनकी प्रतीति में हम अनेक दिनों से पलक पावड विछाय हुए हैं।

हमारे अविचल नम निवेदन पर आपने अपना अमूल्य समय देकर यहाँ पधारन की जा अनुभूति की है वह आपके हिन्दी के प्रति प्रगाढ़ स्नेह और साहित्यानुराग का परिचय देता है।

यह निवेदान मलय है कि आपके उदात्त व्यक्तित्व में हम प्राचीन गौरवमय भारत के धर्म ज्ञान व मस्त्रुति का तीन सुन्दर मुन्दर भाविया एक साथ देखने को मिलता है। जहाँ आप (श्री राधाकृष्णन्) का नाम भारत के महान् धर्म सस्था एवं गीता की अमृतमय वाणी सुनाने वाले कृष्ण का स्मरण दिलाता है, वहाँ आपकी सरल वपभूषा एवं गान्धर्व गम्भीर मुद्रा तथा प्रखर विद्वत्ता हमारी प्राचीन मन्त्रिणी एवं ऋषिया के जावन की याद दिलाता है।



स्वागताभ्यक्ष द्वारा महामहिम जगत्पति डा० सखपाली राधाटुण्डण्णन् गो
श्रमिन् दन पद्य भट

हम पूरा विश्वास है कि आगे जमे महानुभावों के बरद हस्त की छत्रछाया में राष्ट्रभाषा हिन्दी का गौरव तो बढ़ेगा ही साथ ही हिन्दी का प्रसार करने वाली हिन्दी साहित्य समिति जमी मम्बाए भी युग युग तक पल्लवित एवं पुष्पिन होती रहेंगी ।

आपका अभिनन्दन करने वाली इस सम्स्था के स्थापन का निश्चय आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व मातृ भाषा हिन्दी के कुछ भक्तान् श्रावण कृष्णा तृतीया गुरुवार मवत् १९६६ तदनुसार १ अगस्त सन् १८१० (गुरु संवत् १८३४) को श्री तुलसी जयन्ती के पुण्य पर्व पर किया था । हिन्दी प्रचार हेतु इस संस्था की स्थापना में सब श्री गंगाप्रसाद गान्धी और जगन्नाथदास अग्रिकारी का विशेष हाथ था । स्थापना काल में संस्था के अत्यन्त हितपिथों में डा० आकारसिंह पमार प० मयाशकर यात्रिक, प० नारायणदास, प० गुलाब मिश्र भूमि कज और श्री बालकृष्ण दुब का नाम उल्लेखनीय हैं । इन्हीं महानुभावों के अथक प्रयत्न व परिश्रम के बल पर गढ़ी हाकर यह संस्था जिन दूनी व रात चौगुनी उन्नति करती आई वतमान स्थिति पर पहुँच सकी है । किराय के एक छाट से कमरे में जन्म लेने वाली यह संस्था भरतपुर के हिन्दी प्रेमियों के सद् प्रयत्न में आज निज के भव्य भवन में प्रतिष्ठित है । संस्था के पुस्तक भण्डार में विविध विषयों की १३ हजार से भी अधिक हिन्दी पुस्तक हैं । इनके अतिरिक्त संसूत्र तथा हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थ भी हजारों में ऊपर ही हैं । इस समिति की ओर से हिन्दी प्रचार के लिये अनवरत मागीय प्रयत्न किये गये । इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप हिन्दी प्रेम की गूज भाषणियों में नैकर महिला तक सुनाई देने लगी । इसी गूज के फलस्वरूप सन् १९१६ में हिन्दी प्रेमी भरतपुर नरग सहायजा कृष्णासिंहजी ने सब प्रथम हिन्दी का राज्य भाषा घोषित किया तथा उमक प्रचार के लिये अनवरत प्रयत्न किये । उन्हीं का यह परिणाम था कि राजस्थान में सबसे पहले भरतपुर में ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन का १७ वाँ अधिवेशन १९२७ में हुआ । उस अवसर पर श्री प० मन्त्रमान् मानवीय श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति डाक्टर गौरीशंकर हीराचन्द शोभा राजपि पुरुषोत्तमदास टडन, श्रीमती लक्ष्मीबाई किवे था मायनलाल चतुर्वेदी जस लिंगज विद्वान् तथा अनवरत हिन्दी प्रेमी भरतपुर पधार । इनके अतिरिक्त इस सम्स्था का अथक अथक साहित्यिक और राजनयिक मन्त्रानुभावा का आशीर्वाद और पगमग भी समय समय पर मिलता रहा है । राजनीति में अलग रहते हुए इस मस्या में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रसार तथा प्रसार के लिये जो अथक और स्मरणीय प्रयत्न किये हैं वे किसी से छिपा नहीं हैं । यह समिति हिन्दी पुस्तकों को पठन पाठन के प्रति रुचि, हिन्दी की परोक्षभाषा के प्रति आकर्षण और हिन्दी का प्रतिष्ठा वृद्धि के लिये

प्रकाशक —

मदनलाल वजाज, प्रधान मंत्री

श्री हिंदी साहित्य समिति

भरतपुर।

मकर संक्राति स० २०१८ वि०,
प्रथम संस्करण ७५० प्रतियां

[सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित है]

मूल्य ४) रुपये

मुद्रक
विद्याव्रत शास्त्री
तथा
देवराज गुप्त
नूतन प्रिंटिंग प्रेस, भरतपुर।

हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार

डा० गुलाबराय, एम० ए० डी० लिट्, आगरा

का

आशीर्वचन



“भरतपुर कवि-कुमुदाजलि नाम के पद्य संग्रह को उसके सम्पादक महोदय डाक्टर कु जविहारीलाल ने मुझे दिखाने की कृपा की। इस संग्रह में भूतपूर्व भरतपुर राज्य के कवियों की रचनाओं का संकलन है। इन कवियों में कुछ जैसे ‘सामनाथ’ और ‘सूदन’ तो इतिहास प्रसिद्ध हैं और कुछ का नामोल्लेख मात्र मिथवधु विनोद में हुआ है और कुछ स्थानीय ख्याति के ही रहे। इस संग्रह में कवियों का कालक्रमानुक्रम परिचय और विवरण है। इस संग्रह की कविताओं का मूलविषय नायिका भेद नखण्ड वगैरे शृंगार है इसके साथ वीर और नक्ति रसा का भी समावेश हुआ है। ब्रज भाषा के अमिन रत्न भण्डार की जितनी रसा की जाय उतना ही अच्छा है। इस संग्रह में सम्पादक महोदय की सुरुचि और सजाजन शक्ति का परिचय मिलता है। स्थानीय साहित्य की रक्षा स्थानीय लोग ही अच्छे तरह कर सकते हैं। मुझे आशा है कि यह संग्रह रसिक जनांक्षा मनोरंजन के ब्रज भाषा की गौरव वृद्धि में अपना योगदान करेगा।”

मम्मति

डा० मोतीराम गुप्त,

एम० ए० गी० टी०, पी एच० डी०, एफ० आर० ए० एम०,
एम० पी एच० एम० (लटन)

सम्य प्रथम क हम्म लिखित ग्रन्थों की खोज करते समय भरतपुर के साहित्य समग्र परिचय बढ़ा। यह साहित्य इनकी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुआ कि मुझे भरतपुर की साहित्य चेतना की जागरूकता पर आश्चर्य हीन हुआ। इनकी अगान्ति नवार्ड-मग्रे का समय और भरतपुर के साहित्यकार इतने धनवान् भी थे। साथ ही उन आश्रय दाताओं का भी प्रशंसा करनी पड़ेगी जिनके प्रात्मा इन और विद्या प्रेम में यह सब कुछ सम्भव हो सका। कवियों की आश्रय देना, राज कवि रचना उम समय की एक प्रचलित परम्परा थी और भरतपुर में भी यह परम्परा का समुचित निवाह किया गया। भरतपुर दरवार से सम्बद्ध कवि अनेक वग और जातियाँ के थे ब्राह्मण चौबे, वश्य, जाट मुस्लिमान, कायस्थ आदि, जिनके द्वारा प्रायः सभी विषयों पर लिखा गया। प्राप्त साहित्य का विश्लेषण करते समय मैं उस पृष्ठभूमि पर ध्यान देना चाहता हूँ जो साहित्य की विशेषता के लिए आवश्यक है और मग्रे अनुमान है कि प्रस्तुत सूत्रों में मग्रे विज्ञान का प्रयोग ही नहीं साहित्य समिति के विद्या प्रेमी आश्रयदाताओं के आश्रय पर प्रस्तुत ग्रन्थयन की आरंभिक प्रारम्भिक परिचयात्मक मिनगी। मग्रे विज्ञान है कि भरतपुर में कुछ तो एक निश्चित प्रतिभा वाली कवि हूँ जिन पर स्वतंत्र रूप में काफी काम किया जा सकता है। सामान्य जीवन सामग्री के साथ-साथ इनकी कृतियों का उपलब्ध और उस पर साथ साथ विचार उपयोग के मातृ है। मैं तो चाहता हूँ कि समिति के तत्वावधान में ही इन कविों का भी पूरा वर्णन का आरंभ किया जा उठाया जाय। वस साथ-साथ इच्छुक विचारों में इन साहित्य मण्डलों का गणना पूर्वक उपाय करना महत्त्व है।

कवियों की कृतियों का अध्ययन प्रायः साहित्यिक दृष्टियाँ से ही किया जाता रहा है किन्तु इन कृतियों के दो एक पहलू और हैं। भाषा विषयक और शास्त्रीय अध्ययन भी वैज्ञानिक अनुसंधान के अंगों में हैं। अपनी विद्वान् यात्रा में मैंने देखा कि साहित्य और भाषा दो अलग अलग दृष्टि-भंग हैं। और आज के युग में भाषा सम्बन्धी अध्ययन अधिक महत्व पूर्ण और आवश्यक माना जाता है। एनिंग वरा के हलिडे का नाम इस प्रसंग में आन्तरिक माय किया जा सकता है जिन्होंने एक चीनी पुस्तक का भाषा विषयक अध्ययन अभी अभी प्रस्तुत किया है।

हिन्दी में इस प्रकार का अध्ययन अभी आरम्भ नहीं हुआ है। मोमनाथ के काव्य का भाषा मूलक अध्ययन करने का किञ्चित् प्रयत्न मैं भी कर रहा हूँ। अलवर के कवि जीवणरा 'प्रताप रामा मेरे द्वारा की गई भाषा विश्लेषणात्मक टिप्पणियों सहित जाधपुर के राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होने का है। मैं चाहता हूँ कि साहित्यिक अध्ययन के साथ-साथ भरतपुर के कवियों की भाषा का भी विधिवत विश्लेषण हो। कवियों द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों के शास्त्रीय विवेचन पर भाषा विद्वानों का ध्यान आकर्षित होना चाहिये। मरी मायना है कि भरतपुर के कलाकारों का अथवा देश के कवियों के माय तुलनात्मक अध्ययन करने पर यहाँ के कवियों की उत्कृष्टता निश्चय रूप से प्रमाणित होगी।

'समिति' द्वारा प्रकाशित इस परिचयामक पुस्तक का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि विविध विज्ञानों का सृजनात्मक प्रवृत्ति द्वारा 'समिति' का एतद्विषयक बल निरन्तर मिलता रहेगा।



* विषय-सूची *

- १—आभार
- २—सम्पादकीय निवेदन
- ३—भरतपुर कवि-कुमुदाञ्जलि

प्रकरण १

मामनाथ—काव

- १—सोमनाथ
- २—टहकन
- ३—हरिप्रसाद
- ४—कृष्णलाल
- ५—महााराज वटनमिह
- ६—माधौराम

प्रकरण २

मूदन—काव

- ७—मूदन
- ८—रगलाल
- ९—मधुराम
- १०—लाल
- ११—हरिविग
- १२—गिवराम
- १३—पतिराम
- १४—गाभ
- १५—त
- १६—काव
- १७—जुलवरन
- १८—भूपर

- | | | | |
|----|--|--|------------------|
| १ | | | १९—नीरभद्र |
| १४ | | | २०—मुधाकर |
| १५ | | | २१—राम |
| १७ | | | २२—रगलाल |
| २० | | | २३—मुरलीधर |
| २१ | | | २४—मालानाथ |
| | | | २५—मोतीराम |
| | | | २६—वृत्राद |
| | | | २७—गोभनाथ |
| २३ | | | २८—महाकवि त्रैव |
| २६ | | | २९—गोधाराम |
| २६ | | | ३०—मोहन लाल |
| २८ | | | ३१—चतुराराय |
| ३० | | | ३२—उत्तरराम |
| ३१ | | | ३३—राजेग |
| ३० | | | ३४—बगीधर |
| ३३ | | | ३५—गुलाम माहम्मद |
| ३४ | | | ३६—बालकृष्ण |
| ३४ | | | ३७—टूलामी |
| ३५ | | | ३८—मूलराय |
| ३६ | | | ३९—वदवर |

४०-पदमाकर	५१	७०-घनग	६२
४१-मुरनीधर	५३	७१-प्रजचद	६२
४२-धोक्ल मिश्र	५४	७२-सुन्दरलाल	६३
४३-सूरतगम	५४	७३-नरहरिदास	६३
४४-भागमल्ल	५५	७४-लान	६४
४५-वृजश	५६	७५-प्रीधर	६५
४६-गणेश	५८	७६-वद्यनाथ	६६
४७-जसराम	५८	७७-महाराज बलवर्तसिंह	६७
४८-गगाधर	५९		
४९-प्रसिद्ध	६०	प्रकरण ४	
५०-मंग	६१	राम-काल (उत्तराद्ध)	
५१-मिश्र सुवन्नेवगगाकिणार	६२	७८-रमानन्द	६८
५२-रसनायक	६३	७९-देवीनाथ	१०२
५३-मोनीराम	६५	८०-रुपराम	१०३
५४-महाराज बलदेवसिंह	६८	८१-जीवाराम	१०५
५५-महारानी प्रमृत्तकौर	६९	८२-लक्ष्मणनारायण	१०७
५६-जयदेव	७०	८३-रामानन्द	१०७
५७-धरानन्द	७०	८४-रामचरित	१०८
		८५-सदाराम	१०९
प्रकरण ३		८६-चतुर्भुज मिश्र	११०
राम-काल (पूर्वाद्ध)		८७-युगलकिणोर	१११
५८-रामलाल	७१	८८-मण्डव	११४
५९-रमरामि	८२	८९-हनुमन्	११५
६०-नधुग्रामिह	८३	९०-धर्मलाल	११६
६१-भोलानाय	८६	९१-रामचन्द्र	११७
६२-स्तलिताप्रसाद	८४	९२-धाउ गुलाबसिंह	११९
६३-विहार	८५	९३-काशीराम	१२०
६४-बलदेव	८६	९४-गामाराम	१२३
६५-नवान	८७	९५-गवराजा मजीतसिंह	१२५
६६-वदुकनाथ	८९	९६-रामधुन	१२८
६७-पद्म	९०	९७-रामद्विज	१२८
६८-गापावसिंह	९०	९८-पाट	१२९
६९-रामचन्द्र	९१	९९-हरिनारायण	१३०

१००-रामदयाल	
१०१-माधुगम	
१०२-निगम्बर	
१०३-नागावन्ग	
१०४-ठाकुरनाल	
१०५-रामनारायण	
१०६-बालमुकुद	
१०७-प्यारलाल	
१०८-शेवीराम	
१०९-नत्थीलाल	
११०-जानीविहारीलाल	
१११-जानीश्यामलाल	
११२-मुकुद	
११३-जुगलकिशोर	
११४-मगलसिंह	
११५-धनयाम	
११६-मुरलीधर	
११७-नवलकिशोर	
११८-वृष्णनाम	
११९-ऊपरराय	
१२०-वृष्णलाल	
१२१-कनल बहादुरसिंह	
१२२-बानू क हैयालाल	
१२३-गुलाबजी मिश्र	
१२४-लक्ष्मीनारायण बाजी	
१२५-मुदरलाल	
१२६-माजो श्री गिरिराजकु वर	
१२७-दाकरलाल	
१२८-सत्यनारायण 'कविरत्न'	
१२९-नागाप्रसाद	
१३०-बच देवीप्रवाण भवम्भी	
१३१-बलदेवप्रसाद	
१३२-हीरालाल	

१३३-मगलदत्त	१७०
१३४-आचाय सूयनारायण	१७१
प्रकरण ५	
वतनमान-बाल	
१३५-साहित्यवाचस्पति गोबुलचन्द	दोसित १७४
१३६-किशारीलाल	१७७
१३७-पनीलाल	१७७
१३८-प्यारलाल	१७८
१३९-हरिकृष्ण 'कमल'ग	१७८
१४०-रामचन्द्र विद्यार्थी	१८०
१४१-गिराजप्रसाद 'मित्र'	१८३
१४२-रघुवरदयाल	१८६
१४३-रामप्रिया माधुर	१८६
१४४-रावत चतुभु जदाम	१८६
साहित्याचाय	
१४५-ननुकुमार साहित्य रत्न	१८६
१४६-मावलप्रसाद चतुर्वेदी	१८८
१४७-कुम्भनलाल 'कुलदाय'	१८९
१४८-छाटलाल ब्रह्मभट्ट	१८९
१४९-प्रभूदयाल 'दयालु'	१८५
१५०-राघारमन शर्मा मोदन	१८६
१५१-नानिगराम	१८८
१५२-जयशंकर चतुर्वेदी 'जय'	२०१
१५३-चम्पालाल 'मजुल'	२०१
१५४-गिबचरणलाल	२०३
१५५-रावजी यदुराजसिंह	२०७
१५६-मदनलाल गुप्त 'भय'	२०८
१५७-श्रीनिवास ब्रह्मचारी	२१२
१५८-गापाललाल मोहेश्वरी	२१३
१५९-शिवदत्त शमा एम० ए०	२१४
१६०-डा० रागय राधव	२१६
	२१६

१६१-विश्वबन्धु गाम्त्री	२२१	१७०-रामवात्रु रमा	२६०
१६२-तुलसीराम चतुर्वेदी	२२३	१७१-हरिश्चन्द्र हरीदा	२६२
१६३-इन्दुभूषण 'इन्दु'	२२५	१७२-श्रीनदयालु	२६६
१६४-सम्पूर्णदत्त मिश्र एम० ए०	२२७	१७३-गौरीदाकर 'मयक'	२६८
१६५-राधाकृष्ण गुप्त कृष्ण'	२२०	१७४-गतिस्वरूप त्रिवेदी	२६९
१६६-रमेशचन्द्र चतुर्वेदी	२३१	१७५-कमलानन्द जन	२५०
१६७-छट्टनलाल मेवक'	२३४	१७६-मातीलाल अराडा	२५२
१६८-गोपालप्रसाद 'मुद्गल	२३५	१७७-ब्रजद्रविहारी	२५३
१६९-गापेशशरण शर्मा	२३८		

४—कवि नामावलि (अकारादिक्रम) १

५—शुद्धि-पत्र १

आभार

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर की स्वर्ण जयन्ती की याचना बनाने समय यह साचा गया था कि इस अवसर पर एक ग्रन्थ का खण्ड म प्रकाशित किया जावे प्रथम खण्ड म समिति क गत ५० वर्षों की सेवाओं का सिंहावलोकन हा और दूसर म भरतपुर राज्य के स्थापन काल से लेकर आज तक के कविया का सक्षिप्त परिचय । स्वर्ण जयन्ती क अवसर पर प्रथम खण्ड तो मुद्रित हा ही चुका है, दूसरा खण्ड जा किन्हीं कठिनाइया के कारण न छप सका था, आज प्रकाशित हा रहा है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ क प्रकाशन म भरतपुर के अनेक विद्वानों का, जिनका उत्सव 'सम्पादकीय निबन्धन' म किया गया ह पर्याप्त सहयोग तथा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ समिति उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करती है ।

समिति के अध्यक्ष डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त एम० ए०, पी०-एच० डी० न वर्तमान काल के अधिकांग कविया क जीवन-वृत्त तथा रचनाएँ एकत्रित करन तथा इस ग्रन्थ क प्रकाशन म अपन साहित्य प्रेम और काय-कुशलता का प्रासनीय परिचय दिया । यथाय म यह उन्हीं के अहर्निश परिश्रम का फल है कि यह ग्रन्थ इस रूप मे निकल रहा है । इसके लिए 'समिति' उनके प्रति चिर श्रेणी है । मैं श्री चम्पालाल मजुल क प्रति भा हार्दिक आभार अर्पित करता हूँ जिन्होंने छ मास निरन्तर परिश्रम करके वर्तमान पाण्डुलिपि के पाठान्तर दाप' का दूर करके रच नामा का शुद्ध रूप दिया । समिति के लायब्रेरीयन श्री प्रभुनाल गोयल न जिन तत्परता स इस ग्रन्थ क लिए दा मास काम किया, वह मराहनाय है ।

श्री नारायणलाल प्रधानाध्यापक रा० मा० विद्यालय जधाना और श्रीरमणचन्द्र चनुर्वेदा अध्यापक रा० मा० विद्यालय अवाग न अपना अमूल्य समय देकर इस पुस्तक को पाण्डुलिपि तयार करन तथा प्रूफ पढ़ने म योग दिया, इस लिए समिति उनकी कृतन है ।

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर (राजस्थान)
मकर संक्राति म० २०१८ वि०

मदनलाल वजाज
प्रधान मंत्री

सम्पादकीय निवेदन-

वने तो गजस्थान के पूर्वी सिंहद्वार भरतपुर की गलना गजस्थान के अन्तर्गत ही की जाती है और विशेषतया वर्तमान समय में जब कि बिलीनीकरण के अनन्तर यह उनका एक प्रमुख जिला बन चुका है, किन्तु वास्तव में यह भू भाग ब्रज प्रदेश का ही अंग है और अति प्राचीन काल से यह ब्रज भाषा, ब्रज साहित्य और ब्रज संस्कृति का एक मूर्धन्यान् गढ़ माना जाता रहा है। एक समय या जब मथुरा वृन्दावन और गावड़न आदि भरतपुर राज्या तगत थे और यहाँ के नरगा की विजय पताका समस्त ब्रज प्रान्त पर फहराती थी। यहाँ के नरगा 'ब्रजेन्द्र' कहलाते थे और हिंदी तथा हिन्दुत्व के रक्षक और उन्नायक माने जाते थे। जहाँ ये नरगा अद्भुत गीत एवं पराक्रम के लिए प्रसिद्ध थे, वहाँ कला प्रेमी और साहित्य ममता हान के लिए भी। इनमें से अधिकांश कवि थे और जो कवि न थे, वे काव्य प्रेमी अवश्य थे और कवियों का आश्रय देते थे। ऐसा अनुब्रल वातावरण पाकर यहाँ अनन्य जाज्वल्यमान ग्रहों का अभ्युत्थन हुआ, जिन्होंने न केवल ब्रज साहित्याकाश का अपनी काव्य प्रतिभा में दीप्यमान ही किया अपितु साहित्य की अभिवृद्धि एवं विकास में स्पृहणीय योग भी दिया। चन्द्र और मूय के समान महाकवि नामदार और मूयन न क्रमण गृहारिक एवं गीत कमल तथा वृन्दावन को विकसित कर अन्तर्गत कवियों का काव्य सृजन को प्रेरणा दी। इन कवियों की अमर वाणी ब्रज साहित्य की अमूल्य निधि ही नहीं वरन् अभिन्न अंग भी है, क्या कि इन काव्य ग्रन्थों में साहित्य की श्रीवृद्धि के साथ-साथ उसके प्रचार एवं प्रसार में पर्याप्त योग मिला। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि ब्रज साहित्य की उत्पत्ति में भरतपुर वासियों का उत्तम ही श्रेय है जिनका मथुरा वासियों का। भरतपुर जितना ब्रज भाषा पर गव वृत्ता है उतना ही ब्रज भाषा भरतपुर के कवियों पर भी।

ब्रज भाषा के उत्तरार्द्ध काल (१७९१—१८८६) के पाँच उपा विभागा में से तीन के प्रमुख कवियों—जैव, सूदन और पदमाकर का भरतपुर में विशेष सम्बन्ध रहा है। वर्तमान काल में ब्रज भाषा के योग्य मत्स्यनारायण 'कविग्रन्थ' में भाषित काव्य भरतपुर में रचकर काव्य सृजन किया।

भरतपुर राज्य का स्थापित हुए ता केवल २३६ वर्ष ही हुए हैं किन्तु हमें बहुत दिन पूर्व यह भू भाग साहित्य सृजन के लिए पर्याप्त उबर रहा है। परन्तु, जहाँ आजकाल भरतपुर बसा हुआ है अति प्राचीन काल में कवियों की

जन्म देती रही है। वतमान राज्य वंग के पूवज भी हिंदी के गंगव काल में ही कवियों का आश्रय देकर हिंदी की निरंतर अक्षुण्ण सेवा करते रहे हैं। विक्रम की ११ वीं शताब्दी में यमाना में वतमान राज्य वंग के पूवज विजयपाल नामक यदुवशी नरेण राज्य करते थे। इ ही नरेण ने प्रसिद्ध यवन आक्रमणकारी महमूद गजनवी के भाज मालार मसूद गाजी तथा अत्रबकर करारी जस आततायियों का हिंदू धर्म की रक्षा के हेतु, अपूर्व गीय एवम् कौशल में सामना किया था। वीर हानक साथ २ ये बड़े रसिक और काव्य प्रेमी भी थे। इनके रम युद्ध का मार्मिक वर्णन विजयपाल रामो नामक ग्रंथ में प्रसिद्ध कवि नरनमिह ने किया है। यह ग्रंथ पारम्भिक हिंदी काव्य का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है।

वतमान राज्य के स्थापित होने के बहुत दिन पूर्व १७ वीं शताब्दी में सुकवि प्रमदिनी भरतपुर भूमि में प्रसिद्ध कवि टटवन का जन्म हुआ। जिन्होंने संस्कृत महाभारत के जमिनाम्बमध अक्ष का सगर और सरस भाषा में अनुवाद कर जन साधारण को सुलभ बनाया।

औरङ्गजेब की धर्माधनापूरण नीति के परिणाम स्वरूप सन् १७२० ई० में महाराज वदनसिंह ने भरतपुर राज्य का स्थापना की और वहाँ के नामन एवम् राज्य विस्तार का भार रणवाकुर युवराज सूरजमल (सूदन-कृत मुजान चरित्र के नायक) का भारा गया।

भरतपुर के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि राज्य के मस्थापक महाराज वदनसिंह सरस कवि थे और कवियों का आश्रय भी देते थे। जिन राज्य का कलाधार स्वयं काव्य प्रेमी था वहाँ कविता का विकास क्या न हो? वदनसिंह की रम साहित्यिक अभिरुचि का इनकी सतति पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। इनके दो पुत्र सूरजमल और प्रतापसिंह जा क्रमशः भरतपुर और वर के नामक बड़े बड़े काव्य प्रेमी थे और दाता नारी अर्थात् समय में अतिन कलाका का श्लाघनीय प्रात्माहन किया। यदि दीर्घ के अर्थ भवन सूरजमल की कलाप्रियता का अक्षुण्ण योगदान करते हैं तो वर के सुन्दर महल नागया बाग और फूलवारी प्रतापसिंह की कीर्ति का। यदि महाकवि सूदन ने अपने आश्रय दाता मुजान के गीय वर्णन के लिये मुजान चरित्र की रचना का ता आचार्य सोमनाथ ने प्रतापसिंह की मरम प्रवृत्तियाँ को तुष्टि के नियम मनामुग्धकारी 'रम पीयूष निधि ग्रंथ की। सभी दृष्टि में प्रस्तुत ग्रंथ में सामनाय और सूदन का समकालीन होते हुए भी दो विभिन्न कालों के उदायकों के रूप में प्रकटित किया गया है। गीय काव्य की दृष्टि में सूदन तो महाकवि हैं ही किंतु काव्य प्रतिभा के साथ २ जिस आचार्य ने गुण का हाना अर्थात् हाना है वह महाकवि सोमनाथ में दयन का मिलता है।

— इन दोनों महाकवियों द्वारा श्र गार और गीय की जो धाराएँ प्रवाहित की गईं वह माहिय प्रेमी मानस का असीम मर्म लहरियों से व्याप्लावित करती हुईं उन्मत्त वेग से प्रवाहित हान नहीं और इनके युगत सजल तटों पर घामीन कवि त्रिहस रस मीकरो का पान कर अनिरचनीय आनन्द का अनुभव करन लगे । कृष्ण पान के अनन्तर नगर निवासी भागीरथ स्पी गम कवि न भक्ति रस स्वी मुर मग्नि का प्रवाहित किया जिससे भरतपुर की काव्य धारा को नया मोड़ मिला । गीय श्र गार और भक्ति का यह त्रिवर्णी इनके वेग से उत्तरातर बढ़ा कि रसका प्रवाह आज तक जन मानस का गमानुभूति करा रहा है ।

यह त्रिवर्णा वहन हो पाई थी कि समय परिवर्तित हान लगा । अग्रे जो के अत्याचारों के पारंगाम स्वल्प जनता में राष्ट्रीय भावना का अम्युत्पन्न हुआ । पद्य के माध्व २ गद्य का प्रचलन बढ़ा और ब्रज भाषा के स्थान पर सान २ गद्दी वाली का प्रा माहिन मिलन गया । ऐसे सक्रमण काल में श्री गोकुलचन्द दीपित जय बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न माहिल्यकार उत्पन्न हुए जिन्होंने कहानी नाटक, इतिहास आनगात्र आदि गद्य रचनाओं द्वारा साहित्य की श्रीवृद्धि की । रस प्रकार बनमान काव्य के प्रारम्भ ज्ञात ही कवियों ने ब्रज और नहीं दाना भाषाओं में काव्य सृजन प्रारम्भ कर लिया । अब जहाँ टा० रंगिय गद्यव गद्दी बोली में सामयिक रचना कर भरतपुर के माहिल्यिक क्षत्र को गौरवाचित कर रहे हैं वहाँ श्री चम्पालान 'मनुज और श्री कुतुबेपर आदि कवि ब्रज भाषा का मर्म रचनाओं द्वारा भगवती वोग्यासागि से अचना करन में मलग्न हैं। रस प्रकार मग्धवती के इन वरुण पुत्रा ने भरतपुर में ज म लतर जा अमर काव्य रचना की है वह केवन भरतपुर का ही नहीं वरुण सामन्त दिल्ली जगत के लिए एक अमूल्य देन है ।

गारण के लन सुपुत्रा की वागी के अमरत्व को मुरगित बनाय रचन की दृष्टि में लीने माहिल्य समिति के स्थापन काल से ही अनक भागारथ प्रयत्न किए जा रहे हैं । अब प्रथम सन् १९११-१२ में यथा व तत्कालीन साहित्यकार श्री मया शकर यानिक और विद्यागन अधिकागे श्री जगन्नाथनाथ विद्यागन ने भरतपुर के प्राचीन कवियों के ग्रंथों की गाय की और अनक अमूल्य ग्रंथ 'दूद निकाले । लीने ग्रंथों में मोमनाथ वृत्त माधव विनाय नामक ग्रंथ मिला जिस पदकर श्री मलयनारायण कविर ने का माननी माधव त्रिगुण की प्रेरणा मिली । सेद या विषय है कि अनुकूल परिस्थित न हान के कारण ये 'गाय' काय स्थगित हो गया और प्राप्त ग्रंथ भा श्री मयाशकर यानिक के पास ही रह गए मुन जात हैं । रसक ग्रंथ तर् सन् १९२७ ई० के आरम्भ में श्री वाल्महृष्ण दुवे ने टंग काय का नवीन ढंग में बरुण का मरणीय पग उठाया उनक दक्ष रचन में अब श्री वरुण स्वी प्रगाण कविर नन्दकुमार प्रेमनाथरतुर्वेदी, प्रभुनाथ 'श्यातु तथा मा० प्रभुनाथ

गोयल ने बड़ी तत्परता से काय किया और अथक परिश्रम के पश्चात् भगतपुर कवि स्मारक ग्रंथ प्रकाशित करने के लिए पर्याप्त सामग्री एकत्रित कर ली किन्तु दुर्भाग्यवश यह स्मारक ग्रंथ प्रकाशित नहीं हो सका और कुछ सामग्री स्वर्गीय कविवर नन्दकुमार के पास ही रह गई। स्वर्गीय दुवजी हनाग न हुए और वे सब श्री प्रमनाथ चतुर्वेदी प्रभुदयाल दयालु प्रभुलाल गोयल, चम्पालाल मजुल तथा कवि हरीश आदि के सहयोग से प्राचीन कवियों का जीवनवृत्त और उनकी कविताओं के उद्धरण पुनः संकलित करने में जुट गये किन्तु दुवजी की अस्मायिक मृत्यु हो जाने के कारण स्मारक ग्रंथ की पाण्डुलिपि तयार नहीं हो सकी और न यह ग्रंथ मुद्रित ही हो सका।

सन् १९५५ ई० में समिति के सभापति पद्म काय भार सम्हालने के अनन्तर मेरी भी यह उल्लेख अभिलाषा हुई कि यहाँ के कवियों के स्मारक ग्रंथ का शीघ्रातिशीघ्र सम्पादन कर स्वर्गीय दुवजी के स्वप्न को साकार करूँ किन्तु समिति के नवीन भवन के निर्माण-काल में व्यस्त हो जाने के कारण मैं अपने विचारों का मूल रूप नहीं ले सका। दिनांक १७.१०.६० की कायकारिणी की बैठक में मरे माधियों ने मुझे यह काय अबिलम्ब सम्पादित करने का विचार किया। अतः मित्रों के आग्रह के फलस्वरूप मैंने यह काय शीघ्र प्रारम्भ कर दिया परन्तु इसको जितना मूल मसौदा तैयार था उतना ही निकला। प्राचीन कवियों की रचनाएँ तो थीं किन्तु प्रतिलिपि के लिये असावधानी के कारण काय सम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ आगई थीं जिनका निराकरण करना अनिवाय था दूसरे वतमान-काल के बहुत से कवियों के जीवन-वृत्त तथा रचनाएँ भी नहीं थीं और प्राचीन कवियों के जीवन-वृत्तों तथा लिखने काय। इस काय में सहयोग देने के लिये मैंने श्री प्रभुदयाल दयालु मजुल को निवेदन किया। श्री दयालु ने बड़ी तत्परता से काय प्रारम्भ किया किन्तु अथक काय में अरत ही जाने के कारण वे अधिक समय नहीं दे सके। एनी स्थिति में मरे पुराने मित्र श्री चम्पालालजी मजुल ने सक्रिय बन्धुता उठाया और छह मास का अथक परिश्रम करके प्राचीन कवियों की रचनाओं का उनके मूल प्रतियों से (जो समिति के पुस्तकालय में एकत्रित की हुई थीं) मिलाकर गुड़ किया। यथाशक्ति मजुलजी जसा काय मसौदा इतना परिश्रम नहीं करते तो यह काय असम्भव ही नहीं कठिन अवश्य था। समिति के लाइब्रेरियन श्री प्रभुलाल गोयल का भी पर्याप्त सहयोग मिला।

जमा पढ़ने कहा जा चुका है यह ग्रंथ बहुत जल्दी में तयार करना पड़ा है। अनेक प्रश्न सम्बन्धी भूला के अतिरिक्त वतमान काल के अनेक प्रतिभा सम्पन्न कवियों के वृत्तों जल्दी में रह गये होंगे। आशा है सहस्र पाठक इन त्रुटियों के लिये मुझे क्षमा करेंगे।

(६)

यदि इस कुसुमाजत्रि' के अवलोकन से भरतपुर के कविया को हिन्दी साहित्य का दन और उनका अय कविया के बीच म्यान निधागित हा सका तथा हिन्दी जगत क मनीषिया का भरतपुर के कविया पर गाध-काय के लिए कुछ भी प्रेरणा मिल सकी, तो मैं अपने इस प्रयाम को पयात सफल समभूगा ।

श्री हिन्दी साहित्य ममिति,
भरतपुर (राजस्थान)
मकर सक्राति स० २०१८ वि०

डा० कु जविहारीलाल गुप्त

प्रकरणा १

सोमनाथ-काल



महाकवि सोमनाथ — भरतपुर राज्य बग के आश्रय में रह कर राज भाषा काव्य को पल्लवित एवम् पुष्पित करने का कवियाम महाकवि सोमनाथ प्रमुख हैं। ये 'गणिताय' 'सोमनाथ' और 'नाथ' नाम से काव्य रचना किया करते थे।

महाकवि सोमनाथ का जन्म एवम् कविता काल के विषय में विद्वानों में मतभेद है। मिथवाधु विनाद का अनुसार इन्होंने अपना प्रमुख रीति ग्रन्थ "रस पीयूषनिधि" भरतपुर राज्य के मस्थापक महाराजा बदनसिंह के शासन काल में १७८४ की ज्येष्ठ वदी १० को पूरा किया परन्तु ठाकुर गिर्वानिह सेंगर इनका जन्म संवत् १८८० विक्रम प्रतीत है। हम ठाकुर साहब के मत से महमत नहीं है क्योंकि "रस पीयूषनिधि" निश्चित रूप से महाराजा बदनसिंह के समय में लिखा गया और महाराजा बदनसिंह का शासन काल १७७५ विक्रम में १८१० विक्रम तक ही रहा। इसलिए मिथवाधु विनाद का मत भी उचित ठहरना है। इनके मरणकाल के विषय में भी कुछ नहीं कहा जा सकता।

इनका जन्म मथुरा नगर के चतुर्वेदी (छिरोरा) बग में हुआ था। इन्होंने अपने वंश के सम्बन्ध में लिखा है कि 'छिरोरा' वंशी नरोत्तम मिश्र के दशमोदक एवम् कण्ठ नामक दो पुत्र थे। देवकीवल्लभ के नीलकण्ठ, भाहन, महामणि और राजाराम नामक चार पुत्र हुए, जिनमें नीलकण्ठ के उजागर, गंगाधर और सोमनाथ उत्पन्न हुए। नरोत्तम मिश्र जयपुर, तरेण महाराजा रामसिंह (राज्यारोक्षण-काल संवत् १७२४) के मन्त्र-गुरु थे। सोमनाथ जी के पिता नीलकण्ठ मिश्र अपने समय के प्रसिद्ध कवियों के ज्योतिषियों में गिने जाते थे।

वाक्यकाल श्री कृष्ण भूमि मथुरा में व्यतीत कर सोमनाथ जी नवाब शाहजहाँ के यहाँ गए और उनसे नियमित इन्होंने 'नवाबान्नाम' नामक ग्रन्थ की रचना की। तत्पश्चात् ये महाराजा बदनसिंह के कनिष्ठ पुत्र प्रतापसिंह जी के आश्रय में आकर स्थायी रूप से भरतपुर में रहने लगे। यहाँ पर इन्होंने धन

रनधी कृतिया मे स कुछ उठाहरण लोजिम —

नवावोल्लाम

ईद वगान

वन अवनो को गुनवत गाजी आजमखा,

इत मान इद्र को विलास परसन है ।

वाजत मृदग वीन मधुर मधुर मजु,

तानकी तरगन मा रग दरमन है ॥

कुदन सता सी खासी काम काला सी वाल

नृत्यत अनत अग रूप मरमत है ।

नजर बिलद सी गयद बक्सत रीभि

करन सी कचन को मह दरमन है ॥

बकरीद वगान

पण्डित परम गुन मण्डित विबुध जिमि

उचरत विमल कवित्त गुनवग के ।

नृत्यत अनक नृत्य कारक अनत गति

गावत मुघर मम किनर मुमग के ॥

मोमनाथ कहत मुवारकी चहैषा चाग

चायन मा चतुर नरेग दग दश क ।

आजमखा गाजी का विलोक बकरीद आज,

फीक होत मुघर समाज अमरेग क ॥

दशहरा वगान

(इस छन्द क प्रथम नान चरण ही मित है चौथ की पूर्ति सामनाथ ज
का न शक छन्द पूर्ति मात्र है)

माह आज सरम मभा म दशहरा मान

आजमखा आय पुरहून मो प्रवीना है ।

दान न कविदन गयत्न । हयदन न
 । जाने सुख सुयस गुनाम कर । लीना है ॥
 सो छवि अखड । महि मडल क जीनिवे का
 मानहु विरच अवतस यह दीना है ।
 सोमनाथ वरनत दगहरा । सुप्रमन्न ह्वे के
 ठाट वाट दखि क अतीव मन चीना है ॥

दिवाली उगन ।

मरम मरम की त्विगी मान आजमवा
 राजन मनाज की निवाई निरन है ।
 जगर मगर त्रिमा दीपन मा कर राखी
 तिन पगि दुजन पतग पजरत ह ॥
 छत्त छुबीली हथ फूलन का वृत्त नाम
 ताका दुनि दखि हिय आन भरत है ।
 सा छवि अनद माना पावक प्रतापतर
 पूया ताक चहुँघा तै पून ये भरत है ॥

शशिनाथ-विनोद

उपय

गण छटा मी अग पीत गिर जटा-झूट घर ।
 तापर वसन भुजग तुग गगा-तरंग कर ॥
 चंद्र लिलार अमर तीन दृग बोटि-केष्ट हर ।
 भूत पाम अट्टाम और थो विधि विलास कर ॥
 अद मुण्मान कवाल कर कठ विमान केगन गर ।
 इहि विधि लख्यो शशिनाथ का जग प्रसिद्ध मर सिद्ध घर ॥

रवित्त

जग जटान म निसाल जिमि गगधार
 हार गप त्रिग त्रिनन रूप न्याय की ।
 गरन गरे म जाग जाहर जलूम बागी
 प्राध अग तरनी मनह क पयार की ॥
 मामनाथ गरे उर अनर निगारि नव

पारावार सारन हू की कर्ता हुस्यार की ।
भसम सिगारे की लिलार पर धार-ज्याति
चंद की बला की वा पिनाकी प्राण प्यारे-की ॥

रामकला-धर

वडी चौपाई

श्री वदनमिह व्रजमटल नायक जग जाकी जम छापी ।
ताकी कुवर प्रतापमिह वर आनन्दन अधिकायी ॥
तिहि निमित्त कवि 'मामनाथ'ने रामचरित्र बनायी ।
रामकला घर नाम ग्रन्थ को प्रथम मयूप लसायी ॥
वर जाडे टाढ हनुमन्तहि आपु राम जो बाल ।
सुनि अब तत्व कहतु हा तो मो मेर भक्त अमाल ॥
एक आत्मा अरु अनात्मा परमात्मा सु तीजी ।
जीवर प्रकृति ब्रह्म क्रम ही तें तीनो उर गुनि तीजी ॥
तीन भेद है जस नभ के डीठि सवन व आव ।
महाकाम है पहिली दूजो घटा वास छवि छाव ॥
अरु प्रतिविब तीसरी-भे सुग्रन्याति-प्रगट बनायी ।
इही भाति चतुस तीन विधि भोमनाथ न गायी ॥

मवया

हे रघुनाथ दयान मुनी अब मी निहच तुव प्राई पखाणि ही ।
बाठ श्री पाहन म कहा भेद, मनुष्य करे नाहि श्रीर विचारि ही ॥
ए पण पकळ सावर के, तिनकी सह जान क्या श्रीरज धारि ही ।
या कहि अंगग धाइ मनाह न फेरि कळो अब पार उतारि ही ॥

गहा

भय मविद्या त प्रगट दहाणिक समुदाय ।
निनम चतन गति सो प्रतिविम्बनि है आय ॥
जीव लोक के मध्य ह्या जीव वटन सब ताहि ।
विगन अविद्या अह्य ही गानी लमत उछाणि ॥
दह बुद्धि मन प्राण की, जव ती है अभिमान ।
नर नौ कर्ता भागता मृत दुष की मुनिमान ॥

पर प्रह्व को नाहिवें, यह समार विचार ।
 तुम म नाहियजान को, लेम जगन भगतार ॥
 हम मयारो हैं सत्र मने मुहा मविवक् ।
 तुम अकय सदा अमल, शान्दमय प्रभु प्रक ॥

रस-पीयूषनिधि

गोविन्दानन्द-नारायण

मगन जगन जुग भगन पुनि रस गन लघु गुण हाय ।
 वीम वरग या गोविन्दा वरने रवि मव वाय ॥

उदाहरण

परम मु हातत पून अदत मग मग अचन हैं ।
 तिन रन एक मुभाय मी नित पथ हरन नन हैं ॥
 'गगिनाय' प्रीतम सांवरि कब म्माय माद वढाय हैं ।
 परसाय मेर मनेह की म्मुक्कयाय कठ न्गुणाय हैं ॥

सयोगशृ गार् नक्षराम

दम्पनि मिलि विहरत जहाँ, ममन कना प्रवीन ।
 ताहि मजाय गिगार बहि वगत मुकवि कुशीन ॥

उदाहरण

जगमग जटिन जवाहर को मग्जक
 पून म अनुपम विछोना मग्मान ह
 मन्त लन मन रति काम स मुपर लज
 मग्जक वमन श्री रूपन नमान हैं ।
 'नीमनाय वहे चित चोचन मी मोर भर
 प्रेम रम रगन को ध्यान बरगन हैं ।
 गानवाही दम्पनि परम्पर द प्रात म्माय
 रगमाग म्मागिनि तिग्मि म्मुक्कियान हैं ॥

अथ रूपकातिशयोक्ति लक्षणम्

केवल जह उपमान की कहिबौ है सुखदानि ।
रूपक अतिशय उक्ति सा रमिक लेहु पहिचानि ॥

-। उदाहरणम् -

धर हर कुन्त कद्रलि अरविन्तन प
गुजरत भवर समीप भग्बर ह ।
परक्त कोक सुरसरि की तरग मग
भटनि कल्प बलि काम तन्वर है ॥
विद्रुम सुरगनि म हीरा का जगत जानि
'सोमनाथ कहै सो मधुरता की घर ह ।
देखी लम दामिनी न छत्र जल घर माहि
नक्षत्रपनि अक म विचित्र तिनकर है ॥

-। - विभावना लक्षणम्

विना हतु जह कारज सिद्धि ।
सा विभावना जान प्रसिद्धि ॥

उदाहरण

सखवला रुचि मा रनी उहा वदन की छाह ।
बिन ही पिय निरख हरपि विहमि पमार बाह ॥

विट मखा लक्षणम्

काम कलि का बात अर दूतपन म ठीक
गठन य विट मखा के बरनन है कवि नीक ॥

उदाहरण

कहें का गुनाय मानि बेमर उगारि अग,
मग मलियागिरि के नव ना मिरावणी ।
पूतन की पाखुरी विद्याय त न ह्व है कहु
समति मखीन का मित्राणि अकनायगा ॥

'मामनाथ' ध्यारे मौं न कीज अभिमान प्यागे,
 एम पचार विद्या और अधिकायगो ।
 बद रजचद कौ मरूप ग्नु चार्गो चनि,
 धतर क जुग कौ जरन घटजायगा ॥

श्रुव विनोद

छप्पय

उज्वल मृदु अग अग, जयमग कमल वदन अति ।
 हरि ग्म मत्त विगान, ताल ताचन चचल गति ।
 गीग लदूरो कुटिल, जनकौ तुममी माता ।
 निलक भाल करवीन वसन कटि तट मृग-छाया ।
 कहि 'मामनाथ' न्दर अति, हीतहार कौ नान गुनि ।
 वर गुदि विगारद निदि-निधि दग्म नारद दन मुनि ॥

पद्वि द्वन्द

तुम चरन नजत जे प्रभु दयाल ।
 तिनका न'और आगिप विगान ॥
 याने तुम हममे गीन जानि ।
 या रसा' करियु नह मांनि ॥
 जिहि विड प्रसूता-प्रथम राष ।
 निजु वच्छा-वा पाउति सुभाष ॥
 तुम विगह दोन वसन मुजान ।
 हम-है, अधीन अनमावधान-॥

दोहा

यों नर ध्रुव न जागिषर प्रसूतो न्चरे वैन ।
 धनि धनि उदि हरि तव वाते हृषण चैन ॥

पादाकुनर छन्द

बगो धीर दयिया त धारनि ।
 अग समुयनि की धार अगारनि ॥

माइ सुनीति और ध्रुव छोना ।
भीजगय अमुजन गहि मीना ॥

मत्त-गयद

सुंदर मन्दिर अवर औ बहुरग तुरग मतग अमाने ।
कचन के मनि मडित माज सज तरुनी अर पुत्र सयान ।
वाग वडे बल्पद्रुम के शांताय' जुदत मनारथ दान ।
त ध्रुव भान नही अपन सपन के समान सवै पहिचान ॥

रामचरित रत्नाकर

कवित्त

जैसे तजवतनि म उद्धत प्रभावर औ,
पव्वयनि मध्य हिमवत ज्यो पहार है ।
मि धुन क मध्य ज्या गम्भीर छीरमागर है
नरन म त्यो तुम न विक्रम कौ पार है ।
रामचन्द्र सुना रावरे के सम बोऊ अब
जग म न दूजौ यह बात निरधार है ।
बहन कुवेर न असुर जस नाम जम
पावक ममीर न पुरदर उतार है ।

नागच छन्द

चली बुचाइ गेल ते अनन्त नीर धार है ।
नम पववङ्ग वीर औ मतग वार वार है ॥
वप प्राण वृक्ष डार पात मूल तच्छन ।
चक्षो महेंद्र प जब ममीरन गच्छन ॥
अनक रग की चनी अनक धार छुट्टिक ।
अनिन्ता गिरिद्र की गई गिना मुफुट्टिक ॥
मनस्मिता गिना बिगान हरिताल मौ मिली ।
ममीरन वीर क प्रचण पग मौ मिली ॥
भविण गग चपिक गिलानि दुख मण्ण ।
म धूम जवानमा गग मुजवान मुख्य छण्डन ॥

भजे गयव नाग वृद्ध बुद्धि चित्त धारि क ।
हुत मग कन्दर सौ मुयान की विमारि क ॥

छापय

चण्ड 'फुरहरी मडि चरन उदट मचक्क ।
विकट बगु सकोचि पुच्छकरि उच्च उचक्क ।
चल्यो व्याप के पथ कपिनि कु जर बन मड्यो ।
हनुमन्त उद्दाम चित्त आनन्द घमड्यो ।
न्यो महिद्र पवे सब शृ गे गई दरविन क ।
च चल्यो नीर चहुँ धार त सरिकी मिना कर्विन क ॥

माधव-विनोद

भसक्तु वदन मतङ्ग बुम्भ उहाग अग वर ।
वन्त वनिन भुगुण्ड कु डलित गुण्डि निद्धि धर ।
वचन मनिमय मुकुट जगमग गुभ्र शीश पर ।
लोचन तीन विगाल चारि भुज घ्यावत सुरनर ।
'गणिनाथ' नन् स्वच्छन्त नित, काटि विघन छरछन्त हर ।
जय बुद्धि विलन अमन्द दुनि, इन्दु भाल आनन्द कर ॥

॥ ॥ गस पचाध्यायी

मबया

राजरो हौमी विनोदनि सौ अरु रामुरी की मुनि नात्र नरेरी ।
जागि उठे मनमय की अग्नि छिनो छिन बाहन भानि अनेरी ।
सौमी हम अघरामृत सौ 'गणिनाथ' कही त्रिनि बात बरेगी ।
नातर या विग्रहानत म जरि हाथगी बान्ह भभूति की देगी ।
मनमय मनाहर मूरति त्याम न क्या अवनत दग्मावन ही ।
मरमाड म नेह भनीविधि मा मुय-मेह न क्या वग्मावन हो ।
'गणिनाथ' गुणत कही निनही विरही विरही परमावन हो ।
य बात न चाहिय वात तुम्हें जु हमें दतना तग्मावन ही ॥

मग्राम दर्पण

दिग्गुल वचन (दाहा)

माम, अनिश्चर वार कों, पूव न करी पयान ।
 दक्षिण का गुरु के दिना चलिय नहीं सुजान ॥
 भानुवार अर गुह्र का, मति पश्चिम का जाउ ।
 मंगल अर बुधवार का उत्तर दिशा बचाउ ॥
 पूरब में गिनि अग्नि दिशि, नक्षत्र दक्षिण जान ।
 वायव पश्चिम म समभि ईश उत्तर पहिचान ॥

अथ जय पराजय चानार्थ स्वर प्रश्न कथन [दाहा]

वाय स्वर की चान म वाय प्रश्नक आय ।
 पूछ तो सप्राम कों, जोत प्राप्ति उनाय ॥
 याही दक्षिण स्वर चलत, अर दाहिनी, आय ।
 पूछ तो अति कष्ट कर, पाव मन की भाय ॥
 वध स्वर की अर क, पूछ अपना काज ।
 नाम होय तत्काली मम्पति सुम को माज ॥

प्रेम पञ्चीनी [दाहा]

भगन मूरति विघनहर, मुग्ध विभुवन पाल ।
 मेव प्रम-ममुद्दि-के, ज-ज-श्रीनलाल ॥

गयना

क्या ना धा नरमार तुमाग नहि मुखडा दिवलाव है ।
 रान तिना विन ती चरचा मुभन् और न भाव है । -
 बन्दा महद्व गिरद क्या गिरणी करण है । ।
 'भामनाथ नहीं म क्या तिन अन्त विच परण ॥ह ॥
 ध तुभम महद्व गृधि न नन घसाह उरमे है ।
 कौन सब मुग्धाद इति प श्रीरामे सुरमे है । -
 बन्दी पहिचान कर नू भला दिया त-अरण है ।
 माननाथ नहीं म क्या तिन अन्त-विच परण है ॥

खान पियन दो, गुल्ले भूजी-साहम नहीं ठहरदा है ।
 विधि का मान बगबर गुजर निमि लिन आठ पहरदा है ॥
 बिन तेरा मुख देखे जानी काम बहर अति करदा है ।
 'सामनाथ' नहीं स कसा दिल अन्दर बिच परदा है ॥
 तरदबन्द व मरग कहेया जे पन को प्रनपाय है ।
 पाव नजर-पहिचान गहगही गुरव दरद उसाति है ॥
 प्रम पथ मे डग द जानी अब कयो हिये अहरदा है ।
 'सामनाथ' नहीं स कसा दिल अन्दर बिच परदा है ॥

रम-विलास

छप्पय

उदय त्रिवाकर रग-अग आभा वर धारिनि ।
 त्रिनयन चन्द्र लिनार ईग अरधग विहारिनि ।
 मिह वाहनी मिदि चारि भुज आयुध मडिनि ।
 जुगिति मटल सग चड दातव दल मडिनि ।
 बहु बुद्धि वृद्धि बरदायनी माहनि मुर नर मुनि मननि ।
 इजे महाय गगिनाथ कौ जय जय मिधुर मुग जननि ॥

नायिका-लच्छणम्

दोहा

मुन्गर केलि कला चतुर, भूपन भूपिन अग ।
 इहि विधि तरना नायिका रम कौ पाड प्रमग ॥

उदाहरण [ववित्त]

मात्ति बभू सी मारी मुन्गर मुगध मनी
 जगमग दह दुति कुन्दन क रगमी ।
 गीन मुघराई की-मा मौव अरकिद मुगी,
 ननन की-गति गूढ तरन-तुरग मी ।
 छत्ति चहैपा मनि-भूपन मयूप-वारु,
 'सोमनाथ' लाग वानी उपमा विरग मा ।
 राज रति मन्त्र धनग धनना मी प्राहु,
 वाद धग धगनि स जावन तरग मी ॥

सुजान विलाम

मवया

ग्रामनि म द्रुम पुञ्ज निकुञ्ज प्रफुल्लित सौरभ की भग्नी है ।
चार प्रभाकर की तनया ग्रह चार पदारथ की करनी है ।
नित्त जप 'गणिनाथ हिय जह की रज पापन की हरनी है ।
लोकन यो वग्नी वग्ना दुव की हग्नी ब्रज की धरनी है ॥

कवित्त

प्रबन प्रनाप दानी प्रनि मो विराज जार
अग्नि के पीर, रोग धमक निमान को ।
ठट्ट मग्हट्टन क निघट्ट डार बानन सा
सैम कर लेन है प्रचण्ड बिनगान की ॥
'मोर्मनाथ कहै सिंह सूरज कुमार जाकी,
ब्राध त्रिपुरारि की मो लोज दरबान की ।
चत्कि तुंगे जङ्ग रग कर सेलन मा,
तीरि डारी नोखी तरवार, तुरकनि की ॥

२-टहकन कवि — इनके पिता का नाम रंगीलनाम था । ये जाति के स्वामी और चौपड़ा गोत्र के थे । इनका निवास स्थान जलालपुर था जो तहमाल नगर में एक प्रसिद्ध गांव है । इन्होंने अपना परिचय स्वयं इस प्रकार दिया है —

टहकन कवि जलालपुर बानी ।
छत्र वंश नालान जामा ॥
पिता रंगीलनाम जग नामा ।
जाति चौपड़ा कुल अभिरामा ॥
ममय पाय कवि गयो सियाही ।
हय क्रतु भाषा कगे तहा ही ॥

टहकन का कविता काल 'रिक्तम' की १७ वीं शताब्दी का आरम्भ सिद्ध होता है । इनका बनाया हुआ 'जयमनश्चमथ' नामक ग्रंथ पाया गया है । यह २० × २०/८ साइज का २७५ पृष्ठ का ग्रंथ है । इसमें ७३ अध्यायों में महाभारत के अश्चमथ पद की कथा दाहिले चौपाई तथा मारठों में लिखी है । ग्रंथ निमाण काल अर्थात् वर्ष १२ बुधवार सवत् १७६६ है जिसे स्वयं कवि ने इस प्रकार दिया है—

नवित्त
 मार मुकुट मीस गुभ कमरिया, तिलक, माथे,
 चमर बनी है नाक माती, ढरवन है ।
 नगत जन्ति लोल कुंडल कपालत प,
 दान तसवि छवि काटिक धरत है ।
 वामुगी अघर, राजी उर, वनमाल माजै
 छुद्र वटिका बाजै छवि कहा ना परत है ।
 तपुर विंगाल पग, टहकन प्रभु नदलाल,
 ऐमा ध्यान धर काटि पातत्र टरन है ॥

दोहा

प्रश्न किया रविमनि बहुरि, कही टुप्पा ममुभाइ ।
 तीन अवस्था तुम रहि, वजाए म वमि जदुराड ॥

चौपाई

तीन अवस्था तुम ब्रज रहे, कीन कैल जंगत भव कहे ।
 प्रथम विशार तुगड, कुमारा तुम गाकुल मे किया विहाग ।
 पाच वप कौ बालक हाई कहै विगार अवस्था माई ।
 तिह प्राग पीगड वप दस, वप पाच तगलों विगार रस ।
 तुम तीनहु ब्रज माहि विताई, इव दिन हमरें मन यह आई ।
 ब्रज की विधि जानत बलमाता तिहि मा पूछ लहु मव प्राता ॥

छप्पय

यथा बुद्धि अन्तर्मर्गे किया वनने हिय हपित ।
 अश्वमेध गभीर ग्रन्थ, कवहुती अच्य मनि ।
 कहुत उक्त बल बुद्धि, कहुक पग्वृति हरि दीनी ।
 यान कीन तुम अचर मुभग पाथी तुम कीनी ।
 श्री नन्दलाल का कृपामो, हय क्रतु का भापा करी ।
 कवि 'टहवन' बुध जन मावही जहाँ चूक रगनन परी ॥

3-हरि प्रसाद — प्राप मिश्र बग व चतुर्वेदी — जानि म उत्पन्न हुए थे । इनक पिता का नाम श्री गणेश चतुर्वेदी तथा पितामह का नाम श्री मन्मथनलाल चतुर्वेदी था । भरतपुर महाराज व प्राप दानाश्रयण थे । हरिप्रसाद प्राग्भन म ही

काव्यानन्द में मग्न रहते थे, इसका कारण वातावरण था । इनके पूर्वज काय प्रेमी रहे थे । अतः आपने भी इस सम्पत्ति को धरोहर रूप में प्राप्त किया और बचपन से ही वाच्य सृजन करते रहे । आपकी महत्वपूर्ण कृति भाषा तिलक उपलब्ध हुई है, किन्तु गणेश बाहोनी द्वारा खंडित हो गई है । इस पुस्तक के अन्तर्गत मिश्र परिवार का क्रम बद्ध सुन्दर परिचय मिलता है । हिन्दी के साथ-साथ इनका संस्कृत का अच्छा ज्ञान था ।

आपके कविता काल के विषय में विद्वान् एक मत नहीं है । उसका कारण यह है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में अन्तर्गत कहीं भी इसका उल्लेख नहीं किया है । अतः आपका कविता काल अनुमानतः सम्बत् १७६० ठहराया है ।

इनकी भाषा के विषय में पाठकों को भाषा तिलक से पूर्ण परिचय मिलता है जिसमें उन्होंने विदुष्य राज भाषा नवीन छन्द एवं अन्याय का प्रयोग किया है । इनके काव्य के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

अमभव भणित

कवित्त

कमल मृणाल तनु सिव यस वारि स्त्रच्छ
 कीरनि समुद्र गामिनी के तट बटि किनि ।
 बकुल मुकुल दाम परिमल तौलि' तौलि
 मग्नमकलि अग लाडयतु कटि किनि ।
 चन्द्रवप तात सुभ-मीनल समीर गुन
 साजि नजि लाज कहि पिथी मुधा पथ किनि ।
 सपन मनारथ पथिक पिय भेटि भेटि,
 विन गुन नगर हिय उपर धरायो किनि ॥

गु फ नाम शब्दालकार

दाहा

गु फ निरथक हू जहा रचना ते मुख देय ।
 गु फ नाम मा जानिय गु फ विभूषण तय ॥

मवया

भूत गनी मुस प अनक सुकपात्रनि भूमति भूमनि छाई ।
 पायन पत्रनि का मनक, कटि किकिनि घु घर त्यो छुननाइ ॥
 नाच उछाह लिये लय लालु जनोमनि औ वनिना घिर छाई ।
 धाना धेई धाना धई गु फ वरत मय वाजन तार सब मन भाई ॥

भारती वृत्ति

कोमल प्रीति जहा रचन अथ सुकोमल आनि ।
कविताई म तिह सरिम, वृत्ति भारती जाल ॥

उदाहरण

भृकुटि निकट छिटती अलक, रही गुलभरी खाय ।
मकरचञ्ज धनु मों लगी मनु जीवा दरमाय ॥

८-कृष्णलाल भट्ट — कलानिधि' 'सात कला निधि और कृष्ण कला निधि' आदि अनक उपनामा म कविता करत व । भरतपुर राज क मस्थापक महाराजा बदनसिंह क पुत्र ती प्रतापसिंह से मापका धनिष्ठ सम्बन्ध था जमा कि इनकी रचनायो स विदित हाता है —

‘प्रजराज कुंवर विराजि है, मु प्रतापसिंह उजागरी ।
तेहि हत विरचित कवि कलानिधि धार ग्रन्थ गुनागरी ॥

कलानिधि का भरतपुर के अतिरिक्त बूढी, जयपुर तथा मधुग आदि म भी रहना पाया जाना है । देवकवि के आश्रयदाता राजा भागीलाल क यहा भी इनका अच्चा आदर था । इन्होंने राजा भोगीलाल के लिये ‘अलकार कला निधि’ नामक ग्रन्थ लिखा इनका अधिन समय प्रतापसिंह के आश्रय म ही व्यतीत हुमा । इनके लिये इन्होंने वाल्मीकि रामायण, सात-बाण्ड, युद्ध-बाण्ड और उत्तर बाण्ड आदि की भाषा मे रचना भी की ।

केशव की भांति बहुमुग्धा प्रतिभा क, पाण्डित्य, का, आभाम इनम मिलता है । य सस्वत क विद्वान थे । इन्होंने उपनिषद् का ‘गवर भाष्यानुसार गद्यानुवाद किया है जो प्राचीन हिन्दी भाषा का एक नमूना समझा जा सकता है । महाकवि केशव के समान इन्होंने प्राचायत्व म भी ऊंचा बंदम उठाया है जमा कि द्वाकी रचना शृ गार माधुरी एवं ‘प्रजकार कलानिधि से विदित होता है इन्होंने रामचरित्रका की पद्धति पर विविध छन्दा में बान्मावि रामायण का भाष्यानुवाद भी किया है । भाषा भावानुसार मानुप्राप्तिकरण्य आराधनी है । शृ गार म काद बाई छन्द तो मनिगम के रमराज की ठपकर के हैं । इनका कविता-काल विक्रम संवत् १७५६ स १७६० तक उहरता है । एतक निम्नलिखित हस्तलिखित ग्रन्थ मिलते हैं —

- (१) शृ गार-माधुरी (३ की मरेण युधसिंह क लिये मध्यन् १७६६ म लिखित)
- (२) प्रजकार-कलानिधि (राजा भागीलाल के लिये लिखित) ;
- (३) उपनिषदमार (इनका यह पुस्तक स्वान्त मुग्धाय मालूम हाती है)

- (४) दुर्गा माहात्म्य (भरतपुरातगत वर क राजा प्रतापसिंह के लिये सबत्
१७८० वि० म लिखी गई)
- (५) रामायण बालकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड (यह भी राजा प्रताप
सिंह के लिये लिखी गई)

इनके अतिरिक्त सस्कृत में एक 'रामगीता' नामक पुस्तक भी इन्होंने लिखी
है जो जयदेव कृत 'गीत गार्विद' की परिपाटी पर है। माधुसूय की दृष्टि से कही कहा
यह जयदेव के समकक्ष दिखलाई पड़ते हैं।

इनकी कविता के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

शृंगार माधुरी

दाहा

दुःखम पाय नृप को सुकवि सबल कलानिधि लाल ।
यह शृंगार रस माधुरी, कीन्हों ग्रथ रमाल ॥
सम्बत् सबह मी वरस उनहत्तर की साल ।
सावन सुष्टि पूयो मुदिन, रच्यो ग्रथ तत्वाल ॥
छत्र महन बूदी तखत, कोटि 'सूर सम नूह ।
बुद्धिबली पनिमाह क, कीन्हों ग्रथ हुजर ॥

सवया

सब भूपति बस सिर अतस मग निव धम नरिदवती ।
मति मान महिम्मत हिम्मत की हृद किम्मत की हृद हिदवती ।
सुख मी मरमी सरमी मरमी सरसाहह सोरभ वृदवती ।
गुण मा अगरी मगरी नगरी अधिराज विराजत वृदवती ॥

अलंकार कलानिधि'

सहस्रक विप्रलम्भ [सवैया]

एक सम नन भाषिन म विधिनाहि अराधि महा वर पायो ।
ता न्नि स अलि नन्दबुमार बिलाकन ही इनकी मग भायो ।
मान भरा अनि भूत परी उन थाप नियो तन तापन तायो ।
राज दई धन दपन को अर दपन सग निमप लगायो ॥
कचन की इ गेद मनोहर कचुकी माभ छिपाइ धरी है ।
त अब दोजिये कीजिये कनि या बालि हेम ठिग आद हरी है ।
बाल विना बटाइ तसी तप ओठनि दन उजास भरी है ।
माना नय द्रुम पनव ऊपर बुदकनी बिलिकें बिलरी है ॥

उपनिषदमार्ग

दाहा

चरण कमल श्रीराम के अकथ मूग्रानन्द मूल ।
जिहि रज मा पाग्वान हू, पायी घाम अतूल ॥
भाष्यकार भगवान जे, कहे सूत्र पर अथ ।
तही अथ सधोष मा, समुक्ता मुमनि सुअथ ॥

तत्तिरीत सूत्र

नमा ब्रह्मणे । नमस्त वाया । त्वमेव प्रत्यक्ष ब्रह्मानि ।
त्वमेव प्रत्यक्ष ब्रह्मावादिपम् । भक्तमवादिपम् ।
सत्यमवादिपम् । तमामावीत । तद्वक्ताकारमावीत् ।
आवीमाम् आवीद्वक्ताम् ॥१०॥ ॐ शांति शांति शांति ॥

अथ

“ब्रह्म जा वायु रूप है ताका नमस्कार हाऊ, आग हू वायु ताको नमस्कार
हाऊ, इहा पराक्ष प्रत्यक्ष दोऊ करि वायु ही कहियत हैं । मरु तुही वह इन्द्रिय
और प्रत्यक्ष ऐसी ब्रह्म है जते तात ताही को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूंगे । उत कहे
गाम्त्र अनुमारे कत व्य क अनुसार बुद्धि म भली भाति निश्चित जो अथ सोऊ तो
आधीन है । तातें ताही को कहूंगे । सोई अथ वाक काम और सम्पन्न कीजियत
मय कहिये साऊ ता आधीन है सो सम्पन्न कीजियत है ।”

दुर्गा माहात्म्य

सवमा

धमन संजुत कम सबे करिहैं अति आदर हो सा सदाई ।
धारन है तिनको प्रतिपाल जु रामन बुद्धि मदा थिरयाई ।
ते पुनि स्वर्ग पू जात सदा नित पाई प्रसाद तिहारी ही पाई ।
नाते तुही तिहैं जावन म इव देव मन्त्र सवका फन पाई ॥

रामायण

दोहा

जग धी कुंवर प्रनाप न, टयो अथ की मान ।
रामायण भाषा कियो मुकनि कलागिधि जान ॥
बालकाण्ड अथ युद्ध मरु उत्तरकाण्ड उदार ।
रके भट्ट श्रीकृष्ण ने, संजुत प्रेम प्रसार ॥

आस पास ठहराया जाता है । आपके पक्ष बड़े मरल सरम और हृदय ग्रोही हैं ।
उत्पाहरण के लिए कुछ द्रव्य प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

एरे मेर मूढ मन । काह त्रिकन हान,
चतुरभुज चितामनि तेरी चिता हरि है ।
यशीधर अवर विश्वभर कहावत है ।
मासे तीन दुखिया को कसे करि-बिसरि है ।
असरन सरन ऐसी विरद जा धरावत है,
भीर पर भजन को कसी भाति करि है ।
वारन की वार कछु करीना अवार सा ता
अवक अवार क्या हमारी वार करि है ॥

गिरि को उठाइ ब्रज गोप को बचाइ लियो
अनल त उवार काह बालक मभारी को ।
गज की गरज मुनि आहत छुडाइ दियो
राख्यो व्रत नम धरम पडवन की नारी को ।
राखे गज घटा तर बानक विहगम के
राख्यो पन भारत म भीषम व्रतचारी को ।
त्रिविध तापहारी निज सतन सुवकारी एक,
मोहि तो भरोसी भारी ऐसे गिरधारी को ॥

कहा भयो जा प तुम द्वारिका व राजा भय,
गाकुल के वासी सट्टी द्याछ के पियया हो ।
कच्छ मच्छ रूप वाराह नरसिंह भये,
कहै हाय बाभन आछे स्वागी भरया हो ।
धेनु व चरया गुन माल के रखया काह
बसी व बजया अरु वन व रहैया हो ।
टग्न हा प्रात गन पूछन न मरा वात
जानी हम घात भृगु-दान के महैया हो ॥

प्रकरण २

सूदन-काल

महाकवि सूदन — इनका जन्म मथुरा में माथुर चतुर्वेदी कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम वसन्त चतुर्वेदी था। इन्होंने 'सुजान-चरित्र' में अपना परिचय इस प्रकार दिया है —

मथुरा नगर मुघाम, माथुर कुल उत्पत्ति वर ।
पिता वसन्त मुनाम, 'सूदन' जानहु मयन कवि ॥

जिस प्रकार महाकवि भूपाल ने महाराष्ट्र के गी. गिराजी के वीर चरित्र का वर्णन कर नमार्ग में श्यामिनी प्राप्त की उसी प्रकार इन्होंने भी भगतपुराणीय मूर्जमल के वीर चरित्र का वर्णन कर साहित्य समाज का चर्चित कर दिया था। यह महाराज के माय युद्धों में उसी प्रकार रहने थे जिस प्रकार पृथ्वीराज के माय चल्दरवाई। सूदन की रचनाओं में यह विधि होता है कि यह कविलेखना कही नहीं बरन् तलवार के भी धनी य। युद्ध कुशलता इनकी रचनाओं में स्पष्टका पड़ती है। मिथ-व-धुओं ने इनमें विषय में लिखा है कि 'इन्होंने ब्राह्मण युद्ध का वर्णन किया है। हमारा मत इस विषय में यह है कि इन्होंने युद्ध में स्वयम् भाग लेकर पूरा अनुभव के साथ रचना की है। इनका कविता काल चरित्र है जिसका प्रकाशन ना० प्र० म० कागी में हुआ चुका है।

सुजान-चरित्र के सम्बन्ध में विद्वानों का मत है कि यह रचना अपूर्ण है। सम्भव है कि कवि के स्वयंवाच्य ही जानने में पूरा न हो सकी हो। इन ग्रन्थ में वार काव्य में रीति काव्य तक की प्रवृत्ति एवं परम्पराओं का दर्शन होता है। इसमें वार काव्य प्रधान है। इसमें रस के अनुकूल ही शान्ति-स्वर्णों एवं कडकनी भाषा का प्रयोग किया है। भाषा सरस व्रज भाषा है। इन ग्रन्थों की भाषा में चात शान्त है कि कवि का रस की बहुत सी भाषाओं का ज्ञान था। दिल्ली की लूट में पञ्जाब, महाराष्ट्री पूर्वी, वगैरह तथा गुजराती प्रायः सभी बानियाँ का स्त्री पात्रों में प्रयोग किया है। प्रथम के आरम्भ में कवि ने अपने पूर्ववर्तों एवं मम बानियाँ कवियों की रचनाओं का अपना-व्यंजना का परिचय दिया है। यह ग्रन्थ काव्य के माय २ इतिहास की भी धृति करता है। कवि ने अपने छन्दों का प्रयोग वही कुशलता से किया है। इनकी रचनाओं में उद्दिष्टता तथा वर्णनों में मात्र का मात्रा प्रचुर परिमाण में मिलती है। वर्णित दृश्य का चित्र मा स्वीच रना इनकी

विशेषता है। इनकी रचनाओं में केवल यमक अनुप्रास आदि अनुसूचक ही नहीं दिखलाई पड़ती वरन् अनेकों मूलकार स्वभाविक रूप से आवर पाठकों को रसप्लावित किये बिना नहीं रहते। 'सुजान चरित्र' में वर्णित आठ युद्धों में प्रत्येक युद्ध के पश्चात् हरिगीतिका छंद में उस अध्याय का सक्षिप्त वर्णन करना इनकी निजी शाली है जिसकी परम्परा भरतपुर के सभी कवियों में पाई जाती है। वीर रस के अतिरिक्त इनकी कविता में अन्य रसों के भी बड़े हा सुन्दर भाव पूरा छंद पाये जाते हैं, जो अपनी समता नहीं रखते।

सुजान-चरित्र

कवित्त

अग्नि असोक भरी सोरु भरी निति और,
 दोस भरी पूतना, अदोस भरी ओपिका ।
 कम हिये भी भरी अभीभरी अधवम,
 पडव क कीरति, अकीरति की लोपिका ।
 साज भरी द्रौपदी सुजान भरी ब्रज-भूमि
 कुवरी इलाज भरी साज सद सोपिका ।
 दवकी अनद भरी ऊग ब्रजचर घरी,
 भाग भरी जमुदा सुहाग भरी गोपिका ॥

अनी दोऊ बनी धनी लोह कोट सनी धनी,
 धमनु की मनी वान धीनत निपग म ।
 हाथी दृष्टि जात माथी रग न धिरत भोन
 भारती म हात गग कीरति-तरग म ।
 भानुकी सुतासी कवि सुदन निवारी तेग,
 बाहत सराहत कराहत न भग में ।
 वीर रस रग म यौ आनत उमग म सा
 पगु पगु प्रण हात जोधन कौ जग म ॥

छप्पम

मिनी परम्पर डोठि वीर पगिय रित अगिय ।
 जगिय जुद्ध विद्ध उद्ध पलवर रग खगिय ।
 भगिय सह शृगाल वात दै माल उमगिय ।
 सगिय प्रेव पिसाच पत्र जुगिन ल नगिय ।
 रगिय सुरग रभाति गग रद्र रहम आवाज दिय ।
 मन्नाह करकि उदाह भग दुः मिपाह जर भूम भूमिय ॥

कवित्त

बाप बिप चाये भया पटमुख राख। देखि, । । । । ।
 आसन। मे राख बस वास जाकी अचन ।
 भूतन के घया आस पास के । रमेया,
 और कानी के नघया हू क ध्यान हू ते न चले ।
 बल बाघ वाहन बसन कौ गयद खाल,
 भाग श्री बतूरे कौ पसार दंतु सबन । । ।
 घर को हुवालु यहै सकर को बाम कहै,
 लाज रहै कसे पूत मादक कू मचल ॥

कवित्त

श्रीनित्त-अरघ द्वारि लुत्थि जुत्थि पावढे द,
 दाख-धूम धूप दीप रजक की ज्वालिवा ।
 चरवी को चदन चढाय पल दूकनुके,
 अच्छन अखड गोला गोतिन की चालिका ।
 नवद नीवी साहि सहित दिल्ली की दल,
 कामना विचारो मनसूर पन-मातिका ।
 । फोटला के निकट बिकट अरि काटि सूजा, ।
 भलो विधि पूजा के प्रसन्न कीनी बालिका ॥ ॥

मालती छन्द

फिरयो मनसूर कियो बल पूर कियो करि कोप धरें, बहु तोप
 कर सन मान बुलाइ मुजान कियो बहु मान बजीरहि आन
 लियोमु अगार-मुजान कु वार कियो, सुपयान, दुहै बलवान

मासोर छन्द

पुनि उतरि पार जमुना अपार उत में पठान हुक मावधान

दोहा

एक और महार दधु, दूज सिंहमुजान,
 उलहि रहेने अग्गधरि, मनमुग भाग पठान ॥ ॥
 चहै थोर घासान के, ध्याए-सह महद ।
 मनहुँ गयक मिलन की, आयो सिधु विहद ॥ ।
 दोह आम चीतन तने एडे भुभट विनु जग-
 राय मुजान के दलमसनु भाग चरी उमग ॥

८-रगलाल — इनका जीवन वृत्तान्त वही भी उपलब्ध नहीं है, केवल मिथ बंधुओं ने इनको अपने 'विनोद' में ८२५ वीं सख्या पर लिखा है और कविता काल १८०७ वि० माना है। यद्यपि आप महाराज सूरजमल के दरबार में रहा करते थे, किंतु उनके सम्बन्ध में आपकी कोई रचना नहीं मिलती, केवल महाराज जवाहरसिंह की प्रशंसा का एक छन्द प्राप्त है जो नीचे उद्धृत किया जाता है। ऐसा अनुमान होता है कि सूरजमल के निधन के पश्चात् य महाराज जवाहरसिंह के आश्रय में रहे हों।

छप्पय ।

जटित जवाहर मल्ल, रत्न चहुँ दिशि अति हलिय ।
गहर नदिय खल भलत, फनपती धर धर मल्लिय ।
तरवर घन गिर परत, होत कुलना हल भारिय ।
हय ही सा धर धसक मसक नर मिलत न नारिय ।
चडि हक निमक अभग ल, प्रगट जग दल जात तव ।
मुज्जान नद रगलाल भनि कुल वदनेस सुभाति इव ॥

९-अखराम — कविवर अखराम — भरतपुर नरेश सूरजमल के दरबारी कवियो में से थे। ये जाति के धाढ़ाण थे और हिन्दी, संस्कृत, ज्योतिष शास्त्र, पुराण आदि के प्रकाण्ड पण्डित थे। याज्ञिक बंधुओं ने माधुरी ५ वें वर्ष की प्रथम सख्या में इनके रचित पाँच ग्रंथ बनलाये हैं — (१) सिंहासन बत्तीसी (२) गंगा माहात्म्य (३) कृष्ण चन्द्रिका (४) वेदान्त-हस्ता मलय (५) स्वरोदय। इनके अतिरिक्त मुज्जान विलास भी एक और पुस्तक बतलाई जाती है जिसके विषय में यह दोहा प्रचलित है —

प्रथम मृताहि असीस द उपज्यो हिये हुताम ।

सूरजमल के नाम की रच्यो 'मुज्जान विलास' ॥

इस पुस्तक का विषय महाराज सूरजमल का यंग वरान ही ज्ञात होता है। इसी प्रकार का और इसी नाम की एक पुस्तक महाकवि सामनाथ की भी है, जो सिंहासन बत्तीसी की कहानी पर आधारित है। कविवर अखराम का मुज्जान विलास उपलब्ध नहीं है।

कविवर अखराम की कविताओं में श्लोक और मूठी उक्ति के माय ही साथ वरान की सजीवता का भी अच्छा समावेश है। भाषा सरस एवं सरल है और कविता में भरतपुरी छाप भली भाँति भलवती है। इसमें से यह नहीं कि य अर्धन समय के कविता में उच्चकटि के कवि थे। इनका कविता-काल विक्रम संवत् १८१० के आस-पास माना जाता है, जमा कि इन्होंने सिंहासन बत्तीसी की समाप्ति

ठारह स बारह गनौ, सबत् मर घर मूरै ।
मानन वन्ति की तीज का ग्रन्थ किया परिपूर ॥
अब इनके काव्य की भाँती भी कर लीजिय —

कवित्त

चन् मौ वत्न अग्रविद म नयन राज
श्रवन मगोज नामा मरम मुहाई है ।
गडिम दमन सुधार्मि दु म अघर विम्ब
रसना रमौनी काटि छवि की निकाई है ।
गारे गार गाल गाल कतुकी कलासी मुजा
श्रीफल उराज सब माभा की सफाई है ।
रम्भा जुग जघ पत्-वज अखराम' कहै,
धान' की ढेरी न विधाना न बनाई है ॥

स्वरोदय

कवित्त

धान गुन गाइवे का, ध्यान उर ध्याइव का
तामम बहाइवे कौ निमित्ति गाइ लै
भक्ति निधि जारिखे कौ आठो मिद्धि मागिब को,
मन्-मगेरिख का चित्त म चिताइ न ।
हीनहार जानिव का जोनिप बमानिव का,
कान क पिधानिवे को नोक क मचाइ लै ।
स्वर की विचार चाख्यो वेत्न की सार यह,
पहन उर हार 'अखराम' मचुनि-पौल्ले ॥

मूल श्लोक

पट् गतानि त्वि रात्रा महयाण्यर विगति ।
गनमन्या भवच्छामा मोह माह प्रकीर्ति ॥

गहा

महम एव विशत बने छय कइव पुनि श्वाम ।
स्तनी सुध्या, जन, दिन साह मंत्र प्रवाम ॥

वेत्तान्-हस्तामलक

कवित्त

जम बने छोटे घाडे टेव फूट काँच माम
भागन अमान मुग पकज निधानिय ।

कु डल कलगी सिर पेच श्री ललाट टीवा,
 जसौ मुख मांड तसो वामे दरमानिय ।
 ऐसो जग जानि लीज बुद्धि की विलास तसे,
 एक ते अनेक होत ध्यानवान जानिय ।
 नित्य उपलब्ध है स्वरूप जो जगत भाँक,
 सोई हम जानें नहिं दूजो उर आनिय ॥
 जैसे रवि सोपन मयूपन सों भूमि रग
 सबतै विभिन काल लिपत नै जानिय ।
 सोखि साखि वपत सहस गुनौ पावस मे
 कोटि काटि बुदन सो समझ सु मानिय ।
 जैसे उपजत हैं खिपत जग जीव ज तु
 एक तें अनेक अविनासी सो बखानिये ।
 नित्य उपलब्ध है स्वरूप जो जगत भाँक,
 सोई हमें जानै नहिं दूजो उर आनिय ॥

१०-लाल कवि — भरतपुर नरेश वदनसिंह और उनके पुत्र सूरजमल के आश्रित प्रतीत होते हैं। श्लोक का विषय है कि इनका -विशेष वृत्तान्त उपलब्ध नहीं है। इनकी रचनामात्रा में ही राज्याश्रय का पता लगता है। य वीर और श्रृ गार दोनों रसों पर समान अधिकार रखत थे। इनकी प्रतिभा इनके प्रत्येक छन्द से प्रकट होती है। भाषा सरस, सुहावनी एवं प्रवाह्युक्त है। इन्होंने महाराज वदनसिंह की मृत्यु पर जो छन्द लिखा है उससे विदित होता है कि महाराज के मृत्यु-सम्बन्ध १८१२ वि० के आस पास ही इनका रचना काल भी रहा होगा। इनकी कविता ऐतिहासिक तथ्यों से भरी हुई है।

कवित्त

कटनी कलपतर लात जानी कामधेनु,
 पारस परसि लोह बचन न करती ।
 पट जाती चिन्तामनि फूटि जाती गिरिभेरु,
 ध्रुव गिरि धरनि धरा नै मेम धरती ।
 मूख जाते सिंधु भिानी वेहनी नै वरु वात
 मूर सीरी चन् तातो तौऊ मा विगरती ।
 सन मन सोच घन घदन वाद
 हाय हाय वदन महीप प न भरती ॥

उपयुक्त छंद म कवि की ऊँची प्रतिभा व माय माय कवि कम की कुशलता का अच्छा परिचय मिलता है। इन्होंने कवितासामान्य श्रेष्ठतम उपमानों का यथावत् प्रयोग कर सजीव एवं मर्मल चरनी भाषा का अच्छा चित्रण कराया है। इनकी वीर रस सम्बन्धी रचनाओं की आज्ञाशक्ति स्वतः ही बनती है। उदाहरणार्थ कनिष्ठ कविनाम निम्न लिखित हैं —

कवित्त

दक्षिणें २२ २२ आजना उमड निन्दै
 खड गहि खड्ड जसु मडयो दम का ।
 क्यै कवि लाल मुग मवल नमाम भूत
 पूत पन चागी हार मूदन महम कौ ।
 गगाप्रमाण स्वामी-वाग्ज म पाव राप
 जग जितवार नाखि माखिन हमेस का ।
 एक मत मूरमा निवार्या प्रथीराज डमि
 एकीणका रनन निवारयो नवनम कौ ॥

❀ ❀ ❀

बौन जटवारे की बचापनी मग्म स्वामि
 धरम व काज राज राहि एनी पग्नी ।
 दक्षिणी दल भुज वलन बौन टलनी जु,

आमिप अहारिन का भुग वाप हरनी ।
 नकर व हार की सुमेर बौन हा गा अत्र
 जाप मुग्नारिन की आरनी उतरनी ।
 गगाप्रमाण जो न जूमनी मगर क्यै
 कयक हजारै अपछग क्यै वग्नी ॥

❀ ❀ ❀

फिरत फिरगी चहु ओर चरवान भये,
 मुगत पटान गव मय ममरनी ।
 गालन व मार तोपखान के खान भय,
 तुग्क मवार क्यै कम धीर धरनी ।
 फिरत न मगर भौगिया मिगिर और
 आमिपटोना की मनाग्ध क्या मरनी ।
 काव करि करती ममर मूलच ज्ञान
 बाकुन जीवन की शीमा बौन वग्नी ॥

कधो कैसे नागने की मनि धीनि उनि रही ।
 कधो प्रात कील प भ्रमर अभिलाषी है ।
 कचन के पट्ट पै निखी क मथ मोहिनी की
 कधो अभिलापन को ग्रथ माप साखी है ।
 कहे कवि लाल हान जाहिर जहान बीधे,
 कात्नि उपाड क उक्लि इमि भाषा है ।
 मर जान रूप क लजलि प मुहर कमा
 प्यारी तगे उदी म्याम काम रुचि राखी ॥

* * *

जवत बहा न नरहा न न न्यित क
 मानी म मनी म मवही त सुखनाई ह ।
 अनि अभिराम कामे वान त मरम माहे
 मुनि मुनि माहे मन छिन टिन टाई है ।
 कह कवि लाल हान जाहिर जहान गीचे
 जानियतु प्रीड काऊ पेडित पनाई है ।
 जाके आग ऊप श्री पियूप सब सीठी लग
 लमी मोठी भाही मा कहा मा भोव छाई है ॥

११-हरिवंश — इनका विषय वर्तमान ता प्राप्त नपा है, परन्तु मुजान चरित्र म इनके नाम का उल्लेख है । यह महाकवि महाराजा सूरजमल क मम कालीन हैं । इन्होंने महाराजा सूरजमल व महारानी किंगोरी का प्रशंसा म इनको फुटकर छन्द लिखे हैं, तथा 'बरमान की सीला नामक पुस्तक भी लिखी है । इनका कविता क उपाह्वय नीचे प्रस्तुत किय जाते हैं —

कवित्त

गोर वान बिकर कगल कर नागी दत,
 गीरी काशी त्रिवक्त छुधा पी नरगत ।
 कौ हरिवंश गत पीम दव ईम क्षीरे
 गोर प्रवनाम गाध गीर उमगत ।
 मित्र श्री मुजान जग जातिम मुकीन पर
 फाकाई मुजा श्री चनाई भाह भगत ।
 भग चार मुमत, श्री मुजग चर कठते
 हरग चर गीर गीर चर चरधग त ॥

प्रमाना-तीना

श्री 'हृदय' विनाद रच्या तह, गार-याम हृदय जागी जा ।
 गागी मन्दिना मन्दिपुर गज, मग रतितादिक भागी जी ।
 कुञ्जन कुञ्जन कलि कुताहन गावन नव नव बानी जी ।
 हलह नन्कुमार रमिक वर, दुःखिन गद्या रानी जी ॥

१०-शिवराम-य त्रिला शिवाहावाद क अज्ञान पीगेली प्राप्त क रहन
 वान थ । इनक पिनामह का नाम पीनाम्बर तथा पिता का नाम हृदयराम था ।
 य जाति क सनातन ब्राह्मण थ । महागज मूर्जमत के दरबार मे इनका प्रच्छा
 मान था । इन्होंने 'गग रम मार' नामक एक प्रथ ही मुन्दर ग्रंथ रचा है जिसमे
 अपन आश्रयदाता का वग बखान करन क पञ्चान् उनका योगदान करत हुए
 गग गगिनियों के परिवारा का उत्कृष्ट उगान किया है । ग्रंथ मे कवि न अपन
 रग बखान मे भी बनी पहचिया युभात है । ग्रंथ क अन्त मे महाराज मुजानमिह
 क प्रश-गम्या का मुन्दर वर्णन किया है । ग्रंथावलोकन से इनकी विद्वाना का
 पूण परिचय प्राप्त हुना है । आपकी शैली मे विशेष चमकार है । एय ग्रंथ की
 रचना पर महाराज मुजानमिह न इन्हें ३६००० (छत्तीस हजार) रुपया पुरस्कार
 दिया था जिसका कवि न एक दशह मे एम प्रकार उगान किया है -

जब ग्रंथ पूरन भया, तबै करा बकसोस ।
 खर रुपया मान मौं दिय सहम छत्तीस ॥

इनकी कविताक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं -

छण्य

गगरि नन्द, जुन चर सकन धानत जल वर ।
 एक तन सानित मुभाव चरन, रिमान धर ।
 विधन हरन दुख कदन धरन गज बरन प्रचदन ।
 जग बरन बुध सन्त ह्य मिर कुन जस, मडन ।
 शिवराम फदिन परसा फरनि कर तिसून गणपति धरहि ।
 श्री नृप मुजान, गृह-रैन दिन पल पल पन रक्षा करहि ॥

मध राग परिवार बगन (दाहा)

मन्वारी मर, सारठी मुन्नी जगन बखानि ।
 प्रमानादा मुकाविनी, मध नागि रमि जानि ॥

मघ गग क अष्ट पुत्र (छप्पय)

नट कारन मारग अवर क्तार राग भनि ।
 गु डराग पुनि गु लभाल जालधर मुग्न मनि ।
 गकर गग प्रवीन मेघ परिवार त्नी कहि ।
 एर गगन की खानि मकल मुन मु किप्रर कहि ।
 गिवगम गग माला इति मुन्दर ब्रह्म रूपन पत्रो ।
 मन माहन मुर नर नागि क त्वन गगि मूरत्र डिपहि ॥

मवया -

श्री ब्रह्मनम वा वग प्रसिद्ध भयो कलि म क्त वीरगि गार्ड ।
 पडित क मन मटित ह ग्रह गत्रन पीडित अम्त्र मुहाड ।
 भूमि क नाग उतारन की भज दड महा प्रगट बलदार ।
 मूरजमन त्रिप नम धार कहै गिव सूरज त अघिकाद ॥
 क वनवाम प्रवाम क कचन क मृगछाल क मज चमली ।
 क गिवगम मुयी करी श्रौतन वेत् क मत्र क प्रम पहली । -
 जाग श्री भाग ममार म मार है माव कही विव खान मुहेली ।
 मना मनी गन मनी किचो कि नवली की वाह मन अलवेना ॥ -

१ - पतिराम-श्री का जन्म तहमाल कुम्हार क अन्नगन भरतपुरा ग्राम म
 हुआ । आपक पिता का नाम गकर भट्ट था जा कि स्वयं बड़े विद्वान् थे ।
 अतः पतिराम ने भी विद्या एवं बुद्धि पतृक सम्पत्ति स्वरूप पाई । मुजान-वाल
 क वीर रम क कविता में आपकी विगप ख्याति हुई । यद्यपि आपन फुटकर कवि
 ताभा की रचना का है किन्तु उनका काव्य में आज मलकता है । महाराज मूरजमन
 के यंग वगन करन म आपन कमाल कर दिखाया ह । कहा जाता है कि आपक
 पूर्वज मत्तगत्र भरतपुर क आश्रित थ । इमक प्रमाण म अत्र तक आपके वगजा
 का मापा चली आरहा है । पतिराम क वीर रस पूरा काव्य के एक उदाहरण
 म उनका प्रतिभा एवं कृतृत्व का परिचय मिल जायेगा -

छप्पय

जगै कमठ की पाठ नाव तुम तहा जमाई ।
 घग मम क नाम भीन जोग जा उठाई ।
 गदो दीप पत्रिकाट माह मुलतान खारन ।
 त्वन गीत दल मकन घुजा ऊची घर धारन ।
 वीर छत्र धार्तिक तिलक जब मुजान छटन लगन ।
 निर छत्र मनामन मान्निवा मुम त्वन मुन्नन वधन ॥

१४—सोभ कवि—आप भग्नपुर नर महाराज जवाहरसिंह के बहुत नवलसिंह के आश्रय में रहते थे। आपका कविता-काल स० १८१० वि० ठहराया गया है। आपके जन्म एवं वंशजा का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। अतः दुःख है कि हमें प्रथम म हम उनका परिचय दान में असमय रह है। आप कोमल भावनाओं के कवि थे। अतः शृंगार की प्रारंभिक भावना स्वाभाविक था। आपका “रम चंद्रोदय” नामक रोति प्रथम लिखकर अपनी शृंगारिक प्रवृत्ति का परिचय दिया है। ‘रम चंद्रोदय’ के अतिरिक्त आपके अनेक फुटकर छन्द भी मिलते हैं। इनमें भी छंदा के अन्तर्गत नवलसिंह की बीरता, दान शीलता तथा गुण-ग्राह्यता आदि गुणा का परिचय दिया है। ‘रम चंद्रोदय’ प्रथम की रचना कवि न नवलसिंह के लिये ही की है। प्रथम रचना-काल के विषय में कवि ने स्वयं यह दावा लिखा है—

वसुविधु वसुविधु वत्सरहि भावन सुदि गुरुवार ।

“सरव सुमिद्धा प्रयागि भयो प्रथम अवतार ॥

यहां पर कुछ उदाहरण देकर कवि की शृंगारिक भावना का दिग्दर्शन कराया जावेगा। रमराज शृंगार की उपमाओं में कवि का कहा तक सफलता मिली है, इसके विषय में कवि के निम्न निम्न उदाहरणों में पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं—

प्रगल्भा—लक्ष्मणम् (दोहा)

पति मा कलि कलान में अति प्रवीन चित चाह ।

यहै प्रगल्भा नामका नवलसिंह नर नाह ॥

उदाहरण (सवैया)

एकजना मजनी ! विनी यह चार घटा लो रही अनुकूल ।

हार हिय मुत्ताहल चार विचार क मीतलना वन हूव ।

आपनी नायक है सब लायक सोभ सहायक भाव न भूव ।

भविष्ये तूल निषा श्रुति मूत्र सरोज के पूव प्रभात न पूव ॥

सवैया

बक भई भृकुटी भलि भाव, मनाज नृपाल की नीति सो जागी ।

मद होमी मिली मुरि आने प्रानत प्रम के पूजन पागी ।

इ लटकी लट माहे रमाली सो प्रेम प्रमा भगे अनुगामी ।

नोर ममावन के मिमही, बनवीर की वान मिलावन लागी ॥

कवित्त

अमित आप नम-मल के मेघ मेटा,

पदि ० अपि सज मण्डन की प्रोग परे ।

गोला धार बरसत अपार। धार छोड़ तोर ।

द्रुम डार चल—पवन भव—भोर पर । -

सामन—सुरभि बाई धाई—वृषभान जाही

दाहिन—जसोदा नद ग्वाल घाल सोर पर । ;

अधरन मधुर बजत 'सोभा' वशी—धुन

गिरिधर गिरिधरयो छिगुनि के छोर पर ॥

१५—दत्त—इनका विशेष वृत्तान्त प्राप्त रही है। इन्होंने महाराज सूरजमल की प्रशंसा से 'सूरजमल की वृषाण' नामक १४ छंदों को एक पुस्तक लिखी है। आपकी कविता वीर-रस से भरी प्रतीत है और 'भाषा' भाजस्विनी है। उदाहरण नीचे लिये जाते हैं—

वृषाण छंद

—जहें धज्जत तिसान सारे, गज्जत—तिसान,

सूर—सज्जत, सदान—सौर—सज्जत—गुमान ।

—जहें, छुटत—कमान, गोला—गोली—बरखान

धुआधार—आममान,—छिप्यो भानु को विमान ।

जहें हात भाज भाज धार दुदुभी मराज

ताप तरप, तयज, गज—घटा घहरान ।

तहें—हिम्मन निधान, भूमि भारी, मधवान

मिह—विक्रम मुजान, वाह बाही किरपान ॥

सवया

कचुकि माहि—कसे उकस परे कामिनी कैंके उरोज तिहारे ।

—'दत्त'—वहैं, जनु विश्व—विजैवरि, काम—धरे उलटे क नगारे ।

—जोवन जार कढ हिय, फोरि क धोरहुते ये कठार तिहारे ।

गद के गुम्भज कैं गिरि कैं गज, कुम्भ के गय गमावन हारे ॥

१६—केशव—आपका जीवन वृत्तान्त कहीं भी उपलब्ध नहीं हुआ है केवल महाकवि मूदन न मुजान चरित्र में इनका नाम उल्लेख किया है। ये कवि महाराज सूरजमल के ही आश्रित प्रतीत हैं। इनकी कविता का उदाहरण नीचे दिया जाता है—

—सवया

आग्नि त दल माज चण्यो नृप, भाग बढ़या पग पीछे धर्यो ना ।

मरु है मर चण्यो विग्गान न एक त दूतरो मर बर्यो ना ।

'बेगव' श्री बंदेनेश के नन्दन ता मम श्री गंगे वर्यो ना ।
 हाथों टरे घने माथों टर, परधान टरे वै सुजात टर्यो ना ॥

१७-जुलकरन - आप जाति के भेटु श्री गंगे के निवामी थे । यद्यपि इनके जीवन का विशेष परिचय तो प्राप्त नहीं हो सका है, परन्तु इनका महाराज मुरजमल और उनके पुत्र महाराज जवाहरसिंह के समय तक विद्यमान रहना प्रतीत होता है । इनका कविता-काल सम्भवतः १८१५ वि० के आस पास ही रहना है । कहते हैं इनके दो पुत्र थे और दोनो ही कविता करते थे । ये श्री गंगे के प्रधान कवि हैं । इनक पद्या में महाराज मुरजमल की वीरना का आजम्बिनी-भाषा बर्णन किया गया है । मुरजमल के स्वर्गवास पर आपन जो अनक सुन्दर पत्र लिखे, उनमे से कुछ नीचे दिये जाते हैं -

कविता

- गण्ड कहै माहि दखि कदली बनमें थाप्यो
 - हजो कहै मोहि दखि पुर्यो चौक अगता ।
 - सीजी पटा डारयो चौथी हरली लगाइ गई
 - गिचई मरवट कथायो कर कगता ।
 - कहै 'जुलकरन' छत्रो माये प मोग धारयो
 - सातई दुगयो चीर कीनो वन भगना ।
 प्रागे पावसासन के आसन के दिग जाय,
 - दूगहा सुजात गाको भगर चरगना ॥
 रण गच्छी रण भूमि भूमि भूमि लड्यो मूजा,
 - सग को मगाती लाग पोछे वा हटि गयो ।
 कहै 'जुलकरन' अनल मो ताता भयो,
 - रानी भयो कवि छत्रो छत्रो में पटि गयो ।
 टारे ते टर्यो न एमी घरने ममान स्प्यो,
 - तिन दूक दूक तरवारन कटि गयो ।
 घष कवि मन्त्र को छेदि गयो दूर लोक
 - सुनोब घोरने का फोटक कटि गयो ॥

कविता

गरे मन मरे तेर श्री मंग घनर नेरे
 - सोन ही के चरे सग नोम ही के जरि है ।
 मित्र को बलित्र भव चित्र म रमन है
 - कहै 'जुलकरन' तगी माथो गव हरि है ।

१। काहे तू न जानत न मानत भरोर भरयो,
 २। जानत है काची और कौन की उबरि है ।
 ३। ह्व है मोर मिहन करंगी जब रिहत सु,
 ४। मुदत के आये बोज मदन न करि है ॥

१८-भूधर — इनका विशेष वृत्तान्त तो ज्ञात नहीं होसका, केवल इतना

पता चलता है कि ये जाति के ब्राह्मण थे और भरतपुर क महाराज जवाहरसिंह
 (स० १८२०-२५ वि०) के आश्रित थे याज्ञिक बाधुआ ने लिखा है कि 'सम्भवत
 यह भूधर वही है जिहोंने भगवतराय खीची के लिय छन्द रचना की है किन्तु
 इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता । इनकी रचित दो कृतिया 'ध्यान बत्तीसी, तथा
 दान लीला मिलती हैं, जिनकी भाषा इहें भरतपुर का होना सूचित करती है।
 कुछ उद्धरण नीचे दिये जाते हैं —

सवया
 मोर किरिट लस सिर चारु ललाट दिप छवि चद कला की ।
 बाँके कटाक्ष विसाल महादग कुण्डल लोल कपोल थला की ।
 दतन की दुति कठ सिरी मुबता कर ककन छाप छला की ।
 तूपुर की कटि किकिनि की उरते न टर छवि नन्द लला की ॥

(ध्यान बत्तीसी)

पूरन परम दयालु निरजन घट घट वासी ।
 वमुदेव गृह प्रोतार लियो भवनी भविनासी ।
 ब्रज चौगमी कोस लो लीला करन माल ।
 अमुर हनन क कारण भये नद के ताल ।
 सुना ब्रज नागरी ॥
 बरसान की ग्वालि सब दधि बेचन आव ।
 उज्ज्वल मिथी गध मोल मन मानो पाव ।
 सब विचित्र सहचरी लियो राधिका सग ।
 आपस म बतरात सब चली आपन रग ।
 सुनौ अ्रज नागरी ॥
 मिन कृष्ण अरु राधिका दान रस अमृत लीनो ।
 निरन्व लडती लाल प्रभू त सरवम दीनो ।
 यह मुख स्यामा स्याम की कवि भरयो जाय ।
 निसिन्नि भूधर दरस क हिरद रह्यो समाय ।
 लख ब्रज नागरी ॥
 (दान लीला)

१६-वीरभद्र - इन कविधर के सम्बन्ध में इतनी ही बातें हीं सकी है कि ये जानि के ब्राह्मण थे तथा मरतपुर राज्याश्रित कवि थे। कविता काल महाराज मूरजमल के राज्य काल सम्बन्ध १५२६ वि० तक ठहरता है। इन्होंने भगवान् श्री कृष्ण की लीलाए (प्रज विलास) काव्य ग्रंथ में दाहि, चौपाइयो म लिखी है। इनकी भाषा अत्यन्त सरल मधुर, ललित एव प्रवाह युक्त सुन्द ग्रंथभाषा है। एक प्रवतरण प्रस्तुत है -

दाहा
 गुरु चरनेन चित्तं लाय कं करो कृष्ण की ध्यान ।
 सुमिरा राधारमण की हरि लीला रम खान ॥
 चोपाई
 तव हरि मन में मतो उभायो । वाक पनि कौ स्वीग बनायो ॥
 दाहा
 इतवित सरकेने दतं नहि, सामु जिठानो, नन्द ।
 तउ नैनन की सन में योयो गोकुल चन्द ॥
 चोपाई ।

वही सरूप भेद बहुत नाहीं । सामु सैम त्रायो गृह मांही ॥
 बुनिया विक्ल गोपकी भयो । ठगो वचन द बुंवर बन्द्या ॥
 सुनरी मीता मरी वाता । ब्रजे म नन्द पूत विख्याता ॥
 मैं तो मुनि है, वाकी वात । मेरी रूप धर्यो विख्यात ॥
 धल चिचनियां ढीठ गुमानो । लपेट लोभी गोरम दानी ॥
 जाकी वात मली सुनि पाव । ताकी धनमल कं अर्पनाव ॥
 कवहै प्राविण वारं कुधारं । दोर्यो छैट्यो मरे द्वार ॥
 करि है बहुत अटपटी चोरी । प्रव प्रावत कहियत है हारी ॥
 तू मत घमने दइरी ताही । वाकी वात न जियत पर्योई ॥
 टाक विचार दीजियो गाडी । घमनी साट लीजियो प्रांती ॥
 मावयाज है रहिया भारी । मैं नौ भोवन जाय अटारी ॥
 समी पाइ घर घनी पधार्यो । गाडी देखि विचार पूर्वर्यो ॥
 भीतर ते कह उठी महतारी । यह तो चरित है रह्यो भारी ॥
 कहा भयो री जननी तोर । ययो पहिधानत नाही मात्र ॥
 सामु कही तुम जोउ नन्द क । तो गुन जानत छद बंद के ॥
 इतनी मान तू केन कगव । धर्म्यो विरान पर म प्राव ॥
 कहा भई री माता वीरी । लाग्यो भूत कं परौ ठगारी ॥
 वीरी हाय ॥ जयोमनि तेरी । लागे भूने रहै पर घेरी ॥

२०—सुधाकर—इनका जीवन-वृत्त तो प्राप्त नहीं हो सका है, परन्तु महाराज मूरजमल मन्त्र-धी कविताएँ इन्हें उस काल का कवि माना मित्र करती हैं। इनका कविता काल १८२० विक्रम सम्वत् के आस पास माना जाता है। इन्होंने जो फुटकर छंद महाराज मूरजमल की प्रशंसा में लिखे हैं उनमें से कुछ उद्धृत किये जाते हैं।

कवित्त

तरी तो ताप मारतड मौ प्रचड तप,
वरिन क तन जर ववला भय जात हैं ।

अरिन की वाहिनी तोरइ सी सुखि जान
घारे अपजम जामों कार भय गात हैं ।

सुकवि “सुधाकर न वरयो ब्रजेन्द तज,
सजन त भाजि वरी वधू अकुलान हैं ।

जेई तब ताठ-नान उदक सा हात हूती
तई अथु पानन की धार सा अन्हान हैं ॥

जालिम का जलाय दूनो म दानो दरसत,
दौलत की मह नह बगसन जुवानी है ।

उदित उदार परिव्राह म त्रपार तरी
उ ब्रवल अमल तरी कीरति बखानी है ।

कोकिला सी बानी जानी चन्द्र सौ मुखारविंद,
सामा रुप दख रति अति ही लजानी है ।

तो सी तुही मानी और उभमा न जानी पर,
सुधाकर वखानी सा ब्रजेन्द्र महारानी है ॥ -

२१—रामकवि—यद्यपि इनका विगेष परिचय तो प्राप्त नहीं हो सका है किन्तु इनकी कविताओं से यह भली भाँति मित्र माना है कि आप प्रसिद्ध कवि मूदन के समकालीन थे और भरतपुर दरवार के आश्रित थे। इनका कविता काल मवत् १८२० के आस पास ठहराया जाता है। आपकी कविता के कुछ उदाहरण निम्न लिखित हैं—

वन्दामिह परमिद्ध जा ब्रजमडल को भूष ।

ताक मूरज मलमुन, मूरज ही की रूप ॥ -

कवित्त

दोर मन्त मूरज के भदावर हृदर श्री,

मारवाडा पहर रात्रीर मदमत्ता की ।

उडि जात घोरछी, सटकि जात सरीला कौ,
 सकल जमान जस माखी मधुछता की ।
 भग्ना श्री पग्ना के हरना स भाजि जात
 कपत बसति कुल्लि चपत के छता की ।
 दिल्ली के मरद मव बिल्ली स दुवकि जात,
 चौकि चौकि पर चमू चवकव चवता की ॥

२२—रगलाल—आप भरतपुर के निवासी तथा भरतपुर नरेश जवाहर सिंह के आश्रित कवि थे । आपका कविता काल १८२० से १८२५ तक निश्चिन किया गया है । आपने महाराज जवाहरसिंह के यश का बखान सुन्दर ढंग से किया है । उनकी 'साखा' नामक पुस्तक महाराज जवाहरसिंह के यश एवं वशावलि प्राप्ति की है । इस पुस्तक में आपन पद्य व साथ २ गद्य का भी प्रयोग किया है । भाषा सरल एवं सरल है । उदाहरण देखिए—

। दोहा
 सरहद नापी समद नी सूग्मेन के नाम ।
 छपन कौटि जादौ भये मधुरा महल गाम ॥
 । हाथी घोडा हैं घन बहुत खजाने दाम ।
 कर्मा म दे सोहरी दीनी बहुत इनाम ॥
 । सीनी चौधे भल्लार सू घामैडा सू गर ।
 । ताही कडक पठाने की, रहिला दिये पधार ॥

२३—मुरलीधर—य भरतपुर निवासी तथा महाराज सूरजमल के पुत्र जलसिंह के आश्रित कवि थे । इनकी कविता-काल म० १८२०-२५ वि० माना जाता है । इन्होंने श्रीमद् भागवत के पंचम स्कंध का हिन्दी पद्यानुवाद किया है । अपने समकालीन कवियों की भांति ग्रंथों में अध्यायों की समाप्ति पर अध्याय में लिखित विषय का संक्षिप्त विवरण हरिगोविता छन्द में दिया है । उनकी संली शून से मिलती जुलती सी है । कविता के उदाहरण निम्नलिखित हैं—

हरगीतिका

मुघ चक्रवति मुजान को मुत नयससिंह मुजान है ।
 सनमान । दान शृपान पूरी वीर बुध बलवान है ।
 निन हन 'मुरलीधर' लिम्पो श्री भागवत भक्तिहि लियो ।
 पंचम-स्कंध आम्माय श्रोता प्रकट यह पूरण नयो ॥

मुनि-प्रगट सकल रासार रीति ।
 दुख सुख की नहि ताका सुभीत ॥
 त प्रवल विष्णु साया विचारि ।
 भुव कठिन पथ म न्ये डारि ॥

7

२४--भोलानाथ—यह भरतपुर के निवासी तथा जाति के ब्राह्मण थे श्री महाराज जवाहरसिंह के पुत्र नाहरसिंह के आश्रय में रहते थे। इनका कविता-काल स० १८२०-२५ वि० माना जाता है। इनके दो ग्रंथ बतलाये जाते हैं, उनमें से प्रथम, लाला-पच्चीसी, तथा द्वितीय 'सुमन प्रकाश' हैं। सुमन प्रकाश अभी तक प्राप्त नहीं है। लाला पच्चीसी, से प्राचीन परिपाटी के अनुसार, राधाकृष्ण की रासलीलाओं का संगम एवम् भावपूर्ण वर्णन है। इनकी कविताओं के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

सरम वजावत वंगु, सुनावत राग अपार ।
 कौन बहुत सुवि कर, बस हिय नद दुलारे ॥
 जतन-जुविय अनेक मिलें, बिन-टरतन क हूँ ।
 तासी चिन्ता करत हियों, समुभ्त नहि जहूँ ॥
 वेद रिचा ज-कही, कही-रिपि अमर-कही जे ।
 ते गोपी बट भाग सावरे नह पगीते ॥
 मुकुट बांधि ल लकुट, ग्वाल-गोमन सग-डोनति ।
 वन, वजाय रिभाय-गाय सुद, मधुरे बोनति ॥

२५--मोतीरामः—आपने सारस्वत ब्राह्मण-कुल, म जन्म, प्रह्लाद-किया था। आप भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह के आश्रित, कवि थे श्री, फुटकर छन्दों में रचना किया करते थे। आपका जन्म स्याम-क-विषय में, अभी तक पता नहीं चल सका है किन्तु इतना भव्य है कि आप जीवित उपाजन के, हनु भरतपुर पधार श्री महाराज जवाहरसिंह (१) एक रपया, दैनिक वेतन पर आपका ध्यान आश्रय में रमा। इस प्रमाण-म-स्वयं, 'मोतीराम' ने एक कविता लिखा है।

उनका कविता-काल स० १८२० स. १८२५ वि० तक माना जाता है। आपका फुटकर छन्दों में भिन्न-विषयों का लक्ष्य रचना की, किन्तु जवाहरसिंह के यहाँ ही प्रथम गायी है। भरतपुर ध्यान के लिये शिवजी ने उनका जो स्वप्न दिया, उसी का उदाहरण स्वरूप नीचे दिया जाता है—

कवित्त

मासों-आज सपन में तब महाराज ऐसे,
 कह गये साईं हम वरनी प्रमान है ।
 मगै जप व्रत नम, पूजन-धनक विधि,
 वीहा है सब उर प्राके भग ध्यान है ।
 मानीगम' ब्रह्म कुल-पालक कलपनरु,
 सब बात सायक सा दया का निधान है ।
 तर-जा मनारथ हैं पूरन करगी तिह
 मेरा भक्त नाहर जवाहर जवान है ॥
 एक वियोगिनी का मयस्पर्शी चित्रण -

कवित्त

पीव, पीव करत मितें जो माहि मान पीव
 सोन चाव चानक मदाळें कर आदरन ।
 कुटिन कलापिन के बठन कटाव डारों,
 देन दुग्य दादुर विराय डारों गादरन ।
 मानीराम' भिन्लीगन मंदिर मुदाई डारों
 अधिक बुनाइ बाघों बग के विरादरन ।
 विरह की ज्वालन-सा जलद जराइ डारों,
 स्वामन उडाऊ वरी वेतरद वादरन ॥

२६-श्रजचंद - प्रापका विशेष परिचय उपर्युक्त नहीं है। इनका कविता-
 काल वि० १८२०-२५ के अन्तगत ठहरता है। इन्होंने महाराज सूरजमल की
 प्रशंसा के अनेक फुटकर छन्द लिखे हैं। इनमें से उदाहरण, स्वरूप एक पद्य
 दिया जाता है -

कवित्त

गकर क भाग जमे त्रिपुर के जुय भजे
 भामकर भाग जेम तिमिग भगत है ।
 वारि भाग अगिनि वयार भाग वादर ज्या
 धार भाग वापर ज्या धीर ना धगत है ।
 बेहरि के भाग जसे कृज समूह भजे,
 मुग्गरि के भाग पाप देगत विगत है ।
 धमे ही मुजान नन्द 'कवि श्रजचंद' बहै,
 गिहनवेग भागें धरि भगि जात है ॥

२७—शोभनाथ —इन कविवर-का-विशेष वृत्तान्त उपलब्ध नहीं हुआ है परन्तु इनकी रचना से इतना पता अवश्य लगता है कि ये महाराज मूरजमल के समय से लेकर महाराज जवाहरसिंह तक रहे हैं। इन्होंने 'माधव जयति' नाम का एक ग्रन्थ लिखा है, जिनका रचना काल स० १८२६ वि० है। कविता के उदाहरण निम्न प्रकार हैं।

।दोहा

माधवः जयति सुनाम यह ग्रन्थ करन आनंद ।

'शोभनाथ' कवि। सख कियो सतुरन। हेतु सुख ॥

छप्पय

मूरजमल सा जग करत, नबहु नहि कम्पौ ।

कर उठान पठान स्थलन, मद का कम्पौ ॥

लार मलार सगाय, राख लीनो कर चाकर ।

शौर कितेक अमीर दिलीपुर के गुणआकर ॥

अति बली जवाहर जगत मे जाहिर जिहि गुन गन सही ।

वीराधिवीर विक्रम अमित ब्रज-महीप राज मही ॥

२८—महाकवि देव —आप इटावा के अन्तगत ब्राह्मण जाति में उत्पन्न हुए थे। आपका जन्म 'माधविलास' के रचना काल के आधार पर स० १७३० वि० माना जाता है। मिश्रव-धुषी ने अपने विनोद में इनका स्वर्गवास स० १८०२ विक्रम की सन्देश के साथ प्रकट किया है। निश्चयात्मक रूप से यह किसी ने नहीं लिखा कि महाकवि देव का देहावसान ठीक किस सम्बन्ध में हुआ। भरतपुर राज्य के पुस्तकालय में इनका कुछ 'फुटकर कविताओं का संग्रह सुरक्षित है। इससे यह प्रतीत होता है कि ये भ्रमण करते हुए वृद्धावस्था में भरतपुर राज्य में आये। यहाँ पर आप भरतपुर-नरेश जवाहरसिंह से मिले और उनको दो कवित्त सुनाये जिनका सुनकर जवाहरसिंह बहुत प्रसन्न हुए और आपको ५०००) पाच सहस्र रुपय पारितोषिक स्वरूप प्रदान किये। इस घटना से देव ८५ वर्ष की अवस्था में १८२५ वि० में भरतपुर आये।

महाकवि देव के काव्य के विषय में जितना लिखा जाय उतना ही थोड़ा है। इतना निम्न दना पयाप्त है कि आप रीति-बाल के प्रमुख कवि हैं। चूँकि भरतपुर-नरेश जवाहरसिंह (१८२०-२५) का आपसे अंगीकार किया एक कुछ समय के लिए आपने भरतपुर निवास किया, इसी नाते उदाहरण स्वरूप उनके द्वारा भरतपुर के विषय में लिखे हुए कविता में से एक कवित्त दना पयाप्त होगा।

दक्खिन के दक्खिनी पछाह के पछाही भूप,
 उत्तर उन मेनाह पूरव को रन की ।
 मुमट समाजन की गाजन गरज भूमि,
 तरजत छाती 'देव' दानवके - दलकी ।
 यदुवगी - वृषति - मुजान - के - सपूत वीर -
 - वर्हानी वखान - कर - तैर भुज-वनकी ।
 - मोहि - भई - जाहर जवाहर - निहार - हाय
 - - ग्राम - लगी - सायत - त्रिलायन वनकी ॥

२६-गांधाराम - आशुकवि 'गोधाराम' का कविता-काल १८३० स १८६०
 वि० सम्बत् तक माना जाता है। इन्होंने महाराज जवाहरसिंह की प्रणाम म धनक
 छत्र लिखे। बन्द खरदाई की भाति इनका भी महाराज रणजीतसिंह के साथ युद्ध
 म साथ रहना पाया जाता है। महाराज इन्हें मात्रा हीन (गधा) कहा करते
 थे। जब लाहौर ने भरतपुर पर घेरा डाला और शोनाधार की सनाए अपनी
 शक्ति का प्रदर्शन करने म लगी हुई थी, तब महाराज ने उनसे कहा, "अरे मात्रा
 हीन इस समय कुछ कह सकते हो ?" गोधा ने कहा - "महाराज की जमी माना
 हा।" महाराज ने तत्काल एक समस्या 'वेगिही गुपाल फौज मारगी फिरगी की'
 दी, जिसकी, गोधा ने समी-समय निम्न पूर्ति कर सुनाई -

भारतमि भीषम पिना की अपन राख्यो नाथ,
 ॥ - द्वारिका म टैरा सुतीत पाण्डव-अट्ट गी की ।
 मधवा मही ही अज दऊगो हुयाय गिरि, ॥
 ॥ - भोवमन घाटि - रस्ता करी अज-सगी की ।
 गुरत ही मुदामा की, दारिद, विनास्यो नाथ,
 हरजावुस मार्यो सा गाभा - है मिमगी की ।
 प्रवव - हमारी - चेर - बान - मूद जठ वहाँ, ॥
 वेगिही गुपाल फौज मारगी फिरगी की ॥
 प्राची म लगी ही सा - बजोर - काची - सति गयी -
 - - पट्टम म - सीपू - भर - गक मार - बरती - व ।
 दगिरा दहन पणवान - के - महल - सागी, -
 - उटे - निगपाल - नूप - वप - मर - पग्ती - के ।
 गाई - धाग धाय मर - दिल्ली - प्रति - दश पर
 - - भूवा उमराव सब - गागीर - मग्ती - व ।

तेही तेग धारन सो गोला बौध्दारन सो, १ १ १
 वरती बुझाई रे सुजान चक्वती के ॥

३०--मोहनलाल --आप कुम्हेर निवासी प० केशवदेव के सुपुत्र थे, और जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनके रचित चार ग्रंथ पाये गये हैं, उनमें जो रचना-काल मिलता है उससे यह अनुमान होता है कि आपका जन्म सम्बत् १८०० विक्रमी के आस पास हुआ था और मृत्यु १८५० के पश्चात्। आपके रचित ग्रंथ (१) रग मजरी (२) फूल मजरी (३) पत्तल (४) पिंगल सार हैं, जिनमें से कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

रग मजरी (दोहा)

मुकट जटित हाटक मनो, दधि सुत गृह उर माल ।
 सज जुमरदी तन बसन, आवत मोहन लाल ॥
 ठारस तेतीस अरु, गढ कुम्हेर शुभ ग्राम ।
 केशव सुत मोहन रची, रग मजरी नाम ॥
 शींग ब्रीट सारंग घर मृग मद केसर भाल ।
 खेलत स्थाल बसत कौ, मनमोहन ब्रज बाल ॥
 भूलत रंग हिडालना मानौ चढ्यो अनग ।
 सारी मोहै सोसनी वनी बाल शुभ रग ॥
 घोड कुसूमल चूदरी, खेलन बाली तीज ।
 सग सखी नव-यौवना, शिर शोभित ऋतु भीज ॥
 वृष्ण वासनी बर सुखद, पावत स ल नाम ।
 बेलि रची सबही सहित, वृदावन निज धाम ॥

फूल मजरी रचना बाल (दोहा)

पडु वेद वसु इन्दु ये, सवत् कुम्हेर गुगाम ।
 केशव सुत मोहन रची फूल मजरी नाम ॥

अवतरण

कमल नयन बाहर लला, सुन्दर साँवल गात ।
 बनने आवत सुरभि सग, मत् मद मुसकान ॥
 पीत पगा भीनो भगा बर बुसुमन कौ माल ।
 नगन जटिन बर मुरलिका बाजत शब्द रसाल ॥
 कसौ कदम तरें अली पन्निं बसन दुन्न ।
 पिय परनेम बनाय यह जनु गुडहर की पूत ॥

गुनचोनों की भाति कौ भली भाति रग रोय ।
 सहगा चार-सुहावनो रही भली छवि छाये ॥
 मैंने कहुँ देखी सला गुलमगल की माल ।
 लखि हाँसी आवत हमन, कियो कहा जजाल ॥

३१-चतुराराय—यह जाति क ब्रह्म भट्ट थे और महाराज भरतपुर के
 प्राथम्य म रहत थे। इनका कविता-काल स० १८३३ के आस पास ठहरता है। इनकी
 रचना में अलासहान्तखाँ के साथ पयन में होन वाल युद्ध का बणन है जो 'पयना-
 रासो' क नाम स प्रसिद्ध है। यह युद्ध वि० सम्बत् १८३३ मे हुआ था। कवि ने
 बग प्राज पूरा भाषा म इस युद्ध का बणन किया है और साथ ही भग्त्पुरा राज्य
 के महागजामा की वशावली का बखान करते हुए एतिहासिकता का परिचय भी
 दिया है। पयना रासो से कुछ उद्धरण नीचे प्रस्तुत किये जाते है—
 सुमरन मारद माय की, गनपति कौ सिग्नाय ।
 छत्र पयन को कियो, चतुराराय बनाय ॥

छप्पय

मानषद कौ भयो कुँवर ब्रजराज महीपति ।
 ताके सुत द्वै भये सुन्य जाग्यो प्रताप अति ॥
 भावसिंह अतिराम । और चुरामन ठाकर ।
 बुद्धसिंह गजसिंह कुशलसिंह भयो दिवाकर ॥
 जाहिर जहान हिन्दुवान में, कह 'चतुरा' मानद छयो ।
 यह बस अत बसुदेव सुत, भावसिंह भूपति भयो ॥
 भावसिंह के 'द्वै' भए, रूपसिंह वदनेस ।
 ब्रज मण्डल मडन मही सुरपुर मध्य सुरेश ॥
 सारदूल अतिराम के भयो वरज्जा जुल्ल ।
 द्विग राख्यो वदनेस ने, प्राशन की समतुल्ल ॥
 सारदूल अतिराम की, कियो भुविप नाम ।
 कियो भूप वदनेस ने, ताहि पयना गाम ॥
 ताके सुत चौदह भये चौदह बुद्धि निधान ।
 जाहिर जरूदीप म, दान और विरपान ॥
 मनी सहायतवान ने, दीना बड़ा तुरग ।
 सूरवीर तिसप चढे, घर घर जोन उमग ॥
 ठारह स तनीस-के, माह माग सुनि ग्याथ ।
 पत्नी सहायतवान-न, तज्यो प्रागरी वाग ॥

३२—उद्दैराम—यह कवि जूनि के गौतम ब्राह्मण और ग्राम टोंटपुर तहमील भरतपुर के रहने वाले थे। याज्ञिक वधुम्ना न 'माधुरी वष ५ सख्या १' म भरतपुर राज्य क हिंदी कवियों पर एक खोज-सूरा लेख लिखा है उमम इनको महाराज रणजीतसिंह के समय में राज्याश्रित कवि लिखा है और इनका कविता काल स० १८३४ स १८६२ माना है। इन्होंने राधाकृष्ण की लीला विषयक 'अनक छोटे ग्रंथ रचे हैं' उनमें स इनका सुजान सम्बत् नामक, 'ग्रंथ प्राप्ति हुआ है' किंतु वह अपूर्ण है। यह ग्रंथ राजस्थान प्राच्य प्रतिष्ठान जोधपुर में प्रकाशित 'हा चुना है। इसमें महाराज सूरजमल के चरित्र का वर्णन है। खोज से एक पुस्तक 'गिरवर विलास और प्राप्त हुई है। इनकी रचनाओं में अनुप्रास उपमाएँ अनेकानेक का बड़ा ही सुंदर समावेश है। इसकी भाषा श्रुति मधुर चमत्कारिक एवं प्रभावान्ता दनीय है। वर्णनो में सजीवता है। सुजान विलास, गिरवर विलास' के अतिरिक्त उसमें द्वारा रचित श्री कृष्ण की ७ लीलाओं व 'पक्ष पञ्चमी वारह मासी व फुटकर कवित्त और पाये जाते हैं। कविताओं के कतिपय उदाहरण निम्न लिखित हैं—

दोहा

दमम सुनी देखी कछुक, हम तुम एकहि सग ।
साईं भव वरण करी, भवण सुखद परसग ॥
ब्रजमण्डल जदुवस म, अस कला भवतार ।
उदित भया भूपति सुवन, सूरज हरन अध्यारा ॥
-(गिरवर-विलास स)
मर उर आयके, विहाय विधि-मन्दिर का,
मुदर सरोवर मति मजुल मे न्हाइय ।
करके सिंगार हार, अंग साज अलकार,
तन सुकमारि सार गंध सो खगाइय ॥
भारती भमानी जगरानी, वाक बानी बठ,
द्विषन क कठनि हंसासन विहाइय ।
ले क परवीन परवीन मन माद मान,
प्राइय मयानी मो सुजान गुन गाइय ॥
(सुजान सागर स)
एक टिना ब्रज नारि निरप जमुना में जाना
ताव लगाय गुपाल करी तिनसो छन घाती ॥
घोर चुराये आय तव सबकी नजर छिपाय ।
काहू न जाना नहीं खे कदम पर जाय ॥
(कृष्ण लीला स)

जमुना के तीरें तीर चूँचदुन कीं भीर जहाँ,
 ।। ।। वदर चकोर मार करि लै पढावै है ।
 छुट रही अलवें अलवलीं अवेनी वन
 ।। ।। वामुगे में दे दे हेला पाय जो बुलाव है ।
 इतन म एक आय बोनी ऊँ औचक ही,
 ।। ।। छरे अहीरके तू ऐसीं बिनगव है ।
 आज तो अवेनी पोयो, करन मन भाया है
 । । ।। लूट लूट पायो, बल कौनको दिखावै है ॥

जानत ही हम माग्य बही प्रसाय म माग्य सबै ही विमारी ।
 एग को बीर, भरोमा कहा रुहि और म और कडु कर डागे ॥
 गाय प्रजाय रिभय हम ठग अन गया अब दत्तरतारी ।
 हाय उर भिन्न बसी-दनी, पर हाथ विवाय गयारी विहारी ॥

३३-राजेश -इन्का विरोप वृत्तान्त तो प्राप्त नहीं है परन्तु नरतपुर
 का मात-कवि अथवा प्रनीत होते हैं। इन्होंने महाराज रणजीतसिंह की प्रशंसा
 में कुछ छंद लिखे हैं, जिससे इनका कविता-काल म० १८२४ व आस पास ठहरता
 है। कविता का उदाहरण नीचे दिया जाता है -

परम रजेश तू द्विजय वग-अग-हम
 कीरनि निहारो, और सिधु लो, भरी रहे,
 अतुल अगाध बोध विमल विघाता जसो,
 सबगुण पाता जान मानद-बरी-रहे।
 चण्ड मातण्ड मो प्रचण्ड तज लाचन-मे,
 ताही की जवाब मरि-उर म-मरी रहे-
 ब्रज बलवार रणजीतसिंह-तेरी भाव,
 भूपन व भोन भोन भाजर पगी रहे ॥

३४-बदोधि-आप महाराज रणजीतसिंह के राज्यकाल में काव्य रचना
 करते थे। ये भरतपुर निवासी और जाति के आहारण थे। आप द्वारा रचित कोई
 प्रथम उपलब्ध नहीं है केवल फुटकर उद्धृत ही मिलता है। इनकी काव्य रचना
 को देखकर यह प्रतीत होता है कि आप एक बुद्धन काव्य ममन थे। आपकी
 भाषा भासाशुद्ध है। भाव पक्ष एवं कला पक्ष दोनों में अच्छा समावय है। आप-
 अनुप्रास एवं समक लियने में सिद्ध हस्त प्रतीत हात हैं। नक्ति परक-एक शृंगार
 रम पूरा कविताएँ लिखने में आप अत्यंत कुशल हैं। इनके फुटकर-छन्दों में से कुछ
 का उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जात है -

पापी तीन तापी जापी नापी औ उपापी सम,
 सोहत मुधापी जीव आपी थल थया कौ ।
 वारुवन वारिकन वारतन वारव है,
 वारि अघ औघन उवार वर दया कौ ।
 नातो कीनीं हातो नातो पूरयो सुरपुर ही कौ
 पातो कीनीं बशीघर भुक्त भरया कौ ।
 कामना की गया काम-तरु की कनया अहै
 तरनि-तनया ते उजासौ सेम-भया कौ ।
 दूसासन दुमन दुकूल गहयौ दीन बहु
 दीन हूँ क द्रुपद-दुलारी यौ पुकारी है ।
 छाडे पुर पारथ को छाडे पिय पारथ से
 भीम महा भीम भीव नीचे तर डारी है ।
 अवर ज्यौ अवर अमर कर्यौ बशीघर'
 भीषम करण द्रोण सोभा यौ निहारी है ।
 सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है
 कि नारी ही की सारी है कि सारी ही की नारी है ॥
 सदल गुलाव रग रैनी अग चद्र उद
 अहा कहा महा रूप पातिकी निवाई है ।
 बेसर विलास लोल लोचन मधुर हास
 हिय क हुलास की गुराई मुख छाई है ।
 त्वोरी की तरंगं भ्रुअ भग म अनग कोटि,
 कौमुक करत मुसिकान्द खलताई है ।
 चाहन चुचात सलचात लपटात मन,
 वशीघर माधुरी अनूप छवि पाई है ॥

३५-गुलाम मुहम्मद - यह पीरमुहम्मदखा के पुत्र थे और रणजीत काल में हुए थे। इन्होंने भरतपुर नगर का, यहां के राज्य का तथा दुर्ग आदि का विस्तृत बरान किया है। जिस प्रकार हिन्दी के अथ मुमलमान, कविया ने प्रेम सम्बंधी कथाएँ लिखी हैं उसी प्रकार आपने भी 'प्रेम रसान' नाम की एक प्रेम-गाथा सवया कवित्त, दोहा तथा कु डलिया आदि विविध छन्दा में लिखी है। रूपक उपमा आदि के प्रयोग में आप बड़े कुशल थे। आपकी पुस्तक बहुत ही मनोहारिणी है जिसमें बहो २ उर्दू तथा फारसी के गदो का भी प्रयोग हुआ है। एक दो स्थान पर गजलें भी दी गई हैं। उगहरणाय कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं -

मर्क्या

हे पृथपाल वृपाल धनी मुधि नेहु महाय करो विन मेरी ।
 लुंज भयो दुम सकट में अग्नि व्यापत मो तन व्याधि धनरी ।
 ता विन कौन पृकार मुनें मग म ठग हरत गनि अंधेरी ।
 श्रीगनि पाम निराम भयो अब केवल ग्राम रही हरि तेरी ॥

— तेरा ही भगोसा है तू वृष्ण मुरारी है ।
 मैं दीन विचारा हूँ तू कुज-विहारी है ॥
 मैं दाम कहाँ जाऊँ को बाँह गई मरी ।
 मुधि नेहु विगभरजी अब ग्राम निहारी है ॥
 चाखूर सहारयो तें गहि केम ह्यो कसारी ।
 अत्र टोल यहाँ एतो, किहि भाँति विचारी है ॥
 बगाल मुत्तमा मो त राव किया द्विन म ।
 दासी जुहुती कुब्जा मा राज दुलारी है ॥
 पर काज धने सारे गजराज उवारे त ।
 पृथपाल विदुर कृने तू श्याल गितारी है ॥
 प्रह्लाद बचायो तें पानाल बली दीना ।
 अवतार नियो मयुग राज भूमि मुधारी है ॥
 मयार कहाजाने अन्तार धन तर ।
 अब नाज रसो माधव यह अज हमारी है ॥

३६—बालकृष्ण — यह कविवर उदराम के समकालीन थे और रणजीत-
 काल में हुए थे । आप राधाकृष्ण के अनुयायी मन्त्र थे । इनकी 'राधा प्रीति परीक्षा'
 नामक रचना हमारे देखने में आई है । यद्यपि यह एक छोटी पुस्तक है जिसमें केवल
 १०० पं हैं किन्तु इनकी रचना अत्यन्त भाव पूर्ण और प्रभावान्पादक है ।
 आह्वान दत्त —

अवतरण

एक सम साधन कीनी मन इच्छा । लन राधिका पर चन परतीत परीच्छा ॥
 बसी थी राधिका कर परतीत हमारी । तात जहाँ जय जहाँ वृषभान दुनारी ॥
 प्रिया भये भूपत्य सज तन भूमर मारी । माँग पार बनो गुने मनो पन्नग नारी ॥
 लय सिंग मयन सिंगार क मोरभ मरमाये । लखिके निवारु मार दामन माँहि लजाय ॥
 पना गई जहाँ राधिका वृषभान विसारी । गज मरान मन ह्यन या जिनको छवि धारी ॥
 राधा भावत क्षिण के अग्नि आन्त कीनी । धामन द कर पान द कर रिजना सीनी ॥
 मग मग भवनोकिके मन माँहि विचारी । यह तो काऊ है बडी महाराज कुमारी ॥

तो प चाहति ही सुनीं तो बात बखानी । हित जानव कहत हैं जो बुरी ७ मानी ॥
 यहा तियन मे राधिका गुन रूप निधाना । कु मरि तुम्हारे कथ की इक अकथ कहानी ॥
 आवत ही मग चली जब लखी अकेली । उन उठाय कें कांकीरी मो तन वा मली ॥
 अब है सखी है रहा जब बछु म वाल्यो । अपन सग के सम्बन् म मन माहि बलाली ॥
 रे मन म रिस भई बछु न बाते । हों पुनि-चलि आई मखि तेरे हित नाते ॥

३७—हुलासी—यह कवि भरतपुर के रहने वाले और जाति के ब्राह्मण थे ।
 आप वीर रस की कविता करते थे । इनका कविता-काल सम्बत् १८३४ वि० के
 आस पास ठहरता है ।

उदाहरण (कवित्त)

अलबर उदपुर वाकानेर, जोघपुर
 कौटा श्री करौली पीठ जयपुर के ७ गये ।
 राजा रजपूत धुर दक्षिण ओ पछाह के,
 विभव विहाय क सु आप बस ह्व गये ।
 कहत 'हुलासी' राव राजा सत्र-पूरव के,
 हारके नबाब, अग्रज टोपी न गये ।
 जब दीप सदन कौ मदन भरतपुर
 वाके गढ दूटेते अनेक मर है गये ॥

३८—मूलराय—यह कवि जाति के ब्रह्मर्षि (राय) थे । ये तहसील नदवई
 जिला लखतपुर के अतगत नूरपुर ग्राम के निवासी बागीराम के पौत्र तथा अद्भुत
 राय के पुत्र थे, जसा कि स्वयं कवि ने अपने परिचय मे निम्न दोहा लिखा है—
 "नगर नूर को देग है ब्रजराजा को धाम ।
 ताम अर्थ बनाइये, मूलराय कवि राम ॥

इहाने पद्यपुराण म वर्णित गीता के महात्म का 'गीतामहात्म' नामक
 विविध छन्दा म भाषानुवाद किया है । अनुष्टुप छन्द के परिमाणानुसार इसमे
 २००० छन्द हैं । इनके अर्थ का रचना काल सं० १८३६ वि० है, जमा स्वयं कवि
 ने लिखा है—

ठारम छतासवा विक्रम सवत जान ।

कार नाम बनि मचमो भोमवार गुभ भान ॥

३९—देववर—य जाति के माधुर चतुर्वेदी थे । इनका कविता-काल सं०
 १८३८ वि० ठहरता है । इन्होंने महाराज मूरजमल के भाई वर के राजा प्रतापसिंह

क पीत पुष्पमिह के लिये 'पुष्पप्रकाश' नामक एक छायासा ग्रंथ में १८३८ वि० म लिया है। इनकी कविता को उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है -

ब्रज नरद्वी की बुर्बु प्रतीर्ष ।
 ताकी मिह रहाडुर श्रापे ॥
 पुष्पमिह ताकी परिगाम ।
 ताहिन किय यह पुष्प प्रकाश ॥

दाहा

गा गापी गोपाल गन गुन गुलाव गहि पानि ।
 गाकुल गाकुलचद को, गुजा गुज गुजानि ॥
 रिन यिलात-वाग विवल वाधा विरह विगात ।
 चल चुप दखी चपल चल चविन चित नदनाल ॥

८०- पदमाकर - य जाति क ननग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम माहनलाल भट्ट था। पदमाकर का जन्म वाग म सम्बत १८१० वि० मे माना जाता है। भारतीय वाद्य गंगन म यदि सूर सूर्य और तुलसी गशि है तो पदमाकर गुक के ममाने देन्यमान है। इहान अनेक राजा महागजाध्रा म अनुल ममान एक प्रचुर द्रव्य प्राप्त किया था। यह भरतपुर नरेश रणजीतसिंह क समय म उनक पान भरतपुर प्रघारे थे। यहाँ मे भा इनका बहुत सम्मान एव धन लिया गया। महाराजा रणजीतसिंह व उनके पुत्र बलदेवसिंह के विषय म इनके पुटकर वरि रसे के बहुत कथित यहाँ उपन रहे है, उनम म कुछ नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं -

हंवन क घोर मार माची चहुँ-भाग जाक
 शम्भ की भक्कोर बाऊ-पावन-रने नही ।
 कहे पदमाकर उठे-भुज दडनि-की

चाडना किलोके भीम-धावत मन नही ॥
 हका पर हका क मुयका बलदवमिह,
 जग जुर मानन क साक हगन नही ।

ह कर प्रचार जहाँ वाट शरि मु नही,
 मुड-मुने माली पे बटारन वन नही ॥

बहर को कीस किलकाली को कोलाहल को,
 हालाहल सलिल, धरातल बडव को ।
 बहै 'पदमाकर महीप रणजीतमिह
 तेरो कोप देख यो दुनी म को न त्वको ॥
 चिल्लिन को चुगल विजुल्लिन को तीस्रो तेज,
 बाबुरो बवा है बडवानल अत्रव को
 गत्रिन को गजन गुसल गुरु गोसन को
 गाजन को गज गोल गुमज गजव को ॥

उच्छलत मुजम बलच्छ नव लच्छ त्च्छ,
 दिच्छिन ह छोरवि लो स्वच्छ छाइयन है ।
 बहै पदमाकर महीप रणजीतमिह
 अच्छिन म अोज पर निच्छ पाइयत है ।
 पच्छ विन लच्छ लच्छ विकल विपच्छी हीन,
 गत्रिन के मुच्छ वर तुच्छ नाइयत है ।
 प्रकटत पुच्छ कुच्छ कुच्छ पर गेप जव
 रच्छ परि मुच्छ पर हाय लाइयत है ॥

पल को प्रलको, भोच मेल का मुठी म भुक्ति,
 भेल को उच्छलत मुमल्ल बलवीर का ।
 बहै पदमाकर जमडे को उमादल प,
 दड को दुनी में वेग बाढत समीर को ।
 वज को बलाय मद मजै को महीसुरन,
 गज को गरज बज वास्यो-सुना सीर को ।
 मोड को दई को अत्र लोड को अगनि पुज
 भोड को अतक वीर बवा रणधीर को ॥

दाहन तें दूनी तेज निगुनी तिसूल ह ते
 चिल्लिन त चौगुनी चलाक अत्रचाली तें ।
 बहै 'पदमाकर विलद वलदेवमिह
 एनी समनेर नेर मत्रून प घाली त ॥
 पांच गुनी पवि ते पचीम गुनी पावक त
 प्रगट पचाम गुनी प्रलय पनाली त ।
 मपन सौ सौगुनी महत्र गुनी मूरज त
 लाम गुनी लूक त करोर गुनी कानी त ॥

८१-मुग्धलीधर—यह जाति के भद्र ग्राह्यग वे । इन्होंने अपनी कविता में 'प्रेम' उपनाम का प्रयोग किया है, और रही कही पूरा नाम 'मुग्धलीधर' भी लिखा है । इनका कविता काव्य स० ८२० से ८०० तक माना जाता है । इन्होंने महागज रणजानासह के समय में यान वाय अथवा मुद्र का अपनी गथा देना था । यह एक प्रतिभा सम्पन्न कवि थे । इनकी रचना सरस ब्रजभाषा में है । कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं—

कवित

एक हैं फिरगी भयो भारत एतपुत्र म,
 तापन तराप के इलान प इवान की ।
 मृगज मुजान की बहाण लम्पी ह तहा
 छीन गई यतन म यम जे खवान की ।
 'प्रेम' या प्रवण्ड मर्त मडल का मग रह्यो
 पूरन प्रताप बल यतन यलान की ।
 वाली बग वृपन फिरगी मव कुग्गा भव
 एकर न बना चना पयर बनान की ।

कमन की नानि नवनि यगनीन की ह
 नरि नाग भौदन रात वाज व रही ।
 नासिका नरती की, अनूप रूप प्रेम गणि,
 दना का मरु रुप दामिन का द रही ।
 चम्पक यमनित की यगना यकार का
 अग का मुबाम छिन छानु ता छव रही ।
 पाई अग्नि तापी श्री मितारी नन रग की ह
 आवी अग अग की यनारी ग ली रही ॥

षट्क गुनाथ । क्या मरु क अने मन
 रम कज कतकी गुमान क रेरे हैं ।
 धारत स एत निन करीतह प ना क
 धारत मित नाग तप तन क न नरे है ।
 'गुग्गा' मति दा न नुरा म-चार दना
 गा होा गुगा प रान गति केरे हैं ।
 गगी मुद्द वापी श्री व कुच्छ एरारा म,
 नुन बीच नाग का बाग बहुतर हैं ॥

८१-प्रज्ञेय - प्रज्ञेय ज्ञानि के प्राद्वयग श्री महागण रणजानसिंह के समकालीन थे। अथवा चनाग उक्त उक्त का है। यद्यपि आपका वाई ग्रंथ ता हम उपन ३ = १ व्या = तथापि उक्त पु-क कविनाण पद्याप्त मात्रा म मिलता है। इन कविताओं के अन्त में यह भी भाषा निष्ठ हो जाता है कि आप वड प्रतिभाशाली कवि थे। आपका चनाग्रा के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

कविता

पूरन पुरष ताकी पारहू न पात्र न,
गावन पुगन ताहि मगन विनाट म ।
पालन भुनाव हलध पय प्याव ममि
त्रिदुध लगध मात्र धार मन मात्र म ।
अज अविनासा दय दानव विनासा प्रभु
सखा कमतामी तत्र रह्य प्रयो म ।
कहत प्रजश मुक् मार्ग मटस नम
जग जाकी गान म सा नमुधा की गोठ म ॥

घनन का धार नभ मटल दमा त्रिमान
माज प्रवमान के निमान राज योग पर ।
तन्त्रित तन्त्राकी वडु दहन वत्ताका स्याम
धाम धर खडन घुर्माट वरजार पर ।
पीन के फाट भर भग्ना बाग जल
दखन दयाल गाव गापा जत साग पर ।
मूलत उखारि कर पल्लव नम्हारि गिरि
फिरना ला फराय त्यावमायो नख तार पर ॥

मन्त्रि नभ मन्त्र अन्त्र उमडि घन
मडि मन्त्रि ताडा घमन् अन्त्रि जार पर ।
खन्त्रि जत धार जार जार । गगार जार
जमुन प्रचार । । मन्त्र नुग गाग पर ।
पीन नख न ग । खा नि तार गाग
नग नम गार शश गग मन मार पर ।
कगगा कन्त्रि नु च नन्त्रि नन्त्रि कर
मन्त्रि नन्त्रि गिरि धाम्यो नख कार पर ॥

घटा धिगि आई कोप बासव पठाई जुय्य,
 जुय्यन सुनाई लूम लूम ब्रज आर पर ।
 धक पक घाई गोप गोपी मन भाई गाय
 वच्छ अकुलाई करें करणा विसार पर ।
 जमुमति मया ढिग नद वलि भया ताकि,
 ता छिन कन्हैया गिगि गह्यौ वर जोर पर ।
 हर वर धाय मुज दण्डन घुमाय हाल,
 करन प छाया त्या बसायो नम कोर पर ॥

अमित अपारें नभ मडल गुहार घन,
 सायुध संहारें धाय धाय ब्रज वार पर ।
 चाला की चौधे घर धार जल औधे पौन,
 गौन तन कौधे त्या समूल तर तार पर ।
 करना के कद ब्रजवद दुख कदन कौ
 धूमन घुमाय वसी घोर वर जोर पर ।
 मधवा गिमाय वर बगन फिगाय गिरि,
 छत्र मम छाया क तुलायो नख वार पर ॥
 नन बगन (कवित्त)

बजन त मरे मनरजन गुमान गुर
 गजन गहीन गुन गाहक बगोरी के ।
 मृग के मत्तीन मन बधत परीन पुज
 मौन हू अधीन वर- भजन चकोरी के ।
 मन कस वान स्वस्नान के सुधारे तीखे, --
 । उज्ज्वल अनियार वारे भौर की मरोरी के ।
 सोनिन के मान नदनाल श्री "ब्रजेम" पाल, -
 राजन विसाल नन कीरति किमारी व ॥

केमू के कुसमन धौ कफनी करी है कठ
 तमवौ बलीन मन माद लपजायी है ।
 धवनि धौ मोर मिर टायी धौ भवा है सली
 बलफी अनार भौर गुज छवि छायो है ।
 भार्यो मकरद द्रुम टारहि करि दड धारी,
 मण्डर समोर यो 'ब्रजेम' गुन गायो है ।

बड़ी बेपीर भीख प्राण की बियागिन मा,
मागन फकीर हूँ बमत चनि आयी है ॥

मुरची बरण (कवित्त)

माथे मार मुकुट रमाल निरमौर नम
फूल हैं सरमा फूल कु डल शवन है ।
श्रलकें श्रमर जुग लावन कमल मुख,
चर दस श्रनि श्रहनाद क भुवन है ।
मुरली मधुर गीन पचवानादि नान
कोयल कुहुवि मान माननी दवन है ।
श्रीमत ब्रजद्र महाराज बलवत्त जू के
राजत बमत रूप राधिका रमन है ॥

४६—गणेश —य जाति के ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनका कविता-काल स० १८६० से स० १८९० वि० तक ठहरता है। य भरतपुर के महाराज बलवन्तसिंह के दरवारी कवि थे। इनके पुत्र लक्ष्मीनारायण व पौत्र युगल किशोर भी कवि थे। य दाना भी महाराज बलवत्तसिंह के दरवार म रहत थे। इसस यह पता चन्ता है कि उक्त कवि बहुत वृद्ध थे। इनकी रचनाश्रा मे स एक पुस्तक 'विवाह त्रिनाद' प्राप्त हुई है जिसमे उक्त महाराज के विवाह का सुन्दर दंग स बरण किया गया ह। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है — । ।

छूत फुहारे जल जंत्रन ते जल धारे,
देसे संगे प्यारे, यारे यारे बुद वारे हैं ।
ताप तरवार हूँ के मुक्ता समूह स्वच्छ
लाखन परते के सुकवि निहारे हैं ।
नृप निरलाज महाराज श्री ब्रजेन्द्र बली
वलवन हूँ ते पं सरूपबंन वारे हैं ।
मरे जानि व्याज क तमाम कौ उद्यह जानि
-माना हन मानि आन बरुण पधारे हैं ॥

४७—जमराम —इनके विषय म इनना ही वक्त उपलब्ध हो सका है कि ये जाट जानि क थे और भरतपुर के रहने वाल थे। इनका कविता काल स० १८६१ वि० ठहरता है क्योंकि य भरतपुर नरुण गणजीतसिंह के यहा दरवार म रहत थे।

उनके वीर रस के स्फुट छन्द पाये जाते हैं। ये गरी गरी बहने में नहीं चूकते थे। राज दरवार में गुणियो का अनादर करने वाले दीपचन्द व पलाग्राम के पटल (गूजर) और विंगना पर अप्रमत्त होकर आपन 'सात भूत खेल' वाली ग्राम्य तात्कालिक का प्रयोग बड़े मुन्दर ढग स दिया है। इनकी कविता के उदाहरण नाच प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

दग दरवार दीपचन्द सा प्रवासित है

नाही छाये मीरजी अमीर बुद्धि माज की।

पला की पटल जा पलाय दन ताही छिन,

सही रहै येही कहै आयुम प्रजगज की।

जिह् जसराम' जोर जाहिर, जहूर जूर,

विंगना विप-वन्न बहै, खाय आज ताज की।

प्राय दीन दुखित मयाय दरवार जान

सात भूत खेने, बहो कुमल का राज की ॥

मच्या घममान कास तीन लगि लोय परी,

मर गये सूर साच मोहग अगाह ते।

चाई या भुजा ते मार कीन्ही जसवत राव

परे रहै मण्ड मुण्ड त्ताग व सलाह त।

पटा "जसराम" अगज जग हागि गय,

जीत जदुवसी सूर लडत उछाहत।

दोऊ दीन जाया महाराज रनेजोतमिह

हारि के फिरगो फन पटकयी बराह ते ॥

८८-गगाधर — ये जाति व ब्राह्मण और भरतपुर के रहने वाले थे।

एता कविता-काल विक्रम सं० १८६१ माना जाता है। इनकी रचनाया म. र. र का प्रधानता है। एसा प्रतान होना है कि याय महाराज गगाधर के गगाधरी कवि थे। एक उदाहरण प्रस्तुत किया जाना है —

कवित्त

पारय मचायी महाभारत भरतपुर

घिरे भूप भट भीमगन म म म म म

गगाधर' ए मममन की म म म

पटा घनी नापन म म म म म

जहाँ कर राति गिरें गोरटा गरद भये
 दोऊ लट्ट पट्ट रण-सम्भन तजत हैं ।
 फिरका फिर गिन के फार के फतूह करें
 जीत के नगारे रणजीत के बजत हैं ॥

४९-प्रसिद्ध —ये कवि जाति के ब्रह्म भट्ट थे । ये महाराज रणजीतसिंह की पलटन में सैनिक काय के द्वारा जीविका अर्जन करते थे । इनका कविता काल स० १८६१ के आस पास पाया जाता है । इनके वीर रस के अनेक फुटकर कवित्त मिलते हैं । उदाहरणाय कतिपय पद्य प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

सुरपुर भवन भरतपुर देखन का,
 काहे काज आये हो फिरगी सूर छत्ता में ।
 धर क नसनी चढ़यो कुरली खडग लिय,
 किये मन भोरे गोरे सूरत चक्ता मे ।
 कहत 'प्रसिद्ध' महाराज रणजीतसिंह,
 धाय धाय धाम पग आगे ही धरत्ता म ।
 भेजी फोर पटक पछार खात खभन सो,
 लेडी अंगरेजन की रोव कलक्ता मे ॥

छप्पय

कछवाये खरभरे लरे नहि एक लराई ।
 रजवारे भजि गये गिरत्ता गल न पाई ।
 दक्षिण लक्षण भरे रग कवियन मुख भाखी ।
 दीष दहली भई मूँढ सूरज सुत राखी ।
 दिगपाल हालि भुवपाल भग जब नृप बल बढ़ते जहा ।
 रणजीतसिंह नहि जनमते तो हिन्दुन हद रहती कहा ॥

दखे दुरवीन बडावीन वान सग लिये
 मत्तरह पहर हल्ला कीये मदमत्ता के ।
 पीरे पट भडा फन बुज प निसान दिये,
 वान फहराने भीरपच्छ के धरत्ता के ।
 जोगनी जमात पानि बठ के मघात खात
 भाति भाति मासन सवाद नव सत्ता के ।

वहै 'परमिद्ध' महाराज रणजीतसिंह
सत्रह हजार दल काट कलकत्ता के ॥

५०-रमेश —इनका कविता-काव्य सम्बत् १८६२ से १८८० तक माना गया है। इनका पूरा इतिवृत्त ज्ञात नहीं हो सका है। इनकी कविताओं में रमानुजूल श्रौज एव प्रनाथ गुण का प्राबल्य है। स्वाभाविक अनुप्रासा व मर्मपर्यं में इनका रचनाश्रौ म मद्मुन चमत्कार उत्पन्न हो गया है। इनका लिखा हुआ एक नायिका-भेद श्रय तथा महाराज रणजीतसिंह की प्रशंसा व बुद्ध फुटकर उद्ध मिलत हैं। वीर रम की रचनाश्रौ में मे कतिपय उत्पन्न प्रस्तुत किये जाते हैं।

महाराज रणजीतसिंह का आतक वरण —

कवित्त

तरी घाक घरक घराधिप घर घरान,
घर छाड घावत घरा की लाज घारें ना ।
वाटिन व वाटि सुनि उद्धन निसान धुनि,
सून कर पल म पलायन म हारें ना ।
भुकि भुकि भारत म छिपन पहारन मे,
पान हानि जानि हार जोत कौ विचारें ना ।
श्रीमत् ब्रजेद्र महाराज तज तता दमि
पता से उठन वरी सत्ता कौ म्हारेंना ॥

महाराज रणजीतसिंह के शत्रुओं का वरण

उच्छन्न मुच्छन्न बल के वनच्छ दच्छ
रच्छ गहि गच्छनि मु तुच्छ करे पौन का ।
अच्छन निहारि व मुच्छनि के पच्छ हरे
पच्छिपनि के से वच्छ वच्छिन वीन कौ ।
श्रीमत् ब्रजेद्र के ह्वेद्र वरन रमण,
सच्छिन मु सच्छिन व वच्छ वर हीन का ।
दच्छिन म्दच्छ के मु वच्छनि के वच्छ मालि
रच्छन विलच्छन समच्छ कर भीन कौ ॥
हायिया का वरण

श्रीप श्राप श्राप इहु नीवमनि पनग म
दवे पर भूमि का 'रमण' कहै शानि के ।
उद्धिन श्रमद त कलिद ते विलद वस,
गुजत मतिद पुज मण कौ पगानि के ।

ऐसे गल गाज गजराज ब्रजराज द्वार
 त्रिगज हू भाज लाजें सोर पहिचानि वे
 सुडाद उदत उदड नभ-मण्डल मे,
 चूम सुधा मडन मुखारविद जानि क ॥

५१—मिश्र मुखदेव गगाविशोर —ये माथुर चतुर्वेदी महाकवि सोमनाथ के वंशज थे । इस वंश को भरतपुर राज्य की ओर से राज-दानायक का पद परंपरा से चला आता है । उनके वंशज अब भी भरतपुर में विद्यमान हैं और इस उपाधि का उपभोग कर रहे हैं । उनके पिता का नाम वजनाथ मिश्र था । इनका रचा हुआ संग्राम रत्नाकर नाम से महाभारत का भूषण पद्य तथा मूसल पद्य का अनुवाद हमारे संग्रहालय में है । ग्रंथ के दखन से हम इस निश्चय पर पहुँचे हैं कि आप न केवल हिन्दी के ही बरन् सस्कृत के भी ज्ञाता थे । इस ग्रंथ में आपने अग्रणीत प्रचलित तथा अप्रचलित छंदों का प्रयोग किया है जिससे सिद्ध होता है कि आपका पिङ्गल शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था । यद्यपि आपने यत्र तत्र अलंकारों का भी प्रयोग किया है, किन्तु उनका विना चमत्कार कही नहीं लिखाई पड़ता । इतना सब कुछ होते हुए भी हम यह कह सकत हैं कि आपकी भाषा में सरलता तथा स्वाभाविकता का माना यथेष्ट पाई जाती है और शली साधारणतः अच्छा है । इनकी कविता का कुछ उदाहरण निम्न लिखित है —

छप्पय

श्री नारायण गव चक्र को धारण करि क ।
 अर नर उत्तम रूप आप अजुन को धरि क ।
 सब दत्यन की दमनि देव सरसुति मन भरि क ।
 श्री पागसर सूनु याम आनंद विहरि क ।
 हूज प्रसन्न मोप अब तृपा दृष्टि अधिकारि क ।
 मैं करत प्रणति तुमको सत्ता अपना हियम धारि क ॥

कवित्त

पवत कलास मध्य पूर्यो की जुन्हैया बीच
 आपन समान विम्ब आपनो निहारि क ।
 धावन अनन्त बार छाया सा विचारि रारि
 अनि ही प्रवण्ट मुण्ड दण्ड का भ्रमाय कें ।
 दौर मन पुत्र । तर पत्नि के घातनि त
 बम्पनि है धरता ताकी दया का विचारि क ।

एम् गिरिजा के सपूत पूत गनपति को
मदा उर ध्यान धरो कउट विमारि कें ॥

५२-रमनायक - जमा कि आपके नाम म प्रतीत हाना है रमनायक रम

राज शृ गार क सफल उपायक थं । आपका जम भरतपुर राज्यान्तगत कामवन
नगरी म भट्ट जाति म हुआ था । आपके जीवन परिचय एव कविता-काल क विषय
म निश्चित रूप स कुछ नहीं कहा जा सकना किन्तु विद्वाना न आपका कविता-काल
सम्बत् १८७२ वि० क लगभग माना है । आपका कवल विरह त्रिनाम नामक काव्य
ग्रंथ उपलब्ध हुआ है । इस ग्रंथ म भ्रमरगीत क टग पर पद्य म उद्धव
तया गापिया का सम्बन्ध बहुत ही आकर्षक ढंग मे लिया गया है । गोपिया क द्वारा
प्रयुक्त श्रुतिया तो बहुत ही ममभेनी हैं और भाषा भी भावानुकूल सरस और
गोचर है । दृष्टिपि आपका एक ही ग्रंथ देखन म आया है फिर भी इसके दखन स यह
विश्राम नया श्रोता कि एम् उच्च काटि क कवि न कवल एक ही ग्रंथ लिया हा ।
कवन इसा एक ग्रंथ क अवलाकन स यह कहा जा सकना है कि आप काव्य-कला क
म छ मभन एव प्रकाण्ड विद्वान् थे । 'विरह त्रिलाम ग्रंथ स आपकी
मरमता, मरगता, मगनता एव विद्वत्ता की पयाप्त भनक मिलती है । ऐसा प्रतीत
हाना है कि सम्भवन जगतायताम 'रत्नाकर' का 'उद्धव शतक' का प्ररणा
रमनायक क विरह त्रिलाम म ही मिला हा । इस ग्रंथ क निर्माण काल के विषय म
कवि न स्वय लिखा है -

प्रष्टान्म जु वहतरा, सम्बत् सावन माम ।
सामवार तिथि तीज सुभ प्रगटा विरह त्रिलाम ॥

आपक 'विरह त्रिलाम' काव्य क कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रह हैं -

उद्धव (दाहा) - -

अनय निरजन ध्यान धरि निगुन पान उर धारि ।
जाग जुगति सितवहूँ अर मीसो मव अज नागि ॥

गापी (दाहा)

अलि । वीरे काह ववन कह दुवारिका बान्ह ।
वमन निरजन मुचिन अज श्री धनयाम मुजान ॥

कवित्त

व्यापक जान अह्य भलय वहाँ है काहि

आदि निरजन नाम रंग तर पमि न ।
कमा धविनासो का है ? वेत् जा वगान जाहि

विधिद न जान हर्म एव रग रग ल ।

ब्रज ही वसत 'रसनायक न ग्रान ठौर;
 काह भक्भोर कर मुचित विमथ स ।
 वीर लौ वक्त ऊधौ द्वारका बताव काट
 काह है हमार प्राण प्राणन म देय न ॥
 अथ सखि (दोहा)

पम-सुधा जिन जनम मा अलि चार्यो अनुकृत ।
 जाग जट्टर निनका कहा रचि मान मनि भूल ॥

कवित्त

जोगल सिधारे तुम बुविज दै भाग आय
 निरगुन हमे लाय रम्पट लगवानु हो ।
 रोकन सरल पय वेद औ पुरानन क
 धापत अपथ पय निलज मिहानु हो ।
 याम धौ कहा है 'रसनायक वृथा है वाद,
 चाह जा हमारें सा न चरचा चलात हो ।
 अपनी कहत पर-वीर ना लहत ऊधौ
 माधव मिल की विधि काहि ना बनातु हो ॥

सवया

काह द जाग पठाय तुम्है हम जानी अहा ज् बडौ जन लीना ।
 कसी अहीती क्या कथिक भरि श्रौननि हाय हलाहल दीना ।
 काह की नक दया न लई रसनायक' वर विगाह्यो नवीना ।
 क्या हममी अवला वपुरीन प ऊधव आय क ऊभम कीना ॥

राधिका जी का पत्र श्री कृष्णको (दाहा)

एक वर ब्रज भाइय, सुन्दर स्याम मुजान ।
 मुरनि ममै न रमाइ हौं माहि तिहागी ग्रान ॥

कवित्त

एक बेर आय ब्रज-विरही जिवाय लीज
 पाध मन मानें साय कीड मनुपाय हा ।
 मान ना करोगी रसनायक' धरोगी धौर,
 गुन ही गनोगा प न औगुन गुनाय हा ।
 पीवन अघर दत दहा ना कठिन जुग,
 कुच ही अरौ न अग हम्ब छुनाय हा ।

मोह ह हजोग मोहि नर के कुँवर अब
 - सु रति मम न हा हा गवर म्माय हों ॥

जागृत अनन अगाध हरि निरह याधि बढ जाय ।
 मा जीवत जदुपति अ ब्रजहि वभाव आय ॥
 कवित्त

आपनी पतन टाड कीरति कछु न याम,
 चरच बरत नाग नाहन हँमाड्य ।
 प्यारे परन्तु 'ग्मनायक' रहै हा अब
 घरकी विचागी कहा मा हू ना मुनाट्य ।
 प्रति ही अनय नई त्रिगरी प्रचर माहि
 जीवन बचाय तन तापहि नमाय्य ।
 मूनी है मकन अज विरही त्रिकल यान
 गाबुल के नाथ आय गोकुल वसाड्य ॥

घर की न जल भर, मग की न पग घर
 घर की न मुधि कर तनि है उमाम गी ।
 एक मुनि नाग गड एक त्रिन जोट भई
 एकन क अघरन छूट आग आमुगी ।
 'ग्मनायक' यात कछु ना उपाय कीज
 लमो ता बगी जामों हाय न उपहीम गी ।
 राजिय जगय वन-वामन कथाय परि,
 उपज न वाम वन राजगी न वामुगी ॥

१३-मातीगम -य महागज रणधोरमिह क ररवागी कवि थ । इनका
 कविना-काल मरतु १८८० वि० क आम पाम टहगता है परन्तु इनकी रचनामा म
 मगारात्र रणधोरमिह म नकर महागज बनवतमिह तक का वगन मिलता है ।
 इनक पिता का नाम रघुवरगाम था जा प्रमिद मन्कवि रामदान क पितामर
 थ । य नगर क निवामी तथा मुद्गन गात्रीय ब्राह्मण थे । इनके रचे ग ग अथा
 का पना मग बुजा है त्रिनका विरगग डम प्रकार है -

१-अजद्र-वगावली - इस अथ म अरुनपुर रात्र वग का वगन बर
 विस्तार पूरक रगीनी भाषा म किया गया है ।

२-ब्रजेन्द्र विनोद — यह रीति ग्रन्थ है जिममे नायिका भेद का लक्षण और उदाहरण दकर भली प्रकार स्पष्ट किया है ।

आपकी भाषा बड़ी ही लचीली तथा श्रवण सुगन्ध है । भाव व्यञ्जना सरल तथा हृदय स्पशनी है । शली म पूरा चमत्कार है और अनुप्रासा की छटा श्वते ही बनती है । इनकी रचनाओं क कनिषय उदाहरण प्रस्तुत किय जात हैं —

ब्रजेन्द्र-वशावली— (दाहा)

महाराज रणजीत मुत श्री रसाधीर ब्रजद ।
जगमगान जग म प्रगट नाकी मुजस अमद ॥

कवित्त

प्रबल प्रचड मजु मालती निरुड मडि
मलय उदडन गरर गहि गारिय ।
गहि गहि गोहरन जोहर ज्वलित जाल,
पानिप विमाल मद चित्त त उतारिय ।
'मोतीराम रचिर अनेक उपचार भार
घा घनमार हू असार कर डारिय ।
हिन्द सरताज तरे जस प ब्रजेन्द्र बीर
काविक अमद चद चान्नीन बारिय ॥

पदगि छंद

अनि विमल नीर मखर अपार,
जह करत आन खग कुल बिहार ।
बन हस हमनी लिये मग,
निहि तीर आय बिहर सुग
बहु चक्रवाक चातक चकोर
मन मोल भरे बिहरत मोर ।
काकिल कपान ब्रजत रमाल
मजुल अनूप बहु वगन जाल ॥

भुजग प्रयाग छंद

लगी चारिहूँ आर भालर भमक
मु ती चंद्र की चंद्रिका मा चमकें ।
बन पोतवार चन्दा बिगजे,
चहूँ आर जर तार की काग साजें ।

घटा मद की सी अटा श्री अटारी,
छटा मी चमक जहा गह नारी ।
रची है सची चित्तमा चित्र मारी
वची स्वग मा रूप की रामि भारी ॥

जलन बरूक चहु श्रीगन अचूक गज,
माजे घोर गरज गरज गुन वारे है ।
छनि छनारि स्वच्छ रजक अपार छवि

धूम धार धुग्वान गर निरवार है ।
'मातीगम माहन मरम सुर सार धार
प्रारि वर गानिन गुमान गर डार है ।

पावम न हाय वीर सलन मिकार
महाराज रगधीर के करौन बल भार है ॥
बुरजन बुरजन गरज गभीर धुनि

चमकत रजक चपन चपनामी धौर,
लरज पहार वन मघन ममाज सा ।
गमा ताप तीखी गर भामत भगतपुर की,

पूछत कुगव कर छुञ्चन तुगर भर
रगती ब्रजद्र वीर हिम्मत दराज सा ।
गजव प्रगर अरे अरि म अराज सा ॥

जाकी जानि जगती म जगत ज्वनि जान
जगर मगर गहै समूह निमान म ।
ब्रजजन वाननद अधिक प्रमा भर

मातीगम मुखवि मलिन व वृन्द धाय,
दान मकरद गघ पिवत भनान म ।
सम नहि ताप ब्रजवन वनवन्मि

उत्ति प्रनाप आफताव हिग्वान म ॥
कनपमना व वन कामल अमन सम,
कनना निलय गनि सपिन इनाज व ।
मुग मराजन त प्राज अरमत दूना,
कनिमन अत अतमन अराज व ।

‘मौनीगम सुकवि महायव मदन जय
 दायव बिनन बलवन वज्रगज वे ।
 औदर टग्न नव अरुज परन एम
 बिनऊ चरन बकटग महाराज व ॥

५४—महाराजा बलदवसिह—आपन मन्त्रत् १८८० मे १८८१ त्रि० तक भरतपुर क राज सिंहासन का मुग्धाभिन किया । आप महाराज रणवीर व भाइ और उच्च काटि क विद्यायसना तथा विद्वानो का आदर करन वाले थे । आपका दरवार विभिन्न प्राता के कलाकारो एवम् सत्कविया स मुग्धाभिन रहता था । विभिन्न प्रातीय गुणियो के मत्सग का प्रभाव महाराज की कृतिया म स्पष्ट भलकता है । जिम प्रकार आपकी महारानी ‘चतुर मयी न अपनी का य प्रतिभा प्रकाशन का मायम गीत काय का चुना है उमी प्रकार आपन भी गीत काव्य ही अपनाया है । आपके पदा स भली प्रकार स्पष्ट हा जाता है कि आप काय के साथ साथ संगीन कला के भी विगपन थे । मत वाणियो के मद्रश्य आपकी रचनाओ म सरमता एव माधुय प्रचुर मात्रा म पाया जाता है । आपका रचनाग्रा म ब्रज-भाषा क अतिरिक्त पजाबी एवम् मार वाडी भाषा का पुट भी विद्यमान है ।

आपन अपनी रचनाग्रा म ‘चतुर द्रल ‘चतुर प्रभु तथा चतुर पिय क उपनाम की छाप अङ्कित की है । आपकी कृतिया (पदा) क कनिपय उगाहग नीचे उद्धृत किय जात ह -

ठुमरी

पचरग पाग जरद वाकी पन्का मावर बलन पर मरा मन अन्कया ।
 ताप ताप नन भाह रतनारी मृदु मुसकयान चमक चित तन्कया ॥
 चनु द्रल मुकटि मनि राध मदन पन् मरा मन लपन्या ।

ठुमरी राग काफी

मन माहन मरे जाल हो जो मही वाला एजी मेली वाता मरे जान ।
 छुपि छुपि क क्या नाम धरत हो वाही म लग्या मरा रयाल ॥
 ‘चतुर पीव म जान वे हाला अब हा ज्या परमान ।

राग भिभागी-रव ताता

रगि बिन काद नहा मन साधी ।

मुन राग अर कुटुम कवीनी भूडे मुजन मगाधी ॥
 वरज रहा वग्ज्यो नहि मान घूमत है जम नाधी ।
 चनु’ कगय चेत जा प्यार फिर न मिन रम माधी ॥

५५—महाराणी अमृतकौर—महाराज बलदेवमिह म्वय जसे सरम कवि
 ये बसो ही उनको रानी अमृतकौर भी थी। ये भी सरम पर रचना किया करती
 थी और अपन पदा म चतुर मखी' तथा 'चतुर प्रिया' क उपनाम का प्रयोग करती
 थी। इन रचनाओं से यह अनुमान होता है कि 'चतुर सखी' काव्य-कला के साथ
 संगीत-कला काविदा भी थी क्योंकि इनकी ममस्त उपलब्ध रचनाएँ गीत काव्य
 क रूप म ही है। इनके पदा के पढ़न से मत बागी का मा आन प्राप्त होता है।
 इनका अग्रिकाश काव्य भक्ति रम म आन प्राप्त है। कतिपय रचनाओं के
 अग्रकाश निम्नाङ्कित है—

राग गौतमलार ताव जलद

प्यारी निक्की है खनन तीज गवे निक्की है खनन तीज ।
 पचरगी दामिन लावन मा आठे खियनी खीर ।
 कम बहू अगिया की साभा आभूपन की भीर ॥
 बसो म हीग की भलवनि बसगि खटवन धीर ।
 पायन तो घायल करि डार पिय मामल बलगीर ।
 चतुर मखी या विधि मो खेनी वा जमुना ग तीज ॥

जल भरन कू जाय न्याम खडो पनघट प ।

गधे तेगो रूप अतूठी लाव दगि मृगि सब भूख्यो ।

महरि की लरिका महा अति खोटी गलियन मे राक टोक ।

चतुर मखी ने यह छगि निरखी कटा कहे अरु की ररिया ॥

राग इमन

प्रात जुगे भारा तुम सू गिरिधर । प्रीत जुगे भारी तुम सू ।

बसुन जनन क्या है कर जोगी अरु तारी हरि छत्र सू ॥

महाभूत बहू बूद लाडिली धान चलाव बल सू ।

चतुर मखी मरे विरह बहूत है गिन दरमन अरु तरमू ॥

राग रागठ—नाल चपक

माहन मुबुट की भलवनि ।

कोटि चंद्र गिमम मरि भरि तुन न ता अनुमानि ।

नरजा की कुंवर मुल्लर राधिका प्रात ।

चार जुग मे बरन सब नहि प्रेम रम की गानि ॥

ब्रजवासी मरु ताग जुग मो बरन अमृत रम पान ।

चतुर मखा क प्रात प्यार रम रू माहि आन ॥

५६—जयदेव—य काव्य क साथ साथ ज्योतिष के भी प्रकाण्ड पण्डित थे और

महागज बलदेवमिह क दरबार म रहत थे । इनका कविता-काल १८७१ ई० है । इन्हान जातक भूषण जाग नामक ग्रंथ मस्कृत ग्रंथ के आधार पर हिन्दी म लिखा है । ग्रंथ म काव्य मौद्रय तो नहीं है परन्तु जातक सिद्धान्त पर भाषा के पद्यो म अच्छी पुस्तक प्रतीत होनी है । उदाहरण के लिये इनका एक गद्य प्रस्तुत किये जाते ह —

मन्ताराज बलदेव जू क शो महज ही भाय ।
 'जातक भूषण जाग की भाषा दह बनाय ॥
 सम्बत् ठागह मौ धरम कहतर को मान ।
 कातिक वदि पाच गुण पुनवसू मा जान ॥

५७—धरानन्द— इनका पूरा नाम घामीराम था । इन्हान कवी कवीण

कहा वरानन्द और कही घासीराम नाम म कविता का है । य भरतपुर क निवासी तथा ज्ञानि के ब्राह्मण थे । इनके वंशज अब भी भरतपुर मे है, जिनम पटिन रामचन्द्र महाराजजी कमकाण्ड केमरा ज्योतिषाचार्य राजपण्डित प्रसिद्ध व्यक्ति है । घामीराम मस्कृत क प्रकाण्ड विद्वान् थे । इनके रचे हुए मस्कृत म वेदांत 'याय, ज्योतिष आदि पर किन्नर ही ग्रंथ है । आपका बहून सा माहिय आपके उक्त वंशधर प० रामचन्द्र न श्री हिन्दी माहिय समिति को भेट कर गिया है । कवि धरानन्द महाराजजी बलदेवमिह क दरबारी कवि थ । हिन्दी माहिय म आपन एक रीति बृहद् ग्रंथ साहित्य मार चिन्तामणि नामका लिखा है । यह ग्रंथ मद्य-पद्य श्रयात् चम्पू क ढग का है । इसकी विशेषता यह है कि इसम तुलनात्मक गली पर अर्थ कविया की कविता क साथ कवि न अपनी कविता लिखी है । इस ग्रंथ का निर्माण-काल सम्बत् १८७२ वि० है । इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जात है —

छापय

मन जल मडित गड चड लगि चचरीक गन ।
 हस्त मुट भनु दण्ट विविध जिह पूजत सुरगन ।
 सन दन मद मत्त बन माभित अनेक गति ।
 मवन सम सुरेम, अनक नरम महामति ।
 सिद्धूर पूर साभित वदन, सदन बुद्धि भव भय हरन ।
 जय मुर नर मुनि बदित चरन लम्बादर कविजन सरन ॥

कवित्त

गुजरत कुज कुज सरम मनि कुल,
उडन, पराग पुज रग सरमायी है ।
प्रफुलित मालती कब वन भूमि रहो

पवन भकारनि । सुगन्ध प्ररमायी है ।
मुमनन की सम्पत सरमत कलि वाग बीच

बगन 'कवी' पचवान बल छाया है ।
माननी क मान गढ ताग्वि क काज आज

काम नृप मेवत वसत वन आयी है ॥

कहा कहीं पाई भूठ मानी म मचाई अत्र

दुर न दुगई गति पावम गयद की ।

वन्दन की रडाई लघुनाई आ लघुन का या

पर पहिचानी परछाई सूक चन्द की ।

मै ना बरजत ही प्रहीर के का बार बार

आसन अदाई ही मिठाई विम कद की ।

पामीगम कहै कठ कूनी लगाई अब,

आई ने उघर सुधराद न न की ॥

प्रकरण ३

राम-काल (पूर्वाद्ध)

महाकवि रामलाल —महाराज बलवन्तमिह व त्पावमान व अनन्तर भरतपुर राज्य वग विशु खलित होन लगा । अग्र जा न एमा मुअवमर त्व भरतपुर दुग पर आक्रमण कर दिया और दुजन साल का पत्च्युत कर राज्य को अपने आधीन किया । बलवन्तमिह को मिहासन प्राप्त हुआ और राज्य गामन अग्र जो की दख रेख म हान लगा । राज्य की स्थिति एक दम बदल गई । युद्ध और वमनम्य के स्थान पर शानि तथा मत्री स्थापित हुई । फल स्वरूप हिन्दी कविता को पुष्पित एव पल्लवित होने का एक स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ । गानि स्थापन के साथ २ कविया के विचारा और भावा म परिवर्तन आने लगा । महाकवि मूत्न न वार रम की जिम का य मरिता का प्रवाहित किया था वह आगे चलकर मद गति से बहन लगी, यद्यपि इसका प्रवाह मवथा सूया ता नही । वीर रमात्मक छत्र अत्र भी लिखे जाते थे किन्तु जा कुद्य भी लिखे जात थे वह अधिकतर बदी जना की विरदावली के रूप म ही होत थे क्योंकि जाटो की वीरता एव गौरव के वे दिन समाप्त हो गय जब “खिखनी पछ ला करि खेला त अजब खेल हला मारे गग मे रहेला मारे जग म अथवा “तर तग तत्ता म चक्ता की न गही मत्ता पत्ता से उडाय अग्र ज कलकत्ता क की मी वीर रम पूग कविताए रची एव कही जाती थी ।

अब शृङ्गार रस का समय आया और रीति कालीन कविया की भाति इस काल के भरतपुर व कवि भी अपन काय का शृङ्गारिक रचनाआ स अलकृत करन लग । परिणामत राजा और प्रजा ताना का कविता स विनेप प्रेम बढन लगा । भरतपुर नरग बलवन्तमिह स्वय उच्च कोटि क कवि थे और कविया का बडा सम्मान करत थे । इनक आश्रय म रहकर अनेक कवियो ने उनकी उदारता का वगन किया है और मुद्गर २ ग्रंथ लिखे है । इन कविया म महाकवि राम लाल एव रमानंद त कवि पु गवा न वीर रम के साथ साथ शृङ्गारिक रचनाआ का अधिक महत्व दिया है ।

महाकवि रामलाल यजुर्वेदी गाथा क मुम्तल गात्रीय ब्राह्मण थ । उनके

वग के आदि पुष्प मनाप मिश्र विराटपुर (जयाना) के समीप सूरौठ ग्राम के रहने वाले थे। इनके पुत्र समचन्द्र तथा पौत्र रघुवर्मान हुए। य वहा पर प्रप्रा गन्धुआ के द्वारा प्रशिक्ष मनाप जान म तग आकर नगर (भरतपुर राज्य के अन्तर्गत) म रहने लग। इनके छ पुत्र रामरत्न, भीताराम मातीगाम, रेवगज मवारा म तथा मन्नागाम हुए। मेवागाम क चार पुत्र हुए जिनके नाम गम कृष्ण धनुधर तथा हनुमान थे। य ही गम हमारे महान्वि राम (रामलाल) है। छन्द मार ग्रन्थ म उन्होंने प्रपना वग पश्चिम विन्सार पूर्वक किया है।

२-विष्णु गम न मयुग म प्रिया-ययन किया। इनके गुरु का नाम धामीराम था जो मम्भन नाम्निथ क अर्धे जाना थ। विद्या जान कर जब गम कवि अपने घर नगर नौटना पारान तिनमुयगम की प्ररणा म यह हिल्पी म काय रचना करन लग। उच्च काटि क कवि हान क वाग्ग महागज वतव तसिंह न इह अपन दग्वागी करिया म म्यान कर मम्मानिन किया।

अत तक हमारे रूपन म इनके मान ग्रन्थ आ चुके हैं जा काय की दृष्टि म एम म एक वर वर हैं। इनके ग्रथा का विवरण इस प्रकार है —

१-अनवार मजरी — इस ग्रन्थ म प्रयत्न अनवार क उक्षण स्पष्ट करके करि न मरम कविताशा क उताहरण लिये हैं। यद्यपि यह ग्रन्थ कवन २८ पृष्ठा का है तथापि गागर म मागर का समावग है।

२-रत्न मार — यह ग्रन्थ पिगल शान्ध की शिक्षा क लिय बनाया गया है। विषय प्रतिपादन कितना सुन्दरना म किया है यह ना स्वत ही बनता है। एम ग्रन्थ का यह विषयना है कि पुस्तक क आरम्भ म कवि न एम स्तुति शौर बना आदि क पचात् अपन आश्रय दाता महाराजा वनवन्तसिंह का वग वगन कर भरतपुर नगर, वाट महल हाथा घाटे, तलवार आदि बस्तुआ का वगन बडी ही सुन्दर शौर उन्मृष्ट भाषा म किया ह जा समय के लक्ष्य एव वभव का पूरा चीनक है। सिंह शौर सिंहनी क मवाए म म महागज की वीरना श्रेय यग आदि गुणा का सुन्दर चित्रण किया है। इसके अनन्तर ग्रन्थ का मूत्र विषय बर्णित है।

३-हिनामृत सनिवा — यह ग्रन्थ त्तिपादन तथा पच तत्र आदि क दृग पर लिखा गया है। उपदेश आरूपग भाषा म बडे सुन्दर दृग म लिखे गये हैं। इन्होंने नी सुदन तथा नामनाय क समान ग्रन्थ के प्रयत्न अग क अन म 'गवर्धन' का आवृत्ति का है जा एम प्रकार है —

जन्वम की धवनत नृप वनवन्तसिंह प्रवीन
निहि हन द्विजव नाम कनि अमृत-वना यह कीन ।
यह में विचार ममाप्त बानी सुभग पहिनी अग ।
वर विमन मित्रन रू कर मुग्य मित्र लान प्रमग ॥

(४) शिखनख — इस ग्रंथ में शिखर से नग्न पय न घाला रूप वरुण किया गया है। प्रत्येक विषय वरुण अपने ढंग का निराला तथा एक दूसरे में बढकर है। अलकारों का प्रयोग इतना सुन्दर और हृदयस्पर्शी हुआ है कि मुह में वरुण वाह वाह २ निकल पडती है।

(५) विजय सुधानिधि — यह ग्रंथ महागज बलवत्सिंह की आज्ञानुसार रचा गया था। इसमें महाभारत के कण बच स लेकर दुर्योधन के ताल प्रवण तक की कथा बडे अच्छे ढंग से २६ तरंगों में लिखी है। इस ग्रंथ के प्रत्येक तरंग के अन्त में इन्होंने एक दुबई (हरिपद) छन्द की आवृत्ति की है जो इस प्रकार है —

श्री बलवत् भूप ब्रज रक्षक हृक्म हृप क दीना ।

तिहि हित यह कवि 'रामलाल' ने विजय सुधानिधि कीना ॥

वरुण त्रिलास ललित पत् याम रश्चिर वीर रम भायी ।

सजयपुर प्रवेश नृप की हित प्रथम तरंग बरखायी ॥

(६) गंगा पञ्चीसी — यह पुस्तक काव्य चमत्कार से पूरा अलङ्कृत है। इसमें केवल २५ छन्दों में गंगा के भिन्न २ अंगों का वरुण सुन्दर भाषा में प्रभावशाली ढंग से किया है।

(७) विरह पञ्चीसी — यह पुस्तक इन्होंने कविवर रस रामि के कहने से महाराजा बलवत्सिंह के लिए लिखी है। इसमें गापियों तथा उद्धव के संवाद और गोपियों का विरह वगन एसी उत्तम रीति से किया है कि विरह का मूर्तिमान स्वरूप खडा हो जाता है। अनुप्रासा का स्वाभाविक चयन इतने सुन्दर ढंग में हुआ है कि 'रतनाकर' का उद्धव गतक छायानुवाद सा प्रतीत होता है।

उपयुक्त ग्रंथों के अवलोकन से महाकवि रामलाल अपने समय के सर्वोत्कृष्ट कवि ही नहीं बरन् लघुप्रतिष्ठित आचार्य भासिद्ध हात है। अथ आचार्यों की अपेक्षा इनमें यह विशेषता पाई जाती है कि इनके ग्रंथों में शिथिलता एवं नीरसता किंचित् मात्र भी दिखाई नहीं देती। तक्षणों तथा उदाहरणों में कही भी दुर्बलता नहीं आने पाई है। अलकार रस नायिका, एवं पिंगल आदि सभी काव्यांगों का सुवाच्य एवं सरल भाषा में वरुण किया है। इनका भाषा में प्रौढता राजीवता एवं मार्मिकता का समावेश है। गली हृदय ग्राही तथा विद्वतापूरण होने के साथ २ सब साधारण के लिये भी बाध गम्य है। इनके प्रत्येक छन्द का रस परिपाक एवं भावों की मधुर व्यञ्जना पाठक का रस में निमग्न किये बिना नहीं रहती। उदाहरण रक्षिय —

(अलकार मजरी से)

बन्तु उत्प्रेक्षा उदाहरण (दाहा)

लाल बाल के भाल पर मृग मद करत विलाम ।

मुधा लन आयो सनी मनो मुधानिधि पास ॥

हनुत्प्रेक्षा लक्षणम् (दाहा)

जहा भावना और की, और विम युत हेत ।

हनु प्रच्छा' तहाँ कवि, रमियन कूँ सुग देत ॥

उदाहरण (सबया)

क लागी शीमम की इन्हें धाम ही, क अलि काम की ज्वाल दहे हैं ।

क रगरेज मजीठ रंगे पग, क मधु के मद छावि रहे हैं ॥

'राम' कहै वि गुवाल भरे निन क टिन काहू प छाह छण हैं ।

ए नैन्नाल क सग जग त विभी सजनी दग लाल भण हैं ॥

फल उत्प्रेक्षा लक्षणम् (दाहा)

फल लव के भाव सू, तब वर जिहि ठौर ।

तगँ 'फलमु उत्प्रेच्छा', वरन रमिन वहीर ॥

उदाहरण (दाहा)

तय ननन की सहस दग हीन हनु मृग माल ।

विधि पखत दखत मही, निस दिन फिर विहाल ॥

प्रथम तुल्य योगिता लक्षणम् (दाहा)

हित अनहित यह एक म, जहाँ लग्याई होय ।

तुन्य याग' म प्रथम की, भेद जानिय सोय ॥

उदाहरण (दाहा)

ब्रजपति नृप बलवत की, चहुँ दिसि जग यह हाल ।

अरि गुनियन कूँ उमगि क, दत सदा वह माल ॥

भरतपुर वरण (कवित्त)

पुर चहुँ धोर धोर साग वर नाच भोर,

बोसल कुह कुह क लागत मुहाई है ।

बदली बदव निव, अयु जबु तर वर

निनप लदग लता 'राम' छरि छाई है ।

हाट-हाट द्वार घर-बार बाट वीधिन म

गुजत मुकुज अलि पुज ममुगई है ।

नृपति ब्रजेस के निवेन बसिव क हत,

सग भग्य वेनु के वगन वन ग्राई है ॥

अनि वरण (कवित्त)

भूम भूम भमपि दमरि क चमवि जान

भरि भरि परत भपट भर ज्वाल की ।

रामु की लटागो केरि रिज्जुन छग सी बनी

अरिन बटागो कूँ पटा गी यहै व्याल की ।

नृप कर वामी वह टासी है महेस हू की,
 दुति चपला सी है छलासी तिम छान की ।
 अमि ब्रजराज की कहत द्विज 'राम लाल
 पावक छलामी है कला सी किरी काल सी ॥

गण जाति—भुजग प्रयात

मगन यगन रगन पिछानी।
 कह राम ती या मही दव जानी ।
 जग न नृप वस्य जाना भगन
 मु सूद्र तमन मगन तग न ॥

चम्पक माला लक्षणम्

या कवि वारा पाद मिलाव
 भामस तीना जारि बनाव ।
 मा फिरि अना म गुफ दाज
 चम्पक माला छद हि कीज ॥

उदाहरण

श्री हर देवा जो गिरिधारी
 है अत्र पूरो है रम बारी ।
 श्री बलवता की अब बारी,
 बगहि रक्षा राखि मुगरी ॥

गजेन्द्र गति छंद

द भगणा मुनि याद सब कवि या विधि चण सुवार धरीर ।
 या दस तेरह ठानि विराम फिरा गुफ दा लख अत बगैरे ॥
 या विधिसा वृत्त म तुक चारि विचारि मभारि निहार भगीर ।
 राम कह यह छन्द सुनाय गजेन्द्र गती फनभक्त बरीर ॥

उदाहरण

मारन क मुनि मोर अली अब हान दरार हिय विच भरे ।
 एक जरो विरहागिन सा फिर चातक पीव पुवारि क डेर ।
 न दल माथ अरी बदरा यह मो अगना नित आय क घेरे ।
 श्री ब्रजराज मिलाय द आज परीमिन पाय पगै अत्र तरे ॥

मधुभार छंद

कन अष्ट राखि जा अत भामि ।
 इम पत्र ठानि मधुभार जानि ॥

उत्तरहरण

यह तीनबन्धु नाबन्धु मिथु ।

कमो मगरि, राधा मुगरि ॥

हितामृत लतिका (छप्पय)

राजत दस रद बदन मदन आभा मी धर सत ।

बदन बद मद बदन करत जन हित बन बरमत ।

पन्न चनत हर मदन अन्न हित मचलत रोई ।

जदन गन्न कुन रन्न होत यह बात न गोई ।

बह माई गगी नद जग बेत राम' उर धर वग्हु ।

दुद चन्न मीतन पन्न भव त्रिबिध ताप कह परिहग्हु ॥

दाहा

गगा फेन मुल्ल डव राजन ममि जिहँ मीम ।

मो वृषानु अनुकूल ही, मी प मिब जगदीम ॥

पाटिलपुर हरि मन्न नृप तिह वृत्त हित उपदम ।

वाचा परम त्रिचिन्न जह नीनि अनेक नरेम ॥

निहि क मन अनुमार मै नृप ब्रजेम क हेनु ।

'हित अमृत लतिका कर मुगरि उमा ब्रमकेनु ॥

छप्पय

दवपा क तीर वस पाटिलपुर सुदर ।

तामु सुदगन नृपति रूप बन बिला मद्रिर ।

पालन नित प्रति प्रजा तनय मम भाव न आना ।

हित वर्षा वर करत भरत जग इन्द्र ममाना ।

सो नृप इन तिन फिरत महि, अनायान श्रुत पध ह्य ।

अनि विमल अमल मुनि बाक ते, मुनन भयो अरनाक दुय ॥

श्रोत्रक छन्द

रिपि न इमि सुदर बन भन । चित दै नृप बारहि बार सु । ॥

मुनि क दृढि भूप गयो धर म । सुत मद बिलाकि दह्यो उर म ॥

मुनिवा महिपाल मना'करी । सुत पडिन नामु न धम धुरी ॥

त्रिणि कौ जग जीवन जानि वृथा । जिमि सोचन अधन भाग वृषा ॥

श्रगविनी

मैं जहा जाय केँ हाव दग्घी बही ।

है केँ हम मे बाल बँटी गही ॥

शिपरी, तागिनी ताहि मेव सटी ।

चिन्निगी है मनो चिन्न ही भ गही ॥

देखि क दूर त माहि वाली भली ।
 दूतका त कही याहि लागी भली ॥
 तामु क पास मो लय दूनी गई ।
 देखि क माहि ताजीम तान दई ॥

दण्ड गका

सुक मारिका अरु देस सहज सुभाव की ।
 मत राजनीति विचारि पर इनको न उचित नरम ॥
 अनि मृदुल त निज हाथ की विधिहू न राखी जाय ।
 तात कही कब कवन विधि करि देम का मरमाय ॥
 अति अधर्मी अनि धम रति अति आलसी कुल हीन ।
 अति काम बस मति थिर न जाकी मो नृपान मलीन ॥
 तू तुच्छ मैत्रक रूप की एक हंस ही कौ जान ।
 इह हेतु हम त कहत उह क विविध चरित बखानि ॥
 बड वृक्ष कौ जग सेइय फन विमल छाया हतु ।
 फन हीन होय तउ मुझाया मकल प्रम हरि लेतु ॥
 बड होय बड के आमरे लहि हीन मग होइ हीन ।
 जिमि मुकुर म गजराज उन्नत लगन लघु अति हीन ॥
 डरि जान सब भय एक मग ही जानि समरथ राव ।
 निमि भय निभय प्रवन भय त समक चर प्रभात ॥

दोहा

तब मैं निनत यह कहा, कस यह इतिहास ।
 कहन लग मात तब हू प्रमन सुपराम ॥

(नख गिर)

अजपति नृप बलवन हू परम रसिक पहिचान ।
 रम शृ गार बणन करी गनपति गुरु उर आनि ।
 मो शृ गार तरुनी विप अरनत बन्त उमग ।
 तान अब कहि हा सबल निख त नख ला अग ॥

कपान कौतिल (मधया)

क अनि पद्म म आय पर्यो दूरि, क मा भरयो विप हेम कौ बामन ।
 क घनप्याम कौ राम कहै प्रतिनिब लियवत सौतनि गासन ।
 क चतुरानन चार चितेरे कौ लयनी कौ लिखना लग्यो भ्यामन ।
 गान कपान प नाहि निया निन, गहू ठयो समि कौ करि आमन ॥

विजय सुधानिधि

छप्पय

मुग्ध प्रमास ममि मोर पश्य अक्षतम परम प्रिय ।
 चास चरण कौस्तुभ उदार उरवर सोभिन श्रिय ।
 गापिन व हृग वमत वाम ममुचित अचित तनु ।
 गाप मउन के मध्य वमत जनु तसन वुमुम धनु ।
 मानत वजात मुग्ध वेरु सुग्-मप्ल मग्म मगीत लय ।
 अरता उरग अरग छवि जयति जयति श्री वृष्ण जय ॥

दोहा

नारायण नर वर वटुर वाणी व्यास मनाय ।
 म्चौ ग्रंथ भाषा अथ राजपति धायमु पाय ॥

छंद प्रमाणिका

मुभीम परि सेत म । भयो जुभार नेत म ॥
 मत्त मुत्त वृछाररे । वही तुमन्य आवरे ॥
 तव मभार मूर्मा । मुमस्त्र धारि जग्मा ॥
 वजाय धाजने भन । जु पट्टु हीन म मिन ॥
 नित अगी गिर र्ध । विते जु सम्प्र स विव ॥
 तुमार पुत्र धाद द । तर उदार नाद ॥
 चढे तुमार धार मा । उतु पट्टु जार मो ॥
 मुधार म्प्र जे लए । जुभार मापही भये ॥
 तुमार पुत्र न मगे । जु पट्टु आवत लय ॥
 मुफाम हाय म गई । जु फेंक तान क गई ॥
 मिनीग प्रम है वही । मुग्ध्य त परयो मही ॥

छंद श्राव

यह आवत अजु न है इतम । मम आम वद्ध न गहे चित म ॥
 हमरी दल रुधन धान नव । नह ल चन र्ध्य जुभार अर ॥
 मन उल्लसत क पश्य तथा । निज बाग्धि ज्या मग्नाद जपा ॥
 राज व्यास वही मुन सौन धनी । सखि बेहरि नाग मग्ना मुनी ॥
 तत्र वाप कर नृप मान्य न वरम अपग्मित धान ।
 यह धोर तें दन र्वयो दमवत भानु विरन समान ॥
 मर दाय वहु भाग महीपति पट्टु दन के भाग ।
 मयि कम तारी मरु घी पचात भर मधीग ॥

तट वामी बगन

छाडि क सुराज साज माजि अब धूनन की
 पूतन की नेह गेह नाम जग मोन की ।
 'राम इह भाति नर नाथन की पाति बहु
 जह तहँ भाति तीरग है सुधा घोष की ।
 पीबत अघाय हाय धाय देव-मरिता म
 दुरिता नसाव त दिव्या गति ताक की ।
 ब्रह्मदत्त फिर घर बिघनन क माधे पाव
 गगा तट वामी क हामी सुरनाथ की ॥

सवया

मातु ! तज्यो पन पापन घात की बान यहै जग लाग धरगो ।
 इन्द्र विरचहु के पुर म हरि के घर म अग्नि सोर परगो ।
 तो मुख नक उदास भये जन 'राम निराम ह्व रोय मरगो
 मा निरधार उधारि ही जो न तो या कलि कौन प्रतीन करगो ॥

यां छिन माक विठारन का सुरलाक सो मभु जटान म आवत ।
 राम कहै जग दीनन के हित मीम चत्ती सिब मीम सा धारत ।
 नारद सारद मेमहु ते जस जानत नाहि सक्यो करि गाबत ।
 अब ! स्वरूप तुम्हारी यहै निरलाभन के उर लोभ बटाबत ॥

बायु सखा सुत बहु कौ बाहन ता अरि जीवन की सुख दनी ।
 ना सिर राजत तामु भयकर जामु प्रिया जग आनद मनी ।
 जा पितु के सुत के सुत की सुत तासिर मडन नाक नसनी ।
 श्री बनबत क मीम मटा बस राम कहै सोइ मातु त्रिवनी ॥

विरह-पचीमी

उडव गापी सवाल (दोहा)

मैं अनक कविता रची पचि पचि मनि अनुमार ।
 उत्तम मयम वा अधम नृपन कही एक बार ॥
 तब मा मन चिता बनी, पनी कविन क पास ।
 पत् निनन मो मन कही तब बानी रम राम ॥
 नृप कहु जान नहीं, नृप के उर की बान ।
 गीभत है बनबत थी मुनन विरह की घान ॥

या त तू अब विरह रच प्रिय हमार मन मान ।
हरि है तोर दरिद्र मुनि ब्रजपति भूप निदान ॥
मुनि बकिराजन क वचन, मो कहें भयो अनद ।
विरह पचीमी यह रची अकित सुगुन गुनिद ॥
कवित्त

म्याम क मया कू आयी जानि द्विज 'राम कहै
धाम धाम पाम इमि वचन मुनाय क ।
जय त गय है ब्रज छाँडि ब्रजराज पुरी
तव त रई है आज खर पठाय क ।
मान त त्रिनाय ताय लाय जमुना के तीर
मगल गाय बीर मुबुब बुलाय क ।
कितिया न जामो लाल तनिया निम्बी है कहा,
छतिया जुडाओ यह पतिया बचाय क ॥

इद्र हू क धाम का सुकाम अभिराम राम,
पाँव हू घर ना मग पान तजि भाजगी ।
तन तजि द है तऊ न जहै ब्रज छाँडि कहू
तू क रज रूप अग स्याम के विराजगी ।
हमरी तुवा की ऊँधी दुदुभी मढाय हू प
भूप जान सूधी पाय, प्रेम ही की छाजगी ।
राजगी न मान मुर माजगी न आन बद्ध
गाजगी निदान काट काट कहि बाजगी ॥
सर्वथा

जाय क द मिनि श्रीमधि ऊँधी जु वा बुवजाय जब निधि पाओ ।
स्याम सब अज के अभिराम है काम कहाय हा जाग जताओ ॥
ब्रानें जू जान रहौ चुप के बच के तुम पान निधान कहाओ ।
हर हमें अक्कर जराय गयो तुम तापर अब नोन लगाओ ॥
कवित्त

जागरी रावरी अनोयी नीति 'राम द्विज,
एस पन म्याम गरवाय पाय राजरू ।
भो मन तुम्हारी यह हा मन हमार गात,
विरह हुनामन मुबामन ममात्र रू । -

याही ते बिहारी नर मगन बागी भये
 भारी भारी त्रिपति बिडारी तिन आजू ।
 अहो ब्रजराज ! तुम मगन चही जो हम,
 धारन त्रियौ ही गिरिराज किहि काजू ॥

मधया

भोग लिखे कुबजा तनकू ब्रजबामी त्रियोगहि तू मिरजाय ।
 राम कहै ते बिधा टगि है मरि है जा बृथा करि है पछिनाय ।
 या जग म हूण नही घन धरि देही लह बपु पूरख नाय ।
 ताल कू त्पेम कहा अत्र उधब भाल क अक मिट न मिगाये ॥

अत्र बुबरी दुबरी क तजि पाय तू गोपिका नाय कहान्य जू ।
 मुख पाइय तोला निबास करा फिर जाइय राम दुहाइय जू ।
 मन भाई जो प्यारे करी मगरी कछु नह को नाती निभान्य जू ।
 जिन ताइये बर तिया इरत ब्रजगज पिया ब्रज आन्य जू ॥

कोकन लोकोमी अलीक उपमान कर
 दिपत महल महा कचन क गभा है ।
 जान गड पायन त्रिछौना मखमल क जु
 मूला गिबत बन फिरत अचभा है
 कहै कवि राम बलगत भूप तेरी धार
 धीर ना धरत अरि-दारा दुनि दभा है ।
 रति जानी काम काम माहिना मुनि जानी,
 इडु जानी गहिनी मुरिद जानी रभा है ॥

५६—रसरासि ये महाराज बलवर्तसिंह के दरवारी कवि थे। इनका कविता काल मध्य १८८० से १९०० वि तक माना जाता है। इनका कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं है किन्तु पृथ्वर कविन अवश्य मिलत है। रसरासि अपन समय के एक लब्ध प्रतिष्ठित कवि थे। महाकवि रामलाल आपका गुणवत् आदर करते थे। इन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप कविवर रामलाल ने महाराज बलवर्तसिंह के लिये विरह पचीमी नामक ग्रन्थ लिखा था। इनकी कविता अत्यन्त सरस सरल प्रभावोत्पाक एक ममस्पर्शनी है। अज भापा के प्रसिद्ध कवि मूरदाम की भी विरह वदना आपकी कविता में परिलक्षित है। इनकी कविता के उदाहरण देखिये—

कवित्त

अब वहा पाइय उपाइ न उपाइय हू
 बह रमरासि' बेलि उन की वजायबी ।
 चानुरी चनायबी न वाने ह बुलाइबी ज
 मानत हिय म वाकी मनहु मथायबी ।
 म्प रग्मानि चीप चाप रम सरन अति,
 मन की हग्ग चटवीली चाल प्रायबी ।
 काहू मा जताइना न वेदन वनायबीरी
 रहस्या नन तापबी कि मन पछतायबी ॥

रम ही त्तिना की भयो नयो जमगारी जिन
 मारि डारी नारी गमी निटुर निहारयो है ।
 बच्छ माग्यो वकी मार्यो अजगर हू मार तार्यो
 हय हू की मारि खरहू की मारि डार्यो है ।
 मग मानि भूल्लनी पूयो पयो रमगमि यहा,
 गता वृन कीनीं मा तो मजन रिमार्यो है ।
 मामा माग्ग का पाप मुकुट उताग्ग का
 हुनगी त्रिवनी ताम तन का पवाग्यो है ॥
 मवया

जिनके रट रमन ही का मग, प्रम बेगी भई उन पादन की ।
 निरमोही निह तरमागत क्या जिनक चल नाहि चवाइन की ।
 'रम रामि हम पहिचाना वहा, तुम जानन ही गति गाइन की ।
 हमम रम नीन रमाइन की, मु कगी तुम नीन कमान की ॥

६०—नथुआमिह —य कुम्हर के निरामी और जानि के अग्रवाल वक्ष्य थे ।
 पाप महाराज बलवन्तमिह व समय म हूण थ । इनक फुटवर छद पाय जान हैं ।
 इनका कविता-काल सवत् १८८० वि० म मम्बत् १९०० वि० तक पाया जाना है ।
 पापनी कविपय रचनायें उताहग्ग स्वरूप प्रस्तुत की जाना हैं —

दापा
 नाग बनी रोहिनी, छाछें श्री तुयराग ।
 पद रन बग्गा ममें तियो वृष्ण शीतार ॥
 कविन

पाप जनायो गिनु मातु हू मुगायो निव्य,
 ररमायो दोर धानद प्रपार है ।

भादो का अयागी तिथि अष्टमी त्रिचारी
 सुख सुदरना भागी बुन रहनी उदार है ।
 ताही ममै सारे खवारै हरकार भार
 माये सुख पाय खुन तार औ किवार है ।
 ज ज विरजेग धार दुदुभी धकार दन
 ध य ध य आज कृपण नीनी श्रवतार है ॥

तीन लाख ध्याव ताहि पालन भुनाव गनी,
 माखन खराब पय प्याब महा मान म ।
 चुकर चुकर घूट नन घुटग्रन चन
 पन पल निहार अनि आनद विनाद म ।
 देखव बू आई मव महलन लुगाई धाइ
 गावत वधाय हिय पाग महा मान म ।
 बालक बताम नाम परमेसुर दिखाम,
 जग जाकी गोत्र मे मो जमुधा की गाद म ॥

६१—भोलानाथ—ये जानि क कायस्थ और मह राजा बलवर्तसिंह के समय मे प्रसिद्ध दीवान थे । कविता मे ये अपना उपनाम शकर शरण रखत थे । इहोने शिवपुराण का भाषानुवाद किया है । इनका कविता काल सम्बत् १८८० मे सम्बत् १९०० वि है । इनकी कविता का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

हिडोला गौरी भूलत पिय क मग ।
 सब सखिया मिलि भाटा दती उड रही नान तरग ॥
 निपट रह भूला म दाना मानो एकहि अग ।
 गकर गरग पिया छवि निखन, बरम रह्यो है रग ॥

६२—ललिता प्रमाद—य महाराज बलवर्तसिंह के समय मे दीवान थे और कविता मे अपना उपनाम रामशरण लिखत थे । इनका लिखा हुआ कोई ग्रंथ तो उपलब्ध नहीं हो सका है, केवल फुटकर पत्र मिलते हैं । इनका कविता काल सम्बत् १८८० मे १८९० वि० ठहरता है । उदाहरण दखिय—

दखा आज नलाल ।
 पहिर फूजन की माल ।
 मग लिए गायी ग्वाल ।
 यमुना नट विहारी ॥ १ ॥

मीम मुक्कट अनिहि छाज ।
 अवरन पर मुनी राज ।
 मद मन् मवुर बाज ।
 कुण्डल छवि यारी ॥ ० ॥
 लाल गान् मृटु कपान ।
 अत्रक कुटिन रही डाल ।
 भानु थाल कर विलाल ।
 अश्विया रननारी ॥ ३ ॥
 निग्ग निग्ग लाज काम ।
 उमन मन म आठा याम
 गनारगग त्यागी ध्याम ।
 ब्रजपति गिरधारी ॥ ८ ॥

६३-विहारी - इनका पूरा नाम श्री महंत विहारीदाम था । ये मन कवि
 नरतपुर दुर्ग स्थित विहारीजी के मन्दिर में महन्त थे । इनका कविता-काल सम्बन्ध
 १८८० म सम्बन्ध १८०० वि० ठहरता है । इन्होंने भक्ति म विद्वान् हाकर अनेक
 गग गगनिया म भगवान् श्री कृष्ण की लीलाया का सुन्दर एव मरम पत्र म
 रगन किया है । आपका भाषा अत्यन्त मरल और चलनी हुई है । इनकी रचनाया
 म नरतपुरी भाषा की हाप स्पष्ट रूप से पररगित है । उदाहरण शकिये -

गग बापी
 ग्राज नाच गे नन् कौ मटकि मटकि ।
 मरो जियग हरयो यान लटकि लटकि ॥
 लट पट पा मूरनि जाकी चटपट ।
 गारी गाव मुग चटकि चटकि ॥
 चटपटी यान कहै मुग नट पट ।
 गारी नारि यान लटकि लटकि ॥
 ग्राज नाच गे०

प्रउ मा नोनी राग यान मुक्कटा ।
 धुटमन चाल यान धु धरार चिनचनि आनन्त कटा ॥
 मनन स्याल नैनत कितकन जमुमनि गाट गुविता ।
 बटुला विरिन कपन नूपुर पग पत्रनि गति छाटा ॥
 नगुली पात स्याम नन मुक्कट छवि मन्दिर ब्रज चटा ।
 नातिक वरन तुतार नात म दनुता टुनि मन पटा ॥

सुमिरत सम महेम सब मति धरत ध्यान मुनि तृप्ता ।
त्रज दूलह चित्तामनि म्यामी कृपा करी नर नत्ता ॥

६४—वलदेव —य जाति क साडेलवान बश्य और भरतपुर क रहत पान थे । इनक गुरु का नाम उद्दाम मिश्र था । इनका कविता काल स० १८७० वि० स १९०३ वि० तक है । पता चला है कि य सकारी नमक के महकम म पगाकार थ । इनके लो अ थ दखन म आय ह —(१) विचित्र रामायण और (२) गंगा नहरी ।

विचित्र रामायण हनुमान नाटक का एक मुत्तर अनुवाद है । इनकी कविता हृदय स्पर्शी सरस एवम् प्रमात् गुण युक्त है । थोडे स उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

पूरन मयक क ममान स्वत अग ज्याति
उज्ज्वल सुवा स स्वत अमर उताम है ।
पकज बतार स्वत आमन उतार जाके,
वाहन मरान प बिगज मुख धाम है ।
पुम्नक धार कर बदन उचार मुख,
मारो काज जन के मकन गुण ग्राम है ।
वीना बजाय सब मुख मरमाव बहु,
तापी मारता क पत्र कमन प्रनाम है ॥

भरतपुर दुग वगान (छापय)

टुघट दुगन माहि दुग रक निपत अरति पर ।
वित्त भरतपुर नाम तासु महिमा उतार वर ।
उत्रत वुग्ज अपार चार विदु मडल परमत ।
चहुँ दिमि नहर गभीर नीर निरमल जह दरसत ।
बह बुमुमित बन उपवन मघन, त्रिभिध पवन सचरत जह ।
उनमन अमन आमाल वम मधुप तृत् गुजरत जह ॥

गंगा नहरी (कवित्त)

ह्व क निमक एक एक त जराई जान
जघन क जाग हीत जल निधि नाशयो है ।
मारि मारि राशम बिहार बन रावन की
अच्छहि संहार फल अमारम नाशयो है ।
मानो है विमया जान राश प्राण लखवन् क,
नकपुर जात मक भ्रम अभिनाशयो है ।

ऐसे हनुमत जू का बाट ताहि दतन सा,
राशमिन लमी एक चित्र निय राख्यो है ॥

तेर आमर क वन पाय क विमाल गग
बढ्यो गत्र जाक गा में तामा कहन मय ।
याही त जूराग्व कृष्ण की अरना करी,
काहू की न अरनागि मानी कहु गह दव ।
जा प कहै या मर्म उरगना गहीगी नाहि,
ता में निगधार नहि दूमरा अघार भर ।
मुग प्रिन ग्याय दनि तीनना दिनाय नहें
बीन क अगारी जाय गदन कर गा अय ॥

६१—नवीन—इसका पूरा नाम गावानमिह था किन्तु नवीन उपनाम से अधिक विख्यात था। यह महाकाव्य बलवन्तमिह के दरवागी कवि थे। इनका कविता काल मध्यतः १८८० से १९४० वि० तक माना गया है। इनके जो ग्रन्थ रचने में आये हैं उनमें पना चलना है यह उच्च काव्य के अनुभवी कवि थे।

नवीन जयपुर निवासी 'ईम कवि क पट्ट गिप्य थे। उही क द्वारा यह 'नवीन उपनाम मिना था जिसके सम्बन्ध में उन्हीं के प्रचार लिखा है —

जानत ही नहिं जारन अक, हृती चित की वृत्ति मूढता भीनी ।
ना निज दय कें राम ल्याल बनावन जोग हर हरे कीनी ।
ताहू प नाम धराये क साचन नाम धर्या तव या सुप्रि लानी ।
श्री गुरु ईम प्रवीन कृपा करि दीन का छाप 'नवीन का दीनी ॥

उपरोक्त गद्य में स्पष्ट ही जाना है कि आपका 'नवीन' उपनाम कल्पित नहीं था। यह अरतपुर के निवासी थे। अब कन आपका निम्नलिखित चार ग्रन्थों का पता लगा है। (१) प्रयोग रम मुधा भाग (२) नह निदान (३) रम तरंग (४) मरम रम

प्राप्त ग्रन्थों में 'प्रवाध रम मुधा भाग' कवि की उत्कृष्ट रचना है। इस कवि ने छंद तरंगों में विभाजित किया है। काव्य के विभिन्न अंगों की मरम एवम् विगत व्याख्या करना इनकी विशेषता है। इस ग्रन्थ में एक महान् विषय यह है कि कवि ने एक विषय का लेकर पहल ग्रन्थ कविता की कविताएँ ही ह और फिर उमा विषय पर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। इसमें एक ही ग्रन्थ कविता का विषय पर कविताएँ एक स्थान पर मिल जानी हैं और दूसरे अलग अलग प्रकार में एक ही विषय पर अलग अलग विचारों का तुलनात्मक

अभयन हो जाता है। आपकी मुमधुर कविनाया के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

प्रतीध रम मुधा सागर

दाहा

जुगल चरन बदन कगी, मय तेषन ममुनाय
ज्या हाथी के खोज मे, मय के खाज ममाय ॥
प्रेम मगन विहरें विपिन, राधा नन्किमार ।
तोउन क मुय चन् क ताउन नन उवार ॥

नन वगन (कवित्त)

नीमनता ताकिर की तीर त तरन तारि
जाती मिल हागी जो न नामिका अगवी म ।
अजर अजाव अरविन्दन की आभा पर,
भूमन गजव सो न एनिक सरात्री म ।
मानी की जानी तिल तूल ना प्रवीन तुल,
तालन नवीन चख पल की दराबी म ।
मीनन के मीन करि भीरन की भीर देन
विज विज खत्रगीट विचत मगवी म ।

भूमन चलत मद धूमन बुमारा नन
जानक कलित माभा ललित सुभाल की ।
धम क कमान दख दरन वदन हुना
परन दुमान म पलट लाय माल की ।
रागत नवीन रेख अजन अधर लर,
मानिन की मान की बराबर न माल की ।
मानी औ नई मा जात जानी मा निसानीहू की
न आय निमानी क अगूठी नग लाल की ॥

मिरहपुरा क मिरहीन प सवाल द द
कर वनरफी भई का जान लील है ।
काकिना गयाहा भरे प्रेम के मुकदमा म
दावा की मयन कर वानन अपील है ।
रिगरी मजागिन की जागी भये फूत पूत

गुज की 'नवीन' कुज कुजनि दलील है ।
 गति-वन माह्य अदालत लसत ताके,
 गजवार राजन वमत की मा प्रकीर्ण है ॥
 ग्राम मिर्चोनी (कवित्त)
 और खेल वेन मा ता खेलि है उवा की माह,
 बहा लो मखीन उपहामन का पनीगी ।
 योतुर 'नवीन' वीन लात्र तू मुजान निन
 ममक भुजान कध मा न अब भलौगी ।
 इतिमा दुवाव पीठ ठाणे द गुदी मे नीठ
 छाडन कहै दौठ कम प्र इनीगी ।
 जापन म रें कटि भीचना परा प्य्या
 ना भग कन्हैया ग्राम मिर्चोनी न वेनीगी ॥

मयया

नन्व चरा क बवा क मुट्टय सीं आछी मपून भयो जमुरा क ।
 गद की गार की हार की प्यार की नैकहु लाज नही सगि याक ।
 ठोर कुटोर टटालिन बालिन कानि 'नवीन' छली छवि छाक ।
 या मन तीन मिने उम को यह माचन म अग चीर क ताक ॥

६६—बटुकनाथ—य कवि ज्ञानि क गोत्र ब्राह्मण और भरतपुर क निवासी थे । इनक पिता का नाम ग्पीराम था । आप सम्भृत और हिन्दी दाना के अच्छे विद्वान् थे । आपका लिखा हुआ केवल एक ग्रन्थ 'राम पचाध्यायी' दखन म आया है, जा इन्होंने मधत् १८६६ ई० म लिखा है । गनी मम्म एवं मुन्दर है । इनकी कविता म कनिषय रत्नाकरग प्रस्तुत किय जा रहै —

छापय

गनपति गुरु गाविन् गिरा गिरजा गगाधर ।
 गिर गगा गापाल, गाप पति गापति गिरधर ।
 व्याम त्रिबुध त्रिबुधन और बुध त्रिद्या भाजन ।
 मनी मून मनवाक्क, मुग्द सुव मम गनातन ।
 गगिर और इन आनि मग परम नागरन ज धरन ।
 तिनकी पर रज व र हो विमन सब भाषा करन ॥

गारा

ममगपुरी ममरी मरी करी भमरी नीर ।
 मुगरी इन पर-क ज महि दया मुवन यहीर ॥

जहा परम उज्ज्वल सीप सज्जल जनित मुक्ता माल है ।
 चहु तीर सारम सारिका सुन कवि कूक मराल है ॥
 वर चक्रवाक चकोर चातक, कोकिला बल झल है ।
 रसपुज सजन मजु कुसमित भृगु गुज समूल है ॥
 श्रम बमनि तिमि ता तीर की बन ईम वृन्दा विपिन है ।
 अनि मघन जोजन पच अचित जुगल मजुनि धरनि है ॥
 तहा ललित लूम लवग लतिका परम मरसत वान है ।
 अनि चाक चप्पन तप्पन जातग नीर चरचिन गान है ॥

६७-पद्य —इनका निवाम म्यान भरतपुर मे बुद्ध की हाट था। पद्य कवि महाराज बलबन्तमिह क दरबारा कवियो मे स थे। इनके कुछ फुटकर छन्द पाये जात है किन्तु साधारण थ गी के हैं। इनका कविता काल म० १८८० म सम्बत् १८०० वि० तक ठहरता है। उदाहरण प्रस्तुत है —

कवित्त

कमो खन आनै भयो है रामचन्द्र कसौ,
 वृष्ण कम उत्सव की महा सुख लहयो है ।
 वरन की सी कीरनि और बलि की सी यत्र करी
 इन्द्र की सी नृत्य मां तुम्हार नित्य रह्यो है ।
 राजा बाग्गाह अग्र जहू सराह मर,
 'पद्य कवि आपकी ही जाग श्रम कट्यो है ।
 भूप ब्रज चन्द्र महाराज बला तमिह
 सुजम बघाट की समुद्र पार भयो है ॥

मारग धनुष धारि सुल्गान चक्र धारि
 कौमात्क गता धार दुख दरिबो कर ।
 नन्क खडगधार पांचजय सम धारि
 'पद्य धरि सपत ममृद्धि भरिबो कर ।
 धोर हू धनक आयुधन की सु-प्रज्ञाकर,
 भूनल त मनु के समूह हरिबो कर ।
 माजी श्री अमृतकीर भूप बन्वत जू की
 मन्ग राम गमानुज रक्षा करिबो कर ॥

६८-गोपानमिह —य महाराज बन्वतमिह की गनी राजबु धरि के डयोनी

वान थे। इही महारानी के लिए इन्होंने पद्मपुराणान्तर्गत 'काविक महात्म्य के कुछ अध्यायों का अनुवाद किया था। गेप ग्रन्थाया का अनुवाद चौब जीवाराम के पुत्र नरगिर (नरहरि) ने किया है। इनकी रचना के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं —

दाहा

गिरिजा न मन काय कर, तेन भई या साप ।
ना कारण मत्र देव गण वृक्ष भय किन आय ॥

नय ताहि त अम्बय पट हरि मभु उभ भय सही ।
तुम मुना मरुत मुनीम हा तय मून गिपि न या बहो ॥
पुनि अक दिन के माहि पीपर को मु-गर्गेन कीजिये ।
भद्रा मनीचर बार इ बवहै न नाको छोड़िये ॥

मवया

कृष्णति त अपति भयी, व मंगल कारक पाप को हारी ।
भक्ति ममेन कहै म भुन मन प्रीछित पावत ते नर नारी ॥
पापनि त छुटिकें मुठ पिभन, अक प्रियान है बठि सुखारी ।
जान चर हरि सागहि का निनकी कवि कीरति गावन भारी ॥

श्री अजयनि बलवन्त बहादुर, निनको मुजम मुहापो ।
गजबु बरि निनकी पटरानी निन चरनन चिन लायो ॥
निनको हयोश्रीवान नाम निज नाम गुपान कहायो ।
तान अरन अरज के हिन मायव चरित प्रनायो ॥

६६—गमकृष्ण —ये भग्नपुर क रहने काय तथा महाराजा जनकनिह
क दरवागी कवि थे। इनका कविता-काल मवत् १८८० वि० म मवत् १९०० वि०
नक पाया जाता है। इनका कोई ग्रंथ ता उपलब्ध नहीं हुआ है परन्तु कुछ फुटकर
कवित्त अवश्य प्राप्त हुए हैं। इनकी रचनाया क कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये
जात ह —

कवित्त

निनको का मान मुन मार मुन मुग साधुन को,
नीको भवनार अज माहि धानि मोहा है ।
चकी ममन बमुन्द पर हनु बहू
भतन क हनु ही कृपा करण कोन्हों है ।

गोपी ग्याल गाप गाय बच्छ प्रति पान भन,
भूमि को उतारो भाग दुष्ट मद छोहा है ।
सोई रामकृष्ण महाराज बलदेवजू को
मकल मनोरथ को मिद फन दी ही है ॥

मना आय सर्वोपरि सुख के समूहन का
श्री जी की कृपा त विधिवत विलम्बो करी ।
सफल समृद्धि अष्ट सिद्धि नव निद्धि वृद्धि
सम्पत ममेत त खजान म लम्बो करी ।
विभव मु तज श्री प्रताप त्या सुजन म्वच्छ,
आग और आनंद ममून् मग्म्यो करी ।
आनद के कद रामकृष्ण चद-कुल-चद
श्री ब्रजेद्र बलवन्त ह्यि म वग्म्यो करी ॥

७०—धनश —य कवि जानी के ब्राह्मण, और भरतपुर के निवासी थे ।
इनके पिता का नाम चंदराम था । इनके दो बड़े भाई हीगलाल और मुकद भी
बड़े विद्वान् एव कवि बतलाय जात हैं । धनश हिन्दी और संस्कृत के प्रकाण्ड
विद्वान् थे । ये महाराज बलवन्तसिंह के प्रसिद्ध दरबारी कवि थे । इनका कविता
काल स० १८८० वि० स १९०० वि० तक पाया जाता है । उनकी केवल फुटकर
रचनाएँ मिलती हैं । उदाहरण देविए —

गावरधन गिरधरग धीर धर दुख विमाचन ।
नाराज युवराज फिर राजीव विलाचन ।
सकट बका बक कम केमि अभिमान विमरदन ।
मल भुजग फन रग भूमि निरतन विध बधन । -
कल्प तप तल दलन वर रास रसिक रम रूप जय ।
गाकनम गोपान ज गापीनाथ जगनाथ जय ॥

७१—ब्रजचद — य भरतपुर के निवासी तथा महाराज बलवन्तसिंह के
दरबारी कवि थे । इन्होंने कवि कुल-चूडामणि कालीदास के शृंगार तिलक
का अत्यन्त सुन्दर पद्यानुवाद स० १८९५ वि० में महाराज बलवन्तसिंह के लिये
किया था । कविता के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

पन्थि करीन मन तय कवि कालीदाम
रत्न नाथ तस्या मय ग्रथन की मार है ।

तानी प्रवीनन वे भेद बहु भाति जान,
 फिर= प्रगटायी यह सूझम अपार है ।
 श्रीमत ब्रजेद्र महाराज बलवर्तसिंह,
 नितकी कृपा सो नह रस विसतार है ।
 पवज धरन सम राधिका चरण ध्याय,
 कीन्हो 'प्रजवद' ग्रंथ नितकशृ गार' है ॥

वाह ह मृगाल दाऊ मुख अरविद वयो
 मुदर स्वरूप ही को लीला जल नीनी ह ।
 पुलिन नितम्ब द्वन्द नैन ह नवान मीन
 खुल बाल जान मा मिवाल परयोनी है ।
 भनि 'प्रजवद' निवलीन का तरंग उठ,
 उरज उत्तमन का चक्रपाव कोनी है ।
 वाम वन पीध नित तरन का, तीम तन
 प्रजा के करया ने तनया रच दीनी है ॥

७२—मुदरनाथ—य जाति का ब्राह्मण और भूडा दरवाजा डींग के निवासी थे । इनका बगधर अनी भी विद्यमान है । इनका कविता काल म० १८८० स १९०० वि० माना जाता है । इन्होंने कोई ग्रंथ नहीं लिखा है, केवल फुटकर कविता ही दग्धन में आती हैं । उदाहरण के लिये इनका एक पद प्रस्तुत किया जाता है—

प्यारी तथा छाव हमारी । टव
 जित मग धेनु धरन पग भूपर मोई वाट हमारी ।
 मागन मिसरी अरु दधि व्यजन मग त्रुपमान तुमारी ।
 मुदर म्याम चढ़ कर्मन ऊपर टरी गाम पुकारी ॥

७३—नरहरिदास—इनका पिता का नाम जीवाराज चतुर्वेदी था और वे भगतपुर के निवासी थे । महाराजा बलवर्तसिंह की पटवनी श्री राजकुंवरि के लिये इन्होंने 'शान्ति महात्म्य' नामक ग्रंथ का रचना की थी । इनकी भाषा बलवर्त ही साधारण है, और गली में किसी प्रकार का अमकार एवम् विगेषता नहीं पाई जाती है । पूर्ववर्ती विधा की भाँति उक्तान की प्रथक अ धाय के अन्त में एक छन्द दुष्टगाथा है जिसके तान चरण बही रहते हैं तथा चतुर्थ चरण विषया पुरान बदनता गता है । न् छन्द इस प्रकार है—

श्री ब्रजपति बलवन्त बहादुर, तिनकी सुजस सुहायो ।
 राजकीर तिनकी पटरानी, तिन चरणन चित नायो ।
 चौबे जीबारास तनय सुभ 'नरहरि' नाम कहायो ।
 ताने श्री ब्रजराजकुवरि हित 'माधवचरित' बनायो ॥
 इनकी कविता के कुछ छंद उदाहरणाय उद्धृत किये जाते हैं —

छंद भुजग प्रयात
 रहै देव शर्मा निपुत्री सदा की
 हुतौ चन्दशर्मा नाम सिष्य ताकी ।
 तव ताहि तू व्याह दीनी जु प्यारी
 भयो ता सम तोहि का मोद भारी ॥
 सोरठा

ताहि पुत्र सम मानि, चंदर शर्मा शिष्य का ।
 बोहु पिता सम मान तिन्है तहा सेविन भयो ॥
 सबया

यो तव कृष्ण कहै सुभ नम सु पूरव जम सुयो हरसानी ।
 देखी बिभौ परमेसुर की परनाम करी मन मे मुसिकानी ।
 तीनहु लोक अघार प्रभू तिन सौ सतभामा कहै पटरानी ।
 और कथा कहिय हम सो प्रिय यो उचरी मुख सा बर बानी ॥

७४—लाल—ये जाति के जाट और भरतपुर के निवासी तथा महाराजा बलवन्तसिंह के दरवारी कवि थे। लाल इनका उपनाम है। इनके यथाथ नाम का अभी तक पता नहीं लग सका है। सम्भवत इनकी अनेक कृतियां हो विन्तु हमें अभी तक 'लाल स्याल' नामक रचना ही उपलब्ध हो सकी है। इनकी रचनाओं में विनोदयुक्त हास्य का पुट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। इनकी रचनाओं में सर्वाधिक विरोधता यह पाई जाती है कि लाल अथवा मुनिया शब्द से इनकी कोई भी रचना अछूनी नहीं बची है। लाल और मुनिया को माध्यम मान कर कवि भौतिक और आध्यात्मिक तत्वा पर मनोरंजक ढंग से प्रकाश डालता हुआ अपनी प्रतिभा का परिचय देना है।

इनकी भाषा टक्काली है। भाव व्यञ्जना इतनी अनूठी है कि कवि की सराहना करते करते तृप्ति नहीं होती। इनकी सुमधुर रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं —

कवित्त

एक धनो गधहा एक बठ गयी पालकी मे,
 घोरा बन एक एक जाग अग नीतो है ।
 एक हाय पायी लै बार बार यायी कहै,
 एक देन ताल सुर साजन प्रवीनी है ।
 एक जाति रीतन की सगरी प्रवासै नीत
 पार टारै कपरा इक और भेम कीनी है ।
 लेतेई नाम सुख काम के अराम वारे
 देखी ब्रजराज क भडान म्याल कीनी है ॥

बृद्ध बल पाय एक पाजरा बनाय लामो
 अति ही महीन तुरी नीलम ते टाली की ।
 जोवन के जार जग जयमगत जेवर सौ,
 ताम जोन हान भाय लाल ही की लाली की ।
 लानी वृषभान की जहान म प्रमान वागे
 कीरति के भागन मे मचि सम ढाली की ।
 सुंदर मनोनी लोनी प्रीठ तन सारी नील,
 अगन की भाप उर लालिमा प्रवाली की ॥

पीजग मुघर तन पाय के सुहाय गह्यो
 उछट उछटन की छोः नहि हटरे ।
 काम बम पाय अग मुनिवा खुभायी रूप,
 दूजी नन सग दम नाममी हा भररे ।
 ग्यान कर ध्यान गहि पावन परम पद,
 ताने भव-ज्वाल माल लाग नहि लटरे ।
 मान बायो मेरो मै तो ताका ममभावन हा
 जाही को बनायो जग ताही को मु रटरे ॥

७५—श्रीधर—ये श्री हरदेवजी के मंदिर के महत थे । इनका पूरा वृत्त पान नहीं हो सका है । इनके पिता का नाम श्रीराम गोस्वामी था । इनके बाप अथवा भी भरतपुर में विद्यमान हैं । इनने लिखे हुए कई ग्रंथ बनताये जाने हैं किन्तु कहा जाता है कि वे मयागवर यात्रिक के अधिकार में हैं । इनकी रचनाओं में एक छन्द यहाँ उद्धृत किया जाता है—

मवया

भूलि हू नेह कौ नाम न लेहु जू बोजू कहूँ हृग्निधृहि हरे ।
सासा निसूक्त ही रहिय, निमि बामर प्रेम प्रवान अनरे ।
नकहु श्रीधर प्रेम विचित्र हियो उरभ निवर न निवेर ।
जे दुख बानन सो सुनते अर, साई निमान घुर मिर मर ॥

७६—वद्यनाथ—य महाकवि सोमनाथ के वंशज माथुर चतुर्वेदी ग्राह्यग थे । गणेश कवि ने विवाह विनाद मे इह महाराजा बलव नमिह का मभा पंडित लिखा है । इहोने सम्बत् १८८४ वि० मे 'विक्रम पंच दंड कथा नामक पुस्तक लिखी है । खेद है कि इनका विस्तृत जीवन वृत्तान्त उपलब्ध नहीं हा सका है । प्राप्त सामिग्री म से कतिपय उदाहरण लिख जाते हैं —

भये इक्ठु नृप अनेक महमानी कीनी ।
विविध भाति विजन सुधार रचि आनद भीनी ॥
तिही समय विक्रमादित्य बोल वर बानी ।
रत्नसेन नृप सुना बान इक अचरज सानी ॥
मोह ठग्यो नहि काहु कहूँ परदस देस महि ।
इहा तिहारे सहर माहि म ठग्यो मोह लहि ॥
बंदोबस्त एसी न चाहिये नृप बानन मे ।
बेस्या की सब बात कही सुनि नृप बानन म ॥
रत्नमेन तिहि बस्या का सुहुजूर बुलायो
रत्न डवा अर दंड माडिया महित मगायो ॥
ओर वस्तु भूसन सुबस्त्र सब ही मँगवाये ।
सरजाम अपने ममस्त लकें अपनाय ॥
पीछे बेस्या का रिसाय करि सजा दिबाई ।
सहर बाहिर काडि दम म ते निकराई ॥
नृप जवनहि फेरि सीम दीनी निज घर को ।
करी बहुत सिष्टाई दियो आनद तिहि वर को ॥
आय विक्रमादित्य रत्नसेनहि राग लबें ।
अर ममस्त निज फौज लिए आनदित हू बें ॥
सहित कुमरि जयमाल अवातापुरी सिधारे ।
घन बजे यात्रि दुदुभी परह नगारे ॥

७७—महाराज बलवन्तसिंह—भरतपुर नरेश महाराज बलवर्तसिंह (मन्वत् १८८२ म १९०६ वि०) का शासन-काल हिन्दी प्रेमियों के लिये विशेष रूप से स्मरणीय है। आपका पिता महाराज बलदेवसिंह और माता धर्मवती दोना व काव्य-प्रेमी एवं साहित्यानुरागी होने के फल स्वरूप इनका उच्च कोटि का कवि होना स्वाभाविक ही था। शासन एवं सभ्य नस्लित कलाओं के विकास की दृष्टि से बलवर्तसिंह का समय भरतपुर का स्वराज्य माना जाता है। राज्याश्रय एवं प्रामाण्य पाकर इनके समय में काव्य कला न विशेष रूप से प्रगति की। इसी काल में महाकवि रामलाल और कविवर रमानन्द आदि जमे प्रतिभाशाली कवि हुए जिन्होंने अपने काव्य भौरभ से भरतपुर ही नहीं समस्त हिंदी ससार का मुरझिन कर दिया। यह अत्युक्ति न होगी कि जितने सत्कवि अकले, महाराज बलवन्तसिंह के समय में हुए और जितने सुन्दर २ काव्य इनके आश्रय में लिखे गए उनमें सत्कवि भरतपुर के ममस्त नरेश (महाराज बदनसिंह से लेकर महाराज ब्रजद्रसिंह तक) के समय में नहीं हुए और न इनकी सुन्दर कृतियाँ ही लिखी गईं। यह गौरव भरतपुर नरेशों में बलवन्त बलवन्तसिंह को ही प्राप्त हो सका। भरतपुर निवासी ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि चम्पालाल मजुल ने आपके विषय में ठीक ही कहा है —

मूरज मूरज उदित बहुरि बलवत प्रभावर ।
 कियो कला-मर मलिल जातिमय परम प्रभावर ।
 सामनाथ सुदन, प्रजेग, बिरही रम नायक ।
 राम, रमानन्द, कलित-कमल विक्रम मुष्णायक ।
 मिंगार बीर, बराय रज अरुन पीत मिन मचरन ।
 मधु-पान हत 'मजुल रमिक, अजहु मधुप मृदु गुजरन ॥

बलवन्तसिंह स्वयं बड़े मरस कवि थे और भाव पूर्ण कविता करते थे। इन्होंने अपनी कविताओं में 'हरिनाम उपनाम का प्रयोग किया है। इनका कवन एक पद्य ही पयाप्त होगा —

कटिन कनील कोट बिकट मवाम तर
 - कुजर तुरगन को पुज हू बिनायगी ।
 जोर धरयो जा धर करारन को धन मानो —
 धरनी मे घमक पानान ठहरायगी ।
 एमी ममी न पाव कवि 'हरिनाम कहि,
 रूपन कपूत हूर पाछे पछिनायगी ।
 पाप न तरव न मेम कुमन मा ही तू तो,
 एक जिना धरनी पमार हाथ जायगी ॥

प्रकरण ४

राम-काल (उत्तरार्द्ध)

महाकवि रसानंद —ये महाराज बलवत्सिंह के दरवार में उच्च काटि कवि थे, जसा कि कवि ने स्वयं हित कल्पद्रुम में सकत किया है —

अस चित्त विचारि बुद्धि अनुमान सा ।

रस आनंदहि बुलाय कहिय सनमान मा ।

जिमि अजेद्र वनवत्सिंह अना रई ।

तिमि तुमनें ह्वै कृपा पाय रचना ठई ॥

इन कविवर क लिखे हुए अभी तक निम्न ग्रंथा का पता लग सका है —

१-अजेद्र विलाम —यह ग्रंथ ८ उल्लासों में समाप्त हुआ है। इसमें कवि ने भरतपुर राज्य के वंश का विनाश वणन सरस एवम् सरल भाषा में किया है। अलंकार और पिगल पर बड़े ही चमत्कार पूरा ढंग से प्रकाश डाला है।

२-नख गिरा —यह ग्रंथ कवि की अप्रतिम सरस प्रकृति का द्योतक है। इसमें रीति कालीन पद्धति पर कामनिधो के समस्त अंगों (नख से शिखा तक) का मधुर एवं अलंकृत भाषा में वणन किया गया है। यह हिन्दी साहित्य में अपन ढंग का एक अनूठा ग्रंथ रत्न है।

३-गंगाभूतलागमन —इस ग्रंथ में बाल्मीकि रामायण के आधार पर गंगा जी का पृथ्वी पर आगमन मनाहारिणी भाषा में वर्णित है।

४-समर रत्नावर —इस ग्रंथ का नाम वही २ पर 'सग्राम रत्नावर' भी लिखा है। यह जमिनी अश्व मेघ का भावानुवाद है।

५-सग्राम कलाधर —यह महाभारत का विराट पर्व का अनुवाद है।

६-मौज प्रकाश —इसमें श्री कृष्ण की लीलाओं का सुन्दर ढंग से वणन किया गया है।

७-हित-कल्पद्रुम —यह अनवर-मुहली (फारसी ग्रंथ) का हिन्दी भाषा में बड़ा ही सुन्दर अनुवाद है। इस ग्रंथ की रचना धाऊ गुलाबमिह की आनानुमार महाराज कुमार बलवत्सिंह के लिये की गई थी, जसा कि नीचे के पद्य में कवि ने स्वयं लिखा है —

प्रथम 'ममर रतना कर पथ जु विस्तरयो ।
 जामें जमिनि अश्वमघ भाषा कर्यौ ।
 रच्यौ द्वितीय 'मग्राम कलाधर का तथा ।
 है जाम बगट पव की सब क्या ॥
 तीजो मोज प्रकाश की जु रचना करी ।
 ताम अद्भुत राम जु कीडा विम्वरी ।
 अत्र प्रजद्व जमवतमिह हिन, प्रीत मा ।
 रचो प्रथम च पाय नीति की रीति मा ॥

दोहा

श्री जमवत अजेद्र हिन, सोधिनीति का पथ ।
 रम धानर' ररनन करत, हिन रल्पद्रुम प्रथ ॥
 बाण ब्रह्म निधि भमि हि मुनि मयत विक्रम राय ।
 अक्षय श्रितिया माम पुनि, माधव गुह रिन पाय ॥

उक्त ग्रन्थों के अवनयन से यह भली भाँति पता होता है कि रसानन्द केवल कवि ही नहीं बल्कि आचार्य भी थे। इनके वल्लभो म कलापक्ष और भावपक्ष का सुन्दर सम्बन्ध पाया जाता है। इनकी भाषा कामल वाग्म्य पदावली युक्त मग्न एवं मरम अज भाषा है। भाषा रसानुसूल परिवर्तित हानी गई है। युद्धों के वर्णन में अोज का प्राच्युय धीर गाथा काल का मजाव चित्र उपस्थित कर देता है। आगन भक्ति गीत और शृंगार का परम पावन त्रिवेणी प्रवाहित कर तन्मालीन कविता में विविध पद प्राप्त किया था। आपकी रचना का अनिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं —

हिन कल्पद्रुम (छापय)

जयति मच्चिदानं तं नदन जग बन् ।
 दुष्ट निवदन वृष्ट मुजम गावन धुनि छत्त ।
 मुरली । अथरन धरे मधुर सुर पूरत हरपन ।
 वरमन रस धानद, जुवति जन नित नित धावरपन ।
 मुमिवात मद अनरात म उक्तयति मुममा मोनी ।
 अत्र महत महत का प्रगट चटर है क महता ॥

दोहा

वाग्म्य मादन धानद म रसिनन क दिन जान ।
 मूरिप के नित नोट म, कनह कवि जनपान ॥

छप्पय

कही काग सुनि हितू कहनि प चित्त दीजिय ।
 अनजाने परदेसी सो नहि प्रीत कीजिय ।
 जाको सील सुभाव प्रगट आश्रम नहि जान ।
 तासो छिप्रहि बुद्धिबान मित्रता न ठान ।
 घर हू मे बास न दीजिय नीति मत तो या कही ।
 जो बास देइ तो मित्र सुनि पाव इमि विपदा मही ॥

काव्य छन्द लक्षण

प्रथम रसकला वसुकला पुनि दिमकला प्रमानि ।
 इन चौबीस कलान को काव्य छन्द सुख दानि ॥

उदाहरण

चढत प्रबल बलवन्त भूप, जब सहज सिवारहि ।
 खल भल दस दिस परत डरत अरि धीर न धारहि ।
 धूर पाटि नभ अघ-धुघ, रवि मण्डल भम्पति ।
 भार सहत नहि सेस कमठ दिग्गज कम्पति ॥

लक्षणामूलक व्यङ्ग लक्षण

द्विविध लक्षणा मूल है प्रथम गूढि पहिचान ।
 दूजो व्यग अगूढ यो उभय भेद उर आन ॥

उदाहरण (कवित्त)

एरी नित नये दिन कठिन वितय कसे
 जसे ये अनमे आय स्वाग अरबी करहि ।
 पापिन कलापिन कुजापिन कुपडो हित
 चरचा चलाय ललचीली करबी करहि ।
 कवि रसमानद' बिलोक कमलन मुख
 पारबी नैन नीर की नदी सी ढरबी कर्गह ।
 ललित सनन यभ अतन सदभ कीन
 दभ भीन भौर पररभ भरिबी करहि ॥

बाने छीरनिधि की तरग सी उमग भारी
 सरद विहग सी पियूम पारावार सी ।
 सतगुन के सार सी मुमुक्त नव हार सी,
 बिकमी बहारगार कुमुद कतार सी ।

भन गम आनद विमल गगाधार सी है
 हिम क पहार मी मुखद घनमार मी ।
 मिह बलवन्तजू क जम विस्तार सी या,
 छिन्की है चन् छन फटिक पमार सी ॥
 सवया

राम की बात मुन अनि आतुर चातुर आय चने इहि ओर है ।
 त्या गम आनद मीम नवाय लगाय ग्ह पग नन्द किमार है ।
 ना हू ग्नी मुख मीन मनी न क्नी जु बनी भृकुटी की मरार है ।
 तम कठार हिय म प्रमत भय निय तर उगाज कठार है ॥
 बना वगन (गहा)

जगमग भूमग भाल की, है मुहाग निधि रूप ।
 पूरनता शृगार की, वदी वरन अनूप ॥
 जन्ति जडाप सु जगमगन, वदी ललित लिलार ।
 जनु पूरन ममि अक म तिनकर करत विहार ।
 नन वगन (गहा)

खजगीट पक्क कुग्ग चपन तुग्ग मर मीन ।
 राज मील पानिप भर वरनन नन प्रमीन ॥

नर मुख की मुग्गमा निरधि उपमा फिरन खरार ।
 कचन अचन नन हतन है गुताव व आब ॥
 मुग्ग सुग्गमा उपमा त्रिय भयो कतकी चद ।
 कक्क अटकी कतकी, ग्रम्या भैवर मवरर ॥

त्रिष्णु भग मीनन मनिन नज उज्जलता चारि ॥
 उज्ज जु गग तरग है मित्र मित्र मल उचारि ॥
 छ पय

माभिन मुकट निमर ग मन्नि अतवावलि ।
 करन चर त्रिनिमर, कुद निरक मनाप्रति ।
 कटि मुग्ग पट पीन करन कुण्डल छत्रि छाज ।
 रम आनद दुनि पय, काटि मनमथ मन लाज ।
 अनुचिन प्रनाप त्रिकम विन्ति मक्कन न श्रुति स्मृति वरनि ।
 श्रज मदन पूरन भम ज अवतारा अवतार मनि ॥

७६- श्रीगणेशाय नमः । यत्राणि च मयाग ध धोर महाकवि रमान् का मया म
 रणम ध । मयागि ध विनाग पदे विम मया धे विन्तु प्रकाश विद्वान् च मया म
 याग म गणेश हृदय म भी वाष्पाकुत्र उ पन्न श मया धा । कनकमय स्तुति
 या मद्भक्त्यस्तोता मया विनागपद का मु च्छेदनुवा विद्या तया राजनाति
 च धार कृत्वा रण विम । विनागपद का राना रान स्वय धारणा न म
 प्रकाश विगा ३ -

मया मयागि विधि मयाग मयागमर परिमान ।
 रण रण मयाग धर क मयन् प्रभय रमान ॥

राजा भाषा म वि वि ममभार नरा पाया जाता धोर व्याकरण मन्वया
 भूम भी धर मय रणन म धारी है । राना हार पर भा वगन रानो मयन मयन
 मया हृदयपाता है । उपायगाथ इनक कतिपय पत्र नाच स्थि जान है -

नगवदगाता (अप्य)

मयदि गाय युधि मयन रान रान मुन नाथर ।
 प्रकाशते मयिन मयन रज प मय मुय थायव ।
 नाय रण रण रान निमिर बहु कादि विवाकर ।
 नरत मुयामर निमि वाय रन रण विगा र ।
 मयि प्रमन्न धर रय यदि धार युक्ति विजय ।
 रण कतिन धर गाता मयम रणय रध मुक्तित्रय ॥

धारि भर रणि ना धनजय क तर माय ।
 कतिन नय या वचन मय मयन तर याय ।
 नाय पुष्प का हाय माह नू पतिन गाना ।
 नम स्वय की मुक्कय रण यह मयम रमाना ।
 नाहू न चापिय या मम, दुरलता छापी मय ।
 उक्ति मयम मयि ठा जु धरि रण सात्र कागति मय ॥

श्रित पदम श्रीपाई

श्रिष्य गभ द्वा ह्म विराजा मयन ताहि काहा निज राजा ।
 गा धर राज करन रही लाग्यो राज साज क रम म पाग्यो ॥
 भागत बुध जन नाका, कृप रिहीन सुख कहा प्रजा की ।
 म मयि के भक्त, चलन न नाव बिना खवट क ॥
 विन धमा, निवहृत नही मुगम मुभ कमा ।
 चाहे निज पुशन की नाह ॥

हाय भूप जामूस विहानी मा करता न आधौ कीनी ।
जा नृप के नामूग मरणी ह न नन मा अय ग्रणी ॥

मुवर हा जामूस अति, जा नृप क नित पाम ।
मा घर उठे जगत की तय विभी अनयाग ॥

मागठा
ह मास्य न जान, नाय आश्रम मुर मदन ।
परन नृपति पञ्चान, गूढ पान जामूस न ॥

पुत्रर रविन
आग्भा जाति व नागन मा उर हाय
रुमर करन जाति रम ठर नही ।
करन करन जाति उपज ननम भारी

अति छात्रो राम एसी कुत मन राधो राय,
अति ही दुग्ग राज पूरा ह पर नग ।
अवीटाम जाम ताभ मरच परापर ही,
मुद्रिवत ह व एमा राग्न कर नग ॥

योग पञ्चान त्य र एम भौर म्याम,
मान रति रग नृप मारि रित वनी न ।
परन जात अा त अनूप एप
हृति हृति माना गन पर हृत् रनी न ।
अरिया अनन मान मुनन मरनी रा
घाट रिग ध्याग क मु पूर मृग-ननी न ।
एग मुनि गाग उपभान वा विमारा नाग
रा प रग ह आज भुकृती ननती न ॥

६०-रूपगम -य जाति र श्राद्धग्य शौर भरतपुर नगर निवासिने । य एतन
विन्यात् ध नि एतय नाम पर अभा तव कु शल्पगम नामर मात्ता एमा ह्या
के । एनरा कविता-पाल मरत् १६/९ वि० म १६२८ रि नर माना जाता है ।
एग जी क अनय नर एतन क राग्य एनर वगत क नाग एपजा वात क
वात के । रति एतन र मा १२ य एतानिय-गाम्य क ना एन्द्र विद्वान् र । एतान
मृत् म पूर घात नि एत वात का एम प्रसार ए तव रिया घा -

नाम दाप लखे नहीं पाप कर दीय दीन ।
 चौबीसों की सान म होऊ सम म लीन ॥
 हिम रितु अगहन मास पुनि नौमी भौम मु पाठ ।
 एपराम तन त्याग क, मिन मेम म जाइ ॥

जा वानी या मुगत निकमी सम करग माची ।
 भूठी वान काई मत जाना आप मरमुतो नाची ।
 पत्थी गुथी नहि भापा प्र यन नाहि गयो कछु साखी ।
 एप राम के प्रभु सम न अपने मुख तें भाखी ॥

कहत है आपकी यह भविष्य वाणी अक्षरग मत्प सिद्ध हुई । इनक रचिन तो प्र थ उलब्ध हुए है (१) गगा लहरो और (२) गनपचाणिका । गनपचाणिका म इन्होने अपन उमास्य देव गणजी क विवाह आदि उत्सवा का विविध राग रागनिया व मुत्तर छन्दो म वणन किया है । यह वगन बहुत ही स्वाभाविक सरल सरस और हृदयग्राही बन पडा है । एम प्र थ का रचना कान कवि न इम प्रकार किया है —

एक महम्य पर आठमो ना क उपर एक ।
 भइ वृत्ता आ सम का गाण चरित अनक ॥
 सामन मुक्ता पचमी रच्यो चरित विचार ।
 जा याइ मीम मुन बाट वम आचार ॥

आपकी भाषा साधारणत अच्छी है । इनक कुछ उदाहरण प्रस्तुत है —
 राग विलावल

ममजा अचता निवहि बनगी ।
 नाव जरजरी षट नाही किहि विधि पार लगगी ॥
 अनि गभीर भमर म भग्म पवन प्रचट धुनगी ।
 आग ठाडी दुरजन मना मारहि मार मनगी ।
 धक्का प धक्का नागत ह बुधि नहा धीर धरगी ॥
 इहा काऊ रव वारी नाहा और कछु न हनगा ।
 रामरूप का चरन मग्न दउ मारट सुजस भनगी ॥

राग नतिन—नाल धीर

ममजा गनान दौगाजा चरन कमल विश्राम ।
 जा चारणा माई नस्या काई करी उपराम ॥
 चौराम्या का स्वाग धरयो मे मर्यो न काई काम ।
 राभि खीभि म थ नने ममभौ काई करा मन स्याम ॥

ये जानो हमें भूजा ना यह गेहूँ पचें बिन काम ।
 रामरूप' ना और न मार्ग' दीजै अपनी धाम ॥

राग मन्तर

रमन लोऊ सुन्दर नखल हिडार ।
 चंद बदन श्री सस रमिक मनि कु बरि तमन नन गारे ।
 नीलावर अर अरुन बसन की छवि धन दामिन भार ।
 रामरूप दोऊ दपति विहरें मधुर हमत थार धारे ॥

कहै जी मम कू - प्राप भुजावें ।
 रत्न जटिन को ब यो पालनी रमम डारि डार ।
 मान भामिन चपकतता सब मिनि मगल गाव ।
 और कोई इहा आव न पाओ मुख मनि बिद नगा । ॥
 राई नौन कू बारि फरि ब कौन म आप बागा ।
 रामरूप' मणि निरखि नान कू तनमन घनहि लुगा ॥

गगान्तरी

उन्द पद्यायनी

सबत् रम तर वसु चंद्र अमित मुभ माप मुकृ तम मालाम ।
 बुद्धवार कर गगा लहरी प्रागम द्विप बगो निगाम ॥

श्री गौरीनन्दन मुग नर रत्न जग अभिवन्दन विघन हरो ।
 श्री रूपगम जन वरत गीनती गगा ननमय चिन करो ॥
 श्री मानु भवानी निगम बागानी वृद्ध बमरुल बरि मगा ।
 भागीरथ आनी मुनिगन मानी कुलन उधारन ज गगा ॥
 ता निमन धारा अगम अपारा बारि त्वेव जन मुद्धि लहै ।
 तन मन बच धारी तत्र वर पाी अथम उधारन गीत बहै ॥
 मिथ गोम निवामी परम प्रवामी बल्लुम संघ नायक जन के ।
 जन पान करन भा राग बटन म्मि भेमज अरुन जिमि तनक ॥

८१-जीरागम -य कवि महागज बनारसनिह ब जाधिन य । एनका
 जम तातफरा ग्राम (तटमील कुम्हार) म चतुर्वेदी यग म इथा था । इनक बचन
 दा प्रथ उपनयन हूण हैं -

१-प्रवत्तनामा -यह गद्य म लिखा हुआ है । इसम अक्षर बादगाह तथा
 बीरवन व गगान्तरी ही रोवक दग मे दिय गय है । तबानीन परिस्थितिया के

अनुसार सभाचातुय के लिये ज्ञातव्य विषय का भरी प्रकार स त्तिगदशन कराया है ।

२-अजेद्र सभा बिलास—यह बड़ा ही सु तर पद्य ग्रंथ है । यद्यपि इस ग्रंथ में किसी विशेष विषय का प्रतिपादन नहीं किया गया है फिर भी वगन शली बड़ी ही रोचक है ।

आरम्भ म वदना आदि करने के पश्चात् अपन आश्रयाना के बभब हाथी घोडे गिकारादि का वणन कर महाराज बलवतसिंह की श्री वृद्धि के लिय विविध देवी देवताआ से प्राथना की है । इस ग्रंथ का निर्माण काल कवि ने स्वय इस प्रकार लिया है—

ठारह सौ अफ छानवा, सुद्ध महीना माह ।

तब कविना परगट करी मानो भयी उछाह ॥

इनकी रचनाआ के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं —

सल-सुता गौरी क तनय श्री गनम नाम
तिनकी कृपा त मिट नवल कमाला है ।
जिनकी कृपा त सब दर अनुकूल हात
तिनकी कृपा त होन मिवह त्गाला है ।
जिनही के सुमिरेत दुख की बिनास हात,
गज का बदन गर फूनन की माला है ।
बाप मृग छाला श्री ओत्त दुसाला आप
मिद्धि क दयाला एम मकर के लाना ह ॥

हाथी वगन (कवित्त)

त्तिगज स सोहत दुरद् दर गजन प
दखि दखि घन क घनरे घनवारे है ।
साहत मबारी मीन बतन मबारी सज,
हौदा बन हद् माना साचन मे ढारे है ।
भूम भूम चलत भुवाव भुकि मुडन का,
भुडन के बीच म चलन बल भारे है ।
श्रीमन अजेद्र महाराज बलवत तरे
गज मनवारे बधो गिरि मत वार है ॥

कवित्त

मनय ममीर वीर तीर सी लगत माहि
धीर नहीं धरयो जात तरफ्त ही रहै ।

बिसर बिसाती मेरे गामी मारि फामी गरी
 दामी मा गगाया हत कमे करती रहै ।
 ऊधी यह सूष ममभाय दाजो सावरे सा,
 तावरे स आव गोपी तन म तयार हूँ ।
 प्राविण प्रहोर हैरी जानन न पीर हूँ नी
 सुष ना मरीर है नी कम करजो रहै ॥

८२-लक्ष्मी नारायण -य कवि भरतपुर निवासी गणेश के पुत्र और
 जाति क ब्राह्मण थे । इनका कविता काल सवत् १८६० से १६०० वि० तक माना
 जाता है । प्रतिभावान हान के कारण इनको भी पिता के सदृश्य राज्य सम्मान
 प्राप्त था । अपन आश्रयस्थाना क प्रादण पर जगन्नाथ त्रिशूली की 'गंगा लहरी का
 भावानुवाच तथा 'अनल कथा पद्य म लिखी थी । उदाहरण निम्नलिखित हैं -

कविस्त
 बमुधा क मवल मुहाग की ममृद्धि निधि
 'नारायण ब्रह्म द्रव्य मात् नखिबी कर ।
 बहो अरज जा महम का मज ही म
 महा एस्वयसाली कर खिबी कर ।
 सर्वश्रुति साम्प्र का मुमानम ममूदन के
 मुष्टि की मूरि मा दुखन हखिबी कर ।
 मुधा की महार है मलिल निहाग गग,
 मरे अमगल को त्रिनाम करिबी कर ॥

प्रात मम ज्ञान पटरानी जे नृपामन की
 मृग मत्त निनके पयाधर तटीन म ।
 'नारायण' कहै मुन एगे गगा मान बह
 तोला मित तगे जन रामि लहरीन म ।
 तीनों ब ही मृग निज बधु जानि पाति जुन,
 महमन ममूदन मा मित मुषामीन म ।
 विहर ह्वे मुद्ध निय घखिं विमन बधु,
 न'दात्तिक वनन के वृद्ध बन्नरीन म ॥

८३-रामानन्द -इहाने सवत् १८६१ वि० म रानी बिगोरी की आणा मे
 'सोम रत्न भूषणामणि नामक ग्रंथ रचा है जिसमे ६० प्रमगा म कौबधन सोना

तथा मानसी गंगा की महिमा का विस्तृत वर्णन वडे ही रोचक ढंग से मधुर भाषा में किया है ।

अन्तरंग

गवा मानव भूलत फूलत हुलमि हुनमि मुमकानी ।
 जनु दरपन प्रनिविम्ब निहारत मन भावन मन भानी ॥
 कवहुँक मुरली मधुर वजावत, गावत रागिनि गा छण ।
 माना वन धन व्रज नर नारी काम मत्र पत्र बीज वाण ॥
 गिरिधर नागर रमिक उजागर, हमि हमि भुकि भुकि अक भर ।
 जनु मनमय रति करत लराई नकहु इन उत नाहि टरे ॥
 इक कर चिबुक पगमि पुनि माधव, बीरि वदन पर देत हमी ।
 मिस कर उमग पयाधर परमत, मृगलाचनि तव मोह कसी ॥
 नील पीत पट अचल चचल धन दामिनि की कौन छवी ।
 ककन किंकिन नूपर ठुमकनि कथन कर सो कान कवी ॥
 गाप कुमारी पचरग मारी कनक किनारी भान मली ।
 अग अभूपन वाजत स्न भुन जन उर कचन कमल कली ॥
 भुकि भुकि दरसत हरसत मोहन सुमन पराग वर वार वही ।
 वाजत जत्र अनक एक गति राग असाबगि गावतही ॥
 श्री वनवारी अनि सुखकारी मुरली सम्हारी गायवी ।
 मानहु मोहनि मत्र उचारत सबकी सुधि विसरायवी ॥
 नवलकिसार भारी गोगी वय गति योगी रूप लसी ।
 मृदु मुमिकाय रिभा प्रीतम का स्याम सुजान मनहि वसी ॥
 सागि मभारी दे चटकारी मरस सुधारी राग लई ।
 भौह नचाय बचाय मान गति तान मोहन पर राख दई ॥
 माहित भौ गिरिधर वर नागर करत मुरली लटक गई ।
 श्रवन मुनत मृदु स्वर मुर बनिना चन न मकत गति थविन भई ॥

८४-रामवर्णन -य जाति के ठाकुर तथा भरतपुर के निवासी थे । आपका जन्म सन् १८६७ वि० के आर पास तथा दहावसान १८९७ वि० में हुआ । यह महागाय बलवन्तसिंह के समकालीन कवि हैं । इनके पुत्र मुरलीधर तथा पौत्र भगवत प्रसाद दोनों ही कवि हैं । आपकी कविता बहुत खोजन पर भी विशेष नहीं मिल सका है । कवन का छन्द उद्धृत किया जाना है -

कवित्त
 जा प पिय प्यारे तुम निपट निमागी हूम,
 तो प बाह का जु तुम बगी प्रीति ठेठ म ।
 हमहै न जानी कान्ठ गीनि पहचानी भ्रम,
 सब मुभ गनी जा कहानी दग मेठ म ।
 हो तुम निठुर गमवस्था पहिचान तय,
 नाहा बह्नु आयत है एमा या घनट म ।
 बुजजा मग ताघ्रा हम रूप जा दिखाघ्रा कान,
 घ्राघ्रा रर त्तिना म प्रभू नीक जू जठ म ॥
 चर तिन रजनी मगज तिन मगार,
 वेग तिन तुग्य मनग बिना मरकी ।
 तिन मुा मरन नितमानी मुपनि तिन
 तिन हर नजन जगत मोहै जन वीन
 नौन तिन भाजन तित्त तिन उर की ।
 'गमवस्था मरम गभा न माहै कवि तिन
 तित्ता तिन तान न नगर बिना नद की ॥

८१—मेवागम—य वर के निमागी थे । इन्होंने किन्हीं गमपात्र यष्टुवगी
 क निय नर त्मपनी चरित की रचना की है । इनकी भाषा मरन मरम एवम्
 प्रवाह युक्त है । इनका कविता-काल ५० १८६० वि० के घात पाग है । इनकी
 कविता क बुद्ध अग प्रस्तुत हैं — चौपाई
 घा तृप मुनी मनाहर ताना । त्मपनी का अक्षय कगानी ॥
 जगी मोद भग्ने त्रा ताना । सग्यो न प्रिय की रर गमाना ॥
 तीमी नरि नगर को राजा । निय की वन म भयो अवाजा ॥
 पीय पीय कश्चि चतुर मयाना । गद् गद् गिरा कन्त भई जानी ॥
 घहा कय वन तजो प्रवनी । मूयत क कचन की बनी ॥
 प्रमृत मय त्रमन दरमापी । हमवा वन म कवा नरगापी ॥
 ऊच म्बर गा मरु त्तारे । मार नार कुमुमावति नर ॥
 घहा र्हे तुम काना क्य । प्रति अयन भयो त्म महा ।
 नरबरीम कित मय गुजाना । मूना तजके मात्ति निगाना ॥
 कापी कठी मुनाहि पुरागो । पुनि काकी मन म तृत धागो ॥

दाहा

वन वन म भटकत फिर रानी व्याकुल रूप ।
पड़ित भा पूछन लगी तुम त्वे नन भूप ॥

८६—चतुर्भुज मिश्र—य भरतपुर निवासी तुलसीराम के आत्मज गुम्यानी राम क पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे । इ होन 'अलकार आभा नामक ग्रंथ की रचना की है जिसमें अल्प लोभिन के आधार पर अलकारा के बड़े ही राचक उदाहरण दिए हैं । ग्रंथ रचना काल के विषय में कवि न लिखा है—

सम्बत् २९९९ निधि बम् ममी मिसिर मकर गत भान ।
पाव अमित तिथि पचमा सुरगुरु समय प्रमान ॥

इस प्रकार इनका कविता काल १८८६ ई० ठहरता है । इनका ग्रंथ की भाषा बड़ी ही रोचक तथा गली प्रभावोपादनी है । उदाहरण के लिय कुछ छंद प्रस्तुत किये जाते हैं—

विशेषाक्ति लक्षणम् (दोहा)

पूगन कारन हात हू कारज उपज नाहि ।
ताहि 'विशेषाक्ति वरण बुध जन मकल सिहाहि ॥

उदाहरण (मवया)

हू न करूँ मुधि भूलि अब तउ जात उन चित मान बमगौ ।
भूख लग तउ खात वन न सुनूँ न कछु श्रुति राखहुँ नेरी ।
मोऊ तऊ नहि आउत नाट सट्यौ किन जातरी मा दुख रेरी ।
काम ममाल जर उर म तऊ नह न रच घट बलि मगौ ॥

अमगति अलकार लक्षणम् (दाहा)

जहा हतु अरु काम को भिन देम सबरुद्ध ।
तहा अमगति री प्रथम वरन भेट विमुद्ध ।

उदाहरण (सवया)

सुत्तर नील माररुह स मुचि साबल रग रगे रचि लाबाहि ।
हाय लियो अपनाय सब, नभ भूमि विभाग भले दरसाबाहि ।
प मवि य घन ह विपरीत री, और की औरहि व्याधि लगबाहि ।
आप करे विम पान विदसिन, की निय मूछिन ह्व मुरभावाहि ॥

तद्गुण अलकार लक्षणम् (दोहा)

निज गुन का तजि नन इह संगति की गुन यस्तु ।
'तद्गुण भा आभरन है वरन मुकवि समस्त ॥

उत्पाहरण (मवया)

श्री बलवत बली तुमर अरि की तिय ताप तची घबरानी ।
नमन सरीर फिर बन म कडु ओदन का उर प्रीत प्रमानी ।
पल्लव तोरि धन्यो तन चाहत हाय पमारि तव उमहानी ।
चार नवावलि रगन त भय पाण्टु तिन्हें तज देम निमानी ॥

८७-युगल विशोर -

य ग्राहण जाति क रात अल्ल वाचे नक्षमीनारायण
क पुत्र और भरतपुर क निजामी थ । इनके वगजा को महाराज बलवतसिंह म
बबोश्वर' की उपाधि मिली हुई है । महाराज क आदेशानुसार इन्होंने रम-
बल्लोल' नामक ग्रंथ की रचना की थी । अब तक इनक ३ ग्रंथ दखन मे आये है -
(१) रस बल्लाल (रस ग्रंथ) (२) ब्रज विलास (ब्रज का वर्णन) और (३)
श्रीराम जानकी मंगल । साधारणतया इनकी कविता मुत्तर है और यत्र तत्र
वगना म स्वाभाविक सजीवता भी पाई जाती है परन्तु इनकी भाषा म
व्याकरण सम्बन्धी भूल अधिक ह । इनका सबया तथा पटपदी छन्दा
पर अच्छा अधिकार था । इनकी कविता क उत्पाहरण नीचे दिय
जात है -

रम बल्लोल

गोव नक्षणम् (ग्राह)

वाञ्छित वस्तु वियाग श्री रति को परमत नाहि ।
मन विकार उतपन भयो, परिमित गोव कहाहि ॥
वाञ्छित वस्तु वियोग लघु, गोव कही तज वट ।
निप्रलभ करना निमी, कत जानी भट ॥

निप्रलभ रति का गहें करना परमत नाहि ।
इतो भट है टुन म, रामभ सुचवि मन माहि ॥
प्रीतहि रीतहि जा कही, ता तिन गोव न हाय ।
है अगमजस यह मनो रामभ कह न काय ॥

भय लक्षणम् (ग्राह)

मपराधर बहु राग त, तव भय दरमन पति ।
मा बिना नन भयो परिमित मा भय रति ॥

जौलीं श्री महेश श्री सुरेश नारनादि मुनि,
 जौली गग जमुन फनि भूमि घारे की ।
 जौली राम नाम तौला अग ब्रजराज प्रभू
 उमर त्राज रही कुवर निहारे की ॥

८८—मणिदेव —ये भरतपुर राज्यान्तगन जहानपुर ग्राम क निवामी श्रीर
 जाति के भट्ट थे । अपना विमाता के व्यवहार से असतुष्ट होकर काशी चन गये
 श्रीर वहा गाकुलनाथ के महा रहन लगे । काशी नरेण क। घाना स न हान महा
 भारत के कण, सत्य गदा सांत्तिक एपिक विगोक स्त्री तथा महाप्रस्थान पर्वों
 का पूण तथा शान्ति पव क २०५ अध्याया का अनुवाक किया है । अपना अन्तिम
 अवस्था मय विशिप्त स हा गये थ । इनका समाज म बडा अतर था । अन
 अनका स्थाना स इहे ग्राम हाथी छोडे आनि भट म मिल थ । इनका कविता
 काल १६०० से १६२० वि० तक है । उनके कुछ छंद उद्धृत किय जात ह ।

रूप माला

वचन यह मुनि कहन भा चक्राग हम उचार ।
 उटोग मम मग किम रूपमाला मा कहहु तुम उचार ॥
 खाय जूठो पुष्ट गदित काग मुनि ए वन ।
 कही जानत उडन की गत रीति हम बल ऐन ॥
 उडुन अरु अडुन अरु प्रडुन अरु नीडुन ।
 मडुन निषगुन अरु बीडान अरु परिडान ॥
 पराडुन सुडान अरु अनि डोन अरु श्राडुन ।
 डोन अरु मडुन डोनक महागोन अडुन ॥

इहे आनि प्रकार गत है उडन क त मव ।
 भली विधि हम मिस ताते गहन इतना गव ॥
 जोन गति की किए हाहु अभ्याम तुम गति तीन ।
 ग्रहण करिक उडो मा मग मकी जा करि गोन ॥
 काग के ए वचन सुनि कही हस सुजान ।
 एक गति मव ग्रिहग की तुम काक गत गति वान ॥
 एक गति सा उडव हम-तुम यथा रचित सुवस ।
 चाधि यहि विधि वरम लाग उडन वायम हम ॥

भए तहू अनि करन विक्रम उभय याधा धीर ।
 महि परमपर गग गार्ई गनन नकु न पीर ॥

गजि गजि अखड गलि गहि उभय वीर उदड ।
 वरत चालन दोरुडनि बगल अनिय्य चड ॥
 मय वीर अणगाव्य फिनि जो मय्य ना यपसव्य ।
 फिग्न वाहन गदा गर्द सुभट भा भणि भव्य ॥
 गद मा भणि शिया अरहि म्नाय भेनहि नव ।
 दृदि दृदि अचूक वाहन गह जय वी टेक ॥

वहा निद्रा अनुगहि घर भग घमराव ताहि ।
 वहा निद्रा ताहि रेर महा चिना जाहि ॥
 मकल ए मय हिए निवसन वहा निद्रा माहि ।
 पिता व र त अयिक दुग्ग वान भूभन ताहि ॥
 विप्र ह्य तिज घम तजिक गह्या धत्री घम ।
 वम क्षयिन व वर अय उचित नजि क मम ॥
 भूठ वणि तजि घम्म उन मय पिनहि डारया माहि ।
 तया घर हम वर उन वट नीति घम विमाणि ॥

८६-हनुमन्त -य जाति व ब्राह्मण और नगर व निवासी थे । इनका जन्म मन्वत् १८८१ और निघन्तु मन्वत् १९६० वि० म हुआ । इनका पिता का नाम प० संवारास था जो ज्यातिप व अच्छे विद्वान् थे । हनुमन्त भरतपुर महाराजा जयन्तसिंह व श्राश्रय म रहत थे । इनका रचिन घाठ अय मिले है - (१) राधा मङ्गल (२) ज्ञानकी मङ्गल (३) कवितावली रामायण (४) सूय पुगाण (५) नोता पञ्चमी (६) मागील गिरामणि (७) नायिका श्रे (८) भाषा चालवप, इनका अतिशक्ति भी भी अय बतलाये जात हैं । हनुमन्त अयन समय व उच्च बोधि के वरिष्ठा म स थे । अयन वर परिशय म इहान अयन का नगर व प्रसिद्ध कवि रामनाथ उन्नाय गम कवि का भाई प्रकट किया है । इनका भाव और भाषा दाता परमान अयिबान था । इनकी कविता व उपाहृग्य प्रम्नुत विय जात है -

मुन गिदि बहन घर नर रावक वानन रचन मभार नतू ।
 मै गिदि जमी ताहि मुताऊ प्रगट ममभ १ वारनतू ।
 धत्री कुन घमर मय्यन वरि, य बुटार मल हारणतू ।
 नुरन पठाऊँ यम नोवन म, नवर मार वर धारणतू ॥
 गुनि कान रत अनन्त, राई मिन्धी शशी नाय है ।
 शिज जान व कुन रात बीनी नवर गिम उपजाय है ।

तून तूल रिपि रिम अग्नि भारी जगत आहुनि पाय है ।
निज भ्रात के रघुनाथ बचन, विचार धोनहु जाय है ॥
(जानरी मगत)

पद्मिना लक्षण कवित्त
त्रिज्जुल छगामी हाम्य लगन पटासा चाट,
चिनवन वाँकी ज्या चलाका चाल रात की ।
हमत कहत वात भरत प्रमून माना,
हाटक वग्न दुति भपत वृमान की ।
रभा मनवा की अपछग की उवमी की कहै
कहत ममान बुद्धि मूग्य अजान की ।
कवि हनुमन छरि धाम काम वाम वाटि
रुम रुम वारा ण्मी वनी वृपभान वा ॥

६०-छत्रमल - य जाति के राह्याण और दाग क निवामो थ । आप
सस्कृत के अच्छे विद्वान् थे । इनका कविता काल म० १६०६ वि० के ग्राम
पास ठहरता है । इनकी फुटकर रचनाएँ कवित्त तथा विविध छत्र म मिलती
हैं । उदाहरण प्रस्तुत किये जात ह -

कवित्त

रूप मो जगन म निपट रही भपट थिय
गग का तरंग, भाल बीच ममि धार प ।
भुक्ति रही अग म उमग भग रग भरो,
निपटे भुजग चट रास क सरार प ।
दुष्टन का कान रच्छसान निज भक्तन का
नृत्य कर ताण्डव ताल क तरार प ।
दमे दुख भाग जात दारिद बिलाय जाय,
श्री रूपेश्वर नाथ रूप सागर किनार प ॥

पटपदी

जयति वमरी ननय चान निधि मुनिमन रजन ।
कवि कुल वमत त्तिम माहृतन पटल प्रभजन ।
हाटकपुर रूप मुखन मय्य मुग्गीर सहायक ।
नारा पति वध हेतु मन वृन कपि कुल नायक ।
जय जातुधान वा मनल सम सुर नर वर वत्तिन चरन ।
जुग जाग पानि 'द्विज छत्र कहै जयति २ अमरन मग्न ॥

६१-रामवल्गु - आपका जन्म मन्वत् १८२० वि० क ग्राम पान माना जाता है और मृत्यु मन्वत् १९२० वि० है। य डीग क निवामी तथा जाति के ब्राह्मण थे। तत्कालीन कवि ममुत्पाय मे इनका काव्य प्रेरणा मिली और फलस्वरूप य प्रच्छे कवि हो गये। साहित्य क साथ २ आपका ज्यातिप का भी उच्च काटि का पान था। मुनन म ग्राना है कि आपन अनक ग्रथा की रचना की थी, किन्तु एफ्लूजा की बीमारी म आपके प्रपौत्र का सपत्नीक दहावमान हाजान पर इनका साहित्य नष्ट हा गया। बहुत खोज करन पर भी आपक साहित्य की उपनर्ति नही होसकी, केवल जनश्रुति क आधार पर कुछ छ द मिन सके हैं। आपका उपनाम 'राम' है। यद्यपि इन्हाने टकमाली श्रज भाषा का प्रयोग किया है किन्तु गल् चयन मुत्तर एवम् मग्म है और अनुप्रासा की स्वाभाविक छटा तो बड़ी ही हृदयप्राप्ती है। आपकी मग्म रचनाआ क कनिपय उगाहरण प्रस्तुत किय जात हैं

बलरामजा की बरना (छणय)
 जय अनन वन धाम राम बरगम म्याम युन ।
 गाव बम गावम मम श्रवनार मार दुन ।
 धरा धार अनिधीर वीर यदुवमिन म वर ।
 श्रमुर मन महान हम-हन मुसल पानि धर ।
 भुज जुत्य मन् तहि 'राम कहि दीह दुष्ट मुष्टक रवन ।
 जय श्रच्युताश्रज भान-दुख प्रनम्बन रेवनि रवन ॥

गरु वगन (कविन)
 कथा मन्ताव काम दर मी मिली है आय,
 कथा छीरमिपु कथा बलवी विहाईगी ।
 कथा धनमार की नग्गनि नग्गन त,
 जापर तहान माहि बाठी मुखनारगी ।
 मृदु मयनून कथा विधिन विछाय मन,
 राम श्री मिलासन का वरन क-गईरी ।
 या रिधि सुनाई मन भाड द्विज राम कहै
 छार महि मन्त म मग्म जुन्हाईगी ॥

पाग के श्रयसर पर श्री गधा की गवोत्ति (कविन)
 मुरनी मुरचग बग छीन 'द्विज राम ताव
 मग के मग्गान मार मार के भगाउगी ।
 धर श्रवीर की म धमक पुमि धमकी र
 श्रौवक गुताम है की हाथ गन् ताऊगी ।

केसर की कीच म करूगी बरजोरी घेर,
ऊपर गुलाल लाल भागी भर नाऊंगी ।
गोकुल गली म भली भाति सा अलीरी आज
नद के लला का लली कर्कें नचाऊंगी ॥

नेत्र वगन

तमन तुग्गम ते चीगुनी चलाकी चाहि
चातिव को चूक मति चकिन चितरे री ।
मीन गन द्वार मृग बारे द्विजगम हून
काम हू विभाग गन जान कर चरे गी ।
मारे मुख चितन क गारे है गुमान पग
प्यार मन-भौंग के सुधारे कज हर री ।
अजन ते वार य निहार चतुगारे वीर,
नाज भरे भार कजगारे नन तेर री ॥

नृसिंह वीर

प्रगण्ठी प्रचड रन भिग्व का भीपम मौ,
वान वर अजुन मौ भीम रन वीर मौ ।
पूरी पज पारव का राम द्विजराज जमौ
भारी गिरि मर मौ नागर गभीर सौ ।
तेज पूज वामव की पूत पुरहून जमौ
वीरत की चर सौ अमर राज नीरसौ ।
विप्र-कुल भूपगा सुजान श्री नृसिंह वीर,
कचन वग्गिबे का हरन पर पीर मौ ॥

छलकी छग्या पूरी पज की पग्या,
गान खग्नन भरया श्री तरया रतिराज की ।
धीर की छग्या पर कारज कग्या
नाल लावन लरया श्री दरया मरु साज की ।
तीनन डरया पूर गव की अरया,
गड मवन पग्या श्री भरया भारी नाजकी ।
मिह मौ बहादुर रन भूमि ना टरया
अरि उतर फरया श्री मरया सन काज की ॥

६२-वाऊ गुलावनिह -य जाति के गुजर शत्रिय तथा महाराज
 यगवन्तसिंह के धाऊ थे। आपकी राज्य मरदारा म उच्चकाटि की प्रतिष्ठा थी।
 आप बडे काव्य प्रेमी तथा कविजना के आनर कता थे। आपन प्रेम मतसई
 नामकी पुस्तक लिखी है, जिमम १०५ दाह श्रयाक्ति के १०५ ग्राह नीनि के १०५
 ग्राह शृ गार के तथा ३०५ ग्राह शान्त गम के हैं। इम प्रकार यह ७५० दोहा की
 मतसई वही ही मुदर और उच्च काटि की पुस्तक है। कवि न श्रय की ममानि
 का समय गम प्रकार निग्या है -

पट जुग नद मुचन मम ज्यष्ट मुकल मुभ पच्छ ।
 द्विनिया मनि पूरन भई प्रम मनसई म्वच्छ ॥
 मनसई म बुद्ध ज्ञाहरण प्रम्नुन निये जात हैं -

श्रयाक्ति (ग्राहा)

गरी तना पूनी फली वमि वर उनम भाग ।
 श्रनी कती क्या दल मन यह नाकी नहि पाग ॥
 जाचन नहि धन मान प मुनन न ग्राटी वान ॥
 का मृग तन तप कियो, मुग माव नून गान ॥
 जा मूरज जाग कमन, गार चल् चकार ।
 हनें नार जा मोन का जाय वही किति टोर ॥
 सुवरन चाच मदाय के मानिक जुन पग दाय ।
 पग पख मानो नगे वाग हम नहि टाय ॥

नानि (ग्राहा)

बहुँ बहुँ छाट जा करन मा न बड त हाय ।
 तृपा रूप मारन सकन जम शिधु न जाय ॥
 नीनि सहित जो मूरता, माट जय की हन ।
 मुध्यो मगिया न्न मुग बिन मायी जिय नन ॥
 पन पूतन जुन एक तर बन की करन मुपाग ।
 ज्या भातुन मुन एक ही कुन की करन प्रकाग ॥

शृ गार (गान)

धार तर रगम तिन, चिन न लहत बहुँ चन ।
 चन्न चन्न चीनी, गय नग तुग नन ॥
 धर धार तू निटुन ३ नहि जानन पर पीर ।
 नरपत हा तर तिन, तिमि मछगे तिन नीर ॥

तरे बदन मयक को, मो मन भयो चकार ।
 रन दिना इक टक सदा लगी रहै तुव धार ॥
 वह चितवन वह चाल गत, वह मीठी बनरानि ।
 छिनहुँ न चिन त टरत है कम्बत निशि दिन आनि ॥

शाल्म रम (दाहा)

वारन की तू बार का नक न नायो वार ।
 मरी ही अब वार का की-हो कहा विचार ॥
 हरी करी की वर का नक न कानी वर ।
 कद का आस्तब्रत हूँ कपो न सुनत हौ टग ॥
 मुर मरिता के तीरवम कर हरि तन अनुराग ।
 बहु मायो खायो बहुत अबहू ता तू जाग ॥
 जग हरि म हरि जगत म, हरि विन काई नाहि ।
 ज्यो नभ मव मे वसन है मव नभ ही क माहि ॥

६३—काशीराम—य महाराज यशवर्तमिह के दरवार के प्रसिद्ध मरठार
 और जाति क ब्राह्मण थे। उनका जन्म गावधन म हुआ था। इन्हान सम्बत्
 १६२२ वि० म 'मनोहर गतक' नामक पुस्तक की रचना की जिनके गीपका म
 नीति गतक, शृ गार गतक गान्ति गतक, वारह खरी शात रस पद, श्लेष
 कवित्त और हाली आदि विषय उल्लेखनीय है। इनकी कविता हृदय स्पर्शनी एवं
 भाषा सरल सरम तथा लचीली है। इनकी कविता का पढ़कर यह निश्चय
 होता है कि य उच्च काटि क कवि थ। कविनाम्ना क उदाहरण प्रस्तुत
 किय जात हैं—

नीति गतक म (दोहा)

नृपति पाम लघु नरन की, छिनक न च्छिय वाम ।
 असत राहु जब च्छ का हान तज की नाम ॥
 नृपति जा मत्री हीन है छीन राज हू जाय ।
 विना नीम ऊँची मदन जिमि छिन माहि गिराय ॥
 पालन खाटे नरन को, लाग करी तिन रन ।
 वखन पर प फेरल ताना के म नन ॥

शृ गार गतक स (दाहा)

रनि ही थाई भाव है जाका कह्यो कपीन ।
 रम शृ गार मा जानिय कोत्रि निपुन नवीन ॥

नाकी उनपनि हान है मिनि विभाय अनुभाव ।
मात्रिक सचारी तहौ प्रकटन हान दुग्न ॥

प्रम कुहा उपज्यो मिच्यो सचिन प्रीनि ना भाय ।
ताप मान मनाप की किहु विधि मही न जाय ॥

त्रिदुआ वगन (दाहा)

द्विाक छिनक छुन छुन कर, विदुआ पग दरवार ।
मना जगायन मैन कौ, अन पुकार पुकार ॥

निनम्ब वगन (दोहा)

गान निनम्ब विराजई गार गजन गुजार ।
मना लखई भजि गई, उलटि दुदुभी डार ॥

लक वगन (दोहा)

लक लग नगी पानगी ननक छियाये हान ।
छुई मुई मम लचक क, कमचो मो लफ जान ॥

सयोग वगन (दाहा)

दग्म परम वनगन मा दपति जा मुख होत ।
ग्म गभाग तामा कहन, सकन कविन के मोत ॥

उदाहरण (दाहा)

मिमकी भरि कमकी निपा ममका जव भरि अक ।
फिर फिर फिरकी मो फिर, फिर की ना परजक ॥

उद्वग वगन (दाहा)

पिय वियाग, घररात चिन, सगत न काहू ठौर ।
ताही का उद्वेग कहि लिख्यो कविन मिरमौर ॥

उदाहरण (दाहा)

इहु लगन त्रिदुव गगन, तारे कनक धारा ।
लगन जिना बनवीर क मय मियाग जगार ॥

गान गनक (दाहा)

धरे मूठ यह पुष मों, दई नई नर नह ।
त्याग सकन मद मोह का हरि पद सा कर नह ॥

जम पुनगी काठ की नचन नार के माय ।
गन ही नर नवन है, काल करम क हाय ॥

य नारी ना नाहरी, लगन प्राण हर नन ।
बापिन सा बच जाग गर, नारी बचन न नन ॥

बारह खरी (दाहा)

कक्का कमला पति कुमार, कसना निधि धनश्याम ।
 निसि दिन मन रटिबौ करो छाँडि सकल मद काम ॥
 खखा खर दूपण हयो खगपति प असवार ।
 आनद क द मुक द को भज मन बारम्बार ॥
 गगा गिरिवर धारियी गानी ग्वाल बुलाय ।
 गव गारि पुरहूत कौ, लीनी ब्रजहि बचाय ॥

फुटकर

पापर कहत ता सौ पूरी कर आम मेरा
 मोमन कचोरी घर धीर न धराय ते ।
 तूहे पकौरी तो सो बडी सी खताई भई
 पायी ह कछु बसार प्रीतम पराय ते ।
 बस खडी है खाया मुकरन मनाहर माहि
 नाही गौदी सी कहा होत घवगय त ।
 कहत है समासे खजला के सब बराबरी के,
 गुप चुप रही जी कहा बानन बनाय ते ॥

बधो रूप मरिता म मीन मीन केतु के स,
 बधो आन कजन म कजन बिराजे य ।
 बधो लाल रंगम क जाल मध्य मजन युग,
 बधो विधि वारीगर तीखे सर साजे य ।
 बधो हम अधन मे हीरा मनोहर है,
 बधो रूप वाटिका मनरगम छवि द्याजे ये ।
 बधा नौबतार सीप मुक्ता उगल रही,
 लाचन तिहारे प्यार सुखके ममाजे ये ॥

माना कनसाहे कलधोन क सुधा सा भरे
 मानों य खिलोना द्व मनमथ के ह्याल के ।
 माना फून कज उर उलट घरे हैं विधि,
 माना युग चकवा हैं सुखमा सुनाल के ।
 माना बिब दाडिग लिय हैं बाल बारी बम
 माना फल गामिन है नरनी तमाल के ।
 मानों हम दुदुभी धरी हैं विधि घोड़ेकर
 थीफन मनाहर हैं जोवन रसाल के ॥

६४—शोभाराम—ये भरतपुर में ग्रहीर जाति में उत्पन्न हुए थे और पलटन में नौकरी करते थे। इनका कविता काल स० १६२० वि० से सवत् १६६७ वि० तक रहा। गापन अपने समय में भरतपुर में कविता की धूम मचादी थी। ये एक बड़े कवि मंडल का मण्डलेश्वर थे। कवित्त लावनी और रयालो का मखाडा उनके स्थान मण्डलवद दरवाजे सोधी वाली बगीची पर हर समय जुडा रहता था। इनके पास दूर २ से कविता अभी एक कवि गण आते रहत थे। इन्होंने हजारों कविता की रचना की है। आज भी भरतपुर में कितने ही प्रौढ और वृद्ध पुरपो को इनके अनेक छंद कठाग्र हैं। इनकी रचनाओं के संग्रह का प्रयास किया जा रहा है। इनकी रचनाओं में ७ पुस्तक बतलाई जाती है— (१) गौरी मंगल और (२) हनुमानाष्टक। विविध विषयों पर लिखे हुए इनके अनेक छन्द बहुत ही भाव पूर्ण हैं। इनकी भाषा मखड़ी वाली की भलक दिखाई देती है जा हिन्दी उद्गम मिश्रित मुहावरेदार तथा रमली है। उदाहरण स्वरूप इनके कुछ छन्द प्रस्तुत किये जात हैं—

कवित्त

आगरी अठारह ब्रज वारह कोम मधुपुरी
 गोवरधन ग्यारह वृष्ण दूवत न उबारी है।
 माठ कास जयपुर आठ कास नदवई,
 लिन भर को रस्ता बर ब्यानी ही मुखारी है।
 चल ती चौकस चौवीस काम गापानगड
 पाम है पहाडी आग अलवर तिजारी है।
 गुरुन की सहारी कहै गाभा मतवारी इह
 भयो है उजारी रहवौ भरतपुर हमारी है॥
 करके करियाद बरवाद हुआ बरमा स,
 खाना ना मुहाता भूख भागी परेमानी त।
 मुनता नहीं अग्रजी क्या मरजी है याग तरी
 किया नहीं त्यार कभी हम कर महग्वानी त।
 'गोभा समभाव इक तेरा सताव रहम
 तुभका नहीं आव मुझे खाया जिदगानी तें।
 हाल तुभमे नहीं छानी सही बडी परमानी
 एरे दिल जानी। मेरे दिल की न जानी तें॥
 एरे लिल जानी। मेरे दिल की न जानी
 लगन तुभमे लगानी सही हमन परेमानी है।

तू है लामानी बात तगी पहिचाना,
 कर अपनी मनमानी भाह मो प हाय तानी है ।
 'गोभा कह समानी इश्क आतिग भ लानी
 वहै चदमा स पानी पर ता भी ना बुभानी है ।
 हुआ है बरानी कहूँ कहा तब कहानी
 हाय मैं नही जानी नह मोन की निमानी है ॥

ललित किमारी गोरी भारी सखियान सग
 अग अग आम क अनग न कला करी ।
 थारी बस गारी और आढि सुरग सारी
 मजके सिंगार नारि आई है अग भरी ।
 सग क मगान आन शाभा मुजान काह
 घेरि बनितान लूट अधि की मदा करा ।
 दिखाय कमर लाचरी चढा भौह बाकरी,
 सु माकरी गली म प्यारी हा करी न नाकरी ।

लूटा खूब दक्खिन का आया दौर जपुर का
 छोडा डेड चहर जलाया नग जाही का ।
 तोडा दरगाजा फील हूल के हठीले भूप,
 आया माफ जीत क न लाया खोफ काही का ।
 'गाभा बर बाप का तिसाला था जवाहर न,
 लूटा खुद जाय क घराना या आही का ।
 तिल्लो नगरे चग मगरे पुकार लोग
 लोहा नगरे का यारा गजब खुदाई का ॥

(हनुमानाष्टक म)

हम दुख दहि ताहि श्रुष्टि हू मा भृष्ट करी
 भृष्ट बुद्धि नीच नाहि जानत पर पीर की ।
 मेरे ही इष्ट तो मुगदरन सा मार डारी
 नखन विगार करी किरचें सरीर की ।
 'गाभा का सताव ताके दावी क्या न कठ आय
 स्वाम का घुनाय गपथ अजनी क छीर की ।
 ठाकरन मारि कें उडाय जो न देहु ताहि,
 कमरी कुमार ताहि टुहाई गधुवीर नी ॥

६५—रावराजा अजीतसिंह—महाकवि रमानन्द के अस्त होने के अनन्तर भरतपुर राज्यात्गत श्री भाषा काव्यमृज्जुन का भ्रष्ट रावराजा अजीतसिंह ने उठाया। ये भरतपुर राज्यवश में उपद्रव हुए थे और उच्चकोटि के भक्त कवि थे। ये 'कृष्णनामि' तथा 'अजीत' उपनामा में रचनाएँ किया करते थे। इन्होंने 'वृंदावनानन्द रमादीपन मह पद नामक ग्रंथ में अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

वदनस सुपुत्र जु मूजमल सुत नामु भयो रनजीत है।
 भौ सिंह लक्ष्मण नामु क भइ नामु हरिपद प्रीति है॥
 तिनकें भए उमरावसिंह अजीत सुत हर ताई क।
 'कृष्णनामि' स्व छापपरि, विष महत्वद रम दाइ क॥

कुण्डलिया

प्यागी गिय मुरमरि जमुन सरस्वती अनुराग।
 वृंदावन गमिकन हिये नित ही रहत प्रयाग॥
 नित ही रहत प्रयाग वही नर गुनन त्रिवेनी।
 मुनि मन मजन करन हारिअनि हां सुख दनी॥
 कृष्ण पक्ष वर मकर नाम तिनि अपि जुभकारी।
 हरि गिव द्रग निवि चद्र वप भल हिम ऋतु प्यागी॥

(दाहा)

जमुना तट वृंदाविपिन कुवर्गि विशारी कुज।
 'कृष्णनामि' की बाम तहाँ लपति जुगल छवि पुज॥

उपयुक्त पद्या से स्पष्ट है कि अजीतसिंह उमरावसिंह के पुत्र थे, जिनको भरतपुर राज्यराज में रावराजा की उपाधि प्राप्त थी। ये वृंदावन रहा करते थे इसी कारण इनके वंशज अब तक वृंदावन जाने रावजी कहे जाते हैं। इन्होंने सरल, सरम एवं सुमधुर ब्रज भाषा में पद रचना की है। इनकी काव्य शाली दो भागों में विभक्त हो सकती है—प्रथम श्रेणी में वह रचनाएँ आती हैं जिनमें वृद्ध ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार की रचनाओं का समकालीन भारते दुःहरिचन्द्र न भी अपनी कृतियाँ में यत्र तत्र उद्धृत किया है। ऐसे अनेक पदाँ में से एक यह है—

गाथा मखी कुञ्ज बेलि रम गीत।

× × जीत रहत अजीत॥

दूसरी शाली वह है जिसका इन्होंने वृंदावन निवासी ललित विशारी का अनुसरण करत हुए अपनाया है क्योंकि ये ललित विशारी का गुम्बद मानते थे। अन्वय नित विशारी के इस पद्य का—

अरे मल्लाह बे जालिम, हम मभधार क्या बार ।
 लगादे पार किशती को वृथा क्या वादवा जोर ॥
 जग बली लगा जालिम यहा जल बहुत हिल्लोर ।
 ललित किशारी गुन मान निठुर क्या हैम बं मुग्न मार ॥

कितनी सुन्दरता मे अनुसरण किया है —

अरे मल्लाह तां किशती हमे उस पार जाना है ।
 बताना राह उस जांकी, जहा वेदद बान्हा ह ॥

अब तक रावराजा अजीतसिंह के ३ ग्रंथ प्राप्त हा सके है सम्भवत और भी रचनाएँ हो । इनकी रचनाओ स उदाहरण प्रस्तुत है —

(१) वृंदावन रमोद्वीपन महत्कद — (इस पुस्तक मे केवल कडका छंद का प्रयोग हुआ है)

जयति ज जयति ज जयति ज राधिका स्वामिनी सकल ब्रज यूथ नागी
 जयति वृंदा विपन रुचिर जमुना पुलिन सुखद चित्त हरन नित बहन वारी
 देव सुकदेव श्री सारदा शेष शिव कहत वृंदा विपन सोभ लाज
 काम मद कोह दुख द्रोह लोभादि सब देपि बनसी बदुर दूर भाज
 वसों वृंदा विपुन लपो नित जुगल छवि मदीं पहन बल सुख बढी रासी
 दीन अति हीन अब यही विनती करत राधिका श्याम धन 'कृष्ण दामी'

(२) विनय शतक — इसम राधा कृष्ण मन्व वी उगामना अनक गग
 गगिनिया म बरण की है —

राग विभाग

मरी लाज नाथ अब आपहि ।

तात मात सुर बधु न कोऊ तुमहि हरहु भव तापहि ॥
 माहि समान निहुँ लाक पतित अरु कोऊ सुया न हेरयो ।
 तुमहि पतित पावन निगमागम अधम उधारन टरयो ॥
 माहि अधमाधम पतित तुच्छ अति समभ सरण प्रभु दीज ।
 मुरनर मुनि स्वारथी सकल काड परमारिय न पनीज ॥
 तुम सिबाय और न हरि काऊ जो भव दुख मिटाव ।
 कृष्ण दामि मामे पतितहि प्रभु तुम विन कौन तिराव ॥

राग मालकाम्

काह का भटकत मन बीरे तवन तो घोरज राख ।
 कृपा मिध वृज राज श्याम कौ बरि भरोम नजि माव ॥
 द हैं तोहि निराइ दयानिधि तेरी केतिक बान ।
 त्याग न्यि बटु अधम कृष्ण करि तू फिरि क्या घवरात ॥

'कृष्ण दामि' की बात हाथ तुव सकल भानि मापाल ।
 घ्राये मग्ग माहि रामे जिम राखहु मोहि दयाल ॥
 गग निपु नग्गी

जुगल कृपा भयो मनक यह पूरण ।
 नाना संश्रत व्याघ्र नमान घायो चटपटी नान मु-चूरण ।
 मुनत पत्त रति होहि निरनग राधा कृष्ण चंद्र पद पकज ।
 जिनको नानि करत भव नारद मनकादिक मुनि नेप तेव अज ॥
 मान ता वेद निधि चदा माम तिभूत श्याम पख नीक ।
 तिथि मु प्राण भृगु प्रागर मुन्दर पत समय मुख दायक ठीक ॥
 'कृष्ण दामि' यह दीन विनय में पनि मम कीनी जुगल निहार ।
 बुध जन मोघ कृपा करि लीजो घन जानि मोहि छिद्र सब खोर ॥
 जुगल विमोर विनय यह मोगे यही सब विष जो की घाम ।
 भव दुख भेटि चरण गति तीजे गरण राखिय श्री वनराम ॥

(३) द्वादशाश्वरी — इस अर्थ में बागह खरी के क्रम में राम चरित्र का वर्णन किया है । अर्थ कविया न भी बागह खरी लिखी हैं किन्तु उन्होंने प्रत्येक अध्याय का १२ मायाया महि लेकर नहीं लिखा है ।

निया राम पत्त यदि पुनि श्री गुरु पद मिग्नाय ।
 राम चरित-बागह खरी धरती मनि राम गाय ॥

करी प्रायना बिधि कर जागी ।
 हरि महि भार चरि यह तागी ॥
 बागज करि हा भई नम जानी ।
 धीरज धरि विध महि मन मानी ॥
 विरपल जिम धन ल मुख लहही ।
 एम प्रथी उर मुख अह ही ॥
 कीनि मान दगख है राजा ।
 अत्रध पुनी क माहि विराजा ॥

ठिठर मनहुँ मीन क मार ।
 एतनहि मुनि बगिष्ठ पगधारे ॥
 ठीक बचन कहि कहि मुनि जानी ।
 वह विधि ममुभाट मव गती ।

दुसरे दुसर गेरहि सजर जन ।
मुनिवर चार बुलाये सुत्र मन ॥
ठूठा कहि कहि चरन बुभाई ।
लावहु जाय भगत दाऊ भाई ॥

न गुण अमित मटा मुखिरानी ।
भाप बुधि सम वृष्ण सुटामी ॥

क सा न ला बारह यरी क्रमसा कही विचित्र ।
मानान युत अक सब दरग्या राम चरित्र ॥
राम कथा गिस्तार बड जम मत तम कहि गाय ।
काय चूक जह हाय जो लीजा गुनी गनाय ॥

सवत ग्रह गुण निद्धि प्रभु शुभ आयक सुख खान ।
दुनिया आचारण माम निधि अमित सु पाडा जान ॥

६६-रामधुन —य क्षत्रिय कुल म उत्पन्न हुए थे और भरतपुर निवासी जयकिसन के पुत्र थे । काय प्रमी हाने के साथ ० आपका ज्यानिप तथा बचक से भी प्रेम था । य व्यापार द्वारा जीवन निवाह करत थे । इनका कविता-काल स० १६२५ वि० माना जाता है । उदाहरणार्थ छंद प्रस्तुत है —

कवित्त

मम मन्म मेत भान वृष इन्दु वन माल,
मिथुन त्रिसूल गुन कक बरद छाया हैं ।
मिह तन बिछोना गिरि कया की छोना तुल,
वृच्छिक विनेण धन राम चित्त लाये है ।
मकर मन मनारथ पुजाव ऋषि ध्यावें
ब्रह्मन करन तान गगाधर भाय है ।
बुभ गज घानन प मीन मन कज धरे,
गमि मिनि बारह गनम गुन गाय ह ॥

६७-रामद्विज —य जाति के ब्राह्मण थे और घनस्याम तथा शाभा राम प्राप्ति कविया क अम्बाडा म कविता पाठ किया करत थे । इनका कविता काल १६२५ वि० है । उदाहरण प्रस्तुत हैं —

कवित्त

छूम छूम छुमक छवीनी छत्रि छप छप
 धप धप धारत धरा प पग दीगन ।
 लट पट लटक मु उग्गौ मटक अग,
 मपटत चाल नटनागर त नौगुने ।
 भूमन के भार सा सिगार क मजे हैं गात,
 वान ते विमेव जाके बल बड मौगुने ।
 'राम द्विज' भनत तिहारो रघुराज बाज
 चचला ते चपल चनाकी चाल चौगुन ॥

दाहा

कर गहि ना मरदन करी, कछु न निकर सार ।
 यह मिमकागी पीउ की, पाय न ठूजी वार ॥
 चूरो भजन मतकर, ह गवार मनहार ।
 के मिसकी पिउ मज प क मिमकी यह वार ॥

पान क पिदार माल ऊची मी दुवान बठी
 आमिन म पठी कर वानन अडाके की ।
 पानन मा पान मल आमिकन का पान देत,
 सिसविन समेत फाल फारन बडाके की ।
 कहे द्विज राम करि मुरमा सा पनी दीठ
 सूरमा ला मार मार मल क मडाक की ।
 बानन अमानिन माल न विमात मोहि,
 मय तक ताल म तमानन तटाके की ॥

६८—पीर —य भरतपुर निवामी नन्नूगम ब्रह्मभट्ट के सुपुत्र थे आर काव्य रचना द्वारा जीविका उपाजन करते थे । इनके विविध विषया क छत्र पाये जाते हैं । इनकी भाषा टकनानी, उद्गू हिंदी मिश्रित मुहाबरेदार तथा लचीली है । इनका कविता काल सम्बत् १९३० वि० ठहरता है । उपाहरण प्रस्तुत हैं —

कवित्त

माना महनाय मा मिला है क्या जमो पे दग्ग,
 जिम पर जुलूम एक ददा बुलन्द है ।
 गिबदि अम्बार सा चुनाच हार गौहर का
 गुचे गुर्मा का दम्न लडुआ पनाद है ।

पीर बग मान या चराव न्व पूजा कर
 तत हा नाम टन आफन हा फर है ।
 हुमा है न हागा वग न अफना मन ।
 जरा मगराना हाज रा फर है ॥

मार्त मग मेज प नवना प्रह ।नापत
 तीवी पात नाहन नाद मोज गागा की ।
 मन मन जघन गुजा म भुजा लाय नाय
 कान्ही कलि कुज म अनौवी वान भावा नी ।
 पी-नी भाति मा जाह अनमार नार,
 कुच ग नान ग्य भाभा वहे वा ना की ।
 मनी न्य राग वीव जउन वनार मम
 मर अनाम नगा है चाच नाना रा ॥
 सदग

आदि अरु मु अरि काइ तिन रा लुसोट भय है ।
 पीर पक गुल्काव विनावन गगा गुलाव मिनाव छय है ।
 जाउन जास नरगिन क रग मव मिगेफल आन छय है ।
 कामिनि क कुच कचन मोट म जाना नय नरि तोना नय है ॥

६६—हरिनारायण —य वर क निवासी और जाति क जाट थ मित्तु
 ठाकुर कहनात थ । आा आग कवि थे और प्राय ग्याल लावनी तथा मरहटी
 (मरठी) आदि तुग्ल वनाकर मुनाया करत थ । व्हाने कविता म अपना नाम
 हरिनार ना प्रयाग किा है । फुलकर छटा क अनिरिक्त इनक तीन ग्रथ प्राप्त
 हुए है —(१) रविमगी मगल (२) भरतपुर युद्ध और (३) रमिक भनात्सव ।
 रविमगी मगल बडा ले चक ग्रथ है । इसकी भाषा भरम सानुग्राम और प्राजन
 है । इसम कर्मग रम का बडा हा सुत्तर प्रवाह मिलता है । इसका रचना काल
 माघ शुद्धा ६ मं १६ = वि० है । इस ग्रथ की क्या द्वारा दूर २ क पडित आज
 तक जाकिव उपाजन करत हैं । इसम काई मदह नही कि ठाकुर हरिनारायण अपन
 ममय क मरम एव प्रतिभावान कवि थ । आपका कविता काल सवन् १६३० वि०
 क आस पाम माना जाता है । इनका कनिषय रचनाण प्रस्तुत की जाती है —

रविमगी मगल

मून मीनकालिकन मा कहिय सुकथा प्रमग ।
 हरिनगन हरि जनन प्रति वरनी भक्ति उमग ॥

दाम क्या मनि जया करि भाषा करि हरिन्द ।
 क्या रविमणी हरण का लीला गुण गावित् ॥

गा भभाठी

हर उठे नाच मुनि प्राय आज रछे वर भाग हमार ।
 दरमने लिय दीय हमरू मुर माहन मुर मृदु प्रचन उचार ॥
 गनि मखन मरम जम निमल गावन रवि राम क धार ।
 रनागावन प करि कया दि नरग आ यर पगार ॥

गग आशागर

बान्हा उहा नव तुम विन गनी कहन गीने गग ।
 भापम नपनि मुना तन गाभा नरग भाग मुहाग ॥
 साप्रवनी प्रवमान मयानी वृष्ण तुम्हारी माग ।
 श्री रगत कुमर मू कहि मुनि प्रम गीना गग ॥

छ

कह स्वम जनक मलीन जुद्धो, वृद्ध अति दुर्मनि उव ।
 अधि चारि घर घर नचन नाहू निज मुना रू उर तक ।
 जा पूतना घाती निपानी मात ब्राता छतरता ।
 पर निपन क हरि चार प्रमुना इति गाकृत मनमता ॥

रन जग मिथु मरग आग भज गया द्वागमती ।
 कुविजा परम प्रिय जामु स्वमनि उर कहै पितु उधुमी ।
 सनद प्रम विन्द सम मा कीजिय यह नीति ।
 परि रहै जिन नरन का नित नित महा विपरीति ॥

गग मरहठी

दग दूखी दरस विन दख नागर नट के ।
 मून टर थवन रथ फेरि लपन घट घट के ।
 मैं नारद के मुख मुनी तव वृद्ध घनेरे ।
 जब त हरि मुखा स्याम बस मन मेरे ॥
 कुदनपुर म भय दुष्ट विकट दुहै भेरे ।
 मम साक निमिरि भजन करि जगत उजेरे ॥
 निस कष्ट सहाई मम घू घट की पटके । दग दुखी ० ॥

राग मरहठी

बनी एक जोगिन अलवेली, डालि गल फटकि माल सेली । टेक ।

पहर लीय कुण्डल कानन म सीस तिरपु ड अलख मनम ।

जुगल जादू जुग नननि मे, लगी है भस्म सकल तन म ॥

पूगी नाद बजाइ क, भिक्ष्या करन जाइ ।

मत्र मोहिनी डारिक सज्जन लिये बुलाइ ॥

नाथ गुरु पूरे की चेली ॥ बनी० ॥१॥

आडि मृग चम चद्र वदनी मदन अल मस्ती रति रमनी ।

करन कमनेनी चोट घनी, भगोये भेष वमन कफनी ॥

द्वार्ई द्वार मुनावतो पूगी स्वाल सुजान ।

दरसन देखन रमिक जन, बहुत फिरे हैरान ॥

किने जोगिन त वाद खेली ॥ बनी० ॥२॥

कूबरी करन घन प्यारी नागिनी लटका लट कारी ।

कोलनी नागिन पर डारी किये निज बस म नर नारी ॥

देश कामरू पढी, बिद्या वीर बताल ।

मूर्छित भोगी बस किये जागीन केरे जाल ॥

भुखनी बसीकरण पत्नी ॥ बनी० ॥

घर ही घर खप्पर भरवाता जरी जतर करि २ जाती ।

चपल चपला सी चहचाती, प्रघट सयस्तिन गुण गाती ॥

तप का भूरति जागिनी ठगिनी सकल जहान ।

दरसन देखन भटवत हरिनरान क प्रान ॥

नाथ गुरु पूरे की चेली ॥ बनी० ॥

दोहा

य शुभ क्या विवाह करि श्रवण परीक्षन भूप ।

पहुचि द्वारिका करत हरि, नित नव चरित अनूप ॥

छंद

पहुचे निवट हरि द्वारिका तिय नरन मारग भरि रहे ।

घारत नगर म बग बगर घर घर जगर भग करि रहे ॥

द्वारन कलग भाभिन पताका देहरिन मणि खचित है ।

भागिक भिलिल मिल चौक आँगन अमित रूप गुण रचित है ॥

दोहा

जबत आई स्वमिनी महलन जगमग जोति ।

रिडि मिडि उमुख गृह नित निरतर हानि ॥

कवित्त

जावन अनग अग अगन तरग उठ
मीमता सुहाग भाग सुन्दर रतीमी है ।
मुधाके समुद्र म मरौज कली कोमल सी
गिली मित रग अति लव पतलीसी है ।
'हग्नि' नदन प्रवीण मन मोल रतन
मधुर मुख बोली कर अमृत भरीमी है ।
रग ऊजगीमी गील माच ढरीसी हरि,
कचन छरीसी न परमी न परसी नरीमी है ॥

भरतपुर युद्ध

डीग भरपुर वर विकट बाकी ब्रज भूमि राजधानी ।
हा फिरट अग्र जा म अडवगी नृपति जग ठानी ॥
कलकत्त की अठवामल म नित होती बतकही सही ।
हि दुतान मे किला भरतपुर उम सरकी काई और नही ।
छोन छोन कर जाग जुल्म कई राजा की ले लई मही ।
लूटी भगी वात्गाही अब दिल्ली म क्या खाक रही ॥
कई कराह मसूर अली से रूपे लिये जग न जानी ।
हा फिरट अग्र जा

फिर वाला अग्रजे कंपनी का इकवाल सदा का है ।
लट्मे म सर कर लगे प्रडवीला जाट कहा का है ।
द मूछा प ताव कहे स्योमिह हिल का नाका है ।
मान हमारा कहा लव मन लड भरतपुर बाका है ॥
जव वाला अग्रजे तुम्हारे मौत सीस पर मडरानी ।
हा फिरट अग्र जो

नोक नार से जुरे मोरिच जगी ताप जजीर चन ।
धुआ घन घुमड बढ़ल म प्रनय काल क सवदले ।
गुध्वारे गाल वज्जर वे तीर तमचे चले भने ।
शक्ति तूल-तलवार हजारा बार सूत्र मम्मुर भेल ॥
गढ म बाहर निकल लड जहाकी मना मरदानी ।
हा फिरट अग्र जा से अडवगी नृपति जग ठानी ॥
नक फिरगी आगे नृ ने खन लिख भेजा पारा है ।
त हल्ला नह किये याग अब के इक बार हमारा है ।

राग मरहठी

वनी एक जोगिन अलवेली, डालि गल फटकि माल सेली ।टेका।

पहर लीय बुण्डल वानन म सीस तिरपु ड अलख मनम ।

जुगल जानू जुग नननि म, लगी है भस्म सकल तन म ॥

पूगी नाद बजाइ क, भिदया करल जाइ ।

मन मोहिनी डारिक सज्जन लिये बुलाइ ॥

नाथ गुरु पूरे की चेनी ॥ वनी० ॥१॥

श्रोद्धि मृग चम चन्द्र वदनी मदन अल मस्ती रनि रमनी ।

करन कमनेती चाट घनी, भगीय भेष वमन कफनी ॥

द्वारई द्वार सुनायती पूगी म्बाल सुजान ।

दरसन देखन रसिक जन, बहुत फिरे हैरान ॥

कित जोगिन ते बाद खेली ॥ वनी० ॥२॥

कूबरी करन घग्गन प्यारी नागिनी लटका लटकारी ।

कीलनी नागिन पर डारी किये निज बस मनर नारी ॥

देग कामरू पत्नी, ब्रिद्या वीर बताल ।

मूर्छित भागी वम किये जागीन केरे जाल ॥

भुग्कनी बसोकरण पली ॥ वनी० ॥

घर ही घर खप्पर भरवाती जरा जतर करि २ जाती ।

चपल चपला सी चहचाती, प्रघट सयस्तिन गुण गाती ॥

तप की मूरति जागिनी ठगिनी सकल जहान ।

दग्मन दग्वन भक्वत हरिनरान क प्रात ॥

नाथ गुरु पूरे की खेली ॥ वनी० ॥

दोहा

य शुभ क्या प्रियाह करि श्रवण परीक्षत भूप ।

पहुचि द्वागिका करत हरि, नित नव चरिन अनूप ॥

छंद

पट्टचे निबट हरि द्वागिका तिय नरन मारग भरि रहे ।

घारत नगर म बग बगर घर घर जगर मग करि रहे ॥

द्वारन बलग माभित पनाका देहरिन मणि खचित हैं ।

माणिक भिलिल मिल चौक आंगन अमित रूप गुण रचित हैं ॥

दाहा

जवत आई रवमिनी महनन जगमग जोनि ।

गिद्धि मिद्धि उमुन्व गृह नित निरनर हानि ॥

घर से निकले जट्ट बाहर से हुलकर धर ललकारा है ।

जिच्च फिरगी किया जाय दस घोस पडा सोई हारा है ॥

श्री महाराज रनजीत सिंह मू छन रग रही रजपूतानी ।

हो फिरट अग्रजेज ॥

अठारह स साठ की साल मे साका हुआ बडा भारा ।

हार गया अग्रजेज नृपत जीता रनजीत सिंह प्यारा ।

जमना पार उतारे गोरे डोबे किने तेग धारा ।

रमाल गिरि या कहै श्री ब्रजपति नरेण जस विसतारा ॥

हरनारायन मर्णे क साथे गावें मुन नानी ध्यानी ।

हा फिरट अग्रजेज ॥

१००—रामदयाल—ये सामवर्गीय क्षत्री मातीराम के सुपुत्र और भरतपुर निवासी थे । इनका जन्म सवत् १६०१ वि० तथा निधन १६५७ वि० मे हुआ । इनका केवल एक छन्द इनके सुपुत्र बल्लभराम से प्राप्त हुआ है, शेष साहित्य नष्ट भ्रष्ट हो गया बताया जाता है । इनका कविता-काल स० १६३० वि० ठहरता है ।

कवित्त

सेसा मे महसा से नारद हू मगन रहै,

मनक सनत्न सु नाम सो लगे रहै ।

बान्मीक पास सुक ब्रह्मा हू धरें ध्यान,

मारवण्डे भुमुड हू सदा उर म धरे रहै ।

नामम मुनि गौतम बमिष्ठ विश्वामिन

सूत बालसिल्य हनु सिव हू जगे रहै ।

नाम त्व दाहू कवीर सूर राम धरन

गम मरन रामदयाल भी खडे रहै ॥

१०१—साधूराम—ये कुम्हार निवासी गगाराम के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे । इनका कविता-काल सवत् १६३० से १६५० वि० तक ठहरता है । इनके रचित कुम्हार छन्द पाय जाते है जिनमे से कतिपय प्रस्तुत हैं—

कवित्त

सूम भूम धाय धाय वरमें फुहारन त

सीतन पवन मनु मद चन पारी है ।

गरजें घन घोर घोर मारा मचावें सार
छाई बन वागन बहु भातिन बहारी है ।
चहक चिरयाँ नदी नारन प बोल रही
तालन पै काकिल की कूक लग प्यारी है ।
मरन प मिधुन प छाई छवि साधू राम',
पावस की सोभा म्याम रग अनिधारी है ॥

हाथ नहीं पाव नहीं पर नहीं पूछ नहीं
मानम की माम खाव किन कही जावना ।
मन म मगन रहै जान वह कहा रहै
देवी ना किमी न फूने अगहू ममावना ।
वाटर मन जानौ दीजौ ज्वाव हुगियारी मू
'साधू मा विचार साचे छन्द क्यों बनावैना ।
दगल म आरै ह्याल मेर पर लाव बाना
छाड घर जाव गनी बान क्या बतावना ॥

१०२—दिगंबर—ये शाभागम क अखाडे क कविया म स हैं । विशेष खोज करन पर भी इनका वृत्त नहीं जान हा सका है । इनका कविता-काल स० १६३० स १६५७ वि० तक है । उदाहरण स्वल्प इनकी एक रचना प्रस्तुत की जाती है—

कवित्त

निक्स गय हाकम हुकम के करन हार
हाली श्री मवाना र हू अलग सडे रह ।
आछे आछे महलन म परदा जडे वाफना के,
खास खास पलगन प तविया घर रहे ।
गज तुर्ग मूरबीर चन्न जावे भाल,
श्रीर तापकखान त अलग डर रह ।
तजो दह-अवर 'दिगंबर पमान कियो,
शामन विभूत के म वामन पडे रह ॥

१०३—गगावन्ध—ये भरतपुर निवासी सीताराम के सुपुत्र श्रीर जानि क ग्राह्यण थे । इनका कविता-काल स० १६३० से १६५७ वि० तक ठहरता है । इनके

केवल दो ग्रन्थ उपलब्ध हो सके हैं — (१) अद्भुत रामायण और (२) महिम्न का भाषानुवाद इनके अतिरिक्त राधा कृष्ण विषय छोटी २ सीलाएँ भी पाई जाती हैं। इनकी रचनाओं से यह स्पष्ट है कि ये साधारण थोड़ी के कवि थे क्योंकि इनके छन्दों की गति में प्रवाह का अभाव पाया जाता है। उदाहरण देखिये —

उद नोमर

नख दीध ग्रीवा सोय, दीध माथ चण जाय ।
 बहु मुख पीरे नन, कोई मित्त बटव हत्र ।
 हुण वही कण बखान, महाबल पराक्रमी जान ।
 सा है असाखन बार आन प्रन की ममीर ।
 ऐसे जा गगा गाय, घट जाल नाद बजाय ।
 कोटिन विक्कित आकार सब युद्ध में हैं भार ।
 है ग्रीव म्वातल वीर पिगाक्ष जा है सरीर ।
 काटिन सु वीरहि जान कसी जा वानी मान ।

महिम्न भाषा कु डलिया

विजय नाम सम्भत प्रगट, गुनी नौ अडतीस ।
 भास भाद्रपद ाप ऋतु सुक्लपक्ष बदीस ।
 मुक्लपक्ष वनीम बंद पान तिथि को ईसा ।
 सा तिथि दसमी जान, बार मनि घटि चालीमा ।
 मूल नाम नक्षत्र आयुष्मान दीसा ।
 धृत वप मुजान, जो यह रच्यो कानीमा ॥

१०४—ठाकुरलाल—इनका जन्म सम्बत् १९०२ वि० में नन्दग्राम निवासी प० प्राणमुख के यहाँ हुआ था। आन आन नाना प० हराराम बटारे के पोत्र राव हरनारायण के पास कामा में आकर रहने लगे। शिक्षा पूर्ण होने पर ये शिक्षा विभाग में कामा के प्रधान अध्यापक पद पर नियुक्त होकर अध्यापन का कार्य करने लगे। इनकी शेष आयु कामा में ही व्यतीत हुई। जहाँ इनके बच्चे अभी तक विद्यमान हैं। शिक्षा विभाग के तत्कालीन उच्चाधिकारी प० मयागकर से विगाड जाने पर इन्होंने उनसे सम्बन्धित एक कविता बनाकर सुनाया, जिस पर आसन हाकर कारई में उनका स्थानांतरण कर दिया गया। तत्कालीन शिक्षानिरीक्षक राममहाय को उन्होंने निम्नलिखित दावा लिख कर भेजा —

वित्त कामा वित्त, कारई, परयो विपति में आय ।
ठाकुर दास गिरीव की, करियो राम-सहाय ॥

इस दोहा के पहुँचते ही बाबू रामसहाय ने उह पुत्र कामा भेज दिया । कुछ दिन नोकरी करन के पश्चात् उन्होंने पेंशन ले ली और कामा के गोश्वामी बलनभावायजी के आश्रय में रहने लगे । आपनी रचनाओं के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं —

पावसु वर्णन
कवित्त

पीठ पीठ गटन पपीहा- निशि चामर है ।
घन घिरि आयो नभ मडल म छायो है ।

नाचत है बेकी कीर बाकिला प्रलापें तान,
थर हरात हियरा सार धनन भवायो है ।

सूम रही बली बन सषा लतान भाहि,
हाँक सुनि गदुर की । जियरा डरायो है ।

यह तो वरमात रहत बर साय जाकी,
जीवन जग ताकी सु जानें पिय पायो है ।

बरस रहे धारा धर धरा प धाय धाय,
चमचमात चरला चिन चाब की बढ़ावनी ।

दब घनघोर मार करे चहुँ ओर सोर,
बगुलन की प्राति बहु भाँति ललचावनी ।

प्रबल प्रवाह नदी नीर हू गभीर बहै,
सावन की रैन है मनोज सरसावनी ।

दरमत घटान का छम छमि माद भरी,
जीवन सुफन कियो पावस सुहावनी ।

उपदेश कवित्त

हिल मिल रहिये प्रबोधनमा आठा जाम,
कीजिये जो काम जाम जीव की आराम है ।

दीजिय दिगाई जाहि देवते की चाह होय,
लीजिये न नीच सग नाम बदनाम है ।

वहै द्विज ठाकुर समझ श्री विचार-दग,
गव श्री गुमान की रसया एव राम है ।

रूपसा रतनीशायी । जोवन, सौ घन पाप, - १ १
 ॥ ५३ ॥ - ताहक ॥ गमायबो गमारन की वाम है ॥

१०५-रामनारायण - इनके पिता का नाम भीकाराम था। ये जाति के ब्राह्मण तथा तहमील डींग के अंतर्गत-खाह, नामक-ग्राम के निवासी थे। ये बल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इनका रचा हुआ एक सुंदर ग्रंथ राधा-मंगल-नाम का मिलता है। इस ग्रंथ में श्री कृष्ण का श्री राधा के साथ विवाह होना बरान किया है। इसका रचना काल स० १६३३ वि० है। भाषा सरल सुबोध एवम् पाण्डित्य पूर्ण है। प्रत्येक बरान में इतनी कुशलता है कि चित्र सा खिच जाता है। इनकी कविता के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं -

नीत सरोरुह पर्याप्त काम ॥ सत काटि सजावत ॥ १ ॥
 अरुन वरुन चारिज समाप्त दृगे अति छवि पावत ।
 पीत वरन कटि बसन दसन दामिनी विनिदित ॥ २ ॥
 आनन अरुन उंदोत ज्याति राकी ससि निदित ।
 मन चोरत मुनि मुसक्यान मृदु नेति नेति श्रुति कहत नित ॥
 जन जान गुसाई रोम उर करहु ॥ घास नित हित सहित ॥

त्रिभगी

एक दिवस सूर्यानी जमुधा रानी । दधि मयवे कू आप लगी ।
 सुत कू पय प्याम गुन गुन गाम दूवे उफन ती देख भगी ॥
 नहि कृष्ण अधाये अति रिस छाये दधि मटकी के टूक किये ।
 मासन सो सायो सेस लुटाघी जब भय पायो भाग दिये ॥
 गोपी सो आई देखि रिसाई खोज खोज लख जात भई ।
 पकरन को धामे हाथ न आम तव मन में घबरात भई ॥
 माता पचिहारी कृष्ण विचारी जन हित कारी ठहर गये ।
 पकरयो कर जाके भौत रिसाक वाधन काजे दाम लिये ॥
 ओछी भई डारी बहुतक जोरी तवे मति भोरी होत भई ।
 तव प्रभु मुसकाए आप वेंधाए मोया के विस भूल गई ॥
 निज वाजि मिधारी इत बनवारी । मनम सोच विचार भले ।
 यो कहन गुसाई "रामनारायण" नल झवर के पास चले ॥

१०६-बालमुवद - यह जाति के तलङ्ग ब्राह्मण तथा कामा के निवासी थे। इनके पिता का नाम मुरलीधर था। यह कामा के श्री गानुलचंद्रमाजी के

गोस्वामी बल्लभलाल के आश्रय में रहते थे। इनका जन्म सम्बत् १६०५ वि० है। इन्होंने 'कामवन, महात्म' तथा 'सनातन धर्म-विजय' नामक लिखे हैं। इनका कविता काल १६३५ वि० ठहरता है। रचनाओं के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं—

गापीजन माही सब रूप देख मोहन को,
मृगी गन मोही सब मधुर सुर गान पिय गण ।।

वक्ष-स्यल 'दखि' प्रमोचित चंचल भयो
गाय सब मोही गोपाल लाल वान प ।। ११

भक्त सब मोहे प्रभू भक्त-वत्सलता देख,
देव सबे मोहे चार भुजों अर्भ दान प ।।

दल के मुकन्द चरनारविन्द मोहे सन ।
तीन लोक मोहे तेरी वासुरी की तान प ॥

सात दरवाजे और मन्दिर चौरासी जहाँ,
ऊँची एक महल सो प्रकट दिखान है ।।

अस्सी चार खम्भन की सख्या नहीं पूरी होत,
एक घट जात चाहे एक बड जात है ।।

विष्णु के मिहासन, चोगात्री वने ठौर ठौर
चरन-महबी यारी भोजन-सुहात है ।।

तीरथ चौरासी को राजा-प्रमलेश जहाँ
कामवत जात ताको काम बत जात है ॥

१०७-प्यारेलाल—ये अग्रवाल वर्धय और भरतपुर के रहने वाले थे। इनका मुख्य व्यवसाय हुकानदारी था। इनका स्वर्गवास सम्बत् १६७४ वि० के आस पास हुआ। इनका कविता काल १६३५ से १६६४ वि० तक माना जाता है। य धनस्याम के शिष्यों में से थे। इनकी कविता का एक छन्द प्रस्तुत किया जाता है—

घने घन। गुरजाध्याय मेघ और करी-लाय,
प्रीतल। समीर, बहै तीधत, यामिनी ।।

कोकिल। विलो। बरें मोर, बोलें नहें शर
कोप काम। शायो जी-अकली जान-यामिनी ।।

—कठिन। बठोर है पगई प्रीत-यामिनी ।।

। की मारे डारे मदेने मरोर डारे वादरवा ।
 दाये लेते पादुर दवाये लेते दामिनी ॥

१०८—देवीराम—ये कामवन के निवासी और जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनका जन्म स० १८६८ वि० में हुआ था। इनका कविता काल सवत् १९३७ वि० बतलाया जाता है। इनके लिये कुछ फुटकर कविता से उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

तोमर तिसूल खड्ग खप्पर । विराज हाथ,
 पास फाँमी नक्र गदा आयुध करालिका ।
 सिंह की सवारी कारी घटा छत्र मान मारी
 टीवी मृग मद सुचि दीप लाल भालिका ।
 कलुषा मसानी भूत प्रेतन क दल संग
 भरो अगबानी गले मण्डन की भालिका ।
 विन अपराध मोये दुष्ट दुख दियो मात
 'दवी' 'दुख' देवा की कलेवा कर कालिका ॥

खाय नाय पेट मे गवाय नाम धूर धन,
 देखी बुद्धि राते दिन तीऊ तंग तोर है ।
 गाठ नाय दाम प विनार नाम काम बाहू,
 मांगन न जाय बहू धनिन की पोर है ।
 पर उपकार हेत तन मन बार देत,
 आपनी विरानी माहि क्रुद पर दौर है ।
 देस लाग भानि जिन सरबस दियो देवी
 नरन समाज माहि वेही सिरमीर है ॥

१०९—नत्थीलाल—ये डींग के निवासी जाति के ब्राह्मण तथा बलदेव राम के पुत्र थे। इनका जन्म स० १९३८ वि० में हुआ था। ये द्विजनाथ तथा नत्थन उपनामों से कविताएँ करते थे। इनकी तीन रचनाएँ—(१) विपरीत बोध (२) शुभागमन श्रीकृष्णसिंह मूरप से और (३) शुभागमन श्रीब्रजेश्वरसिंह मुद्रित हो चुकी हैं। सागीत इन्द्रानन्द वामुरीलीला और नागलीला अभी अमुद्रित हैं। इनकी फुटकर रचनाएँ बहुत हैं, क्योंकि ये ब्रज भाषा के पुराने मण्डलीक कवि हैं। इनका कवितामा के उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

अनिल रची है देव ताँव विसकर्मी नें
 आमय पचावन की शत्रुन ग्रहारी है ।
 दल बलत वीर हर हर हसत रहै,
 दामिनी लपक सीध म्यान ते निकारी है ।
 भनै 'द्विजनाथ महाराज श्री ब्रजेद्रमिह
 तरी भुजाली भव उदित मतवारी है ।
 भार देय झारी सी हारी रन मचाव अव,
 मनन म भवानी भाखत वलिहारी है ॥

माहन मुक्द गिरधर शृङ्गा विपिन विहारी ।
 तुम चरणन की सरण हैं, मैं प्रेम का भिखारी ॥
 स्वामी ही सबदा ही कर्ता ही जग जनन के भेदो हो भगवान सब मनन के ।
 नाता ही निघाना ही, दाता ही निघनन के निरमूल धूल मे से हो फूल जीवनन के ।
 जग आपका बना है, बिबस पिशाचारी तुम चरण की सरण हैं मैं प्रेम का भिखारी ॥

११०-जानी विहारीलाल—ये जाति के श्रौतैच्य गुजराती ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मन्लाल तथा पिनामह का सदाराम था। आप भरतपुर में प्रवान अध्यापक का काम करते थे। इनका कविता काल स० १९५० वि० के आस पास है। इनकी रचनाएँ उस समय की पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती थी। इस समय इन की ३ रचनाएँ उपलब्ध हैं—(१) दम्पति श्रुतिभूषण (नायिका भेद की उत्तम पुस्तक है। इस में कविता बहुत ऊँची शृंगार रस का देव और विहारी के भावा पर है। भाषा सरस प्रवाह युक्त है) (२) अष्टा अष्टक और (३) महिम्न। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं—

दाहा

अजन ह्य मजन किये सजन मजन मान ।
 गजन वजन दुख दिये, जन रजन पिय जान ॥ १ ॥
 मनि मुक्ता हीरा जडे, पत्रा सटवत कान ।
 मनौ समर घर द्वार प भूमत सुभट जगान ॥
 जटित सीक नक स्याम मनि, छनि सुन्दर इमि दत ।
 प्रली वेध चम्पक कली जनु पराग रस लेत ॥

चित्त चकार चिन्तात रह गो ददन चन्द दुति धार ।
 रति ऊची नभ चढ गयी, तऊ न जाया भार ॥
 नीलाम्बर सो मुख ढक्यो या दासो नदनद ।
 कालिन्दी कल नीर बिच भिन्नमिनात त्रिम चन्द ॥

विप्रलब्धा प्रौढा (कवित्त)

उमग उमाहन सो सकल सिंगार साज
 पागो प्रेम पिय के सुआइ सखि सग हैं ।
 प्रीतम तिहारी केलि मन्दिर न पायो तहा
 दख सूनी सज उठी गिरह तरंग हैं ।
 व्याकुल तिकल भई बेखार बाल परी,
 लिपटी लटकि लटी दाऊ मुख सग हैं ।
 माना आज भूमि प सुधाधर ही परयो आय,
 ताप तकि प्यासे अमी पीत भुग हैं ॥

उत्कठिता प्रौढा (कवित्त)

आली नभ लाली सा दिखान लागी जागा निसि
 भागी भयो सोर भोर होन ही चहत है ।
 चहुँ ओर बोल रहे पछी चौचहाट करि
 चटक चट फूली कली फूयो चहत है ।
 घनत रति पाली न आये बनमाली मैन
 रन गई खाली जिय धीर न गहत है ।
 तोहि कह्यो प्यारी भोर आत ही 'बिहारी सो,
 मान ठानि बठी भोन यो मन कहत है ॥

वेद षाय सांख्य शास्त्र पागुपति बध्नाय,
 पाचो मत जुदे जुदे मारग बतावें हैं ।
 मनषी इन्धानुबूल होय के सुधर्माहूढ
 गूढ इन पथन म तव तज धावें हैं ।
 तेही परिणाम माहि अद्भुत अजमा एक
 घनत अभ्यक्त रूप आप ही की पाव है ।
 सूध अमूधे मग वही भये सरिता सब
 जसे जाय अत एव सिधु म समावें हैं ॥

१११—जानी श्यामलाल—आप भरतपुर के निवासी तथा जानी विहारीलाल हेड मास्टर के छोटे भाई थे। इनकी कुछ रचनाएँ प्राप्त हुई हैं जो इनके विद्यार्थी जीवन की सी प्रतीत होती है। आपका कविता काल सम्बत् १९५० वि० के ग्राम पास रहा है। उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

स्वावर जगम जीव अपार। भागत भोग शरीरहि धार ॥
‘श्याम’ मुजान कियो निरधार। भाल लिखी लिपि को सक टार ॥

चकोर छद

गारस लै धरते, चलती बन श्याम अवानक गल मभार।
रोकत टोकत ल लुकुटी कर मागत दान मचावत रार ॥
रूप सुधारस प्याय तव वह, जाय वसे अब कोस हजार।
हाय कहावत साची भई सखि, भाल लिखी लिपि का सक टार ॥

११२—मुकुद—ये महाराजा जशवन्तसिंह के शासन काल में हुए थे और बयाना (भरतपुर राज्यात्गत) के फोजदार गंगाप्रसाद के आश्रय में रहते थे। इन्होंने अपने आश्रयदाता के नाम पर ‘गंगा पुराण’ नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसमें गंगा महिमा तथा राजनीति आदि का वर्णन है। इनकी कविता बहुत माधुर्य कोटि की है। इनका कविता काल सम्बत् १९४० के ग्राम पास है। कुछ पद्य उद्धृत किये जाते हैं—

दीहा

श्री गुरु चरण सरज रज। सिर पर धारन कीन।
कवि मुकुद वर गुन कहे सरस्वती वर दीन ॥

चौपाई

तीज नयन उपवीत भुजगा। सप्त बसत गिरिज के सगा ॥
ससि ललाट माये १ राज। भागीरथी जटा म गाज ॥
आदि कमडल विधि उपजाई। दुतिय सीम शकर के भाई ॥
तहाँ अछण्ड एक गिरि भारी। जामा गो मुख निमल बारी ॥

भागीरथि सरनें गही, मत दरस हित लागि।
पातक जन के दूर कर, करे हान मन जागि ॥

११३—जुगल किशोर—ये जाति के ब्राह्मण तथा भरतपुर के निवासी

थे। ये बहुधा भरतपुर के कवियों के असाइड में सम्मिलित हुआ करते थे और तत्काल रचना करके सुनाते थे। इनके पुटकर छंद पाये जाते हैं। इनका कविता काल १९४० वि० के लगभग है। उदाहरण प्रस्तुत है —

कवित्त

बार बार हमसे इक्करीर विया आने का
 कह दो आप आश्रय कौन से महीना म।
 गती निठुराई मित्र भाई है निहारे मन
 कपट की न बात करा दाग हान गीना मे।
 'जुगल किशोर' जुग फूट नद मारी जोय
 जीती बाजी न हारो यह बात न करीना म।
 आप सब प्रवीना कष्ट बुद्धि की कमी ना
 हाय ऐसा जन्म कीना मा साफ त्याग दीना मे।

११४—मंगलसिंह —य जाति के श्रीमाल जन थे। आपके पिता नथमल श्रीमाला में भरतपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्झे जान थे। आपके रचना-काल १९४० वि० के लगभग है। इनके रचित चार ग्रंथ—(१) 'होरी के रसिक जनो का निवेदन (२) 'तीयकराचन (३) जबू नाटक (४) मंगल भजनावली प्रकाशित हो चुके हैं इनके अतिरिक्त २ अप्रकाशित ग्रंथ और हैं जिनके नाम क्रमशः 'श्रीमालों का इतिहास तथा पञ्च-सुप्प हैं। इनकी कविताओं में कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं—

दाहा

कठिन प्रीत की रीति है, कठिन कम की नास।
 भव सागर सो तरबो कठिन धम विस्वास ॥
 वचन निवाहन कठिन है कठिन हात उपकार।
 सम्पति में समता कठिन ग्रह समय की सार ॥

पद

प्यारे पइया परी गिर नाय नाय, मीप रग जिन डारो घाय घाय टेका।
 न गुलाल मुस प लिपटानी कर पकरयो मेरो आय आय ॥
 पिचकारिन सा विदिया सरक गई बिखरयो कजर। हाय हाय ॥
 दम श्याम त कहा गत की ही कहा कहीं घर जाय जाय ॥
 गमी बान न बगि मनाई, मंगल' हा- हा गाय गाय ॥

ज्ञान ध्यान धारणी अनेक दुःख टारनी
 त्रिनाप को निवारनी सवारनी बवित्त तू ।
 जगत् जोति जागनी मुहाय रग रागनी,
 सु प्रम पूज्य भावनी सुभागनी सख्य तू ।
 काम का बढावनी बढावनी अगूढ मुद,
 मनको समभावनी रिभावनी रमिक्क तू ।
 यमुनाथ भावनी अगाध बुद्धि लावनी,
 मुरग रग रगनी तुरग रग भग तू ॥

११५--घनश्याम --य जाति के प्रप्रवाल वश्य और भरतयुर के निवासी थे । इनका जन्म सम्बत् १८८४ के लगभग माना जा सकता है क्योंकि इनका स्वर्गवास ८० वर्ष की आयु में सम्बत् १९६४ में हुआ था । यह शोभाराम के समकालीन थे और अपने अखाड़े के प्रधान थे । इन्होंने अटल बन्द दरराजे बाहर चढ के नीचे गणेश मूर्ति की स्थापना की जहाँ कविया का प्रतिमाम अखाड़ा जमा करता था । अब भी गनगौरा की तीज के दिन वहाँ पर कवित्त आदि हाते हैं । इनके बहुत से शिष्य थे । इनकी रचिन 'यमुना लहरी तथा 'नख सिख दो पुस्तक है जिनसे कुछ छन्द उदाहरणाय प्रस्तुत किये जाते हैं । यमुना लहरी अर्प्राप्त है किन्तु उनके कुछ छन्द उ ही के शिष्य जाला कलावत्स बजाज से हम प्राप्त हुए हैं --

यमुना महिमा

मैं तो कलि काल की कलौड़ मटव के लिये
 आयो तब नाय नाक वेद सुन लीयो मैं ।
 भनं घनश्याम' नेक रविजा निहारे तीर,
 नीर भरि हाथ में सु आचमन पीयो मैं ।
 जबत सरप नट नटवर भयो है भेम
 लेस न परत कौन पाप फल कीयो मैं ।
 देवन की दवण्ति पतित बनाय मांय
 कान के समान कान वारी कर लीयो मैं ॥

नख गिख

कधी मरुमली सेज साजी पिय केलि काज
 कधा रूप रमनीक मगल की धल है ।

कधी मृदु पानिप की धार की धरनता है
 कधी मुखचन्द हास कचन की पल है ।
 कहै 'घनश्याम विधी क्यारी रोम केमर की
 सोभित है नाभि कुड मनका की जल है ।
 धु वर किसोरी गारी माखन त मृदुल महा,
 उदर अमाल गोल पञ्ज की दल है ॥

कधी नाग नागनी के छुट भय नाग सुत
 कधी श्याम मावस क साभित कुमार हैं ।
 कहै 'घन सुत्तर विधी सुत मरकत के
 मसले मसाले डर तम के से तार हैं ।
 काम क तुरग फटकारव का चौर चाफ
 कधी अनुराग मुख चट के सिंगार हैं ।
 वारे सटवारे भारे अतर फुलल डारे
 मृदुल सुधारे यारे नयला के वार हैं ॥

जमुना लहरी

प्रथम गति स्थल मे गो लोक राखत हो,
 दूज रवि मण्डल का किरन सुहाई हो ।
 तीज 'घनश्याम भन जामन के वृक्ष पर,
 चायें डार डारन में फल फूल छाई हो ।
 पच मे प्रवस हिमगिरि म धुगी ही धाय,
 पठ मे विराट शृ ग धूम छवि छाई हो ।
 सप्त म चली हो गो लक सा अपार धार
 राधिका कुमारि के कुमारि ढिंग आई हो ॥

विष्णु स्वास जल है सुजल प एक कच्छप है
 कच्छप प नेप नाग फन विस्तार है ।
 कहै 'घनश्याम नेप नाग प धरी है धरा
 धरा प धरयो एक भूधर अपार है ।
 भूधर अपार प जामुन की वृक्ष एक
 जामुन के वृक्ष पर फल दल बहार है ।
 फल दल बहार पर भारतण्ड मण्डल है
 भारतण्ड मडल म जमुना की धार है ॥

११६-मुरलीधर -य गोभाराम क शिष्य थे। इनका जन्म सम्वत् १६१६ वि० तथा निधन सम्वत् १६८३ वि० है। मुरलीधर जाति के ढाकर राजपूत थे और महाराज कृष्णसिंह के इजलास खाम म जमानार थे। इन्हीं महाराज ने आपका 'कविराज' की उपाधि म विभूषित किया था। समय २ पर कितने ही स्थाना स ममम्या पूनिया पर आपने पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त किया था। यद्यपि य विरोध पढ लिखे न थ तथापि नायिका भेद एव अलकारा का विशेष जान था। प्राचीन कविया की कृतिया का आपन अच्छा अध्ययन किया था। कविवर ग्वाल पर इनकी विगप श्रद्धा थी और उनक लिखे हुए छन्द आपको बहुत पान थे। आपकी तीन पुस्तक मिली हैं - (१) गज प्रकाश (२) वाग्णिए विलाम और (३) दीग वणन इनक अतिरिक्त आपक फुटकर छन्द भी बहुत मिलत है। आपकी भापा मरम एव प्रसाद गुण युक्त है। उदाहरणाय कुछ छन्द प्रस्तुत किय जात हैं -

कवित्त

वारठे के महल वमन त्रवार हान
 सुखमा विमान का सुरस लवि लाज है।
 पीरे रग अग सज भूसन वसन चारु,
 माभित है जम वीर रस को समाज है।
 'योछावर नजर कर हैं सन्दार सब
 उडत गुलाल नाँच बाजन को साज है।
 ताम श्री ब्रजेद्र महाराज कृष्णसिंहजो न
 'मुरली मनोहर बनायो कविराज है।

प्रवल प्रतापी श्री ब्रजेद्र जसवत सिंह
 जा तिन निघारे स्वग चढ क विमान म।
 कामन्तार रयत मिपाह ग्राँखि ग्राँसू ढर,
 हाय हाय तो सौ ना नरेम भी जहान मे।
 मुरली मनाहर' महीपन क साच महा,
 सात हू विलायत ग्गक दमहू निमान म।
 भूपर मनुज रावें पेडन पसेर पुज
 तार समि मूरज हू रीव आसमान म॥
 पील मुखडे प एक दग की कमाल जेम,
 माहताव सर पर भनकना नूर वन्द है।

तसवी ताल गुल नड्डू चार दम्न नीच,
 पहने गले गौहर का हार हरचन् है ।
 'मुरली मनोहर जुवा मा दुव' नाम लेत,
 बबलो को टाल कर जर बकमद है ।
 हुआ है न होयगा जहा म अक्लमद एसा
 जसा श्री गणेश कोहजा का फरज न है ॥
 उमड उमड एंड एड व अगारी बड
 ह्व ह्व क मगन मन युद्ध को उमक्कर ।
 दख दख दूर त भूपट्ट मग्पट्ट भर
 साकर तुराय साफ तीर से लपक्कर ।
 मुरली मनाहर सो मत् मुडे सीगन के
 वज्र के समान भिर नव ता हिचक्कर ।
 ह्व करें न धक् कर न सक कर हिये प नक,
 छूटत ही वाजत घडाघड की टक्कर ॥

जाके रूप आग रूप रूप को न जयी पर
 एसी तौ अनूप रूप हायगी न है गई ।
 रभा सी रमा सी उवसी सी तिलातमासी
 सची मनका हू महा उपमा लज गई ।
 'मुरली मनोहर निहारी वह एक बेर
 फर ना सबर कहा किन म बिल गई ।
 छल ही छलावा ही कि छला की छलन हारी
 आई आग लन को सु दूनी आग न गई ॥
 भीष्म प्रतिना (मवया)

आज सुरासुर दखत ही रन बानन की वरसा बरसाऊँ ।
 मार रथीन महारथि है भुवि सोनित की सरिता उमगाऊँ ।
 भीसम भौह चढाय कहीं 'मुरली हरि हाथन गस्त्र गहाऊँ ।
 स्वराध्वजा कपि की करिके तब तौ नृप गातनु पूत कहाऊँ ॥

कु डलिया

दीन राधे का सखी गुय बेला के हार ।
 जाने परें गुलाब व, जा कर लिये कुमार ।
 जा कर लिये कुमार, भये चम्पा गर धारत ।
 गुल सौसन क भय नन पुतरीन निहारत ।

ज्या के त्या ही तुरत, निहम केँ बेला कौन ।
ऐमे चरित दिग्याय कृष्ण चहुँन कर दीन ॥

राखे हम चुगायन कर मुक्ता घरलीन ।
मुरनी कर दुनि अरुनमा अरुन सु मुक्ताकीन ।
अरुन सु मुक्ता कीन पर्यौ हमन भ्रम मारी ।
दौर चुगन चकोर ममुक पाक चिनगारी ।
तत्र कुचरि मुख हमी भय मित लाहिन आये ।
तो लाग हूँ तरन वरन यह कौतुह राग ॥

दीहा

गाही फौज भजाय केँ दिल्ली कर उजरन ।
किया नवाहरमिह नृप, यह दरगार बमत ॥

कवित्त

प्यारी प्रिय मग रग भौन म सुगति कर,
अगन मा उमग अगन उदर्यौ पर ।
भूमिन करन भई भूसन कहै क कहै
जरी के दुखलन तेँ बादला भरयो पर ।
'मुरली मनोहर' कहैवा उगगन वाग
वदन अनूप धम स्वद निचरयो पर ।
मानौ सुरभान ते हिय म भय मान चार,
मुधा कौ प्रयाग मुधानिधि तेँ टर्यौ पर ॥

११७—नवल सिंगोर—ये जानि के ग्राह्यण और भरनपुर के निवासी थे। इनका पिता युगलविशोर तथा पितामह लक्ष्मीनारायण एक प्रपितामह गणेश सभी कवि थे। कविता इनकी पत्रिक सम्पत्ति थी। इनके बशधर अत्र भी कवीन्दर नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका कविता काल सम्बन् १६४४ से १८७० वि० तक पाया जाता है। इनकी रचनाएँ (१) जुगन विलास (नायिका भेद) (२) पधना युद्ध (३) दुर्गाष्टक और (४) निवाहो-मव (श्री कृष्णासिंह) हैं। इन्होंने ब्रज भाषा का प्रयोग किया है जो अलकागो की छ्वा में सुमज्जित है। इनकी रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

मवया

चन नहीं दिन रैन पर्यौ, जबत'तुम जनन नव निहारै ।
बाज प्रियार दिय घर क राजगज प लाज ममाज विमारे ॥

सा विनती सुन मोहन मानिया मोसा कभू मत हूजियो यारे ।
मोहि सदा चित सा नित चाहिया, नोके के नह निवहियो ध्यारे ॥

भुजगी

भरें श्रोणवारा गिर भूमि माही ।
गिरे वीर याद्धा, रही सुद्ध नाही ॥
भरौ मेष की सी लगी ताथरी है ।
वधू इन्द्र की सी सु वूशी परी है ॥

पथना युद्ध (रोला)

तोप शब्द घन घोर, रार मारन जब पारी ।
मनौ पथन माझ, भई पावम ऋतु भारी ।
धूम उठ चहु ओर मनो वाटर दलछाय ।
उडत पतगा लखे मनौ सद्यात जुधाये ॥
वरमत गाला नाहिं, मगौ आला सम भरक ।
गोलिन की पौछारि परत ऊपर गढ गरिक ॥
भ्रमभमात समशीर तेग चपला अति चमकें ।
बक बतार ज्यो उडत तई भाते जधा तमक ॥

दाहा

इत पावम ऋतु निशिर मे तरसी है मधिवाय ।
र रे गळ अपार है कानन सुनी न जाय ॥

कवित्त

गामा कौ सदन सब भानि ते भरतपुर
आनद अपार नित नय भरसत हैं ।
तहा श्री ब्रजेन्द्र कृष्णमिह महाराज राज -
अमित उद्याह रूप बत दरसत हैं ।
दीपन मे दिपत निलीप ज्या महीपन म,
देखि देखि सुख ब्रजवासी हरसत है । -
द्योम द्योस उत्सव ते उत्सव अनत गुना
अग गग दूना दून रग वरसत है ॥

११८-कृष्णदास -य बल्लभ सम्प्रदाय क प्रनुयायी तथा जानि क सूय्य
द्विज ब्राह्मण थ । इनके गुरु का नाम गोस्वामी गोपेश्वर महाराज था । इनका
कविना-काल १६४५ वि० क ग्राम पास है । य नगर के तहमालदार और उच्च

काटि के कवि थे । यद्यपि इनके लिखे कितने ही ग्रंथ उतलाये जाते हैं, किन्तु हमें केवल तीन ग्रंथ ही देखने को मिलते हैं—(१) रम विनोद—इस ग्रंथ में रम, नायक-नायिका भेद और सचारी भाव आदि का सुन्दर ढंग से बखान किया गया है । (२) भक्त तर्गिणी—इसमें भक्ति की महिमा का बखान करत हुए कृष्ण के प्रेम पर पूरा रूपेण प्रकाश डाला गया है । इसकी कविता में नन्ददास के काव्य का सा आनन्द आता है । (३) भगवत सलाप पीयूष—यह ग्रंथ ५० फनहंसिंह तथा मधुरा निवासी राजमोहनदास के परामर्श से लिखा गया था । इस ग्रंथ की रचना सब प्रथम संस्कृत में हुई फिर हिन्दी गद्य में अनुवाद किया गया । इसके अवलोकन से उत्तर हरिद्वार काल की ब्रज भाषा के गद्य का आभास मिलता है । यह भक्ति रस प्रधान ग्रंथ है । इनकी कविता के उदाहरण दक्षिण—

बडिता लभरा

श्रीर तर्गि क चिह सहित पिय जिहि घर आव ।

बुद्धिवत अति चतुर 'गडिता' ताहि बतावें ॥

उदाहरण (दाहा)

कहा बस निमि इर लमे दरम दिरायो भार ।

कह देत हिय धा लगी कठिन कुचन की वार ॥

बलहातरिता लक्षणम्

नहि मान जा मान मनायो तरनि गिमाई ।

बलहातरिता अनिता पुनि पाछे पछिनाई ॥

उदाहरण (दाहा)

गदि गई वार बटाध की हियते विमरत नाहि ।

रोमहि निरन मुधि बग्न श्याम छवानी बाहि ॥

११६—ऊपर राय—य काभा तहसील के नौगावा नामक ग्राम के रहने वाले थे और जाति के राय थे । इनका विशेष ब्रत उपलब्ध नहीं हो सका है । आपका कविता काल स० १६५० वि० के ग्राम पास प्रतीत होता है । इनकी कविता का उदाहरण प्रस्तुत है—

सुधा रस त्यागो तो न यावो कछु अभिमान

विष अनुराग्यो तो न माद उर धानि हैं ।

जोग लिय भजो ता हमारे तन भोग मम

निहच अधिक यह सीना हम जानि है ।

उद्व बू एमे ही विचार रहियो सँभारि,

भूलन कर्त है यह भूल निष छानि हैं ।

हमतो हैं वेही वेही ओग तें भये हैं ओग,
ओर तें भय ह तई ओर वात जानि है ॥

१२०—कृष्णलाल —य भरतपुर निवामी गुलाबसिंह के सुपुत्र और जनमत के अनुयायी थे। इनका कविता काल स० १८५० वि० के आस पास है। इन्होंने 'वियोग मालती' नामक ग्रंथ की रचना की है, जिसमें इनका वग परिचय मिलता है। इनकी कविता का उदाहरण देखिए —

दाहा

चचल चपला दामिनी, अधरन की जनु हाल ।
काकिल कठी बदन त निकसत नाहो बाल ॥

मयन कुसुम भ्रुकुटी रची, बना अनग कमान ।
आप अहरी जावना तकि तकि मार वान ॥

ये नना वरी अरी नरन चह कछु ओर ।
गेके बन न गीकत लग रहै उबि ठौर ॥

१२१—कनल बहादुरसिंह —आपका जन्म भरतपुर में एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल में सम्बत् १९१३ में हुआ था। आपके पिता भगवानसिंह यगबत काल में नमक विभाग के अध्यक्ष थे। स्वयं बहादुरसिंह मेना में कनल तथा तोसकखाना विभाग के मुतजिम थे। आप हनुमानजी के अनन्य भक्त और उच्च काटि क कवि थे। ये विहार उपनाम से कविता करते थे। इन्होंने लगभग २१ ग्रंथों की रचना की है। आपकी भाषा बड़ी ही सरल सरस मुहावरेदार तथा आकर्षक है, उस पर प्रातीयता की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। जहाँ पर ख्याल लावनी तथा शिपरणी आदि आते हैं वहाँ कुछ २ खड़ी बोली का भी आभास मिलन लगता है। उदाहरण देखिये —

सीता मगल (कवित्त)

भागर सुधा के मे सम्प कौ बनाव कच्छ
तापर जमाव गिरि सुंदर शृङ्गार की।
नरम नवीन सुचि रेसम की नती कर
मयन मनाज या मरोज कर धार की।
एत उपचारन त प्रगट रमा जा हाय
तोऊ मकुचान मन वात्रिद कुतार की।

सीता मम सीता जग और न पुनीता काई
गाव वेग सीता जग सीता के विहार की ॥

केसर चमेली तल तरद मिलाय साग
उपट न्दवाय के अगोछ रग भीने हैं ।

मानिन के काम की मुभायमान आण पग
कामलता चाज क सरोज छत्रि छीन-हैं ।

तरुआ अमन स्वज अकुमादि चिह सार्हैं
माहैं लन गमिक निहार मन लीन-हैं ।

हीन भय हीरा मनि रीन स त्स्साई दन
मीन हू अधीन नम भीन समि कीन है ॥

राधा वृष्ण विहार (सत्रया)

वालन आइ वन घर बीच बडौ अति बाहर होत खरागी ।
क्या नहिं रोवन मात जमाद लख नहिं तू सुत क गुन भारी ।

माखन भौन घर दुवका विहार कहैं पुनि लेत निहारी ।
चारत धाम मग ननुनीत बडौ अब तीट भयो वनवागी ॥

कवित्त

वाग तन पून माई नम्र बहु रगन के
राज फहरात जिमि अचल उडाव है ।

गाजत हैं दुदुभी अनूप पग नूपुर मी
काटि कर किक्किनी गवल छवि छात्र है ।

चित्रिन निवन-मनौ भूमन जडाव जडे
वनम उरराज-प निहार तलचात्र है ।

मातिन की भालर भमक द्वार ऐसे रही --
जसे निय कथ का गिलोक-सुख पाव है ॥

मुदर नवनी पिकरनौ मृग ननी बाल
आई है निहार साज छात्र काम धाम-नी ।

गावती मूलारें श्री निहार मध मालन का
आनद विचार हिय ध्यान धनधाम की ।

सीतल सुगध मद चलत समीर तथा
करत विहार चिन चार लन वाम की ।

जमुना क कून आज भूत अत्र दूल्है तीज
धारी मन पून नव भूल मन काम की ॥

सावया

मोद बिहार कियौ पति राग पलग प केलि कला भल ठानी ।
भोर जगो मुख घोबन हेत लियौ कर में भरि नीर सायानी ॥
ही गज मूरति बिंद ललाट परी वह छटि सुहाय समानी ।
देख हसी मुग्धियाय तिया इम झात हाथी हथेरी के पानी ॥

१२२—बाबू कन्हैयालाल —ये भरतपुर निवासी मंगलसिंह के पुत्र और जाति के श्रीमाल जन थ । इनका ज म सम्बन् १९२८ के आस पास हुआ था । आप हिंदी उर्दू आंग अंग्रेजी तीनों भाषाओं के अच्छे ज्ञाता और उच्च वाटि के कवि थ । इन्होंने सात ग्रंथों का निर्माण किया जिनमें से पांच प्रकाशित हो चुके हैं —(१) भक्तामर स्तोत्र (२) धनश्याम सदेसावा (३) अजना सुन्दरी नाटक (४) रत्न सरोज नाटक और (५) शील सावित्री नाटक प्रेममयी नाटक और रसिक सुन्दरी नाटक अभी तक अप्रकाशित हैं । आपका एक फुल्कर सग्रह भी मिला है जिसमें लगभग २००० छंद विविध विषयों पर लिखे गये हैं । इनमें कुछ उर्दू की गजलों कसीदे और अंग्रेजी की पाइम्स भी हैं । तारीख ३ फरवरी सन् १९३३ का लिखा हुआ अन्तिम छंद देविए —

कवित्त

पातो के ऊपर ही पीतम के अम्बर पेश
छाती सो लगाय मृदु होठ चूम लीनी है ।
लीनी है निवार फार कागज समोद बाल,
वाचत ही वाचत कछु मद मुस्कीरी है ।
मन की उमग भलमलत चद्रानन प
पत्रिका ने मत्र फूक कीनी रम भीनी है ।
ग्रामते सजन की का हम रोक लह गल
बचुकि दुराय सरमाय चल दीनी है ॥

आपकी चमत्कार पूरा नवीन उत्तियों के सरस छंद उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं —

गुण अवगुण जामे परयो, वाहि नही विसराय ।
चंदन हू की अंग लगी, देव देह जराय ॥
जारी या मन जारिये, हम सा चार निगाह ।
पट घू घट का कर सक हिय में पठी चाह ॥
वहै आहूण दीजिये मिष्ट भोज निज हेत ।
स्वग बक में कर जमा लीजे व्याज समेत ॥

मुन्दरि तेरी नेह में विदुत प्रवाह महान ।
ताहि मालत्र की लगे कुच है बटन समान ॥

१०३—गुलाबजी मिश्र—आपका जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल में सम्बत् १६२८ में हुआ था । य सम्भृत और ज्यातिष के अच्छे ज्ञाता थे और दिल्ली में 'क ज' तथा 'भूमि कर्ज' उपनामा से रचनाएँ करत थे । 'श्रीरामचरित-मानस' के अद्वितीय विद्वान् हान के कारण आपकी ख्याति दूर २ तक फली हुई थी । श्री हिन्दी साहित्य समिति से आपका विशेष प्रेम था जहाँ मृत्यु पश्चात् इन्होंने पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया । आपकी रचनाओं से कुछ छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किए जाते हैं—

कवित्त

आयो है फागुन मची है घूम वज भंग म
भाग ही त कुचन काह रग म रगे रहैं ।
सग म मुनामा श्रीनामा मधुमगलानि,
ल ने पिचकारी महा मोद में पग रहैं ।
गावन कबीर मा उडावन अवीर कज
मलत गुलाल गोरे गालन रग रहैं ।
चावा और चदन की मची है कीच श्रीधिन में
हारी मिनवारन के भुट स लगे रहैं ॥

आई पेग राबिका दर्ई है टर गापिन का
लनिता बिगाखा तुगभद्रा मखी रहैं ।
हागे मन नामा नेक पंक्ति नेटु प्यार कू
करेंगी निहाल याहि योहि डरी रहैं ।
एती मुन धाय जाय पकर लियो कान्हू कू
छीनी मव आन माल मोनिन लरी रहैं ।
मलक गुलान गाल गुलचाद वदी भाल,
मुन्दरि उडाय म्वार खून करनी रहैं ॥

धम की मूरति है कि याय श्री मूरति है
दया की दरयाव है कि दानी दानवीर सी ।
धीर की धरया पर पीर की हरया किधौ
दीनन की भया श्री मयया खाँह सीर मा ।

गोधन को भक्त अनुरक्त विप्र पाद पद्म
 सीतल और म्वच्छ द्युद्ध गंगा के नीर सी ।
 भूमि कज कृष्णसिंह भूपति तिहारी जस
 - वरनों कहा ला बाढ्यो द्रापदि क चीर मी ॥

लाज को जहाज है कि साज है मुमाहिवी की,
 दृग अभिराम है कि ममथ को रूप है ।
 अरि उर साल ह कि सतन प्रतिपाल किधौ
 राम जू को लाल है सुकीरनि को मूण है ।
 राज काज दक्ष है प्रत्यक्ष है प्रभाव कज
 सना सचालन म अद्भुत अनूप ह ।
 राजन के राज महाराज श्री कृष्णसिंह
 जव्व द्वीप खडन म तौलो तुही भूप है ॥

जा दिन त प्राणनाथ साथ गये ऊधव के,
 ता दिन त गोपी ह्व मौन धरी रहता है ।
 करके उपवास नास क्वे निज दही का
 प्यारे के वियोग जम सारे दुख सहती ह ।
 भूमि कज बार बार याद कर मोहन की
 आसुन की नदी धार बीच चली बहती ह ।
 मापीनाथ गोकुलेश दश देवी बेगि आय,
 अरि पछिनहौ हाय गापी यो कहती है ॥

जब ला जग माहि सयागी सनही सयोग भरे सुख पायो कर ।
 जब तो अरविदन की कलिया अलि वृन्दन के मन भायो कर ॥
 जब लो भुवि गग की धार बहै नभ मडल सूय सुहायो कर ।
 तब ला ब्रजरानी हमारी मदा मन भाई सु तीज मनायो कर ॥

१२४—लक्ष्मीनारायण “बाजी —य भरतपुर के निवासी और जाति के ब्राह्मण थे । ये सस्कृत और हिन्दी दाना के प्रकाण्ड विद्वान् थे और दोनों में ही कविता करत थे । आप बड़ी सरल प्रकृति के थे और शिक्षा विभाग में अध्यापक का कार्य करत थे । उनकी मृत्यु के अनन्तर इनका काव्य संग्रह अस्त व्यस्त हो गया । इनका कविता काल सन् १९१५ के आस पास माना जाता है । इनकी रचनाओं के उदाहरण श्रेणिय —

पतङ्ग

दगन देना नहीं पतङ्ग ।

पूव लिंगा म चमक रह ह लद्याता वमघ ।
 पड पड पर चमक चमक लखलाते अपना रग ॥
 क्या इनके प्रकाश से विकसित हाग पवन वृद्ध ।
 जिनके सौरभ से प्रभुदित हो हाग मत्त मित्रिद ॥
 क्या जग का तम पूज नष्ट हो मकता धार अम द ।
 चक्राक दम्पति के भी क्या मिट सकत दुम्ब द्वन्द ॥
 इह पर हा अपन मन म श्रद्धायुत मानद ।
 अभिवादन व साय अघ्य क्या दग भूसुर वृद्ध ॥
 हाग नहीं निरुध, नमित्तिक काम्य कम रस रग ।
 जग तव नभ मडल म दगन देगा नहीं पतङ्ग ॥

अरे तू अब भी चेत पतङ्ग ।

रूप रग व मिवा नहीं कुल्ल वत है तेरे तन म ।
 इनक उपर फून गया तू जाकर उच्च गगन मे ॥
 यदि कोई मिन गया तुम्ह, तू लाने लगा उमी म ।
 कि तु प्रेम व्यवहार न तने किया पनग किसी स ॥
 नदा नाव सयाग कथन क्या तून नहीं सुना है ।
 वही हवा म गर्वित हा जा इतना आज तना है ॥
 गुण भी है अति गिवन तरा जिमम उत्तति पाई ।
 यह जब हागा नष्ट न जानें कहा गिरेगा भाई ॥
 या तो कष्टक मय पथ म पड छि न भिन हावगा ।
 अथवा किसी जनादाय म गिर रूप रग खोवगा ॥
 सचानक को धयवाद द रक्षा बही करेगा ।
 नहीं एक भटक म तरा वाम तमाम वरगा ॥

अरे तू अब भी चेत पतङ्ग ।

जिस प्रदीप पर बार बार गिरता है सहित उमग ।
 देव रूप उसकी निष्पूरता सभी हो रहे दग ॥
 इनके रूप रग के वामुक सितने कीट बिहग ।
 प्राणहीन हो चुन बटन मे वरक वगना मग ॥

तू समझा था मेरे कारण जला रहा यह अग ।
 तरी भारी भूल हुई थी यह तो कीट विहग ॥
 स्नेह भरी इससे लिपटी है बत्ती जो मृदु अग ।
 धीरे धीरे जला रहा है उसका भी यह अग ॥

१२५—सुदरलाल—यह जाति के ब्राह्मण और डींग के निवासी थे

इनका जन्म सम्बत् १६३२ वि० मे हुआ था । इन्होंने केवल परमराम सागीत नामक ग्रन्थ की रचना की है । ये चौबीसे वाज नात होते हैं । इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है ।

लक्ष्मीवचन चौबोला

ससि मुख सुदर आपकी, क्या है नाथ उदास ।
 चिन्ता राह वन ग्रसन आई तुमरे पास ॥
 आई तुमरे पास, नाथ यह कारण कहा भयो है ।
 कान्ति हीन छवि छीन देख मम उर म साच छयो है ।
 मोयहीन जलहीन मीन लख, मेरी दुख नयो है ।
 काटिन बृह्म सेस थके तब भेद न काहू लह्यो है ॥
 जान चरणन की दासी कौन कारण सुख रासी ।
 मोय यह ससाय भारी ।
 हे भगवत आपकी माया प्रबल नचावन हारी ॥

१२६—माजी श्री गिरिराज कुवरि—ये महाराजा रामसिंह की धर्मपत्नी तथा महाराज कृष्णसिंह की माता थी । आपने कृष्णसिंह के दशवयस्काल में राज्य हित तथा प्रजा हित के लिये जो कार्य किये वह भरतपुर के इतिहास में स्वर्णक्षर से अंकित रहेंगे । स्त्री समाज के कुरचि पूरे गीतों को सुनकर आपके हृदय को बड़ी ठेस पहुँचती थी । अतः संभावना से प्रेरित होकर आपने सन् १६०५ ई० में स्त्रियों के गाने योग्य सुदर गीतों का एक संग्रह 'ब्रजराज विलास' नाम से प्रकाशित कराया । इसके अतिरिक्त महिलाओं के दैनिक उपयोग में आने योग्य ब्रजराज पाकशास्त्र नाम से एक और ग्रन्थ भी लिखा है । इनके गीतों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

एरी तोहि कहत लाज नहि आउ माहि भूठी दाप लगाव ।
 श्रवणन सुयो नयन नहि देख्यो, का नदलाल कहाव ।
 क्या बिन काज परी हा पीछे क्या नित मोहि खिजाव ।
 श्वेत श्याम राती क पीरी कसौ बरण सुहाव ।

इन जान कछु हाय न भाव नित उठि माहि उडाव ।
 किन म रहत कौन की डोटा कहा तू माहि सुनाव ।
 का जान मूँठी माची तेरी हाँसी मोहि न भाव ।
 जौ तू मन मोहन भग मरी प्रीत पुनीत बतान ।
 तौ ब्रजपति सा तगी लगनिया लागी य कौन छुडावै ॥

कीरति ने ब्रज नार बुलाई

ताहि पठाई गाकुन नगरी, बुलवाय ब्रजराज कन्हाई ।
 चलत चलत इय साखी सयानी न द महर के घर में आई ।
 कहत जशोदा सो प्रज सुन्दर कीरति ने वाले यदुगई ।
 महर हय युन विलम न बौनी, दिये तुरत गाविद पठाई ।
 ब्रजपति श्री वृषभानु क घाये, गारी गावत नारि सुहाई ।

वस नाय मरी वीर बगला छवाय देती ॥टेक॥

महर यशोदा य पकर बुलाय लेती श्री वृष भानु ते गाठ जुडाय देती ॥
 बहन सुमद्रा ये पकर बुलाय लेती, श्रीदामा मग जोट मिलाय देती ॥
 कुती फूफी ये पकर बुलाय लेती, लाडली के फूफा सँग व्याहकराय देती ॥

१२७—शकरलाल— आप गगर निवामी प्रसिद्ध कवि रामलाल के भतीजे तथा हनुमन के सुपुत्र थे । आपका जन्म असाढ़ सुदी ७ बुधवार सवत् १९३३ वि० का तथा निम्न ज्येष्ठ सुदी ७ बुधवार म० १९८३ वि० को हुआ । इनके रचित तीन ग्रंथ हमें मिले हैं—(१) हनुमत मंग (२) राम क्या और (३) गान मंगल । आप अपने समय के प्रतिष्ठित कवियों से गिन जाते थे । उदाहरण देविए —

हनुमान गग (कवित्त)

अति बल धाम तेज पुज उपमा के जिन,
 काम मद भज इन्द्र हू के मान मारे हैं ।
 कहि 'हनुमत सुत' राम जू के प्यारे अति
 काज मिय सार धन निश्चर प्रियारे हैं ।
 सवट निरारे निज दामन के त्रास हरे,
 अघम उधारन अनज दुष्ट मारे हैं ।
 मारे हैं गुमान भेघनाद पुनि रावन के
 ऐसे हनुमान गग रक्षक हमारे हैं ॥

०४ अथतार वगन (त्रुपय)

- १ मच्छ तच्छ नरसिंह कोल दुाराज राम प्रत ।
 १ वावन वृष्ण सुबुद्ध कल्कि नाशक मलच्छ दल ।
 व्याम प्रभू हरि हम जग्य ह्यग्रीत्र प्रयाना ।
 मन्वतर ध्रुव रिपभन्त्र धनवतर मानी ।
 कपिल देव सनयात्रिक बद्विनाथ मीडा वग्न ।
 हनुमत सुनन 'शकर सुकत्रि चतुर बीम लीज शरण ॥

१२८—मत्यनारायन कविरत्न—इनका जन्म २४ फरवरी १८८० ई०

तदनुसार माघ गुक्का १३ सोमवार सवत् १९३६ वि० का मराय नामक ग्राम (आगरा) में हुआ था। कहते हैं जिस समय कविरत्न का जन्म हुआ उस समय इनकी माता की दशा बड़ी बरणा जनक थी, और वह दीन हीन निस्महाय अवस्था में इधर उधर अगोचर बच्चे का लेकर भटकती फिरती थी। इनकी माता पढ़ी लिखी होने से अध्यापन काय करती थी। सयोगवश इसी गाँव के मंदिर के महंत रघुवरदास का इनको आश्रय प्राप्त हो गया। रघुवरदास का पठन लिखन का अभ्यसन था और इनके यहाँ हिन्दी की हस्तलिखित पुस्तक का एक अच्छा संग्रह भी था। ऐसे साहित्यिक वातावरण में पालन पापण हान के कारण सत्य नारायण की काव्य से अभिरुचि होना स्वाभाविक था। अतः ये वाक्यावस्था से ही काव्य रचना करने लग गये। बचपन का ये वाक्याकुर आग चेत कर पल्लवित एवं पुष्पित होने लगा यथा तब कि इनकी कविताएँ इतनी उच्च वाटि की होने लगी कि तत्कालीन विद्वत् समाज में मुग्ध हाकर मुक्त बट में उनकी प्रशंसा करने लगा।

कविरत्न अध्ययन काल से ही भरतपुर आते जाते थे क्यो कि विरक्त मन्दिर के महंत जगन्नाथदास अधिकारी एवं मयागकर यानिक से आपका अधिक सम्पक था। ये दानो हिन्दी के मान हुए विद्वान् और काव्य प्रेमी थे। भरतपुर से प्रेम हान का दूसरा कारण यह भी हा सकता है कि इनका रसिया मुनने का बटा चाव था और भरतपुर में रमियो का बहुत प्रचार था। श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदा ने इनकी जीवना में लिखा है कि कविरत्न के आग्रह करन पर उनको एक बार हिन्दी साहित्य मन्दिनि भरतपुर में उनक रसिये सुनाए गए, जिनमे से उनका यह टक बहुत पसन्द आई 'बछेरी डोल पीहर में। सत्यनारायन को केवल रसिया मुनने में ही आनन्द नही आता था अपितु रचन में भी। तत्कालीन महाराज किर्णमिन्त्र के अधिकार प्राप्ति के अवसर पर आपने निम्न रमिया स्वयं रचकर सुनाया था—

वनि दुलहिन मी ग्ही आज नतपुर नागरिया ।
 द्वाग द्वार मे लिखना काटे, जुर्यो उद्याह ममाज ।
 नतपुर नागरिया ॥

सत्यनारायन भरतपुर निवानी मयागकर यानिक तथा अधिकारीजी का बड़ा सम्मान करते थे । मयागकर यानिक के आग्रह से ही अपनी चिकित्सा के लिए सन् १८१३ ई० में आप भरतपुर पधार, जहां बच्च विहारीनाल तथा डाक्टर ओकारसिंह परमार से स्वास राग की चिकित्सा कराई । ये यानिकजी का कितना आदर करते थे इस सम्बन्ध में भवानीगकर यानिक लिखते हैं — ' पूज्य ' काकाजी (मयागकर) उनका विवाह में सतुष्ट न थे, काकाजी न कविरत्न के अथ मित्रों का भी इस सम्बन्ध का तोड़न के लिये बाध्य किया परन्तु सब व्यय हुआ । विवाह का जान के बाद के श्री गिराज की परिक्मा का हर पूणिमा को जाया करते थे । य उनकी बीमारी की मनोती के लिये करना पडा था । काकाजी से मुह छिपात थे परन्तु एक बार शिवधन में सत्यनारायन दीग पहुंचे । काकाजी उन गिना वही नाजिम थे । मिलना पडा । उन्हें देखते ही लज्जा, पश्चानाप आदि के कारण कविरत्न एक दम रा पडे" ।

साहित्य ममन हान के कारण अधिकारी जगतापदास के पास इनका विशेष आना जाना रहता था । इही अधिकारीजी से परामश के लिये इन्होंने अपनी 'हृदय तरंग' नामक पुस्तक भेजी थी जिस किस्ती ने इनके पास स उठा दिया ।

अधिकारीजी के साथ प्राय ये गावरधन परिक्मा के लिये जाया करते थे । एक बार आपाड की पूणिमा का अधिकारीजी न इनके साथ चलने का कार्यक्रम बना कर जाने से मना कर दिया । उस पर इन्होंने निम्नलिखित पद लिखा —

तुम्हें गतश धिकार ।

निरम्कार के योग्य आप हा अब मे सकल प्रकार ॥

इक्के का डुडवाया हमस दक् घाया भारी ।

प्रण पूरा न किया पुनि तुमने इमी योग्य अधिकारी ॥

देवर हमका घोदा एमा क्या फायदा उठाया ।

वहाँ ठहर क्या भटा मेमा का। चित भरमाया ॥

पुण्यतीथ को छोड क्या ही कोरा बलेश कमाया ।

चमचीचड चमगहड तुमने इमको धृया सताया ॥

कारण लिखिये ठीक अगर हो क्षमा प्राप्ति की आशा ।

नहिं ता रमिया गान फिरिय लिय हाय म तागा ॥

उही दिना भरतपुर म प्राचीन हिन्दी पुस्तका की ग्राज हो रही थी जिसम आपने पूरा योग दिया । इन प्राचीन पुस्तका क अध्ययन स कविरत्न की कविता शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई, जिसका उद्घाटन कई बार स्वीकार भी किया है । इसी खोज म महाकवि सोमनाथ कृत 'माधव विनाद' पद्यात्मक नाटक क बीच के पृष्ठ प्राप्त हुए जिह देवकर इनको 'मालती माधव' लिखन की प्रेरणा मिले । यह ग्रन्थ भरतपुर मे ही लिखा गया । कठिन स्थलो क आन पर य राज-पंडित गिरधारीलाल से अथम्पष्ट कराया करते थे ।

जिस प्रकार कविरत्न का भरतपुर और यहा क साहित्यिका स प्रेम था उसी प्रकार हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार करन वानी हिन्दी साहित्य ममिति स भी । यह सस्या सन् १९१२ ई० म बनी थी और तब ही स इम्बक कविक अश्विन शनो और कवि सम्मेलना म कविरत्न निरतर आते रहते थे और अपनी मुद्रा र कृतिया द्वारा जनता का प्रफुलित किया करते थे । कुछ छन्द पस्तुत ह —

भारती वन्दना

ज ज मंगलमयी भारती अखिल भुवन की बानी ।
अनुपम अद्भुत अमल प्रभा, जिह सकल जगत छहरानी ॥
ब्रह्म विचार मार म नित रत आति शक्ति महारानी ।
विश्वत्र्यापिनी श्रुति अनापिनी, सुखद गुड बयानी ॥

ब्रह्मचारिनी वीनधारिनी दयामयी शुभ दनी ।
नवल कमलदल आसन राजत नवल कमल-दल ननी ॥
जगमगात मजुल मुखमडल जगत पुनीत प्रकासा ।
जामा विविध अविद्या तम का होत तुरत विनासा ॥

एसी वरद शक्ति मुक्ति द महा गारद माई ।
करत विनय तुममा हम सब यह श्वीकृत कर हरमाई ॥
तुम नी हा मा । सकल भाति सा या भारत की आत्मा ।
"गण्टे हृदयभाव बहु कस विन बानी विन भाषा ॥

जामा भारति । भारत-जन की रमना सत्ता विराजा ।
एम न्यि विमार्गि दवि । क्या ? मुदित दया निज माजा ॥
जग के और और तमनि हिन जसी तुम सुखदाता ।
जानि स्वजन भारत है का निमि द्रव्य भारती माना ॥

जबला भारत दग विन्व म जीवित-तित मन भाव-।
 तबला नाम भारती अविचल अजर अमर छवि पाव ॥
 आवहु २ गीघ शारद । वृथा-विलम्ब-न कीज ।
 या भारत की दीन दगा लखि क्या नहि होय पमीज ॥

त्रिगरयो बद्धु न यहा मुनि अजहूँ, हरहु हियो अंधियारो ।
 स्वागत २ जननि तिहाग पुन निज भवन सवारा ॥
 महदय मुभग सरसता मव के हृदय माहि सरमावा ।
 सुमति-प्रभाकर की पुनीत पिय सुपत् प्रभा परमावा ॥

हृदय २ मधि हाड प्रफुलित नवल बनी अभिलाख ।
 मन मलिद नित गुञ्ज २ वर निज अभिमन रम चाख ॥
 नित जातीम समुत्ति हित म सकल मुजन अनुराग ।
 भेद भाव तजि निरख गाभा निज २ निद्रा त्याग ॥

वाग्य कु । त हा सकल भाति इम निज कन्ध विचार ।
 बर्ते प्रेम परस्पर मव मा प्रेमभाव सचार ॥
 परम सौम्यप्रद हाड दग यह ऐसी सुदया कीज ।
 तुव चरनन म निरत रह मन मत्य रचि वर नीज ॥

।

उपासम्भ

मात्र आप मत्त क कार ।

तीन दुमी जा तुमका-यावन मा दानिनु त भागे ॥
 किन्तु जान यह तुव स्वभार व नरह जानन नाही ।
 मुनि २ मुयस रावरी तुव द्विग आवनका तलवागी ॥
 नाम घर तुमका जग माहन । माह न तुमरा आव ।
 कर्णानिधि तुव हृदय न एरहु कर्णा बु ममात्र ॥
 लत एक को तेन हमरेहि दानी वनि जग माहो ।
 ऐमा हर फेर नित नूतन गग्या रहन मदाहा ॥
 भाति २ क गापिन के जो तुम प्रभु-चीर चुराय ।
 अति उदारता मों ल बेही द्रापति का पकराये ॥
 रननाकर का भयत सुधा का पराम आप जा पाया ।
 मन्द २ मुमरान मनोहर मो देवन का-प्यापी ॥

मत्त गयद कुवलिया के जा खेल प्राण हर लीन ।
 वही दया दरसाइ दयानिधि मा गजेन्द्र का दान ॥
 करि के निधन बालि रावण का राजपाट जा आया ।
 तह सुग्रीव त्रिभीषण का करि अति अहसान विठायो ॥
 पौंडरीक को सबनास करि माल मत्ता जा लीया ।
 ताका विप्र सुतामा के मिर कर सनह मडि लीया ॥
 ऐमी तूमा पलटी के गुन ननि ननि श्रुति गाव ।
 गस महसा सुरेभ गनमहु महसा पार न पाव ।
 इत माया अगाध सागर तुम डावहु भारत नया ।
 रचि महाभारत कहै लरावत अपु म भया भया ॥
 या कारन जग म प्रगिद्ध अति निवटी रकम' कहाप्रो ।
 'बडे > तुम मठा धुवारें क्या माचा खुलवाया ॥

वेसाख

माधव तुमहूँ भये बसाख ।
 बुरी ढाक क तीन पात है करी क्यो न कोउ लाख ॥
 भक्त अर्भक्त एकसे निरखन कहा हात गुन गाये ।
 जसा खीर खवाय तुम को वसाहि सींग दिखायें ॥
 सब धान चाईस पसेरी निज तोलन सा काम ।
 बलिहारी नहि विदित तुम्ह कछ ऊच नीच कौ नाम ॥
 व पदी के लाटा के सम तव मति गनि दरसाव ।
 यह कछु का कछु काज करत म, तुमहि लाज नहि आव ॥
 जगत-पिता कहवाय, भये अज ऐसे तुम वपीर ।
 दिन दिन दुगुन बढ़ावत जा नित द्राह-द्रोपदी-चीर ॥
 जुगकर जारि प्राथना य ही निज माया धरि राखी ।
 मत्त दान दुस्तिमनु के हित का सत्य हृदय अभिलाखी ॥

१२६-गगाप्रसाद - य जानि क ब्राह्मण तथा डींग के निवासी थे । इनके पिता का नाम गनेगीलाल था । आपका जन्म सम्वत् १६३४ वि० म हुआ । इनकी रचनामा म 'विनयपञ्चीनी तथा कुछ फुटकर कवित्त देखने म आये है । उदाहरण प्रस्तुत हैं -

दोहा

बूढ़त त गजगज का छिन मे लियो उवार ।
मो अनाथ की वेर का क्या कर गयी अवार ॥

सवया

ग्राह ग्रम्यो गजका जल म, बन वा गज की कछु काम न आयो ।
बूढ़त वेर भयो अति कष्ट तब मन ता पद-पथ म लायो ।
टर मुनी गज की यदुन-दन आतुर हूँ अति जाय वचायो ।
गग का वर न काहे मुना, हरि एता बिलम्ब है काह लगाया ॥

कवित्त

साज रगि हिन्दा की हिन्द पति दीनानाथ
तेरी प्रण सदा त रह्यो दीन हितकारी है ।
जितनी हू भाषा हा प्रचलित जगत माहि
हिन्दी ही भासा मय भाषन सरकारी है ।
इहिके अघार पर भाषा देम देमन की
पहल ही ब्रह्मा निज मुग्धन उचारी है ।
'गग द्विज' भाखें चारा बंद भरेँ माखें,
हमतो हैं हिन्द के अरु हिन्दी हमारी है ॥

१३०—वद्य दवोप्रकाश अवस्थी—इनका जन्म सम्बन् १६४० वि० के ग्राम पास डीग मे हुआ था । ये आयुर्वेद के विद्वान् और राजकीय औपधालय भरतपुर, म प्रधान बद्य थे । अनुसंधान-काय म अभिरुचि होने के कारण भरतपुर के प्राचीन कवियों के जीवन वृत्त साजन म आपन बडा योग दिया । अवस्थीजी का काव्य म विशेष रुचि थी और मयरेण उपनाम से कविता करत थे । इनकी रचनाओं के उदाहरण देखिय —

कवित्त

भारत म बृद्ध कुठ बृद्ध ऋद्ध जुद्ध जुग्यो
लयक सरासन बाड वानन की भारी है ।
अजु न के रोकेँ रुक्यो तज बल न वावा की
खिमियानी रथी जानि रिसियानी मुरारी है ।
चक्र तह हाय पट-पीत फहरान पाछे
भीषण हू भीषम प मु धायो गिरधानी है ।

शातनु कुमार दखि हपि कर जोड भाग्या,
भक्त प्रण राख्यो भक्त वत्सल बलिहारी है ।

असद खान ग्राह नें कोल की गयद घेरयो,
टरयो श्री सुजान तान आरत उचारी है ।
दीन की गुहार सुनि करणा निधान काप्यो
रोप्यो रण चड जाय चह्योमी मभारी है ।
अमद की अनी कनी घनी बनी ठनी तहा
गनीन सा कनी कनी करिकें विदारी है ।
फत को बचाय फते पाई खानजादो हय
घय बदनश न द तेरी बलिहारी है ॥

शारदीय सीजन के गुरू होन पहिन ही
शहर म आन पडी फीबर की छात्रनो ।
जुलम जोर ज्वर केस मजलूम पुरवासी
अस्थि शेष हूये हुइ सूरत डरावनी ।
तितली श्री जिगर न भी मौका पा अटक किया,
जिससे पिटीसी पीली तनकी प्रभा बनी ।
शासक मलरिया के शासन से शासित हा,
किशकी है ताब कहे शरद सुहावनी ॥

भरतपुर की नारी वृद्धा युगा गारी सब
दश का उमाही छाई छत्तन चौगारे की ।
होसी २ हसानी सी श्रीगन उठाय ऊची
सलचाहे सलचनन जोहे बाट प्यारे की ।
आई है सगारी जा सम्मुख सह्य उठी
केती गढी आग केती दोरी आर द्वारे की ।
उभकि भरोका केनी भुकि भुकि भाव भाव
भिभकी सी भाकी कर ब्रज रस गारे की ॥

मत का मदपीवर मत बनी मत बाल
छोडी प्रान्तीयता को भी इसी में बुद गारी है ।
मौके का देखा सामझ से भी काम लेना सीखो
बहुत कुछ खा चुक और खाने में सगारी है ।

फूट का मिर फोड के एकता का महारा ला
 एक स्वर से कूदो मादरे हिंद प्यारी है ।
 बट है उसक हम गेर से पतीस बाटि
 राष्ट्र भाषा हिन्दी है कीम हिन्दी हमारी है ॥

भूलि निज गौरा क्या धूल में धुडे ही मित्र
 एसी क्या खुमारी मारी मुघ बुघ निमारी है ।
 पटा दखि तुमका हा ठाकर दे बिन्ध सारा
 अग स हटा के तुम्हें ढब गया अगारी है ।
 अग तो उठि अपन अस्तित्वाका प्रमाण दो,
 पतीम काड कठो की गज्जन से प्रचारी है ।
 हम हैं महान हिन्दी हिन्दी है हमारा देग,
 विश्वभर म बरिष्ठ भाषा हिन्दी हमारी है ॥

डका = अमन्ना चढ्यो निल्ली गढ बकापर
 लाल दरवाज्यो ताड पठो मभारी है ।
 हाट वाट घाट घर सबही लुटाय लीन्ह,
 जार समसर के सा जर कर भारी है ।
 भाग खानजाद मीरजाद गाहजाणे छाट
 होट्मी पढी ह देलें भाग का अगारी है ।
 गाह का अछन राखि लूटी वादशाही खूब
 मूरज महान सान तरी बलिहारी है ॥

मरट्टन के ठट्टन भपट्टन ऋट्ट चट्टी
 है क हराबल अम्बरेग के अगारी है ।
 अरिक्की अगव्यो हरि हरि सौ सुजान टूट्यो
 मोरच्यो मल्हार ही सा लीना बलघारी है ।
 घेरि दल दक्खन कौ लक्खन विदारि टारे,
 कोसान ला रेन् रिन् कीनी खूब ख्वारी है ।
 बच्च्य कुल रच्छ बच्च्यपेग क्यो वाच्छपी म
 तुम सान न मूर मूजा टूजा बलहारी है ॥

आया उघर स दल अहमद अफगानी का
 इघर स चमू चली भगवा निगान की ।

पानीपत पावनसू मोरचा जनाके डटे,
 बठे रण विज बात सोच अभियान की।
 नाच उठी भारत की भावी सदासिब मीप,
 श्रौधी हुई बुद्धी उस जनल महान की।
 हाती न यो हीनदशा हिंदी हिंद हिंदुबो की
 मानता जा भाऊ कही सम्मति सुजान की ॥

१३१—बलदेव प्रसाद—आप जाति के ब्राह्मण और भासी जिलातगत मऊ रानीपुर ग्राम के निवासी थे। आरम्भ में ये भासी में कानूनगो पद पर कार्य करते थे, किंतु उच्च पदाधिकारिया से मत भेद होने के कारण अपने पद से त्यागपत्र देकर भरतपुर चले आए और सातुरुक ग्राम (त० कुम्हेर) में राज्यकीय पाठशाला में अध्यापन कार्य करने लगे। ये बाल ब्रह्मचारी और स्वभाव के बड़े अक्वड थे। हिंदू आचार विचार में आपकी पूर्ण निष्ठा थी और विद्यार्थियों से किसी प्रकार की दण्डना या उपहार लेना अनुचित समझते थे। यद्यपि ये भगवान राम को अपना इष्ट मानते थे, किंतु फिर भी कृष्ण विषयक साहित्य सृजन करने में अधिक अभिरुचि थी। बलदेवप्रसाद अपने समय के ख्यातिप्राप्त कवि थे और हिंदी सस्कृत तथा उर्दू पर समान अधिकार रखते थे। इनके ३ ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं—(१) विज्ञान भाष्यर—यह महाभारत का रामायण शैली पर हिंदी में पद्यानुवाद है। इसकी भाषा बहुत मंजी हुई और याकरण सम्मत है। इसका बहुत कुछ भाग सातुरुक निवासी प० नवनीतलाल त्रिवेदी के पास अभी तक सुरक्षित है और शेष बलदेवप्रसाद के वंशज कडेरलाल भौडेले के पास है जो मऊ रानीपुर भासी में रहते हैं—(२) पीयूष प्रवाह—यह एक प्रकाशित खण्ड काव्य है जिसमें भगवान राम का भक्ति का सुंदर ढंग से निरूपण किया गया है—(३) प० बलदेव प्रसाद ने सस्कृत के प्रसिद्ध कवि जयदेव के कृत गीत गोविन्द का भी हिंदी में पद्यानुवाद किया है जो इनके वंशजों के पास अभी तक सुरक्षित बताया जाता है। इनकी रचनाओं के उदाहरण देविये—

कवित्त

नख गग धार भ्राज तल नरस विराज
 सुयमुना आयु राज शोध अध हारी का।
 भूमि अग्नि सुहावन सुजता वर पावन
 सुर मुनि हपावन भक्ति मुक्ति कारी को।

स्वारथ सुय दानि और परमारथ खानि
लाक तय मुकट विश्राम देन हारी की ।
परम पद नमनी है सुभग यिवनी,
बलदेव पद वृष्टि श्रीमान् धनुष घारी का ॥

जाकीं शम्भु उमा सादर निगि वासर जप,
शारद शेष नारद नित्य ही गुना करे ।
मग के जप बान्मीक अजर अमर भये
जाकी महत्व सनकादि मग सुना कर ।
जाकीं कह अजामिल गणिका गज उदर,
कलियुग के पतित अधका हुना कर ।
वदत बलदेव श्रीमान् धनुषघारीजी
राम नाम मुक्त जोह हमिनी खुगा कर ॥
मवया

हो अध पुत्र तू पाप प्रहारनि, हों अति दीन दयालु भवानी ।
मा सो न और कहै काउ निगुण, जगदम्बा करणा गुण खानी ॥
याचक बलदेव आयो है द्वार और उठाए न है तब सानी ।
राम चरण गति याचक द न कर विलम्ब गग महारानी ॥

मागर सीर खड़े कपि वीर अनिहि अधीर उधीर रह्यो है ।
दखि दुखी पनि भालु कह्यो तुम राम काज सब तार सह्यो है ॥
गरीर विमल भयो विकराल कौतुक भूधर जाय गह्यो है ।
'बलदेव पू' चने हनुमान कच्छय बाल न मार सह्यो है ॥

१३२—हीराबाल—इनका जन्म कामा निवासी प० सूरजलाल के यहां
संवत् १६४२ वि० म हुआ । इनके कवन फुटकर छन्द पाय जान हैं । उदाहरण
प्रस्तुत हैं—

हाल हम गाते कामा का ।
कर बिमल कुण्ड स्नान, कट अध या नर कामा का ॥
कामा नगरी सुधड उसाई, जहाँ खलें कुमर कहाई ।
जिनन दुय हरा सुदामा का हाल हम गात कामा का ॥

एक पेश नहीं पड़ किसी की जब सिर पर आती गदिस ।
बान बात में घर गहर म लडवाती जन जन में गदिस ।

गाम धाम सदसग छुडाती, देन वष्ट लाया गदिश ।
बखत पडे प इस जहान म, भोगें अमीर गरीब सभी गदिश ।
हीरालाल यो कहै चेतकर रहना हजार नाच नचाती है गदिश ।

१३३—मगलदत्त—ये पहाडी निवासी पंडित रामनारायन के पुत्र थे ।
इनका जन्म स० १६४० वि० तथा निधन १६६२ वि० म हुआ । ये उदू के अच्छे
ज्ञाता थे और गजल लिखने म इनकी बडी रुचि थी । उदाहरण दक्षिण —

बता ए मौत फिर क्या तेरा आना हा नही सकता ।
हमारा तो अभी परलोक जाना हा नही सकता ।
तुझे देखें कि देख प्यारे भारत के सुधारो का ।
कि जिनसे आप अपने को छुडाना हो नही सकता ॥
तू हट कर लौटजा कह लाख सुनता कौन है तरी ।
गिरे भारत को इससे अब गिराना हो नही सकता ॥
नही यदि मानती है पूछनी क्या काम हैं करने ।
कहैं दो एक सुन सबका बताना हो नही सकता ॥
खडा पग प अपने अब करेंगे देग प्यारे का ।
जगत से नाम भारत का मिटाना हो नही सकता ॥
बनायग सभी हम वस्तुए बस देश ही मे अब ।
विदशा वस्तुओ म घन लुटाना हो नही सकता ॥
कहाँ अवकाश इतना यथ की बात करें जो या ।
यही सी बात की है वान जाना हो नही सकता ॥

करो हृदय हृदय स पाठकी गुन गान भारत का ।
बनाया प्रेम आपस म बढ सम्मान भारत का ॥
बना तुम भक्त हिंदी क तुहारी मातृ भाषा है ।
बिना इसक न अब सम्भव कि हो उत्थान भारत का ॥
तुम्हार उस प्रचुर धन से भरे घर अन्न देगो क
नही तुम म रहा क्या स्वल्प भी अभिमान भारत का ॥
अगर हा ता करो तुम मत विदेशी वस्तु का आदर ।
करा एमा कि उन्नत हो कला विज्ञान भारत का ॥
सुभिंगा क बिना हानी नही उन्नति कभी बुद्ध भी ।
बनाया दग म इसना अगर हा ध्यान भारत का ।

बनो विद्वेश के सेवक करो यह प्रार्थना उससे ।
दया कर दो विभो ! फूल फल उद्यान भारत का ॥

१३४-आचार्य सूयनारायण-आपका जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रात ब्राह्मण कुल में अगहन शुक्ला ३ सवत् १९४३ वि० को हुआ है। इनके पिता का नाम प० खुशालीराम है। सन् १९१४ ई० में शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने पर आपको सस्कृत पाठशाला का प्रधान अध्यापक नियुक्त किया गया जहाँ सन् १९५१ ई० तक काय किया। पंडितजी को पढ़ने लिखने में विशेष रुचि है और वृद्ध होने पर भी पढ़ते ही रहते हैं। आपके व्यक्तित्व में शिशु सारत्य और प्रौढों के गाम्भीर्य का सुंदर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। अभी सन् १९५५ ई० में आपने सस्कृत की आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप हिन्दी और संस्कृत दोनों ही के प्रकाण्ड विद्वान् हैं और दोनों भाषाओं में सुंदर काव्य रचना करते हैं। या तो आपकी कविताओं में सभी रसों का आभास मिलता है किंतु वीर और शृंगार रस पर विशेष अधिकार है। उदाहरण देखिए -

ब्रह्मा के प्रति कवि की उक्ति (कवित्त)
तापन प ताप ही सहने का तयार यार
मत राख कसर जो होय तेरे वस की ।
लिख दे दुख दारिद्र मन चाहे भलेही तू
लिख दे अनक रस चाहे अपजस की ।
लिख दे धिर जगम की जोनि में जनम चाहे
एक रस तरी पर हिय रहे कसकी ।
मरे तो लिलार भाई कबहूँ तू लिखियो ना,
कविता सुनाय वी सु नीरस का रम की ॥

शुद्ध शृंगार
रम्भा सी रमीली वाम कामकी कलोलन में
भीने नव निचोलन में चंद की कला सी है ।
अमी मधुरिमा सी है अघर अमीलन में
शम्भु बुच गोलन में गरल कालिमा सी है ।
सुकवि दिनेशजु की आशा सब पूरिव का,
चिन्तामणि खामी कधो कल्प-लतिका सी है ।
वनन में सुधासी श्री सुगसी है ननन में
पद्मा सान्द्रा भी मित्रु मयक निकामी है ॥

हास म सुधा सी और चपलासी उजास म है,
 लास ग्रह विलास म तो खासी मनवा सी है ।
 शील म उमा सी रग रूप मे रमा सी चार,
 काय रचना म तो सहायक शारदा नी है ।
 सुकवि दिनेश जाकी मूर्ति के उपामी हैं
 वह मन-मंदिर की उमास्य दाना मी है ।
 इन्दु की कलासी सिन्धु मयि क निकासी हरि
 भरे जान ये तो इन्दु मयि के तिकासी है ॥

नत्र और कृपाण का लप

दोनो ही पानी दार दोना ही की तोखी मार
 दोना ही धार धर कटोली करी जानी है ।
 दानो ही करती खून खूब ये हजारो ही का
 दोना ही असर उपन मोके प दिखातो हैं ।
 कहत दिनस दोनो कौध जाती विजली सी
 दाना चोट करके प्रार पार हो जाती हैं ।
 भरे जानि दाना म अंतर इतना ही दार
 असि चूक जाती आगें काम कर जाती हैं ॥

जवाहरसिंह का दिल्ली पर चढाई

बबर के बश म हुए ग्राह मोहम्मद जू
 ऐसे हैं जबर क चढाई निज बरात हो ।
 दिल्ली दुलहिन एक लहिमा म ब्याह लई
 जाका दहज यहा अय तक लखात हा ।
 सूजा सपूत वीर जाहर है जवाहर तू
 बाप प त बाकी रहे नगन चुकात हा ।
 प्यामी रणचडी की प्यास के बुभान हेतु
 माना तज पानी की द्विधार बरसात हो ॥

सबया

बलधौति सी पाति लस तन की अधरान सुधा सुपमा अपनाई ।
 मृदु बनन श्री ऋज ननन ने, सरलाई विहाय गही कुटलाई ।
 कच भांगू कौ न सम्हार सवे कुच भार कमान लौ देत लफाई ।
 करि कचन कामिनी की मिगरा मनु पीन उरोजन लीन चुराई ॥

तन की छुति देखि चप चपला निहि सौरभ सौं जलजान लजाई ।
 जिहि रूप अनूपम का लखि क रनि रूपहु म दरशात फिकाई ।
 कर ऊपर आनन को धरिफें, तिय सोच रही प्रिय की निठुराई ।
 प्रियस धरविन्द म चल् मनो, अस सोय रह्यो अब लो अलसाई ॥

कवित्त

प्रजा प्राण गाहक हो जा प बनाहक तुम
 नाहक आसमान म वितान से तन रहो ।
 जीवन गीच लेत मित्र द्वारा बहुकरा स ही
 देते न बूद निज स्वारथ म मने रहा ।
 स्वाति वारि बपा बिन मरेंगे मनस्वी खग,
 - चाह सि धु सम्पति सब तुम्हारे ही बने रहो ।
 मघवा के इशार से एमे उच्च आगन प,
 तुम इस कुशासन से कब तक बने रहो ॥

प्रकरण ५

वर्तमान-काल

साहित्य वाचस्पति गोकुलचन्द दीक्षित —सम्बत् १९६६ वि० म श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के म्यापित हात ही यहा के हिन्दी प्रचार एवम् प्रसार काय न एक नया मोड लिया और भाव तथा भाषा दोनों म द्वाश्चयजनक परिवर्तन हुने लगा । समिति के प्रधान मंत्री जग नाथदाम अधिकारी और राज्य पदाधिकारी मयाशकर याचिक के प्रयत्नो के फलस्वरूप साहित्य सृजन का काय द्रुति गति से अग्रसर होने लगा । यदि एक ओर प्राचीन हस्त लिखित पुस्तका की खोज होने लगी तो दूसरी ओर 'भरतपुर पत्र जमी पत्रिका का जन्म देकर मध्य प्रसार काय भी प्रारम्भ कर दिया गया । अधिकारी जगनाथदाम प्रकाण्ड पण्डित दूरधी, ममाज सुधारक और राष्ट्रवादी ज्ञान क साथ २ वटे काव्य प्रमी और हिन्दी प्रचारक भी थे । यह इ ही क सगग का फल था कि तत्कालीन भरतपुर नरेश किर्त्तिसिंह न हिन्दी का राज्य भाषा घोषित कर प्रत्येक राज्य कर्मचारी को उसका पढना अनिवार्य कर दिया इस प्रकार राजा और प्रजा दाना म प्रामाह्न पाकर हिन्दी का विकास ताद्र गति म हान लगा ।

अपन आशयदानाओ क वीर रमात्मक चरितकाव्य तथा जन साधारण का आर्कषित करने वाले शृंगार और भक्ति क फुटकर छन्द लिखन की जो परम्परा महाकवि सामनाथ, मूदन और राम काल से क्रमश चली आ रही थी, उसम राष्ट्रीय विचार धारा का बहुत अभाव था । इसका विनास वर्तमान काल म ही हुआ । अब वीर शृंगार और भक्ति के पदा के साथ २ राष्ट्रीय उद्बोधन क पद्य भी बनन लग परिणाम स्वरूप ब्रजभाषा क स्थान पर धीरे २ सडी याना का परिचलन होने लगा । गोकुलचन्द दीक्षित एस ही सक्रमण काल मे उत्पन्न हुए थ । उनका खडी और ब्रजभाषा दोनों पर समान अधिकार था । जिस प्रकार व मुन्दर कविताओ द्वारा जनता का मनोरजन करत थे उसी प्रकार गम्भीर और विचार युक्त गगा द्वारा ममाज के ज्ञान का अभिवृद्धि भी । हिन्दी

प्रचार के लिये आपने कई पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया और समिति के मंच पर स्व-स्वयं कवि दरवार और कवि सम्मेलन आदि का आयोजित कर जनता में हिंदी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने का भागीरथ प्रयत्न किया।

गातुनचंद दीनित का जन्म इटावा जिले के जयना नामक ग्राम में १९०८ वि० भाग शीप गवना ११ का हुआ था। प्रचुर म मानु सुख से रचित हान के कारण इनका पावन पापण इनकी नाई न बिरा। शीशिनजी व पिता स्टेशन मास्टर थे, अतः उनका अधिबन्धन घर में बाहर रहना पड़ता था। अतः इतका गणव मानु पितृ मुन स वचिन गत्र नीरमगवम् कष्टमय व्यतीत हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा आपके पितामह १० सालमणि दीनित के मरक्षण में प्रारम्भ हुई परन्तु किन्ही कारणों से इनका पाठगाना जाना बंद हो गया और य घर पर ही शिक्षा प्राप्त करने लगे। आठे दिना के पश्चात् इनका इटावा जान का अवसर प्राप्त हुआ, जहाँ इन्होंने मटिक परीक्षा उत्तीर्ण की। आपके पिता रेलवे उमचारी होने के कारण इनको भी रेलवे में ही नोकरी करना चाहत थे, किन्तु दीशिनजी का यह बात स्वीकार प्रतीत न हुई और य भगवत् चत आय।

यह युग आय ममाज के सिद्धांता के प्रचार तथा प्रसार का था। मयागवश दीशिनजी एक आय ममाजी सातु के सम्पक में आय और कट्टर आय समाज बन गये। इन्ही माधु से अन्धान सम्वन् का अध्ययन किया और कुछ दिना के अनन्तर अन्नाम धम का ज्ञान प्राप्त करने के लिये उन् फारसी का भी अरुद्धा ज्ञान प्राप्त कर लिया। इन्ही दिना आपका भरतपुर में सरकारी नोकरी मिल गई जिससे यही स्थायी रूप में रहने लगे। राष्ट्रीय विचारों के पापन हान के कारण सन् १९२० में आपका गिरफ्तार कर लिया गया और इनके जगभंग १०००० पुस्तिका के संग्रह का पुलिस द्वारा नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। निशान सन् १९३१ में उन्हें राजकीय सेवा से मुक्त हान का वाच्य हाना पडा। परिणाम स्वरूप आपका आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पडा, किन्तु विद्या व्यसनी हान के कारण साहित्य मृजन में मलग रहे। कविवर जन्मालाल 'मजुल लिखत हैं —

कविता कुमुदनि मुत्भरत नर रम टरत धमर ।

चंद्र नाम धरि चंद्र तौ उद्यो गातुनचंद ॥

काव्य सृजन के अतिरिक्त ये असाधारण गद्य लेखक भी थे और एनिहामिक तथा गोध पूण वाच्यों में निरन्तर लग रहते थे। इनकी विद्वो हुई १३ पुस्तकें प्राप्त हुई हैं जिनमें नाम रम प्रकार हैं — (१) वज्रद्रव्य भास्वर (भरतपुर का

इतिहास) (२) बयाने का इतिहास (३) चार यात्री (४) शृ गार विलासनी (देव) (५) दशनामद ग्रन्थ संग्रह (६) पड दशन सम्पनि (७) वैपशिव दशन (८) भीमासा दशन (९) घमवीर प० लेखराम (जीवनी) (१०) भारत राजीवनी (११) भगवती शिक्षा समुच्चय (१२) विदुर नीति (१३) विहारी सतसई की टीका (चित्र काव्य) । इनकी कविता का उदाहरण कवित्त -

नपथ नभ निहारो लाल अबली सुमेष चार
बिजुली चमकि निकट निमा आई है ।
चकित चोट बूदते काम वेकली करत
धुखाये निसान बेकी चद्र" बन भाई है ।
रवि ढकि तिमिर छपाकर मलीन कर,
आपु ही बली बन क अघेर पन छाई है ।
तत्प लखि आउ प्यारे ऐकली नवल वस
ननद ग माय सग लीन सुधि नसाई है ॥

१३६—किशोरीलाल—ये जाति के अग्रवाल वश्य और भरतपुर के हास्यरस के प्रसिद्ध कवि गिरिराज प्रसाद मित्र के अग्रज थे । इनका जन्म श्रावण शुक्ला १ सवत् १९४५ की हुआ था अत इनका कविता-काल सम्बत् १९६२ से आरम्भ होता है । इनकी कोई पुस्तक तो नहीं मिलती पर फुटकर कवित्त अवश्य पाये जाते हैं । आपकी कविता अधिकतर भक्तिपरक तथा उपदेशात्मक होती थी । भाषा और भाव दानो की दृष्टि से इनकी रचनाएँ उत्तम हैं । उदाहरण दविये —

दान घाटी बरान (कवित्त)
दारा देवतान की घर घर मनुज देह
आवें जहाँ मोहन विराजे बीच बाटी म ।
भनत किन्तार' सग गापिन के गोरम ल,
पाडस वर्षीय कला सानह सी छाटी म ।
मोहन चरावें गया सग सोहैं बल भया
ल ल साथ ग्वाल बाल मागें दान हाटी म ।
पूजन की टाटी म क दान रस हाटी बीच
माभ दू का मोक्ष मिल ऐसी दान घाटी म ॥

पात्रस वणन (कवित्त)

वज्रजल वरन अग भूत वीर केकी वीर,
 त्रिविधि ममोर स्वान बाहन मजाया है ।
 भनत किगोर नव अकुर त्रिगूल मौहै
 खप्पर तलाव टोर दादुर गुन गायो है ।
 धनुष निपुड कच्छा सूखी धन मौभित है
 नूपुरन घाग मोर गोरन मचायो है ।
 कर्त सुगंध मधुपान कर प्यारे अति
 पावम न हाय क्षत्रपान वनि आयो है ॥

काई लाजवान कोई कइयक विधान पढ
 वाइ अभिमान वाइ ग्यान ना तजत हैं ।
 काई बाग बापरी तलाव कूप म गाना
 कोइ ग्रह नह क सनह सरमत हैं ।
 भनत 'किगार' केत गज काज इर रह
 केते योग सिद्ध के उपाय दरसन हैं ।
 कहा धन धाम घर लेउग सरा म
 भय जीरन जग में तौऊ गमें ना भजन हैं ॥

बरद दरखास्त स मरी नगी, करक दया भक्ति हिय भरदे ।
 भरद पुनि जान की ज्योनि घनी वम पूरन आम मेरी करद ॥
 करद मम मंगल काज सुपूरन, पापन केर बिया हरदे ।
 हरद दुख द्वन्दन नेवि अब तू 'किगोर्गहि' मानु अभ वग्द ॥

१३७—पन्नीलाल —ये जाति के अग्रवाल वन्धु श्री भरतपुर राज्यात्तगत कामवन के निवासी थे । इनका जन्म वशाग्र शु० १२ सा० १८५० वि० का हुआ था । आपका कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं है। सक्ता है केवल फुटकर कविताएँ प्राप्त हुई हैं । इनकी कविताओं का विषय 'हागे' है । उदाहरण दत्तिका —

दोहा

रग मटकिया हाय न खडी बराबर वाम ।
 हारी छलें परस्पर हिल मिल गवश्याम ॥

भूतना छन्द

हारा म कर जोगी फारी रग की कमोरी, गोगी बया है,
 मरारी, मुन मल दई भुगरी है ।

तक भारी पिचकारी भर प्यारी प डारी फारी मारी
खीच किनारी नारी सारी हिम्मत हारी है ॥

बाला नई नवेली बोली होली छेड़ हाली चोली
तडकी दयाम अमोली होली देखी श्याम तुम्हारी है ।

जोड़ी लिये साग दग मृदग भौचग चग रागियन
के मग रग खेतत विहारी है ॥

दाहा

नई चू दरिया रग म रग दई नद क छल ।

हम रमिया पगिया रग, या अगिया क गल ॥

१३८—प्यारेलाल —ये जाति के अग्रवाल वश्य और डीग निवामी लाल
नीराम के पुत्र है । इनका ज म सम्बत् १६५० वि० मे हुआ । इनके पद बहुत
सरल सरस और भाव पूर्ण हैं । कुछ अवतरण देविए —

उमडो है दश प्रेम की सागर ।

नव जीवन नव नेह दिखावत नव युग करत उजागर ।

जाग जाग प्रिय नागरी, कहै ब्रजेश नव नागर ।

हिन्दू वासनी मृदुल हासनी, हिन्दी सब गुन आगर ।

तृष्ण ताप हर प्यारे हिय की, प्याय पियूष भर गागर ।

उमडो है दश प्रेम की सागर ॥

सवया

सौख्य सुधा सरसावन को सासाग सामान सिला ही रहै ।

हस हस के हिलोरे लेत हिया नित हेत को ओर हिला ही रहै ।

रतिराज की मोज मनायव को मन एक से एक मिला ही रहै ।

नित आपसी प्रेम के पालन को उर प्रेम-प्रसून खिला ही रहै ॥

कवित्त

अद्भुत आभास अलौकिक तमास जावे

देत है निम्बाय छटा जावन नवीन की ।

खिल दोष एक कर पास कर दूरन को

दत है सुधार प्रीति भव के भवीन की ।

हारि भस्वमारि विद्वान हू विचार रहे

आगा निराशा भइ खासा कवीन की ।

गणयी के पीछे जो प्राण ना पयान करे

कौन परिभाषा एस प्रम परवीन की ॥

मध्या

चहुँ आर निहारत दोने नही कहु गुजन बाहे प आन अली है ।
निमि-वत की ज्योति म ज्योति मिली जह प्रेम के रग म रग रली है ।
आई म्हा ये मुगध कहा मा मुरन खिली कहा कज बली है ।
नद नन्द की नाम लियो जवही तब जान परी वृषभान-रली है ॥

१३६—हृदिका 'कमलेश' —य डीग के निवामी और जानि क ब्राह्मण हैं । इनके पिता प० घासीराम डीग क प्रसिद्ध मिथ्या म थे । 'कमलेशजी' का जन्म सा० १९५० वि० म हुआ । साहित्य प्रेमी हान क कारण आपन हिन्दी की अयन सराहनीय सेवाएँ की हैं । गण्टभाषा हिन्दी के प्रचार एवम् प्रसार क लिए आपन डीग म हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना कराई जहा समय ० पर साहित्यिक आयाजन हात रहते हैं । आप अधिकारी जगतायदाम क समय स ही कविता करत चल आ रह हैं । मत्यनागयन कविग्न और आपका रचना गली में बहुत कुछ समानता पाई जाती है । कमलेशजी एक उच्च वाटि के कवि हैं ममे काई स दह-नहीं । आपकी रचनाएँ बड़ी ही सग्न मधुर तथा हृदय स्पशनी हानी हैं । सफन कवि हान क साथ ० आप कुशल-हस्त वद्य भी ह । इनका रचना के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किय जाते हैं —

प्रेम

गगन लगाई ।

विनु जान आपुही अचानक निजवर वृद्धि विमार्द ।
जानत ही जिन नेह लगायो निमि तिन जान सताई,
लाव लाज कुल की कहु बान न या मग यही भलाई ।
कहु जादू के जाल जडीमी क कहु भूल भुलाई
तन मन स्वाभिमान मुनिविमरी मोहन मत्र लुभाई ।
माधव की मधुरी मुरती पुनि महज हिये ममाई,
निज जीवन पिय ऊपर वागे रूप मुघा छवि पाई ।
मगन रहत पीतम रम राची प्रम-मत्र मन नाई,
वारि दई हरि की छवि उग्र निभुवनकी ठकुगई ।

मुरलिया

मुरलिया माहन मत्र भरी

जमुना बूल वरम तर वाजत हरि के अघर घरी ।
गोकुल की कुल बधुन जाहि सुन दोड कुल गाज परी
प्रेम-महानद माहि बिलानी राज जहाज भरी ।

शरद वरण

मत्त मदमाती सरिताकी ना रह्यो है मद
 रही नाहि मारग म कीच की निशानी है ।
 मघन की गजन है न दामिनि की दमवन है,
 दादुर मडली की सुनि आवत न बानी है ।
 भिन्नी भनकार नाहि मोर है पुवारें नाहि
 कूक कोकिलान की जहाँन सी विलानी है ।
 दूर भई गिरिराज चचलता पावस की,
 कडि आये श्वेन बार रही ना जबानी है ॥

हेमत वरण

जूता होय पावन मे रुई की पजामा होय
 काट टोपा रुई के हो कृपा भगवन्त की ।
 सौर होय गद्दा होय ओढिवे बिद्याइवे कू
 अग्नि की अगीठा होय बठक एकान्त की ।
 गुड होय तिल हाय गम गम बरे होय
 नारि हो अनौखी प्यारे वन्त गुनवन्त की ।
 गिरिगज' बाजरे की खीचरी मे धीउ हाय
 ऋतु का उखार पूछ शिदिर हिमत की ॥

अयोक्ति

सुवन समान स्वान हमन था पाला एक,
 खुश होते थे जिसे मलकर हिलाने म ।
 गोदी मे उठा के चिपटात कभी चूमते थे,
 ' सुख पाते थे लस्सी दूध के पिलाने मे ।
 रबडी मलाई खोवा खुरचन मगाई खाड
 स्वप्न म न राखी कमी जिसके खिलाने मे ।
 देखा गिरिराज' आज अजब तमाशा मित्र
 काठन का आता वही आँख के मिलाने म ॥

हास्य

मार है मच्छरों के दल के दल 'गिरिराज'
 चटियों के गूहन के व्यूह हनि डारे है
 केंचुआ के कटक कटीले काटि डारे सब
 खचि खचि मक्खिया के पखरे उखारे हैं ।

गजब गिजाइन प गरजि परे हैं टूट
 मारि मारि दुश्मनो के होंसले बिगार है ।
 भीगुरो प भपट भिली न भट भागे भीरु,
 वीर हम वाक् ! जग जीहर हमारे हैं ॥

दूर यदि हमसे रहोगी एक इच प्यारी
 हमको भी दम इच हट क ही पाओगी ।
 नाड कर नही सा सनह ना सहागी लाहु
 गिरिराज' करके गुमान पछिताओगी ।
 बिल उठती हैं बली पाकर हमारा सग,
 मस्त मधुरुर है फरि चाह कर चाहोगी ;
 एठी ही रहौ ता एँठ तुमको धरगी एँठ
 हमका बलपाओगी न आप बल पाओगी ॥

सीम सिवा नहि होगी भल
 पर सुत्र मांग बरार होगी ।
 गहन पाग की हागी नही,
 नहि टोपी की स्वाहिम चित्त मे हागी।
 प्याली शराब की हागी जर
 ओ पाकिट कची मा खानी न हागी ।
 गान निराली न होगी कभी
 गर सूछ की पूछ कटाली न हागी ॥

१४२—ग्धुवरदयाल —ये डींग निवासी दामोदरलाल क पुत्र और जाति के ब्राह्मण थ । इनका जन्म सन् १९५८ वि० म हुआ था । इन्होंने तीन पुस्तकें लिखी हैं —(१) श्री कृष्ण जन्म (२) श्रवणकुमार और (३) लावन की महतारी । इनक म्याल भूनना लावनी और गजल आदि बहुत सुन्दर बन पडे हैं । उपाहरण देविया —

घर बग छल पनहारी जल भरन चले बनवारी ॥ टक
 एक त्रिना उठ प्रात श्याम नें, ऐसी मनी उपायी है ।
 नख सिख तं शृ गार बनाकर, नवल नारि बन आयी है ॥
 रत्न जटित इंदुरी मिर सोहै, कचन की घर भारी ।
 घर बग छल पनहारी जन भरन चले बनवारी ॥

मरी टर सुनो गिरधारी रीव द्रुपद मुता सुकमारी ॥ टेर
 पापी दुमासन पाप कमायो, मभा बीच मोय गच के लायो ।
 अब चाहत करन उधारी मरी टर मुना गिरधारी ॥
 पाचा पति न मोन गह्यो है, काहू क बल नाय रह्यो है ।
 तुम ही का लाज मुरारी मेरी टेर सुना गिरधारी ॥
 मेरी लाज के आप गबया, कष्ट हरो ह वृष्ण कटैया ।
 धाम्ना वेग बनवागे मेरी टर सुनो गिरधारी ॥
 तू नारायन है श्री जग तारन, रघुवर' जन क काज मम्हारन ।
 आइय गहड सवारी मेरी टेर सुना गिरधारी ॥

१४३-रामप्रिया माथुर—आपका जन्म मन् १९०१ म दोग क सम्भ्रात
 कायस्थ कुल म हुआ था । आपके पिता सुप्रसिद्ध इतिहासकार मुशी ज्वाला
 सहाय थे जिहान राजस्थान एवम् भरतपुर राज्य का दोध पूण इतिहास लिखा
 है । पर्दे की प्रथा होने के कारण आपकी शिक्षा घर पर अपन पिता तथा भाई
 डा० काशीप्रसाद की देख रेख मे हुई । इनका विवाह भी एक प्रसिद्ध कुल म
 हुआ । इनके पति धौलपुर निवासी डा० दीनदयाल बडे ही साहित्य प्रमी हैं और
 उही की प्रेरणा के फलस्वरूप इनकी काव्य प्रतिभा प्रस्फुटित हुई । इनकी भाषा
 सरल मधुर और प्रनाद पूण है । इनकी रचनाआ स इनकी सहृदयता रचना
 कौशल और भाषा पर अधिकार अच्छी तरह प्रमाणित होता है । इनका समस्या
 पूनिया पर कई बार पदक भा मिल हैं । साहित्यानुराग के साथ २ आपको समाज
 सुधार म भी विशेष रुचि है । य भरतपुर राज्य म व्रज जया प्रतिनिधि समिति
 की सन्स्था भी गृह चुकी हैं । स्त्री समाज का जागृत करन के लिय आपन मन्
 १९५० म धौलपुर म 'महिला विद्या मंदिर की स्थापना की जहा सक्डा
 बालिकाए शिक्षा प्राप्त करती है । इनकी रचना के कुछ उदाहरण नीचे
 लिय जात हैं —

नागी के प्रति

किस चिन्ता म डूबी हा तुम, साच रही हा क्या मन म ।
 निनिमेष नयना स किम का खोज रही हा क्षण क्षण में ॥
 वहाँ सुमागलीक प्रतिभा की छटा छिपा ली जीवन म ।
 मानव जीवन मयाप्त जा, श्रेष्ठ रही प्रतिपालन में ॥

छोन लिया अस्तित्व तुम्हारा नकली रग चढाया है ।
 अब जाना मायायी जग न तुमका बहुत सनाया है ॥

जित स्वतंत्र भू पर प्रतिपालित था य ममुचित आदेश ।
महाशक्ति के करगत ही हू, विश्व शक्ति का शुभ सन्देश ॥
करो मान उस नागि बग का वी है महा शक्ति का देश ।
हुमा नहीं करता कदापि उस शुद्ध शक्ति का भी निशेष ॥

वेदान्त इस परम्परागत गुरु का सुयोग मुनाया है ।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको बहुत सनाया है ॥

दुगा वन नन्मी रानी न किया सुगोभित रण आगन ।
पद्मा पत्रिन्न पतीन्न का ही मन्त्री थी निज जीवन धन ॥
मीरा की क्या कहें कहानी, अमर हुइ वा यागिन वन ।
मत विसराम्रा उम गौरव का, करो शीघ्र फिर आवाहन ॥

उत्साहीनता, कायरता न, नीचा सदा दिखाया है ।
अब जाना मायावी जग न, तुमको बहुत सनाया है ॥

क्या कहती हो ? राह नहीं है बाधाएँ ह अकथ अनक ।
बिंतु नहीं साहस दृढता से, करो क्रान्ति का भी अभिप्रेक ।
बुद्ध परवाह नहीं जा आये, कठिन बरड एक स एक ।
जमी रहो उत्सव भाव से बिंतु तजा मन विमल विवेक ॥

डर तब तुमका क्या है तुमन निज वतव्य निभाया है ।
अब जाना मायावी जग न तुमका बहुत सनाया है ॥

क्रान्ति उठेगी प्रामादो से जहाँ विलायिता करती नृत्य ।
जहाँ नागि क मग फिरकुंग, निदर्यता का होता वृत्य ॥
क्रान्ति उठेगी अस्तित्वा का, जहाँ मिटाया ह गुचि सय ।
रहा न जिनका बंद निहित निज अधिनारा का भी अधिपत्य ॥

क्रान्ति जननि है अमर शक्ति की, सना जगन जगाया है ।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको बहुत सनाया है ॥

राम वियोग

हरि हिरान से हरित अहग्नि में,
तीरन म कौन तीर राम के पवार है ।
त्यागि नृन नीर ने अतिशय शघार वृग
नैन राह आनि स्याम भण प्रति वारे हैं ।
नील जल माहि नम मडल की छाह छुए
धरन छिनिज कहै धारन परार ह ।

श्रीधर न वासी मृग जीव ति हैं "राम प्रिया"
सूने से दिखात अब सरजू किनारे है ॥

श्रीधर ही बिलोक अब, पावत न चित्त धिनि
बिक्ल बदन सो वियोगन क मार हैं ।
सूने स्वरा धाम सब राम बिन राम प्रिया
नरक निवास ज्यों निराट अधिघार हैं ।
मनुजन की कौन कहै, जीव और जन्तु सब,
श्रीधि श्रीधि आवा की आसा निरवार हैं ।
कोऊ बिलखाए कोऊ धीरज बधाय कर
कोऊ जप जाग जाय सरजू किनारे हैं ॥

केकि कठ नाद बह, बांसुरी निनाद जानि
नाचती है गावता है सग म सुमीता हैं ।
ठाब ठाब देखती हैं आयु की सरूप बह
आपु ही के नेम और प्रेम म पुनीता हैं ।
दखि देखि स्याम रग कीडनि है यमुना म
नीर म अधीर हो डालती विनीता है ।
ऊधो कहै माधो जू गापिन के प्रेम तले,
कहा है विराग और कौन चीज गीता है ॥

गेह की सनेह त्याग दी हीं अरु देह की हु,
मन म निहारी मजु मूरति की चिन्ता है ।
जमुना दुङ्गलनि पर भेंटति है धाय धाय,
तरु सो तमालन सो अतिशय विनीता है ।
लेहु स्याम लेहु स्याम टेरती सम्हारती हैं,
दौननि म हाथ दधि, और नबनीता है ।
गापिन के नेम प्रेम आग हरि ऊधो कहै,
कहा है विराग और कौन चीज गीता है ॥

१४४-रावत चतुभुजदास साहित्याचार्य -आपका ज म एक प्रतिष्ठित चतुर्वेदी कुल म सवत् १९६० वि० म हुआ है । इनके पिता का नाम श्रीराधा-मोहन चतुर्वेदी था । य बड़े ही हस मुख और सरल प्रकृति के हैं । गाव मेही आपको अभिरुचि काय सृजन की ओर थी परन्तु इसका प्रस्फुटन

विशेष रूपेण युवा काल म ही हुआ । आप ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोना पर समान अधिहार रखत हैं और पद्य तथा गद्य दोनो म ही लिखत रहत हैं । इनकी रचनाओ म भाव पक्ष और कला पक्ष दोना म सामजस्य पाया जाता है भाषा भावानुबल बदलती रहती है । इन्हाने विविध विषया पर अब तक लगभग ५१ पुस्तकें लिखी हैं जिनम स अधिकाग मुद्रित हो चुकी हैं । आपन भरतपुर स्थित राजकीय अदभुतालय क अध्यक्ष पद पर रहत हुए हिंदी की असाधारण सेवाए की है । इस अदभुतालय का मत्वतोमुखी उत्पत्ति का श्रेय भी आपही का है । आपकी रचनाआ क कतिपय उदाहरण प्रस्तुत निय जात हैं —

नन मनवार हैं (कवित्त)
 प्रति अनियार जग जीवन क मोहव का
 कछु कछु भुक मुरे परम पियारे हैं ।
 लोकन मगाह वम जग क लाय एस,
 नह के भुलाय ध्याम स्वत रतनारे हैं ।
 चतुमुज' परम प्रवीन मीन म्वजन स
 अजन लगाये हग हगन उजारे हैं ।
 माहन के मय तत्र जगत जगायवे के
 मुल्लर मलोन लोन नन मतवार हैं ॥

ललक उठे ह लाल लाचन निहार वड
 परम प्रवीन कधी रति के ममारे हैं ।
 कारे कजरार मार मन्न महीपजू क
 हग अनियार मय लावनत यारे हैं ।
 'चतुमुज चतुर कटील नन सन नारे
 नेहक नवीन प्रिय प्रीतम क प्यार है ।
 जग उजियार कामदव क दुलारे
 प्रेम वारि दन हार नन मत वार है ॥
 सबया

कोमल पात मगोज समान यह प्रेम को नम निवाहना है ।
 रस म निमिवासर वाम क तऊ ऊचा प्रवीन निस्वावनो है ।
 दास चतुमुज प्रीति पतग म चित्त की डारि चन्नावनो है ।
 पूछा कहा प्रिय प्रेम को पथ कराल मगन मा धावना है ॥
 मानु रही समभाय मतीसुन है गुनवत वही गुम नारी ।
 जा हर भाति सा प्रेम कय पनि नेम घर धरनी घर वारी ।

नारी की देव बह्यो पति है परवीन भली यह जान दुनारी ।
नारि स्वतंत्र न हैं कबहु परतत्र पिता पति पूत समारी ॥

(पानाजलि स)

पान मन का होना है बढ कर हीरे से ।
मर्मतिक पीडा मिटती जिमक मितान मे ।
जितना जितना मूल्य बढाते हैं इमका हम ।
उतनी ही उन्नति करत गौरव बढन से ॥

(आत्मोहाम स)

यह मृत्तिका का पात्र जा फूटा प्रेम ललित ना पावागी ।
खाली खपरा से क्या फिर तुम अपना दिल बहलाओगी ।
टुकडे टुकडे बिखरग जा फलेंग हर जगह यहा ।
और तुम्हारे प्रेम मिलन का बात कहग यहा बहा ॥

(सुमन सबया से)

ना तुम हो बुद्ध भी प्रभुजी पर छाड तुम्ह कछु नाहि हमारो ।
हो तुम नाहि कहूँ जगम पर लेन सदा जग तार सहारो ।
रगहु नाहि न रूप विभो पुन फर हम तुम खूब निहारो ।
मा मन है भ्रम नाथ यही सब रग रगो रहै लोक तिहारो ॥

(चतुभु ज सनसई स)

ओछे घट उछर बहुत, भरे न बोते डोल ।
नीच काच पायन सु दत अमल कमल सिर डोल ॥
दुडा जाय बजार मैं तीन बार मैं खूद ।
मगल ना इतिवार है बुद्धि विलानी ऊर ॥
जब तक चिनगारी नही चमकगी तुम माहि ।
तब तक तकत रहाग मदा और का छाहि ॥

१८५-नन्दकुमार -कवि भूपण प० नन्दकुमार का जन्म कार्तिक शुक्ला
पूर्णिमा सम्बत् १९६० वि० मे एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में हुआ था । इनके
पिता का नाम विश्वम्भर नाथ था । आप अपनी गार्हस्थ्य परिस्थिति के कारण
मट्टिक परीक्षा नहीं दे सके और राजकीय मुद्रण विभाग में मुलेखक का काम करने
लगे । उन २ कठिन अध्यवसाय में आप मनजर के पद पर पहुँच गए । राजस्थान
वनन पर और भरतपुर में प्रसिद्ध जान पर ये जनरल क्लर्क विभाग में रोल्स
इचा निमुक्त हुए । उस काम के समाप्त हो जाने पर उन्होंने स्वच्छा पूर्वक

राजकीय सेवा से अवकाश ग्रहण कर लिया। इसके अनन्तर ब्रह्म निष्ठ १०८ मोहनदान महागज से मयाम की दीक्षा ग्रहण कर ये वावा गाल मोल के आश्रम में निवास करने लगे और गुरुमुख दास कहलाने लगे। आपका अधिकांश जीवन साहित्य समाज-सेवा में व्यतीत हुआ।

ब्रज भाषा तथा खड़ी भाषा पर समान अधिकार हान में इन्होंने दोनों ही में रचनाएँ की हैं। भगतपुर राज्य में प्रकाशित होने वाले भारत वीर पत्र के प्रकाशन में इनका पूरा योग रहा। आपका गद्य परिष्कृत तथा अलङ्कारिक होता था। ये रामचरित मानस के अनुवम विद्वान थे और साथ ही श्री हिंदी-साहित्य समिति के अनन्य भक्त भी। आपकी बहुमुखी प्रतिभा साहित्य के अनेक अंगों की पूर्ति में पूर्ण रूप से सफल हुई है। आपने अनेक ग्रंथों की रचना की है, जिनमें सती माह पाञ्चाली पुकार तथा रम्भा गुक सम्वाद विशेष ओजस्वी एवम् हृदय ग्राही छन्दों में लिखे गये हैं। इनकी रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

पाञ्चाली पुकार में (छप्पय)

मम भक्तों की लाज, कहा किसक कव नापी।

अध घट अपना पूरा किया करत हूँ पापी।

जो मेरा हो चुका लाज को फिर क्या चिंता।

इस रहस्य को जान तजो सागे दुश्चिन्ता।

सब मशय मन से दा हटा, दखो जो कुछ हो रहा।

इदमिथ्या जाना इसे गूढ जान तुमका कहा ॥

केवट सम्वाद में (मत्त गणन्द मवया)

नाब चढाय चली हंगाय, ममाद लियो पतवार उठाई।

गावन राग मुप्रम भरयो, छनि छाक छक्यो न उमग समाई।

मागन दब सा बारहि वार अगार विभा यह पाथ बनाई।

केवट नाव रहा इहि भाति, रहे असवार मदा रघुराई।

छोह करे घन शीतल मद सुगम समीर बहै सुखदाई।

गग उमग भरी अवलीन सो श्रीपति पाद वखारन धाई।

काटिन नन किय मिमि मोनन रूत पिबूप पियै न अघाई।

धय हिये घर ते पद-पकज आजु भई जिनमो प्रगटाई ॥

सान्ति-पथ-पथिक से (रोला)

सति अगान्ति के चक्र चढा यह निरब चनाया।

द्वन्द दड कर धारि नचाती इसकी माया।

दृषा तना विसोक रहा माया पति क्रीडा।

शान्त एक रम में हय रचव नहि क्रीडा।

तव यह शुद्ध विचार तुरत ही मनम गाया ।

शास्त्रा म वह अश श्रीर अशी मे गाया ।

फिर रसाल की डार आक फल कयो कर फूला ।

इनन ही से छोड अविद्या भागी तूना ॥

मलकम से

कर्मोपामन जान माग्य योगज्ज पगुपति मन ।

वष्णवादि जा माग सभी है निज निज धल शत ।

हचि द्विभिन्नता करहि भिन गुरुमुख दरमावत ।

सबहि जान म मिलहि सबहि पद परम दिसावत ।

जो जिहि हचि अनुकूल हा सा पथ ताको श्रष्ट है ।

न तु सब सालिग्राम है ना कोउ लघु ना जेष्ठ है ॥

सर सरिता नद नारि रूप अगणित जल साधा ।

सरल चल क कुटिल अगुचि हो या अति पावन ।

जल निधि जल को अविष्ठान श्रुति सतन गायो ।

सो तासौ ही निक्स ताहि म जात समायो ।

यो जग अरु जग मतेनको अधिष्ठान भगवान हैं ।

सब तिहि तव पहुँचात है गुरुमुख सब महान है ॥

श्री राधिका नख शिख से पद तल वणन (सकया)

छीन कर छवि सा छविकी छवि छीन छपा करकी छरिया है ।

जाप करें जिनको निशि वासर कोटिन ही इनके जपिया है ।

चाह भरे नित चाहि जिहै पग तीन त्रिलोकन क नपिया है

कीरति नदिनी के पग की थपिया कवि कीरति की थपिया ह ।

नख वणन

हा जु वही न लखात कहै अर ना जो वही बड लागे बलक है ।

वेदहु भेद न पाय सक नहि शास्त्र हु द्यान छुट मन शक है ।

भू नभ लो बिन टेक सदा तन छेक रहै दुविधा न निशक है ।

ब्रह्म समान अराधिका सी यह राधिका की बर सूक्ष्म लक है ॥

निल वणन

क जल जात के पात सुहान पराग छकयो अलि बठ्यो तलाम है ।

क बर हाटक पीठ निमक निवास कियो यह मालिगराम है ।

क रात श्री रज के त्रिगुणी करिव तम चिह यहै अभिराम है ।

क प्रति रोम तली के त्रम प्रगट्यो निल रूप बही घनश्याम है ॥

क भर चोप चली चित म वर पक्ज प चडि क अलि सीनी ।
पीय पियूष किधौ शशि प चडि लोग रही अहिनी अलसीनी ।
वार कलि द सुता की किधौ जन क अघ ओषन जूहन छनी ।
दनी महा मुट मगल की वृषभान लली की किधौ वर दैनी ॥

१४६—सावलप्रसाद चतुर्वेदी—आपका जन्म आश्विन गुहा ५ सवत्
१९६१ वि० को ग्राम अमौरा (भरतपुर) में प० अजयराम चतुर्वेदी के यहां हुआ ।
एक प्रतिभाशाली कवि होने के साथ २ आप निस्वाय जन सवक एवम् लक्षणति
ठित नेता भी हैं । ये राष्ट्रीय आंदोलन में दजनों वार जेल जा चुके हैं और
भरतपुर राज्य के आंदोलन में वर्ये आर भाले तक सहे हैं । महिला शिक्षा प्रसार
में आपकी बड़ी अभिरुचि है । आजकल आप महिला विद्यापीठ भुसावर के अ
निक मंत्री हैं । काव्य के प्रति अनुराग तो आपमें बचपन से ही पाया जाता है कि तु
काय सृजन की प्रेरणा मन् १९३६ स अकुरित हुई जब आप देश स्वातंत्र के
लिए कारागृह की कठार प्राचीरो में बनीं थे । चतुर्वेदीजी एक कुशल ओजस्वी
एवम् प्रतिभाशाली वक्ता भी हैं । गद्य और पद्य दोनों पर आपका समान अधिहार
है । आपने अनेक पुस्तक लिखी है जिनमें स (१) रण बाबुरा सूरजमल, (२)
वृष्णा श्याम गायन और (३) समाज के शिकार मुद्रित हा चुकी है । आप बड़े ही
सरस भावुक और निपुण कवि हैं । इनकी कविता आजपूण और ममस्पर्शी
होती है । इन्होंने अपनी रचनाओं में 'श्याम' उनाम अकित किया है । आपकी
दुनिया के कतिपय उदाहरण उद्धृत किये जाते हैं —

॥ जन श्रुति ॥

जब कि बात दुनियाँ में फली खटकी सबकी आँखा में
प्रेम कहानी कवि जन गाते अब क्या डरना लासा में ।
अब क्यों आँख चुराते प्रियतम । किया प्रेम फिर डरना क्या
प्रेम पथ के पथिका का है प्रश्न मरन जीवन का क्या ।
पागल दुनियाँ कुछ भी कहले करल अपनी मन मानी ।
लेकिन कवि वर सदा लिरंगे प्रेम-कहानी रम मानी ।
लज्जा लगर ताड डाल दी नया अब भव सागर में ।
कर में बल्ली आंगा की विद्वाम महा नट नागर में ।
या तो पार लगगा बेडा या विलीन हो जायगे,
एकी चित्त निराध तृती हा गान्ति इसी में पायेंगे ।

जावन की रक्षा केवल जीवन देकर क हा जाती,
अपनापन खोय विन गार् वस्तु कभी ना मिन पाती ॥

॥ अभिनाया ॥

प्रिय प्राण का पछी मरा छोट स्वर्ण नम य पजर
उर जावेगा महा शूय म तुम न बहाना दृग-निभर ।
नित्र नयना की अशु मुनरि का कर हृदय-दग म व २
महा नीलिमा म प्रिय ! मुनका उड जान दना स्वच्छ ॥
ले विषाद की सघन कालिमा काइ न छाव मर पाम,
सुन न सङ्ग में करण गान वनि हिय म हाकर व्यथिन उराम ।
तुम कवल बस तुम रहना प्रिय वाना म कहना बुद्ध वात
निज कर-कोर स्पग म पुलकितकरनी रहना मग गान ॥

॥ कवि म अपाल ॥

हम सात है टकरानी विप्लव की लहरें दीवारा म
ह कवि जाग्रत करदा हम का अपन गंगा की माग मे ॥
अव निभर क कलरव अलिकुल क मर मर गंगा क वदन ।
बल बीरा की हैवार सुनाया दानवता का दिलदहल ॥
जब से यह भूपण हीन हुआ भारत तबम तकदीर फिरी
इम महावार के हाथा म म तिन स ही गमगी गिरी ॥

पाचाल बही बगाल बनी पर गत गौरव का जान नही ।
है पाटलीपुत्र महान बही पर चद्र गुप्त की गान नही ॥
मद्रास वही मसूर वहा पर वह टीपू सुलतान नही ।
है राजस्थान बही लखिन भव रजपूती अभिमान नही ॥
गायक अतीत की गाथाया का गादा जीवन ज्यानि नग ।
मुरदा का मन भी मत बने, श्री प्राणा की ममता दूर भग ॥

श्रीराम कृष्ण क युक्त प्रान्त का निज मयादा सूझ पडे ।
बुन्दल खण्ड आहा उदल का जीवन रग म जूझ पडे ॥
गुजरात हा उठे सजग उचाल निज अस्ति धारा का पानी ।
महिलाया म म निवन पडे कितना भासी की रानी ॥
ह यु निमाना तुम अपना वाणा म भरव राग भरा ।
हृष्या म नीपण आग भगे मानवता का अनुशय भरा ॥

१४७—कुम्भनलाल 'कुलशेखर'—आपका जन्म भरतपुर निवासी प० कन्हैयालाल के यहां भाद्रपद कृष्ण ८ मन्वत् १९६१ का हुआ था। इनका उपनाम कुलशेखर है और इमी नाम से भरतपुर में विख्यात हैं। कवि कुलशेखर कवि मुरली मनाहर क प्रिय शिष्या में हैं जिनकी प्रख्यात स० १९८१ से आप काव्य मृजन कर्न लग। आपने पुस्तकों की रचना की है जिनके नाम इस प्रकार हैं—(१) शृ गार सरोज (२) वीर विनास (३) विनय शतक (४) अमृत ध्वनि-चालीमा (५) पाकिस्तान विध्वंसक चालीसा (६) दामत व हाली शतक (७) अद्भुत कहानी और (८) पिगलसार प्रवाद, इन रचनाओं के पटने से पता होता है कि आपका भाव और भाषा दाना पर समान अधिकार है। इनके बराना में सजीवता और गली में रोचकता पाई जाती है। वम तो आपने अनक विषया पर सुंदर रचनाएँ की हैं परंतु वीर और शृ गार दा रसा पर आपकी कविताएँ बहुत मूल्य वन पडी हैं और उन्हा के कारण आपकी चारा और न्याति पनी हुई है। आपकी भाषा परिष्कृत परिमाजित व्यवस्थित और भावापयुक्त है। निम्नादृष्ट कवि कुलशेखर एक अम्यन्त और निपुण कवि हैं। आपकी कविता के उदाहरण दक्षिण—

वासुरी (मवया)

पगडी मिर माहन कुण्डल श्रोन रह्यो पटुका कटि गामुरिया ।
हरि चदन भाल हगजनन्, नित राखत गोधन पासुरिया ।
कुल शेखर भाल मराजन की लटक उर प मृडु हामुरिया ।
नट नागरिया गुन आगरिया, अघरा चढ पोन्न वामुरिया ॥

अनि भार उठी अनमान निया
नव चद्र मुखी मुख घाय ग्ही ।
रमनायक भायक क विछुर,

मनम बहु चितित हाय ग्ही ।
लट छट परी कुच ऊपर मा

गिग के शिर मानहु प्रम भगी
मुप पाय मु व्यात्रिनि सोय ग्ही ॥
वमन्त (कु र्तिया)

दामन गमन्ती दम के जायी निरह वसत ।
वम न वन मा है अना जान कहीं वसन्त ।

जाने कहां बशात अत विरमाय वीन ।
 मै बठी मन भार रहै कोविल नहि मोन ।
 'कवि कुल शेखर' कहैं साकी यह है गुनवती ।
 जा घर कर अनद पिया कस वमन बसती ॥

वपा बहार

उमडि उमडि चहुँ दिसा जल भर भर
 जल धर फिरत धिरत छिति वन वन ।
 लहर लहर लहरत भुक भुक द्रुम
 पवन चलत तन लगत सावन मन ।
 'कवि कुल शखर चमक लखि चहकत
 वुमुभ कनिन चटकन मन धन धन ।
 भहर भहर बद बद भर लगवत
 दनन दनन दन तडिन तडक घन ॥

॥ कन बध ॥

नटवर हलधर वीर बर महाबली समरत्य ।
 कुल शेपर कसहि हनन हल मूसल लिय हत्य ।
 हत्यद्वर गुभ चक्र बक्र पर वान्ति भक्तवक्त ।
 टिटड पग्य सिर वक्त भृकुटिहि हुँव हलवक्त ।
 युगुलभ्रातहि भभय आतहि उर क्रुद्धद्वर ।
 तीरस्सम चल वीरगन लपि कुची नटवर ॥

॥ नरसिंह अवतार ॥

हरन कष्ट निज भक्त की दुष्टहलन समग्र ।
 कुल शेपर कडि खम्भ त गज्जत तज्जत अग्र ।
 मगप्यग धरि जिहू तपवक्त भज्जकर गहि ।
 कट्टत दतन फट्टत अत पटवक्त पुनि महि ।
 टिटड भ्रकुटिहि तक्क अरिज्जन कम्पत्यर धर ।
 तत्तनाक चिक्कार अमुर भारयो जय नर हर ॥

जवाहरसिंह का युद्ध कौशल (छप्पय)

गगन धु धरित धूम घाम बहु धरा धसवके ।
 धीर तजे रन धीर वीर मुन शद ममवके ।
 भुप्रत कोप कृपानु भानु जिमि श्रीपम की है ।
 तन् बिफरी नर नाह जवाहर नाहर सी है ।

‘कवि कुल गेपर रग मत्तहू दुहकर म तरवार है ।
नृप महाकाल बन कर रह्यौ बार बार पर बार है ॥

॥ दिल्ली विजय ॥

प्रबल प्रतापी मूर सूजा की सपून सिंह
लूट लई जान राजधानी हिंद भर की ।
कर की कृपान ते दिनाम लीन छन जिन
भार ह गुमान प्रथा पाली वीर वर की ।
कहै ‘कुल गेपर’ ममन्त गनु सन धिरी,
ठाडी चहूँ शर जट्ट मेना बा ववर की ।
कन्हू माहि तिह्नी पिल त्योही पेर तिह्नी दई,
हला एक ही म मागी बादशाही मर की ॥

हान जा न प्रणवीर प्रबल प्रताप सिंह,
मान न गुमानी कौ गुमान कौन हरना ।
हिन्दुन क उपवीर चोटा कहै पाते नहीं
मवन निवाजी जा न गनुन सौ शरता ।
कहै ‘कुल गेपर’ ममन्त हिन्द वामी लाग
यवन कहात और निवाजी हीन परतो ।
उदत प्रचण्ड बल वण्डन क मान खण्डन
हान ना जवाहर तो और कौन करतो ॥

१८८-छोटलाल ब्रह्मभट्ट—आपका जन्म भरतपुर निवासी गुरनीलाल के यहा भाद्र पद कृष्णा ११ सवत् १९६२ का हुआ । आपकी काव्य रुचि जाग्रत करन म श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का बहुत बडा हाथ है । द्वितीय विश्व युद्ध स पूव हान वान कवि मम्मेलनो से आपका काव्य सृजन की प्रेरणा मिली । आपका कविता काल स० १९६० म आरम्भ हाना है । इनकी कविता म मात्र क साथ प्रवाह का अच्छा सामञ्जस्य पाया जाना है ।

भरव स्तुति (कवित्त)

मन्दिन म्मड धलवड मुन चडिका की
राजन ब्रह्म ड प प्रचड भर पूरिया ।
रड-वड खरग मा मनेच्छ-ल दन दन,
गार के घमड गव गजन मन्रिया ।

‘छाटे कवि’ सेवक की भारत अनाज पाय
 धीरज धरायव का धावत जस्त्रिया ।
 वाबुरा विक्ट वरदायव वदुवनाथ
 चमवत गुचार मीस भूरी लदूगिया ॥

हनुमत प्रतिना

स्वामी धीर धारी उर काह धवरावत हो
 औपधि क लन का छलांग मार जाउ गो ।
 बूटी की कहा है बात धरा सा उखार भट्ट
 द्रोनागिरि लाय पट्ट पाम म गिराऊंगी ।
 आना सिर धारू औ उवार प्राण लक्ष्मण के,
 ‘छाटे कवि आऊ वेगि दर ना लगाऊंगी ।
 सत्य मुख भावू काम एतौ जो न कर नाथ
 तौ म मात अजनी की सुत ना कहाऊंगी ॥

क्रुद्धित हा लव माहि बूट हा निगव है क
 पाजी घननाद रस युद्ध की चम्बाऊंगी ।
 भारू गो घमड तन फार वर डारी खड,
 प्रवल प्रचड दड मारव नगाऊंगी ।
 ‘छोटे कवि भपट भडाक दस-कधर के
 दग गीश वीसा भुजा तारक गिराऊंगी ।
 सत्य मुख भावू काम एतौ जो न करू नाथ
 तौ मैं मान अजनी की सुत ना कहाऊंगी ॥

नीयत प मावित व न नीयत विसार दउ,
 छाड देउ दूमरा की चीज गपनावनी ।
 याठा याम नित्य ही त्याल रहौ दोनन प,
 काहू समय काहू वा न आस दिखरावनी ।
 ‘छाटे कवि कहे मुख भाखौ ना विप के धन,
 सबहा मा बात कही हिय हरपावनी ।
 तजके गुमान यान लागौ परमेश्वर सो
 मानुष की दही य न बार २ पावनी ॥

१४६-प्रभुदयाल “दयालु” -कविवर दयालु का जन्म फात्तुण वृष्णा
 १ मन्वत् १६६३ वि० का भक्तपुर निवासी प० रामवद्र के यहां हुआ था । श्री

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के विभिन्न कवि सम्मेलना तथा अत्याय सस्थाओं के साहित्यिक समारोहों से आपका काव्य सृजन की प्रेरणा मिली, जिसके फल स्वरूप आप सरम भावुक और निपुण कवि हो गए। आपकी कविता बड़ी सरल तथा हृदयस्पर्शनी है। इनकी भाषा मधुर और प्रसाद पूर्ण है और कल्पना विषय के अनुकूल और सुंदर कोटि की है। मातृभाषा हिंदी की निरछल सेवा करना ही आपके जीवन का ध्येय है। आजकल आप श्री हिंदी साहित्य समिति के पुस्तकालयाध्यक्ष के पद का भार सम्हाल रहे हैं। प्राचीन कविता के जीवन वृत की खोज में आपका सराहनीय योग प्राप्त हुआ। आपकी कविपय सरम रचनाएं निम्नलिखित हैं —

अश्रुियाँ (मक्या)

सित कजरी चार विलासन तं विधि क मम सृष्टि उपायी कर ।
हरि क मम प्रेम पिपूष मा पोष, 'त्यालु' सुनीति जिवाया कर ।
लसिक करतूत कराल वनी हरक मम भाग नसायी कर ।
त्रिगुणी त्रय रग रगी अश्रुिया त्रय देव की रूप लसायी कर ॥

रम रम विलास म मोरनीमा, नच चाहक-रित्त चुरायो कर ।
लडती अडती गति सूरमी हूँ मूडू चित्त में ये गड जायी कर ।
बहु भाव भरी बहु रूपिनी सी नटती नटनीसी लखायी कर ।
करुणा की भिन्नारिनि य अश्रुिया पापाण हिय पिघनाओ कर ॥

वसंत वरान (कवित्त)

विविधि विटप नव परलव प्रसून युन
सनि क सो सीम दावी त्रिग ओ त्रिगत की ।
विविधि ममीर तीर छाडत मनोज वीर
कहर वियागिन वानी वात हा हत की ।
काकिला न बूक य चनन बडूक बहु
कमल पराग नहीं गम है य अतकी ।
राखीरी वियोगिन तन गाटे या जनन मा
जीवन का आई उन वाहनी वसंत की ॥

व्रज रमवार की
वीसवी सदी में नृपति श्री कृष्णमिह,
हैं क प्रनामी राखी लाज ज म धारे की ।

बाढकी बराल डाढ अजका गहन लगी
 विललानी प्रजा ज्यो धमन-गण माग्की ।
 भनत 'दयालु ता समय भूप कृष्ण भये,
 स्वय बढाई बहु धाम बल अपार की ।
 ब्रज की बचायो दुख दारिद बहायो मय,
 याद य रहैगी ज्ञान ब्रज रग्यवार की ॥
 भक्ति परक (सबया)

ननन त न लखे भगवान न बनन त गुन गान की गायी ।
 वानन ते न सुनी हरि की गति पावन सा जनि तीरथ धायी ।
 देखन त न भयो हिय हृष, न हाथन ते दीबोहु मुहायो ।
 आवत जात बराबर है जग देह धरे की कहा फल पायो ॥

प्रताप की कृपाण-वार्ति (कवित्त)

खुलते ही खोल खलवली मची खलक वीच
 भप पलक दख बर झलक आंग बरकी ।
 विद्युत प्रभासी भासी खासी बर पानिप सा
 चल चचला सी माल गूधक ही हरकी ।
 भनत 'दयालु सुनी कालकी सहोदरा सा
 बरिन को स्वग दा सगनी समर की ।
 एहा बर प्रताप तेरी बर्छी विजय हपणी सी
 नीकी पतवारमी ही नोका युद्ध-मरकी ॥

१५०-राधारमण शर्मा "मोहन" -आपका जन्म माघ कृष्ण ३ सम्बत्
 १९६६ को प० श्यामलाल वाशिष्ठ के यहां हुआ । आपके पिता का कविता से
 बड़ा प्रेम था । वे समय समय पर सुन्दर रचनाएँ किया करते थे । अतः आपको
 काय प्रेम पतृक बिरासत में मिला । मच तो यह है कि काय रचना की प्रेरणा
 आपको सम्बत् १९६४ स श्री हिन्दी साहित्य समिति के कवि सम्मेलनों से मिली ।
 आपन किसी ग्रन्थ की रचना तो नहीं की है, किन्तु शृङ्गार रम के फुटकर
 कवित्त और मधये लिखे हैं । आपका सबया कहने का ढग इतना सरस है कि
 श्रोताओं का मुनने की इच्छा बनी ही रहती है । आपनी भाषा शुद्ध ब्रज भाषा है
 झलझुरा व स्वाभाविक प्रयोग ने रचनाओं को और भी अधिक चमत्कृत कर दिया
 है । आपनी मरम रचनाएँ अनेक बार कवि सम्मेलनों में प्रथम पुरस्कार से

पुरस्कृत हो चुकी हैं। आगकी जीविका का मुख्य माधन वद्यक है। इनकी रचनाआ
के कनिषय उदाहरण प्रस्तुत किय जात हैं -

गण-ग-वन्दना (कवित्त)
गाव तो गावें कौन गन गजानन के
आनन हत्राग- हू धविन मये सेम के।
दस क विदस के मुरम की सभाके मव
प्रथम मनावें गम तनय महम के।
माहन पर है वर भेदन अनक भाति
सवमा वड है सुख करन हमेम के
नान के गते है निर्दि निद्विन मते है मर
चित्तमें चडे है चार चरन गनेस के ॥

गारग-वन्दना
मनिन अमल मध्य पाण्डु पुण्डरीकन प,
गजन मयानी मानी आत्ति गक्ति माया है।
चार भुज चार जाम परम नगीना बीना
पुम्नक श्री माला चौथे अभय मुहाया है।
ब्रह्मा की मुता है श्रीर कविन विषाना त्रिन्व,
प्रेम युन ध्याया जामु आमु फन पाया है।
'माहन मुकवि उर अजिर विराजो आय
तर गुण-गान का हुलाम हिय ध्याया है ॥

मुचि नूपुर मत्र निनात्न मा दुख दुदन व्यूह विदीग्नी तू।
मृदु-दास हुलाम विलास भग, गुन जावन रूप जम्बीरनी तू।
'कवि माहन' के मन क बन की, निरद्वन् विहाग्नि कीरनी तू।
जग नायक चरो वनाय लियो अरी बाहरी वाह अहीरनी तू ॥

श्री राधिका महिमा
मरभावनी सुवष समूहन की दुख द्द्वन् व्यूहन चूरना तू।
हरमावनी माहन क मन की, जनकी सव इच्छन पूरना तू।
'कवि माहन रूप सुषा मद सो मन मान्न को म भूरनी तू।
जगनायक की मधिनायक है धनदयाम की मत्त मपूरनी तू ॥

निव रूप भागव (कवित्त)
गोभिन है भान प हिमाचन त्रिपुड सम,
स्वेन हिम-आभा माना चद्र चटवारी है।

यात घृत दूध दही का विधि निवार जय
 यही मोच भागे मनि गई आज मारी है ।
 कहे जाय लोगन सा दूध की न दान करी
 गावर कर भागे यात भम हम प्यारी है ॥
 तारी जाय घन्ते लाग तारी २ हमी कर,
 वेचन म याके एक आफन यह भागे है ।
 भारी घर वागी की उगहनी मिन है 'जय
 भस का विचारी दत रोज राज गाग है ।
 जान ना अनागी दिन दूक म हमारे यहाँ
 इधन कटाल हाय अग्निन अगारी है ।
 यासा कहा वासा नक गुस्ता कम खच कर,
 गावर कर भारा यामो भम हम प्यारी है ।
 भगडी की प्रभिलापा
 मरी तपस्या पर प्रसन्न जो हुए हो नाथ !,
 नीज वरदान खूब मौज म छनी रहे ।
 शक्ति हू गरीर म अपार हाय दीन व धु ।
 थारा अमरतीहू की आग ही धनी रह ।
 भूख दिन दूनी और रात चौगुनी ही हाय
 पुआ प पुअन की लगी पूरी भरी रहे ।
 एनी अभिलाष मरी पूरी करी दीनानाथ,
 आइसे मकारा म खडी हू भरी रहे ॥
 भोजन प्रतियोगिता- विजयी
 होड यती लाला न खान की हमारे माथ
 बठ गय खोलक मिठाई के पिठारे ह ॥
 गरम अमरती कलाकत्त सुफेनी वाडि,
 चमचम रसगुल्ला खीर मोहन निवारे है ।
 मठरी मलाई मेवावाटा औ मक्खन बडे
 दहावडे बडे बडे व्यजन हू रचारे है ।
 विजया भवानी की कृपामा सब चाट गये
 तूहै भानि लाला हाड हारे विचारे हैं ॥
 लालाजी के पट म हवनी का निर्माण
 कीच सी गानी भाग नारे की जु काम कर
 चक्की बनाकत्त की ईट करी मात है ।

कर कर चिनाई भीत ऊची मी बनाई जय'
 माँक की पटावो द पूरी करी छात है ।
 गरम इमरती क करीखे चहुँ गार दिय,
 जाली लगावन हतु पुआ गोर घात है ।
 भगडी महाराज नक मनमे विचार करी
 पट मे तुम्हारे मे हवेनी चिनी जात है ॥

गीत

कौन अपना है पागया कौन है ?

आजका युग पात्र ता छन सभरा वह छणित अचार से कव कव डरा ।
 अब दुहाई 'याय' की है बचना माधु जीवन हायर । सपना बना ।
 चक्रितमा मानव विचारा मोन है ॥ कौन अपना
 नित्य परिवर्तन यज्ञ का खन है, नियति का उसम अनौखा मेल है ।
 विवशना यद्यपि, तथापि विवेक है और दृढता का सहारा एक है ॥
 भर रहा दम मेर जीना धीन है ॥ कौन अपना
 स्वप्न का आत्माक चिन् हाता नही गत हुआ फिर प्राप्त क्या होता कही ।
 सृजन चिर आलोक करना धम है, विन साधक का यही ता कम है ॥
 साधना की एक आशा मोन है ॥ कौन अपना
 दूर चलना है बड़ी मजिल कडी, राहम कटन बनी माया अडी ।
 है न जल विश्राम भोजन हर घडी, शीत वर्षा घाम की सिर पर भडी ॥
 तपि राही वीर । वीर अशिकल गौन है ॥ कौन अपना

१७३—चम्पालान 'मजुन'—आपका जन्म लगभग १९११ ई० मे भरतपुर के एक ब्राह्मण परिवार मे हुआ । सयागवग शशव मे ही इन्हें विद्यालया के केन्द्र छत्रपुर जाने का सुयोग मिला गया । छत्रपुर के तत्कालीन नरेश श्री विश्वनाथमिह्र जू देव के उदार आश्रय म रहकर इन्होंने शिक्षा प्राप्त की । वैसे ता साहित्य क प्रति इनकी शायब से ही अभिरुचि थी किन्तु प० श्यामविहारी मिश्र (दीवान), प० गुरुदेवविहारी मिश्र (नीवान), प० हरिप्रसाद (विद्यागी हरि), प्रसिद्ध आलाचक लाला भगवानदीन तथा बाबू गुलावराय एम० ए० आदि साहित्य मनीषिया का सम्पर्क पाकर वह साहित्यिक अभिरुचि अधिक बलवती हो गई । आपन तीन ग्रन्था की रचना का है जिनके नाम इस प्रकार हैं—(१) वाप्येदु (२) अयोक्ति माधुरी तथा (३) मजुल गतक । इन पुस्तका क प्रतिरिक्त शृङ्गार वीर तथा भक्ति के सक्डो सरम सवय और कवित्त हैं । (१) वाप्येदु—नायका भेद का ग्रन्थ है । इस देखकर मन् १९२० मे सजुग्राही

नामक ऐतिहासिक स्थल पर एक बंगाली बहूत प्रिद्ध मंडल क मभापति था १०८ गोस्वामी दामादरनाल पडलानात्राय त नना त्रि गण का उपाधि प्रदान की। इसी अवसर पर छत्रपुर नरग न म्पण पत्रक दत्र इह मम्मानिन भी किया। (२) मजुल गनक — एत त ममस्या पर विविध प्रियया क १२७ मरम दाहा का एक सग्रह है। इसम ममस्या पूर्ति का चरम माधना स्पृग्गाय है। इस पर स्वाध्याय सदन मानन म स्त्रा याव न मम्भापक अमृत वागभवांताय द्वारा आपका १२५ का पुग्स्त्रा मित है। (३) अ याक्ति माधुरी — मम २०० कुण्डलिया का सग्रह पुग्गा नत्रा अय वस्तुधा पर अ याक्तिया क रूप म दृग्गा ह। इसकी प्रत्यय अ याक्ति चुन्नीत्री और प्रभायोत्पात्त है। कवि की काय माधना का प्रौढ रूप इसम पूगनया परिलक्षित हाता है। भाटे की वसी द्राम तथा टुक आदि अनका आधुनिक वस्तुधा की अ दोक्त्या द्वारा कवि इसम अपन विनापी स्वभाव का पुग्स्त्रा परिलक्ष्य दता है।

कविवर मजुल एक रमिमिद्ध कवि ह आपकी दृग्गारिक रचनाए अनुपम तल्लीनता निय दृग्ग हैं। अत्रकारा की स्वाभाविक छटा विगप तमकारिक न। आपके सबया के बहन का सरम ह्य थाताया पर अपनो रमिमि छाप ह्य जाना है। मुक्तन कविता म जा स्वाभाविकता और ती त्र्य हाता चाहिय न म गुन कवि क दाहो म परम उत्कृष का पहुँच चुना है। अनक दाया ता पत्न स हत्य बलिवा याडी दर क निय गिने विना नही रती गाए मुग्ग म महना त्रह त्रह निकल पडती है। अनकी भाषा सगक्त और भावानुद्भूत है। उत्पना की ममाहा- गक्ति के माय साथ आपकी भाषा म समास शक्ति भा पाइ जाती है, जिस कारण इनक मुक्तन बहूत ही मुत्तर एक मफल बन पडे ह। रही कही ता व रस के छोट २ छोटे से प्रनीत गत है। कविवर मजुल का ब्रज भाषा और खरी वाला दाना पर ममान अधिहार है। इनकी भाषा म गोकुल रूप कही भी लिखलाई नही पडता। य गाम्भव म एक उत्कृष्ट कवि ह। अनकी मरम रचनाया क उपात्तग रमिए —

काय टु म- तान नव याचना लक्षण (दाया)

यावन आगम निज वदन जान परत ह जाय।

तादि तान नत्र याचना कह मजुल कविराय ॥

यथा उपात्तग (मथया)

एग गान रजा — मुग्ग वत्र ता घू घट और खुदान लगी।

पुन नूतन कचुवि माहि कम, विहम मन मात् बढान लगी।

‘कवि मजुल चान भद्र गरु’, रति यात मुन अनवान लगी।

लखार्क क मन प्रियाय त भा त्रि द्व कहि त मजुलान लगी ॥

यथा उदाहरण (दाहा)

चाले की चरचा चलत, चली लली सकुचाय ।
अलि आटक मुनि सुनि अमित आनद उर न ममाय ॥
कुलटा लक्षणा

बहु पुग्मन मा हित कर कामवती जा वाम ।
तामो कुलटा कहत ह मजुल कवि मनि वाम ॥

यथा उदाहरण (मवया)

मदमन गयन की गति मा हरन हरव पग धारिये ना ।
त्रिचकाय क आगुरो आनन सा, पट धू घट का निरवारिये ना ।
कवि मजुल भाह सरामन मा, दग तीच्छन तीर निकारिये ना ।
त्रिक चोरके चन्दमुखी हूसक, अत्रिनाक वताहिन मारिय ना ॥

यथा उदाहरण (दाहा)

चितवन बहु दिगि चलतमग धू घट पट नितवार ।
नगर छन नापन हन नगनि नन गर मार ॥

मजुल गनक म प्रम वरण

उधौ । काउ कम सुन, इत जाग की बात ।
प्रम भा मा नान तम, छिन छिन म छिन जात ॥
हटक है मान न यह मगे मन मृग-जान ।
नह वधिक मृटु गान सुनि, छिन छिन म छिन जात ॥
हरि छवि निद्रि लहरन परत चलत नेहू की वान ।
लगर लाज जहाज की, छिन छिन म छिन जात ॥
हिय विहग कुल कान व उपवन उड नहि पात ।
नह वाज की भपट सा, छिन छिन म छिन जात ॥

रूप वरण

भाकि भाकि सिग्की तरनि फिरकी ला फिर जात ।
मनहुँ तडिन घनमा निकसि छिन छिन म छिन जात ॥
मन पट क्या अकिन रहै लोक बंद की पात ।
तिय मुममा सरि सलिल मो छिन छिन म छिन जात ॥

नत्र वरण

दग दाउ चिनचोरी करत, पन कुच पकर जात ।
चोरन डिग बन साहु मुम छिन छिन म छिन जात ॥
नन भेदिया नपल चल, उर पुग पैठन जात ।
प्रद भेन मन नृपति की छिन छिन म छिन जात ॥

नन नक्व जन उर सादन भेदन दुरि त्तिन रात ।
धीर धरम धन धरन की छिन छिन म छिन जान ॥

वेसर वगान

वेसार अधरा दुलि वस्त रग्यारी त्तिन रात ।
तउ अधरा रस सजन मा छिन छिन म छिन जान ॥
उर विधाय नित मुक्त ह पर उर मिध विध जान ।
वेसार सग लह सुजन गुन छिन छिन म छिन जात ॥

द्विविध

अभितव उक्भीहे उरज उधरि वर उतपान ।
या सी कचुलि मिमि मुक्ति छिन छिन म छिन जात ॥
कटि गुहता इमि कुचन सा, वर वाम चोरी जान ।
मनहुँ ठगन सो वृपन धन छिन छिन म छिन जात ॥
पायजेव पायन परसि पाय जेव इतरान ।
प धुनि गुन विपरीत सा छिन छिन म छिन जात ॥
भलकत जावन भलक तन गिगुना भाजी जात ।
जिमि सुराज लहि लोक दुख छिन छिन म छिन जात ॥
बुध जन द्विग गम विदिरा नन न ठिक ठहरात
जिमि सुकगिन सो मूढ नृप छिन छिन म छिन जात ॥
जा वृपा न नैकहु वर वह वृपनि कहान ।
रिपु मुख दुति वा दुति मिलत छिन छिन मे छिन जात ॥
मेरो तेरी करत ही ह आयो परभात ।
हरि भजव की बाबरे । छिन छिन म छिन जात ॥

अयोक्ति माधुरी (कु डलिया)

एरे चातक चपल चल वाही नह निवेत ।
जहाँ सग विहरत रहै, धन दामिनी समेत ॥
धन दामिनी समेत मतत रस-प्रभा पसार ।
स्वाति नखत क विना, स्वाति घट अविरल तार ।
'मञ्जुल जीवन जग पाय जीवन जिहि नेरे ।
मान सिखावन मार चपल चल चातक एरे ॥
यह भार की टक्सी नहि अनुगामिन वार ।
रे पथी । कमे कर, यामा मजिल पार ॥
यामा मजिल पार करन की क्या हठ ठान ।
ठीर ठीर प ठहर नय पथी उर ग्रान ।

कह 'कवि मञ्जुल' चल न इत कछु गुन वार की ।
 विन धन कर न प्रात टक्की यह भार की ॥
 जयो वज कमायव अर बनिक वा देम ।
 रहै न टोट की जहा रचन हूँ परवेम ।
 रचक हूँ परवेम पाय सत लोगन माही ।
 वचहूँ माल अमोन माल जेती ता पाही ।
 मञ्जुन विभव वढाय मनन माँची मुख पया ।
 बहुरि न आवागमन हाय, उनकेँ इमि जया ॥
 र चदन । तगै कटा आनर करेँ किगत ।
 न सन सठ दुमह दुख काट काट नुम गात ।
 काट काट तुम गान, वेच कौडिन म आव ।
 काठ काठ मय एक भेद कछु ममभु न पाव ।
 वह कवि मजुन रह न, निन घिरि घेरि विपति धन ।
 दखि लिनन की केर अरे चुप रह र चदन ॥
 आवत पाउम ही बढ्यौ, गुलावाम ता बस ।
 रे छलिया छन रूप घरि छल सुमन अवनम ॥
 छन सुमन अतम, प्रममिन रहे न कोई ।
 अपनी आय लिखाय आय सबही की खाई ।
 मजुल वभव हरि हरि, हिय म हरमावत ।
 अरे । बाल कित जाय, बहुरि मरदागम आवत ॥

अभिलाषा (मवया)
 क्षण एक भी प्रम की साधना में, न वियाग का अंतर आता रहै ।
 चिर सिद्धित मजुल भावना का तरु फूला फला सरमाता रहै ।
 गुचि भक्ति स जीवन जाग्रत हा इम जीवन का फल पाता रहै ।
 मन भृङ्ग मन्त्र हृत्पदवर्ग के पद पङ्कज प मडराता रहै ॥
 किसी जम म भूल न भूलूँ तुम्ह, जन जान दया दरमात रहा ।
 'कवि मजुन नह की लौनी लता उर अन्तर म उपजात रहा ।
 चरणा से वियोग न हा क्षण का इतना उर धीर धरात रहा ।
 उम पथ की धूल बनाना मुक्त जिम पथ स प्रीतम आत रहा ॥

१५४-शिवचरणांशाल - आपका जम १२ जून १९१२ ई० म भरतपुर
 निवासी प० मुकुन्दराम के यहाँ हुआ । आप यहा के प्रसिद्ध कवि कुलशेखर

नन नकब जन उर सादन भेदन दुरि जिन रात ।
धीर धरम धन धरन की छिन छिन म छिन जान ॥

वेमर वगन

वेसार अघरत हुलि वस्त रग्यारी दिन रात ।
तउ अघरा रस मजन मो छिन छिन म छिन जान ॥
उर विधाय नित मुक्त ह पर उर त्रिध त्रिध जान ।
वेसार सग लह सुजन गुन छिन छिन म छिन जान ॥

विविध

अभिनव उकसीहे उरज उघरि कर उतपात ।
या सा कचुलि मिमि मुक्ति छिन छिन म छिन जान ॥
कटि गुरता इमि कुचन मा, वर दाम चारी जान ।
मनहुँ टगन सा कृपन धन छिन छिन म छिन जान ॥
पायजेव पायन परसि पाय जेय स्तरान ।
प धुनि गुन विपरीत सा छिन छिन म छिन जान ॥
भलकत जावन भलक तन शिगुना भाजा जान ।
जिमि सुराज लहि लोक दुख छिन छिन म छिन जान ॥
बुध जन डिग बसा इदिरा नैन न ठिक् ठहरात
जिमि सुकानि सो मूढ नृप छिन छिन म छिन जान ॥
जा कृपा न नकहु कर वह कृपनि कहान ।
रिपु मुख दुति वा दुति मिलत छिन छिन म छिन जान ॥
मेरो तरी करत ही ह आयी परभात ।
हरि भजब को यावर । छिन छिन मे छिन जान ॥

अयोक्ति माधुरी (कु डलिया)

एरे चानक चपल चल वाही नह निकेत ।
जहाँ सदा विहरत रहै, घन दामिनी समेत ॥
घन दामिनी समेत सतत रम-प्रभा पसार ।
स्वाति नखत के बिना, स्वाति घट अविरल ढार ।
‘मञ्जुल जीवन जग पाय जीवन जिहि नेरे ।
मान मिखावन मोर चपल चल चातक एरे ॥
यह भारे की टक्सी नहि अनुगामिन वार ।
र पथी । वसे कर, यामा मजिल पार ॥
यामा मजिल पार करन की क्या हठ ठान ।
ठोर ठोर प ठहर नय पथी उर आन ।

कह 'कवि मञ्जुल' चल न इत बच्छु गुन वार की ।
 विन घन कर न प्रीत टक्सी यह भार की ॥
 जया वज कमायव, अर वनिक वा देम ।
 रहै न टाट का जहा रचव हू परवेम ।
 रनव नू परवेम पाय सत लागन माही ।
 वचहू माल अमोन माल जेनी ता पाहा ।
 मञ्जुन विभव वढाय मनन मावी मुख पैया ।
 प्रहृरि न आवागमन हाय, वनके डमि जया ॥
 र चन्दन । तगे कहा आर्य करे विगत ।
 देन नन। सठ दुमह दुम्ब काट काट तुग्र गान ।
 काट काट तुग्र गान, वच कीडिन में आवें ।
 काठ काठ मत्र एक भेद कट्टु ममम्बु न पावें ।
 कह कवि मञ्जुन रहै न, नित घिरि घरि विपति घन ।
 दमि दिनन की फेर धरे चुप रह र वन्दन ॥
 आवन पावस हा वन्यो, गुतावाम तो वसु ।
 र छलिया छल रूप घरि. छन मयन अन्नम ॥

के शिष्य है। आपका उपनाम "महंग" है। इनका वृजभाषा पर स्पृष्टणीय अधिकार है। शृङ्गार रस के कवित्त और सबया म आपकी भाषा की मजावट अत्यन्त ही सरस एव सुंदर हाती है। भाषा का चित्रण एक गरम मजावना उत्पन्न करता है। गदालङ्कारों का प्रयोग ता बड़े ही मुंदर एवम् चमत्कृत ढंग से हुआ है सभी रचनाएँ अति मधुर एव हृदयस्पर्शी हैं। इनकी रचन आ म भाषा शाक्य का दोष देना म नहीं आता। आपकी सरम रचनाओं क कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किय जात ह —

नन वरण (मवया)

तव ननन नन मनह कियो अर ननन नन दुरागत हैं।
निस वासर नन रहे टक लाग न नन कहूँ लखि पागत है।
इन ननन चन पर न महेश सु माहन का अकुलावत ह।
बिलखावत है कलपावत हैं नित आंसुन मा भरि आवत है ॥

मद हस निरछौही चित चलि चाल गय तन क मुख मार।
खजन गजन सी अखिया लखि छ नन क मन मन मरार।
नूपुर की भनकार कर इतरान महंग चली अति भार।
सन चलाय नचावत लक या कामिन क चित कामिन चार ॥

गुलामिमारिका (कवित्त)

चाकन कवित्त चली चादनी म चंदमुखी
चित्त चित्त चाग और चोरीसी करत जान।
पायन के रग रगराती रग रग भूमि,
अरुनाई अग मुग अबुज दरत जान।
भूपन चमक चारु चादी स चमक चीर,
मुरखि 'महंग' मन मोहन हरत जान।
हीरन के हार हिय दुरत अमद दुनि
वारन त मुक्ता हजारन भरत जान ॥

कृष्णाभिमारिका

श्याम गरम मारी तमी कचुकी मम्हारी कारी
मृग मत् लपन मा अग छवि छुपि जात।
भूपन दमक दुनि दाब पट अम्बरी सा,
खरकन पात त्या उलूकन डगत जान।
मोरभ मुगध पाय अबली अति वृन्दन की
धरत मिमट छाया एत भी करत जान।

वीरति कुमरि कार करत मनारथन
मुन्ति महेग' कारे वान्ह मो मिलन जात ॥
मांग वरणेन

वनी पीठ हरत लुरत या नितम्बन प
कचन मिला प मनु पत्रगी सुहाई है ।
मनिन जटिन मज्ज वन्नी या गज भाल,
गहु क टरन चौकी चद्रमा लगाई है ।
सुकवि महग नील कचुका उराजन प
सम्पुट मगज प मनाज छवि छाई है ।
पाटिन के तीच माग सादुर या मोभिन है
माना भानुजा मे धार सारदा सुहाई है ॥

फाग वरणेन

डारगी कमोरी भरि केशर मुरग रग
धमर वमार गाय मोर चहुँ पारगी ।
पारगी सुपानी मीम भाल म लगाय वनी
अजन अजाय तन च्दरी सुधारंगी ।
धारगी मुकचुकी सम्हार कटि लहगा कस
रावरे 'महस' गुन गौरय वगारगी ।
मारगी गुमान मूठि मेलिक गुलाल लान
दखत ही लाल तोहि लान कर डाग्यी ॥
प्रसात पचमी मे नटी का रूपक
फून फून कलित दुकूल बहु रगन क
गुजरन भौर त्यो मजीर भनकन की ।
त्रिविध ममीर वीन वासुगी सिनार बाज
हात कल गान कोकिलान किलकतवी ।
सुकवि 'महग' चाटो चानक मृग्य न्न
भूम ग्राम वीर सा लचक लीना तक की ।
आनन गुलाब श्री सुत्रास मई मोग्भ सा
नावन नदीला आदी पचमी बसान की ॥

१५५—रावजी यदुराजमिह—आपका जन्म रावराजा ग्धुनार्यसिंह के
यहां २६ नवम्बर सन् १९१ ई० को हुआ । आपकी वाच्य प्रतिभा विरासत रूप
में मिली कपो कि आपके पिता रावराजा ग्धुनार्यसिंह के यहां अनेक कवियों का

आवागमन बना रहता था तथा अनेक कवियों का आपस स्थायी वृत्तिया भी मिलती थी । उनके मत्साग का प्रभाव आपके गिगु हृद्य म कस्मिप म आविभूत हो गया । प्राचीन कवियों के काव्य ग्रन्थों का इहान गम्भीरतम अध्ययन किया है । उसी के परिणाम स्वरूप इनकी सर्वाधिक रचनाएँ ब्रजभाषा प्रधान हैं । आपकी रचनाओं का एक मात्र लक्ष्य श्रीराधाकृष्ण की मधुर लीलाओं का वर्णन है । आपकी शृङ्गार रस सम्बन्धी रचनाएँ अत्यधिक श्रुति मधुर हैं । कवियों के सम्पर्क से पिङ्गल का ज्ञान भी आपको प्रचुर मात्रा में है इसी कारण पिङ्गल की दृष्टि से इनका रचनाएँ दोष मुक्त हैं । इहान अपनी रचनाओं में 'रमिक छल उपनाम रक्खा है । आपका ब्रज भाषा तथा सड़ी वाली दोना पर समान अधिकार है । अनुप्रासा की स्वाभाविक एवं सरस छटा श्रोताओं के हृदय पटल पर एक अमिट छाप छोड़ जाती है । इहाने राधाकृष्ण सम्बन्धी अनक छोटी बड़ी लीलाएँ लिखी हैं इनके अतिरिक्त पुटकर कवित्त और सवया भी प्रचुर मात्रा में लिखे हैं । रसास्वादन के लिये आपकी रचनाओं का कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किया जात है —

वसत-वगन (घनाक्षरी)

पीरे आभूमन ओ वमती ही वमन नीके
 पीरी ही मृग ल वसत राग गावरी ।
 पीरी सुरगी रग कनक पिचकारि डारि,
 पीरीही गुलान उडि अवास वीर छावरी ।
 'रमिक छल पीरी सेज चढिकें पिया प्यारी
 पीरी परी मोहि आहि हृदय लगावरी ।
 वाम-जुर जार तन तपन बुझाव सखी,
 एते हा साज तव वमन मन भावरी ॥

रूप-वगन

चचल विनोद सा चटाक चित चार चार
 चन्द्रमुषी चाखी चन्द्रहाम सी चलावती ।
 हेर हर हँसन मु हियरा हिराना हाय
 हटक हठीली हाथ हाठन हलावती ।
 रमिक छल राज रगीली रली रूप रामि
 रामे रिभवारन का रोकत रलावती ।
 जगमग जाति जुरी जावन के जार जाकी
 जर जर काना जग जरन जलावती ॥

लक्षिता-नायिका
 मरकी भाल बँनी नन कस उनीदे आज
 धन है कपाल बढी लालिमा अघर की ।
 घरकी है छाती कुच कोर कनी आगी खुली
 काँपत हैं गान मटनी छूनी कयो कर की ।
 करकी हरी चूरी फिरें अति घउरानी सी
 टान निगार मज माजी किन मुघर की ।
 घरकी न मुधि मुधि रही है रमिक छैल'
 गत नित जागी नर मूट गई मरकी ॥

श्रीपद की आवश्यकता
 शीतल पवन चान चरन विजन हान
 कठ बीच मुक्त-माल टाटी नय स्वकी ।
 बरफ की पानी पुष्प-मज मुखरानी अति
 तामी हूँ मुजानी करें बान प्रेम जमकी ।
 रमिक धल गधन सुवामित भई गल
 उच महल निनप जाति निली मगिनी ।
 अरन गुलाव की मिचाव चहुँ आर चाय,
 चार एत हा माज मुघर नागि भरी रमकी ॥

विरहनी ब्रजाङ्गना (सवया)
 हहिम कहिया विनती हमरी मज अग जरें विरहाकरम ।
 कर मे इत मह छहै दुनिया मन छल न प्रीत कर परम ।
 पर म मन मूरत का तुमरी इक नह लहै अपन वरम ।
 परम कव प्रेम घटा हम पै नगि अक हम जियम हरम ॥

कमिकी अभिलाषा
 अपना पद है गही क्षण का, मैं किस कया पहचान करू ?
 जिनम मग बुछ काम नहा, वे काम पूछने हैं मरा ।
 जिनका नहि अपना नाम यात व नाम पूछत है मरा ।
 फिर उनका पन्चिय देकर क कया परिचयका अपमान करू ?
 इस जीवन म हसत हसत आत दख आन वाले ।
 अरु रान का निष्कप लिय जात दस जान वाले ।
 फिर किस पद "वनि म वच निकलू किस पद "वनि का सम्मान करू ?

जिस जीवन में साहित्य नहीं उम जीवन में क्या चम्पा है ?
 जिस जीवन में कुछ राग नहीं उम जीवन में क्या रक्सा है ?
 फिर ऐसे नीरस जीवन पर, मैं क्या मन में अभिमान करूँ ?
 प्रभु से है वितय यही मेरी, जब अत समय मरा आव ।
 कवि वृद्ध खड़ा कुछ कहता हो अफ गति चतुर्दिक छाजाव ।
 हा गुजित स्वर से छल ये अम्बर, एम में मैं प्रस्थान करूँ ॥

१५६—मदनलाल गुप्त 'अग'—आप भरतपुर निवासी लाला कला वरदा वजाज के आत्मज और जाति के अग्रवाल व य हैं । इन्होंने हिन्दी भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की है । इनका जन्म भादा सुदी ५ सवत् १९७० को हुआ अत आपका कविता काल स० १९८६ में आरम्भ हुआ है । आप एक कमठ व्यक्ति हैं और अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार समझते हैं । समिति के नवीन भवन के निर्माण में आपका स्पृहणीय योग रहा है । इनको बाल्यकाल से ही हिन्दी साहित्य समिति और हिन्दी के प्रति विशेष अनुराग है । गत तीन वर्षों से आप समिति के प्रधान मंत्री पद पर कार्य कर रहे हैं और इससे पूर्व उप मंत्री तथा उप प्रधान पदा पर भी काम कर चुके हैं । आपकी कविता के प्रति बड़ी अभिरुचि है । आपकी अनक सरस रचनाएँ समय २ पर साधुसर्वस्व, लाक घम माहेश्वरी हिन्दू पंच जाटवीर अग्रवाल और सैनिक आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं । आपकी रचनाओं के उदाहरण दक्षिण —

एत रागन हारो

कुर राज मभा विच द्रौपदि को पट खच सकी न दुशासन हारो ।
 तज वाचन पायन धाय परी, छिन में गज का मब संकट टारो ।
 सुरराज डुवाय सकी न गज मिम कोतुक छुगरि पै गिर धारो ।
 नर नरन सो नाह अग्र । तखो जग नीनन की पत राखन हारो ॥

वृत्तघन मधुकर

परम रम्य आराम जिन ह भ्रमर न तू तता दिन रन ।
 रग-रिरग मजुरस भान पुष्पा पर करता है चन ॥
 मुध बुध खा गठा है सारी बना फिरे मत वाला सा ।
 दिखना है छल छिद्र हीन क्या ? सीधा भोला भाला सा ॥
 किन्तु न तरे भावा में है लग मात्र मच्चाई का ।
 कौन कौन में चरचा है तरी कलमपनाई का ॥

वही बाटिका होगी इक दिन वही मरावर शीतल नीर ।
 किंतु भूलकर भी क्या ? मधुकर फटकाग तुम उमके तीर ॥
 प्यार तभी तक है बस जब तक, मधु मकरद सहित हैं फूल ।
 अर स्वार्थी ! और कृपणी तरी इस बुद्धि पर भूल ॥
 इतन पर जा तुम्ह वटन दत उन वृक्षा का घय ।
 पाम विठान घाय्य नहीं है वग्ना तू है गीच जघय ॥

१५७—श्रीनिवाम ब्रह्मचारी—आपका ज म दाग (जिना भरतपुर) क

प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुन म २८ न्दिसम्बर सन् १८१४ का हुआ । अतः पूर्वजा की
 भानि आपुर्वेद का गिला प्राप्त करके आन सन् १९०५ म अय तक निरंतर जनता
 की सेवा करते चन आ रहे हैं । सन् १९४१ मे इनका अभिवि कविता पढने
 एवम् लिखन का आरम्भर णन लगा । प्रारभ से ही आपका भुकाव वीर रस
 की कविताया की आर अग्रिक रहा है । ब्रह्मचारीजी बडे सरभ और भावुक
 कवि हैं । इनकी भाषा भावानुपूल मधुर एवम् सरल है । उदाहरण दविए —

॥ विपमता ॥

यह विपम तेल फूली जगम प्रति णि ही फनती जाती है ।

दीनो के बक्षस्थल पर य काँटा का जान विद्यानी है ॥१॥

उन बभव गाली भवन वनें, रचि पचि कर अघिक मजाय है ।

मान के कलग गिम्बर पर घर गणि मडल भी गमयि है ॥

फटिक गिला के चौक उन, बहू रगन मा भग बाय है ।

है स्वग म्यल इस मृत्यु नाक म जग मग जानि जगाय है ॥

एनमे रहन वाता का नहि फिर याद किमी की आती है । यह विपम बल ॥१॥

एन वनी भाषणा छानी सी मिट्टी क टेला पर छाई ।

एक बडी मडी ह्यगण सो, टूटा है इमम चरपाई ॥

इमम मिट्टी का नीप जन नहि मिट अथरा दुमदाई ।

एक भूमे नगे मानव का यहा ढक लनी है भाई ॥

युग युग की विपम अवस्था का मच्चा इतिहास बताती है । यह विपमा ॥२॥

उतमे भारी है वारवाग, अग्ना सरवो का भाल ग्हे ।

मील और गोलाभा का घरती पर फला जान ग्हे ॥

उडत इनक ही वायुदान, वारा का वारावार र्हे ।

मानव बहलान का बेबल इनका ही अधिकार र्हे ॥

एनना अपार बभव पाकर नीयन चागी मे जानी है । यह विपम बल ॥३॥

रतन म मजदूरी मिल नहीं घेती बाडा की आम नहा ।
 काई उद्याग नहीं इनका एक पमा तक भी पाम नहीं ॥
 प्रति युग म पिसते आये है जीवन की शेष ना म्पाम रही ।
 इतन अस्थी पजर मुख मानव की इनम वास नहीं ॥
 भूखे नगे रहकर मरना इनका ही माय बनाती है । यह विषम ॥४॥

एक बनाता गूय एक लाख का अक बनाता है ।
 एक बडा है मालदार दूजा कगान कहाना है ॥
 एक कमाता हाड पल कर दूजा बडा खाता है ।
 एक पडा नीचे पिमता है एक चटा ही जाता है ॥
 यह नहीं होता सहन आज की जनता ममता [चाहती है ॥ यह विषम ॥५॥
 करला करनी जो भी करनी पीना क साथ तुम्हारा है ।
 ये जुल्म ढहान की अनीत कब तक करती रखवारी है
 एक टिना नहीं एक दिना आती सब ही की वारी है ।
 स्वाहा करती है वासा क जगल का एक चिनगारी है ।
 तुम स्वयम् दखत जाओग चाटी पयत का टाती है । यह विषम ॥६॥

१५८—गोपाललाल माहेश्वरी —य जानि के वश्य और भरतपुर निवामा
 दुगाप्रसाद बोहरे के पुत्र थे । इनका ज म लगभग १९७२ वि० म हुआ था । य
 बडे ही होनहार कवि थे और छोटी ही अवस्था म इहान साहित्यापाध्याय
 हिन्दी कोविद साहित्य भूषण हिन्दी एडवाम तथा हिन्दी प्रभाकर आदि
 कितनी ही परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर ली थी कि तु दु ख है वि केवल २१ वय की अत्र
 स्था म स० १९९३ वि० म इनका स्वगवाम हा गया । भरतपुर का इनम जा
 आगएँ थी वह पूण न हा सकी । आप चन्द्र उपनाम से रचनाएँ करते थे ।
 आपकी कविताओ क दा सग्रह मूर्ति चन्द्राय तथा सुमन मराज आपक जीवन
 काल म ही प्रकाशित हा चुकी है । आपका गद्य पद्य दानो पर ही समान अधिकार
 था । गद्य का भी कई पुस्तक मुद्रित हा चुकी है । शेष सग्रह जिममे “अ याक्ति
 पचन्गी मन्ध्वनि अलकार चन्द्राय और हृदय की गूज आदि है नष्ट हा
 चुकी है । कुछ थाडा सा पुत्रक सग्रह हम प्राप्त हुआ है, किन्तु जो कुछ भी प्राप्त हुआ
 है वह एह उच्च काटि का कवि सिद्ध करन का पर्याप्त है । इनकी कविताओ मे
 मर्मन माधुय और प्रमाण गुण स्पष्ट दिखारते है । कुछ उदाहरण प्रस्तुत है —

मवया

जावन दानि मुजान मन्ता परजय यथोचित है अवगाही ।
 स्वार्थ क मिम क परमार्थ ताप मिनाय अनन्त उमाही ।

गवरी आम् मयूर कर बक माग्म के कुल की जय चाही ।
चंद्र पपीहा को दोष कहा जु वियागिन के सिरे माढ निवाहो ही ।

मकरन्द क ताम मलिद गयो सरमोम्ह काग मजीवन की ।
छक नाहि मकयी अममजम म दुविषा पाग 'चंद्र' छपा छन की ।
नल टार नही पर प्रम क आसुन आस विलाम खिल मन की ।
करि खच मनान तियो मुख मल गही अति क मन म मन की ॥

रूप अनूप निहाड लख मन वा तनि और की और फिरेरी ।
चंद्र बनकी कलाधर मा छवि रागि मभारत भाव भररी ।
अचन ओट म 'चोट' करे दृग चचल चाम चुटल घनेगी ।
वगहि दूहि गड पखिया अगियाँ मधु की अखिया भई भरी ॥

हिय लाय क सावनि मूर्ति कौ नहि अ य मरूप विमारिह हा मैं ।
नहि क पत्र पकरे माखव क मन और मुक्स्तु न गखिहो मैं ।
छवि राम गुपाल रामो उर, अरु चंद्र कहा अभिनाखि हौं मैं ।
अन तिन नन चाग्मन त मुख चंद्र मुगग्म चाखिहौं मैं ॥

कविन

छाई दुनि आनन अनग की विगान कहा
रूपग मागे मुघगई त्रिभुवन की ।
तारन प्रभून फुनवाई माहि आई वान,
गचो भई नाग लह लनिका द्रुमन की ।
कर कामताड नहि मनि विचलाई जिन
मुनभ नजाई कामताई पदमन की ।
ताग्न मभार फूल राग अतवेली कहूँ
आगुरी न चुभि जाय पाखुरी मुमन की ॥

गज हा न नाथ किंतु अघम अजामिल हा
रमना फिर राम नाम राग रागना ।
पामर हौ गिद्ध नही जागी जती सिद्ध नहा,
पापन पहार तें मुबुद्धि मन जागे ना ।
जामौ जग जीवन है ताहि का विमारें मन
कलुष कलक पक छह कहूँ पागना ।
मीन हा बनकी हा बनकिन मा काज तुम्हें
अक गदि नेह नौ बनक अक लाग ना ॥

१५६—शिवदत्त शर्मा एम० ए० —आपका ज म भरतपुर राज्यागत नगर कस्बे में एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में ३० जनवरी सन् १९१८ ई० का हुआ आपन आगरा विश्व विद्यालय से एम० ए० तथा एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की और इनके पश्चात् साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त की । आपकी बाल्य काल से ही काय के प्रति बड़ी अभिरुचि है । विद्याध्ययन के अनन्तर यह अभिरुचि और भी अधिक बलवती हानी चली गई । प्रौढ एवम् बाल साहित्य द्वारा ता आपन हिंदी की सेवा की ही है किन्तु विक्रम साहित्य की श्री वृद्धि करके आपने अपनी अप्रतिम प्रतिभा का विशेष परिचय दिया है । आपके लेख, समालोचनाएँ कहानियाँ, गद्यगीत तथा कविताएँ सरस्वती साधना कमला साहित्य सदस्य और बानर आदि मासिक पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं । आपकी लिखी हुई चार पुस्तकें प्रकाशित भी हो चुकी हैं जिनका नाम इस प्रकार है —(१) वृजेन्द्र बभ्रव, (२) यमुने (३) ज चम्बल और (४) राजस्थान नहर । शर्माजी गद्य और पद्य दोनों पर समान अधिकार रखते हैं । परिष्कृत एवम् परिमार्जित होने के साथ २ आपकी भाषा सवत्र भावानुकूल है । निःसन्देह आप एक कुशल अम्यस्त एवम् प्रतिभा-सम्पन्न कवि हैं । आपकी रचनाओं के दखन में प्रतीत होता है कि अतीत में आपकी विचार धारा प्रगतिवादी साहित्य की आरंभ भी प्रवाहित हुई थी । मजदूर नामक कविता आपके इसी दृष्टि कोण की प्रतीक है । आपकी सरस रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत है —

बस एक गीत

बस एक गीत बस एक गीत ।
 लिख दा कवि भरकर अपना उर ।
 यह यथित व्यथा कृत्न आतुर ।
 जिम्मे प्राणा की हार-जीत ॥
 बस एक गीत बस एक गीत ।
 खुल जाय ग्रथिया उलभन की ।
 बध जाय परस्पर जन जन की ।
 भात्री भाली भावनातीत ॥
 बस एक गीत बस एक गीत ।
 काई न किमी स द्वय करे ।
 विकृत अपना उद्दश्य कर ।
 हाव पुनीत निज मनातीत ॥
 बस एक गीत, बस एक गीत ।

वृजभाषा—मजरी

(१)

उषा सुन्दरी न दियो नव गिनु रवि उपजाय
गाय गीत विहगावली, मुक्ता लता छुटाय

(२)

मधुवाला कति प्रिया न प्याना घरया भराय
दूगगन थाम्यौ अमिन रवि पिय पिय पिय जाय

(३)

भरत जात जागरन की वरत अनय विव्वस
उतरत आवन अवनि पर मुग गगा की हम

(४)

मीन भण केतिक विहग गा मधु मधु मगीत
का मुनिहे अत्र विटप वर मह पतभरु कौ गीत

(५)

मुटयो विपिन मिगार यह छुटयो वमत विहार
पिन पात पात पर्यो, अलि कलि के पतभार

(६)

बमन जुटाण छोह त, परची तपनि अदृट
ग्रीपम कुल लनान की नी ही लाजहु लूट

(७)

रनगवन काक बलन, काम अनय चहु काद
ग्रीपम । मूरज सगाहू, छिपिहै वदरी गाद

(८)

कम गाऊ ग्रीग का हौ हारी हरवार
पीनम तरेइ नार म अरुभे तप्री तार

(९)

किमि चात्थी ? कर ना कप्यो 'नाही लिखत निगाक
गयो न टम क्यों कागद अरी लेखनी डक

(१०)

अत्याचार हिमत कौ, मकी न प्रकृति बिलोक
डारयो पर्या बुट्टर कौ, छयो धुघा मो मोर

(११)

का उजियारी ल वरु, जीय जरावन हार
अधियारी घनपाम की, मुग्ग वरावन हार

(१०)

पीर पगई नगि क अरु न प्रमह बेगीर
चीर देहु हमर हरी अरु १ न उर चीर

(१३)

तुम अधियारे म दुरे मा प करि परवास
मोहि बुलावहु क उत, क आवहु प्रिय पाम

(१४)

रजनी न रवि का दियो श्याम हलाहल प्याय
रवि गव पर विहगावली विलस विलस बिलाय

(१५)

आजा बठ गुजाय जा बीणा म्वर मुप्रगम
मया नक हमाय जा मरो मानम हम

हम भारतीय

हम चाहिए नही रग का आज कथाए ।
हम चाहिए नही आह का आज यथाए ।
हमे चाहिए नही प्रणय की प्रणत पथाए ।
हम चाहिए नही कामिनी दाए बाए ।
हमे चाहिए आज असि विष डूरी जा हो खरी ।
क्रोध रक्त हग चाहिए नहि चितवन वह मदभरी ॥

(२)

, हम शक्ति दो शस्त्रभार हम मिर पर भेलें ।
हम बढत ही जाय शत्रु का और पछेल ।
तलवारो पर चल और तीरो पर खेल ।
हम समीर से बढ विजय श्री को हम ले ल ।
हम चाहिए स्वर्ण दिन नही रजत की शवरी ।
क्रोध ज्वलित हग चाहिए, नहि चितवन वह मदभरी ॥

(३)

हम है मिह सपूत वीरता क वतधारी ।
तार तोल कय सके हम हम इतन भारी ।
हम न मांजत रह अस्थ लख युद्ध तयारी ।
घलाघली म सब प्रथम थी निज गति यारी ।
प्रलय नृत्य कारिणि रही थी अपनी असि कितरी ।
मोह सबी अमि हा हम रक्त रजिता मन्भरी ॥

(४)

जागा जागा वीर वग के वगज जागा ।
 एम वग कि गनु कह बम-‘भागो भागा’ ।
 गण बेहनि । हे वीर । जगो मजवूतो । जागा ।
 जगा मपूना । भारत क वर पूता । जागा ।
 राज युद्ध का प्राण है, नहीं शांति निगि मुखवरी ।
 रक्त पिन्ट दा भाग पर त्यागो निगिया मन्भरी ॥

(५)

अत्याचारी वग वग पर म हट जाए ।
 अनाचारिया की नाथा म भू पट जाए ।
 एमी दा हुँकार व्याम-मडल फट जाए ।
 विजय-पताका उठे घग अम्बर साट जाए ।
 रगावका निज दग का दिव गक्ति प्रलयवरी ।
 तब चूमा तुम चाव म निज अग्नि गणित-मन्भरी ॥

१६०-डा० रागेय रावव - आप स्वामी रगाचाव क आत्मज और

राज्यातगत वर कश्चे क निवासी हैं । वर एक ऐतिहासिक एवम् दशनीय
 म्यान है और अपनी नमगिक शाभा के लिय प्रसिद्ध ह । आपके पूवज तामिल देग
 म आकर स्थायी रूप म यहाँ बस गये थे । सण्ट जन्म कालज आगर स एम० ए०
 परीक्षा उत्तीर्ण करन क अनन्तर आपने सन् १८४८ मे पी-एच० डी० की उपाधि
 प्राप्त की । शगव काल स ही आपकी अभिरुचि माहित्य सृजन की ओर रही है ।
 आप एक प्रीन लखक हैं । इनक अनक नम्ब तथा अय कई प्रातीय सरकारो द्वारा
 पुरस्कृत हा चुक हैं । आपका कुशल लेखनी द्वारा अनक सामाजिक और ऐति-
 हासिक पयास काव्य रूपक, आलाचना और कहानियाँ आदि उद्भूत हो चुकी
 हैं किन्तुना आपकी लेखनी स काई विषय अछूता नहा रहा । आपकी अनुत्तित,
 सम्पानित और मौलिक रचनाओं की सख्या ८० क लगभग है । इनके रूप छाया
 नामक प्रवच काव्य म प्रमाण का कामायनी का भा आम्वादन मिलता है । आपकी
 शरस एव कामलकान पतावली का मातुप नीरस मानन को भा आप्लावित
 कर देता है । पदा की श्रुति मधुर वण मत्री विशेष लाघनीय है । पद २ पर
 प्रलकारा का स्वभाविक चमत्कारपूर्ण प्रयाग बणना म चार चान लगा देना
 है । आपकी रूप छाया पुस्तक म एक उदाहरण प्रस्तुत ह -
 मुग्धिया की पत्रक उमक
 पय मे रिछना थी दिवम रात

धी स्तनीय की ज्ञाननिगा मा
 तृष्णा जनती माभ प्राग
 वह गीभ गया अर्पण रूपा
 रभा का तावण्य र्ग
 भाया न उस जग म तुद्ध भी
 गिच गद भुवन म बहा र्ग

भर आह ममुज्वल प्राङ्ग म
 वह रहा घूमता विवल प्राण
 मलयानिल म स आता था
 रभा तन का ही गध घ्राण
 तव सालसा तालम हो अधार
 वह चला म्वाजन उम भू
 रे भूल गया वह सकत विश्व
 सुधि तनु पकड ज्यो गया भून ॥

रभा मध्या मे चली दख कमत्रन भूमि
 पवन तिलाडित लडलडा गिरा आज वा भूम ।
 वह सौदय्य कि ज्वालामुक्ति की तृष्णा मु र
 नील गगन की पृष्ठ भूमि पर र्वर्णम मनहर ।
 भुवन माहिनी रूप माभिनी चली अचानक
 सृष्टि का य का सूक्ष्म रूप वह मधुर क्यातक,
 र्गवा त्रिभुवन अकह स्वाम त भूमा भूमा
 यौवन का बहै अपरिमय गाथा ल सूना ।
 किया रूप निमाण त्रिधाता न सुय भरने
 किनु स्वय वह दाह बना ज्वाता मी भरन
 पुण्डरीक क साथ उगो दा क र कलिया
 स्वण मृणान भूत धार भर नव छवियाँ
 रक्त कमन थे पुनक रह, पल्लव चलदल थे
 भीन श्वत वसन म मुदरि अग मचलते
 वाला नूपुर एक सृष्टि न गीन भुनाया
 मुम्बाइ पल एक कि सवन वदन गाया
 स्वय काम न भुक् चरणा म लानी रग दी
 रति न उम लावण्यमयी म लज्जा भर दी ।

तत्र कापी वह सृष्टि मध मे मौशामिनि मी
 त्रिभुवन कमका देव देव कर चिर माहिनिमी,
 मुक्काइ जय दगन प्रभा स, ज्यानि मित्त मी
 कु द कु द उन गई मृष्टि सत्ता विमुक्त मी ।
 जिधर नयन चन गय हुआ जड जगम महसा
 पग अगत ही काम हो गया मूर्तिन अकुना
 वागी हुई अभाव कि प्रिनिना मजन भूला
 यमन मेका मृषु पून जावन वा पूना ।
 मिधु तरगिन म्मा म्मास पर उठन गिन्त,
 वृत्त युग री म्पधा म उर्मिजात म उठन
 अगजा म्पापा मध प्राण पर नृत्त नरी वा
 जना म्पा था म्प कितु यह म्प नही या ।
 कितु म्प यह म्प म्प न न नृत्त नत मीग
 तिपा नय अनी मसा मनमे उठी टीग ।

१६१—विश्ववधु शास्त्री—आपका जन्म २५ अप्रैल म् १९२८ का

अनौगत् जिन क उन्वताना नामक ग्राम म म्पा । आपक पिता का नाम श्री
 चुनालाल आय था । इन्हान श्री विरजानंद माधु आश्रम अलीगढ गुरुकुल
 विश्व विद्यालय म्पावन तथा वागएमी विश्व विद्यालय म पिशा प्राप्त की ।
 म्पा परोक्षा उत्तीर्ण करने क अनंतर इन्हाने पंजाब और भरतपुर के कई विद्या
 लय म आचार पद पर कार्य किया । म् १९८९ में आप भरतपुर पधारे आर तब
 न अत तब म्पी पर निवास कर रह हैं । आपन लगभग २०० रचनाएँ सृजन की
 हैं जा मभी सामाजिक अथवा राष्ट्रीय विषय पर हैं । आय समाज के सिद्धान्तों
 क अनुयायी हान क कारण आप विभिन्न प्रान्ता म आय समाज का प्रचार करते
 रहने रहने ह । गान्धोजी उच्च कोटि के कवि, वक्ता एवम् सामाजिक ह । आपक
 तब युक्त आश्रवा भाषण वटे ही मारगभिन एवम् अनीक प्रभावोन्पादक हात
 ह । अम्यन्त और निपुण कवि हान क कारण आपका भाव और भाषा दोनों पर
 नमान अधिकार ह । आपकी म्पा रचनाया क म्पा रचना —

॥ मैं तू और वह ॥

मैं अधिक पाम वह अधिक दूर, ताना तू मैं ही तायमान ।

मैं अनानान का म्प और वह नृतकान, तू बतमान ।

तू क युग म सत्ता मैं वह तू म हम ताना नानमान ।

है मृष्टि पूत्र मैं और अत वह म्पा तव तू का विधान ।

मैं का स्तर, इन्द्रिय स भ्रम्य वह का स्वरूप नूपायमान ।
 तू के धेरे म आ दोना दोना ही हा जात प्रमाण ।
 मे बन जाता तू 'तू वह' तय वह म-प्रगम्य है 'मह रूप ।
 वह बन जाता तू तू म तय, मैं सूक्ष्म भूत वह का स्वरूप ।
 मैं वह म वह मैं म आकर दोना ह' जात साम्यप्राण ।
 है अनिवाच्य म-वोच्च गान ।

निगानी

दिवाली मनान चल हा, सुखी गात गान बन हा ।
 धरो का सजाने चने हो, सुधा घर बसान बन हा ॥
 नही ध्यान तुमका किसी का
 नही ज्ञान तुमको किसी का ।
 नही मान तुमका किसी का
 नही भान तुमका किसी का ।

दिवाली मनान चले हो सुखी गीत गान चने हा ।
 धरा को सजाने चले हो सुधा घर बसान बन हो ॥

गगन छत्त जिनका निगानी
 तनी चादनी तार वाली ।

दिगाए अनुष्कोण जिनकी
 शयन-सज है भूमि खाली ।

उह यह दिखान चले हो उह यह सिखाने चल हा ।
 उहे लक्ष्य करके हसी का अहा ! मुस्करान बन हो ॥

न तन तक सब य विचारे
 न मन गव मक य दुसारे ।

न इनकी काई शेष इच्छा
 स्व-इच्छा स स्वयमेव शारे ।

उह तुम मतान चले हो उह तुम विढाने चले हा ।
 बढाने का दुरा दद उनका उह तुम दुगान चले हा ॥

तडपते हैं बच्चे ठिठुर कर
 काट दते है न्नि तो सिक्कुडकर ।

भूम स पीठ म गट सटकर
 हा गय एक, दाना मिमटकर ।

तुम उह तडपडाते चल हा, तुम उ ह फाड खान चाल हा ।
 मिमकती मनुजता का सचमुच धान कर आज ढाने चने हो ॥

नही क्या चिरन्तन के क्षिणु ये
 न गूँकर या कूँकर से पगु ये,
 न मौहाइ इनस तुम्हारा-
 भक्ति म वह सक नाहि असुय ।
 धन दिय पर वहान चल हो, घर म लक्ष्मी बुलान चले हो ।
 लक्ष्मि स्वामी थमिक का न जाना त्रय म जगमगान चल हा ॥

चमक है पुम्हारे धरा पर,
 चमक है तुम्हार टरा पर ।
 चमकत है चेहरे तुम्हार
 चमक नाहि क जवरा पर ॥
 क्रूरता का मनान चन हो गूरता का भगान चल हा ।
 हठिया कपि दधीची की देखा आज तुम आजमान चले हो ॥

जान कर आख मूदा न भाई
 गा रही क्रांति, ल्या १ आई ।
 दिया की नई रागनी म-
 न द तल अघरा लिवाई ।

आंतरात्मा सतान चल हा, धम ढाचा मिटाने चल हो ।
 नह भर मृतिवा लोपका म नह दिल से भुलाने चले हा ॥
 लिवाली मनान चल हा सुखी गीत गाने चल हो ।
 धरा का मजान चल हो मुघा धर बसाने चल हा ॥

१६२-तुलसीराम चतुर्वेदी—आपका ज म बंगाम कृष्णा २ सम्बत्
 १९८० का भरतपुर म हुआ । यहाँ क प्रसिद्ध कवि जयशंकर चतुर्वेदी के आप
 कनिष्ठ भ्राता हैं । १९४३ मे स्थानीय कालेज से एफ० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करन
 क पश्चात् आप दिल्ली चल गये और वहा अजन और अध्ययन दोनों साथ साथ
 करन लग । प्रारम्भ म आपन रिजव कक म और तत्पश्चात् रागनिग विभाग म
 काम किया । इमी बीच आपन पजाव विश्वविद्यालय स क्रमश प्रभावकर एव बी०
 ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की । इही लिना आप पत्रकारिता क क्षेत्र म आगये ।
 विश्वमित्र दैनिक नई दिल्ली म काम करते हुए आपन लिन्ली विश्वविद्यालय
 स १९४२ म हिन्दी एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण का । इसी समय लिन्ली म नया
 दैनिक पत्र जन मत्ता प्रारम्भ हुआ और आप उमक सम्पादकीय विभाग म चल
 गये । छात्र जीवन म ही माहित्यको के सम्पक क कारण माहित्य की और आपकी

भरतपुर म हुआ । वाल्य काल से ही इनका काप मृजन क प्रति विशेष रचि थी । ये बडे प्रतिभा सम्पन्न और होनहार कवि थे, किन्तु कराल कान न रह अल्पायु म ही ग्रस लिया । इनकी सरम रचना प्रस्तुत है —

समस्या मुजान की

कापत कन्त काट कूर दुष्ट भुटन का ।
 कौगन त्रियाय रग रशा क मान की ।
 काट काट रडन का मुटन उडाय नभ ।
 भीत भय भाज अरि चि ता कर जानकी ।
 दखकर कौतुक ल जुगिन ममान सग ।
 आई रग चण्डी प्यासी गद्गु रक्त पान की ।
 धर धर कापी जाहि लगि क पठान सन ।
 कान जोभ तुल्य मडग ऐमा हो मुजान का ॥

कवित्त

काऊ ता रहे है मस्त पढन लिगन माहि,
 कोऊ निज गृहस्थ क काज म ग्रस्यो रहे ।
 जात है वगीची कोऊ हान ही प्रभात नित्य,
 कोऊ निज दवन की पूजा म धम्यो रहे ।
 काऊ नर उठत ही चाय दूध पान कर
 बिम्कुट मलाई कोउ खान म फम्यो रहे ।
 मरे जान सब श्रेष्ठ वही है विश्व माहि,
 जाके डर भग युत मादक वम्या रहे ॥

जम भूमि

भारत मरी जम भूमि है मै इमका उत्थान करु गा ।
 विम्भृति सागर म विलुप्त गौरव का फिर निर्माण करु गा ।
 मै हूँ प्रचड सी अग्नि शिखा दुश्मन स्वाहा करने वाली ।
 दानवता क उच्छेदन हित जग मुभक्तो ही कहता काली ।
 मैं गकर का वह कोधानल जन जिसको लख त्रामित होते ।
 मैं परगु राम का परगु पवल जिससे नरपति दासित होते ।
 अपना प्रलयकर विभूति से रिपु समूह का मान हरु गा ।
 हुआ अन्त हा राष्ट्र हिता का स्वाय पूति का फाग मचा है ।
 पागवता की मूर्ति बन पर मानवता का स्वाग रचा है ।
 मिहा की सतान किन्तु स्वाना का मा यवहार लिया है ।

गटी व कनिषय टुकड़ा पर देश द्राह स्वीकार किया है।
 मृतवत् सिंहा म फिर स नव जावन का सचार करूंगा।
 काम उपासक बन गम्भ-पूजक जा कभी कहात थे।
 अपन अनुल पराक्रम मे जा ग्यु हृदय न्हाते थे।
 हून रह निज वामनाश्रा व परिपूरण म वीर यहा है।
 नही जानत पराधीन का यह विलाम अधिकार कहा है।
 प्रगय कलि रन प्रमी मन का प्रलय गग म आज भरूंगा।
 मेन मीगा ह गनभा म ता हित पर जल मरना।
 पराधीन मा की वन् पर अपन का न्वाहा करना।
 है गुलाम में मुझ आज म ताप शानि की चाह नही है।
 मा रती ह मौन न्ही में क्या पुना का धम यही है।
 मीगा व नाय ताग म फिर से में भकार भरूंगा।
 गीता का वह कम याग मुझका कमण्य बनायेगा।
 अमुर विनामक राम रूप मुझका प्रका दिखलायगा।
 राणा और शिवा की गाया अमित गति देगी तनम।
 गुम्ना का बलिदान भरगा अमर ज्यानि मर मन म।
 सचय कर डम विकट गति का बन्नी जन स्वाधीन करूंगा।
 आवा रण का हृथा आज आह्वान अरे वीरा आवा।
 आवा मा की है पुकार इनका चिर उपकार चुकावा।
 स्वातन्त्र्य दीप पर तुच्छ कीट मम स्वाहा करना निज तन को।
 नामनाश्रा की शूललाश्रा से मुक्त करा वन्नी जन का।
 मुक्ति लिनाकर जननी का जगती में गौरव मान करूंगा।

१६८-मम्पूगदत्त मिश्र एम० ए० -आपका जम सम्बत् १९५८ म प०

गापाललाल मिश्र व यहाँ भरतपुर म हूया। हानहार विरवान व होन चौकने
 पान वाली कहावन के अनुसार आप बाल्यकाल से ही कुशाग्रबुद्धि है। कुछ
 विगिष्ट मत्रा व जन म तथा भगवनी त्रिपुर मुन्त्री का उपामना स आप म
 कवित्व गति जागी। पत्रम्बर्य आपन मस्कृत मे काय रचना आरभ कर दी।
 २५ वष का आयु म आपन ऋतूल्लाम नाम का एक मस्कृत काव्य लिखा।
 इनको पठत समय अनेक ममता का महाकवि कालिदास व मिठास की
 स्मृति हा आती है। सन् १९५९ ई० म उत्तर प्रन्ग सरकार न सस्कृत के लिय सारे
 दग स जिन बागह अयकारा का पुरस्कृत किया उनम राजस्थान से आपका
 'ऋतूल्लाम' क निय पुस्कार मिला। श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य न 'ऋतूल्लाम म

प्रसन्न होकर आपको कवि पुण्डरीकम्' पदवी स पुरस्कृत किया । ३१ वर्ष की आयु में आपन सम्स्कृत में सूक्तिपञ्चामृतम् नाम का एक दूसरा काव्य लिखा । आप सम्स्कृत और अंग्रेजी दोनों का ज्ञान अत्यन्त ही गहिरा है । आप का गणित में भी कविता लिखते हैं । इस समय आप बसडी गाँव में गणित का अध्यापक मीनियर टीचर हैं । आपके सम्स्कृत विषयक भाषण और सम्स्कृत गीत गान अथवा रडियो जयपुर, से १९५३ ई० में प्रसारित होते आ रहे हैं । राज भाषा और गडी वाली दोनों पर आपका समान अधिकार है । अन्न सुशामित्त मुमधुर कठम आप कविता सुनाने का ऐसा समाचार दत्त है कि किसी का मन तनिक भी उन्नत नहीं पाता । आपकी भाषा शली बहुत ही राचक सरल तथा प्रमाद गुण पूरा है । भाषा विषयानुक्रम पर परिवर्तित होती जाता है । दार्शनिक भाषा का गहन एवं गभीर विषय की अभिव्यक्ति गभीर भाषा में ही हुई है । आपकी रचनायाँ का कुत्र उदाहरण निम्नांकित है —

भवया

सुचिना क अलीक नगारन की सुनि क कत्र ला सच्चु पाय्य जू ?
कथनी करनी की अमगति मी कत्र लौ पुनि ना उक्ताइय जू ?
इन कतव की करतूतन प कत्र ला नहि काप जनाइय त्र ?
दुरनीति पर इन भीतन सी कत्र नो निज नह निभाय्य जू ?

बहु देखि चुके नहि सस कछु अब तो तुरत जगि जाइय जू ।
अनका मति कीरति की बतिया मति ना कितऊ पतियाइय जू ।
कहि देउ न खोलि क एकु दिना मन में कछु सक न लाइय जू ।
हम तो तुम की न निभायग जू तुम हू हम की न निभावय जू ॥

परिवार के पेट में पाहन द पुनि कतिक न पडि जाइये जू ।
गुन मान गुन जन के उर में बर केतिक हू चडि जाइय जू ।
नहि जो लौ किन्हीं अधिकारिन क पदपवन में गडि जाइय जू ।
नहि याव की आम विनाम कछु कहु का विरने प निभाइये जू ॥

निज हानि धरती उठाइक ही समुभी गनि लागन की बतियान में ।
मुग्त कछु और बधारि रह कछु औरहि धारि रह छतियान में ।
पुनि खाद क धाक प धाके सरामर सार सरयो मिगर दुखियान में ।
मिस याव क धाव कर मुखिया य परस बस रिम की अखियान में ॥

दाखत य जा बडे र गुना गनिना सग वाम कर वगियान में ।
नोयन य जा बडेरे धनी धन की धन चार रही छनियान में ।

दीखत ये जो दिलद्री दुखी दबते रहिँ स्वारय की कखियान मे ।
पापी पराजय रास कर वस तापम की रिम की अखियान मे ॥

परिणाम

जब रात घूमन जाना मैं, जब रात घुमाने जाता मैं ।

(१)

गारद हिम कर की आभा में, कोठी को जगती पाता मैं ।
बुद्ध कर्मित सी पुष्पिन बल्ली चुप चाप सहारा लिये हुए ।
गशि का प्रमाद पा जान को, निज न तु करा को किये हुए ।
जब लेनी थी अगडाईं मो में खटा हो गया छाया म ।
ना जान क्या क्या साच गया उम माहकता की माया मे ।
पर छाडा रहा निवाम नही, अत्र, नोड चुका है नाता मैं ।

(२)

अच्छा तो ला फिर सुन ही ला, मैं उस छोड आगे बढना ।
भावा के सुखद सरोवर म जो भर कर उनराता चढता ।
यह वान घमक कर धीमे से, काना म कहली चुप रहना ।
मैं जा कुछ तुम्ह मिखाती हूँ, उमका मव मे मत कह देन ।
उस प्रकृति नदी की भङ्गी पर, वालो क्या भेंट चढना मैं ?

(३)

चादनी पटक दी चन्दा न पत्तो न गोदी म लेली ।
क्या बुरा किया बचारा ने जो रच पच कर मिर पर भेली ।
पर चञ्चन का मत्ताप कहा रहन का एक उग्मनल म ।
मैं गारी हूँ ये काल है अद्धिन कर चली धरा तल म ।
तब कितना की विधि लवा पर, बहते आँसू पी जाता मैं ।
नर के एकांत ममयन म नारी का गाली देने का ।
भरा काई कतब्य नही ना मैं इमम रम लेन का ।
पर पहा क नीचे पड क्या चादनी नही दिग्गताती है ।
उन्नत पुरपा की भी कम नारा मोमा वन जाती है ।
वस ऐमे प्राङ्गन-व्रान से कभी नही चकराना मैं ।

(४)

माना पत्ते बाने न सही, पर काना से क्या बुद्ध कम है ।
इतना तो मान सवाये ही वे नही चद्रिका के मम है ।
जय हम बालाप्रा क सम्मुख, लावण्य चकिन रह जाते हैं ।
क्या दोष कौमुदी का पत्ते वाली छाया दिखलाते हैं ।
ऐम सर्गों की मगति मे बुद्ध मार ममम मुमवाना मैं ।

(५)

हारा सा बठ अधेरे म बेला की वृक्षा व नीचे ।
 मैं सोचा करता डीन मे मानस के तार तनिक मीच ।
 यौवन माधुय, मनोहरता, युग युग पय न चले जात ।
 उद्यान चादनी सुन्दरिया नित नय पुरान हा जाते ।
 इस व्यक्तिक नश्वरता पर वम माच माच रह जाता मैं ।

१६५—राधाकृष्ण गुप्त 'कल्या' — आपका ज म आपका गुक्ला ३
 सम्वत् १९८५ वि० मे लाला मदनलाल के यहाँ भरतपुर म हुआ । भरतपुर हाई
 स्कूल से मटिक परीक्षा उत्तीर्ण करन के अन तर आप कवि भूषण प० नन्कुमार
 के शिष्य हो गए । आपकी काव्य रचना का आरम्भ विभिन्न कवि
 सम्मेलनो का समस्या पूर्ति से हुआ । इहान कवल रम परिचय नाम का
 एक (छंदावद्ध) ग्रंथ लिखा है, जिसमे रमाङ्गा की पूरा व्याख्या की गई है ।
 इसके अतिरिक्त आपकी अनेक रचनाएँ कवित्त तथा सवया के रूप म सब
 साधारण के मनारजन की सामग्री मनी हुई ह । इहान अपनी रचनाआ
 मे शुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग किया है । वतमान खडी वाली म भी आपकी अनका
 रचनाएँ है । इनकी भाषा शली की एक मुख्य विशयता यह ह कि इनकी प्रत्यक
 रचना भाषा शाङ्क्य दाप म मुक्त है । आपकी सरम रचनाआ के कतिपय उदा
 हरण प्रस्तुत किये जा रहे है —

गणपति वन्दना (छप्पय)

ज मात्क प्रिय चद्र भाल ज मगल दायक ,
 ज गणपति गण ईग गौरि नन्दन सब लायक ।
 बक्र तुड ज ज त्रिनत्र गुचि एक दत्त जय ।
 लम्पोटर गज बदन सत्न रिधि मिद्ध कन जय ।
 ज आदि देव कवि कृष्ण कह खण्ड परसु मुख चद्र जय ।
 ज जनन सकन सकट हरन भुवन भरन आनन्द जय ॥

भक्त की अभिलाषा (कवित्त)

वृ दावन वीथिन म वासुरी बजान कहै
 द्वारे नन्दराय नन्द गाम मिल जायग ।
 वरसात भूप वृषभानु के मुभौन क ता,
 मयुरा क गाकुल सुधाम मिल जायग ।
 'कृष्ण कवि कानिदाबूल के वदम्ब तर
 लला लला लनि ललाम मिल जायग ।

ब्रज धाम धाम की पङ्क्तिमा दियें जा प्यारे

काहू चक्कर में श्यामा श्याम मिल जायेंगे ॥

रमना की भगवद् भजन की प्रेरणा (मवया)

उड़ि जाय हू जानें न जानें करै, तनते यह यह प्राण घड़ी भरवै ।
 कवि कृष्ण जु कीरति पुनन की मु कगी न करी करनी करवै ।
 पुनि जम जरूर मिलै न मिल, महि प विधि के बस मे परकै ।
 विष है जग के रम गी रमना । रट ता रट नाम हरी हर के ॥

प्रिय के प्रति उगाहना

सुख भाग लिखे न कवा इनक, अमुवा दिन रन भरवै भरे रहैं ।
 कवि कृष्ण ज कपना के बल-मि-तु म अग तरग तरकै तरे रहैं ।
 चख चारु हान विद्या के चित्र विचित्र विचार अरेके अर रहैं ।
 प्रिय लाख मिली मित्रिनी हे कहा हिय के अभिलाष भरवै भरे रहैं ॥

नम्र वगन (कवित्त)

गीतलता गति की न गवि की न आप औ-

चचलता चचना की चार चार डारे हैं ।

मजुन तर कज की मन मृदु मादकता

पन प्रेम मागर सकेलि नज सवारे हैं ।

‘कृष्ण कवि कृपान प कगरी क रसान कोर,

वा क त्रिधनी म निरग निग्धार है ।

प्याने भर मुधाक पुनि मन क ममान भर

विधि न बनाय युग नन मनवारे हैं ॥

चंद्र

चंद्र । तज नुभवो तृपित चकार

लखा कय तकता परकी आर ।

पम्पता तेगी कितु निहार

मदा रखा चुगता अगार ।

द्रवित हाना ता इमस दूर,

रहा तू अपन मद म चूर ।

यही कागग ह अहा मयक

लगा य अविचन तुभ कतक ॥

१६६-रमेशचंद्र चतुर्वेदी - प्रापका जम कुम्हार तहसीन के अतगत
 धाम सातरक म श्री नवनीतलान चतुर्वेदी के यहाँ आवग कृष्णा३ मम्बत् १९५६

मे हुआ। आपको शशव से ही संगीत मय वातावरण मिला था। यदि आपका पितामह ५० नवलकिशोर भगवद् भक्त सत्संगी तथा गायन वादन कला म अत्यधिक दक्ष थे। इस वातावरण का कवि के हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि साहित्य एवम् संगीत के प्रति उनके हृदय म अगाध अभिरुचि उत्पन्न हो गई। सब प्रथम आपकी रचनाओं का श्री गणेश व्रज भाषा म हाना है परन्तु युग के प्रवाह मे प्रवाहित होकर आप खड़ी बोली म कविता बन लगे। अर्थात् हान के कारण आप सरल कि तु स्वाभिमानी कवि हैं। कवि हूय हान न नात आप निर्भीक भी उच्च कोटि के हैं। कविताओं का विषय वरगन नना स्वाभाविक है कि सत्य साकार ही उठता है। आप राष्ट्रीय विचार धारा के गीता के त्रिय अधिक विख्यात हैं उत्तराहरण नखिल —

उम त

(१)

गान को गा दूंगा गायन नूतन उम त मावाहन म।
 कस उल्लाम भूँ लेकिन मैं अपन निधन जन मन म।
 पीली चादर को मोट प्रिये ! आ पहुँचा ह मधु मय वमत।
 पर उनके हृदया से पूछा जिनके विदेश मे वम वन।
 काश्मीर स आई थी, चिटठी, पाच को आऊंगा।
 पर हाय आज भी जा न सका, अब कस मु ह खिल्लाउ गा।
 कितनी बुद बुद होती होगी उम सनाना जन के मन म।
 कसे उल्लाम भूँ लेकिन मैं अपन निधन जन मन म।

(२)

जब आ पहुँचे ऋतु राज स्वय मरमा क्या पीला रंग हुआ।
 किसके वियोग म बतला दे प्रयमि ! य तरा रंग हुआ।
 ओ आम मजरी ! बतला दे तू इतना क्या इठलाती ह ?
 क्या भूम भूम कर मुझका भी प्रियतम की याद दिलाती ह।
 कायल के स्वर क्या गूँज रहे हैं, दूर वहा निजन बन म।
 कस उल्लाम भूँ लेकिन, मे अपन निधन जन मन म।

(३)

जा मारी दुनिया म मरमा वा कर लाते मधु मय वमत।
 उन दुखियार वृषका के दुख, का आज नहीं है शान्ति अत।
 नग भूषे मानव तन न जब महन किया भीषण हिमन।
 उन वृषका की भाषणिया म बारह महिन रहता वसत।
 है बरान्त भी उनके मन म जा आज सुखी ह जीवन म।
 कस उल्लाम भूँ ? लेकिन मैं अपन निधन जन मन मै।

(४)

कम मननी विजया त्गामी कमे मना रक्षा बचन ?
 कसा हाना वभव विलास कसा हाना मुख मय जीवन ?
 हम भूल चुके हैं दीवाली हम भूल चुके हैं अब वसन्त ।
 त्रिभुवा की आहा स जनकर आन वाली होनी अनन्त ।
 जा आन तगा त्गामी भीषण गायक गायक के मन मन म ।
 कम उल्लास भू ? त्रेकिन मैं अपने निजन जन मन म ।

अध्यापक

यह कम्प्य कहानी है उसकी जा अध्यापक कहनाता है ।

(१)

हैं फटा पन्थियाँ पावा म, मतीमी पढ़ने घानी है ।
 है आठक बटा मा कुग्ना पिचकी मी पढ़न टापी है ।
 माथ पर आटा दान बचा, अनु विन्न व्यथा का भार लिए ।
 मर मर क भी जा इस जग में जीन का ही अधिकार लिए ।
 पचाम मौन गाव मे दूर अर वेतन भी मित्रता पचाम ।
 वह चला जा रहा मयानी लेता नम्ब लम्ब लसांम ।
 रिमभिम रिमभिम उग्नात लगी टूटा छाता पग फिमल गया ।
 घाटू क बन गिर पटा पट्ट अर आटा सारा विखर गया ।
 कमी बीती अध्यापक पर, यह कहत दिन दहलाना है ।
 यह कम्प्य कहानी है उसकी, जा अध्यापक कहनाता है ।

(२)

वन गाव आज गिगा-मयी, ममार कह उठा बाह बाह ।
 मम्मान युक्त रहता आता वन-वभव का अजिगल प्रवाह ।
 पर भिम मंगे अध्यापक का, क्या कर जग देव धयवाद ।
 क्या कर हा उमका अभिवादन क्या कर हा इसका मातुवा ।
 यह गिगक तो विरकुल अमम्य यह पागन भूया नगा है ।
 जग बनि बटा पर प्राण नान तक नकर ना भिव मगा है ।
 दवा गिगक का उर टटाल कितन अरमान लपट हैं ।
 जग का अपना मव कुछ दकर इमने अभिगाप ममेठ हैं ।
 हमम पटकर अ आ इ ई अर हम पर नुकम चलाना है ।
 यह कम्प्य कहानी है उसकी जो अध्यापक कहनाता है ।

(३)

लनी है रिश्वन गज पुनिम, डाक्टर भा मौन टाल है ।
 रलव के टी० टी० गाट नमी रिश्वन का पमा खान है ।

महकमे माल के चपरासी भी, राज स्पर्ध घर लात हैं ।
 दुनियाँ तो यहाँ तक कहनी है, मन्त्री भी रिश्वत खाते हैं ।
 पर हाथ भिखारी-अध्यापक, जब षडा चौध मनात हैं ।
 शिक्षा विभाग के अधिकारी तब कमी प्रांग निम्नात हैं ?
 यदि दीन दुखी अध्यापक का, जनता श्रद्धा स कर दान ।
 उम पर भी है प्रति वध कडा यह कमा है उलटा विधान ।
 जिदगी मौत के भूल म अध्यापक दिवस विनाता है ।
 यह करण-कहानी है उमका जा अध्यापक कहलाना है ।

(४)

यदि शिक्षक अपनी दुख गाथा, अधिकारी तक पहुँचात है ।
 तो बदले म उन दुखिया स अप शब्द कह न्यि जाते हैं ।
 छ छ महिन मे द वतन, फिर भी अट्मान जतात है ।
 दुनिया क ठुकराय शिक्षक तब मन मसाम रह जाते है ।
 यह निष्कृत्य सरकारी टाचा एक दिन अवश्य ही टूटेगा ।
 इस असतोप का पुत्र कभी विप्लव वन करके फूटेगा ।
 अरे स्वाथ की मूर्ति शासका जड तुम्हारी हिलती है ।
 जब मन तुम्हारी दीवाली तब यहाँ हालिया जलती ह ।
 सोचा समझो अपने मन मे अध्यापक स कुछ नाता है ।
 यह करण-कहानी है उसकी जा अध्यापक कहलाता है ?

१६७-छुटटनलाल सेवक -आपका जन्म अगहन वदी ६ सवत् १९८७
 वि० का हुआ । आप आंगुलिकुलशेखर क गिण्या मे स है । प्राकृतिक
 उपमाना से युक्त रूपका द्वारा आप कवित्ता म एक मधुर भाव क्रम उपस्थित कर
 देते हैं । आपकी भाषा प्राचीन परिपाटी की टकमाली ब्रज भाषा है किन्तु किसी
 किसी स्थल पर खड़ी बोली की झलक भी देखन को मिलती है । आपकी रचनाप्रा
 मे से कतिपय छंद उदाहरणार्थ प्रस्तुत किय जाते है —

वमन्न और गणेश का रूपक (कवित्त)

पीरे पीर फूलन की माथ प मुकट राज
 लाल लाल फूलन के कुण्डल मुहाप है ।
 सेन मन फूलन क ऊपर चमर छत्र
 सत ही मु फूलन क दत्त दरसाय है ।
 फूलन क हार गल शवक सम्हारत हैं
 मुमन वमन्ती वम्भ भूपन बनाय है ।

कोकिल कपोल कीर विरद मुनावत हैं
 आज रितुगज गन राज वन आये हैं ॥
 वसन्त पंचमी म नटी का रूपक
 फूल वसन्त की चुदरी
 करि घाघरि फूल गुलाबन भाई ।
 भूपन पीतल पुलन कर
 मुहावत नाचन मात्र महाई ।
 भौर मृदंग बजावन है
 मिन काकिन कीर्ण नान लगाई ।
 सबक साज नटी नव सी
 यह आज वसन्त को पंचमी आई ॥
 गन्द यामिनी क कृष्ण राम का वरण
 मधुर मुग्ध काह वासुरो बजाइ मुनि
 ब्रज वनितान वृत्त वानन मिधारे हैं ।
 परमा विष्टे हैं स्वच्छ चान्नी क ठौर ठौर
 बीणा भेरि साथ तहा बाजत नगारे हैं ।
 मेवक सम्हारन है काज मय दौर दौर
 दाय दाय गापी बीच आप रूप धारे हैं ।
 गारु निगा म तन्वि राम तहा मेर भूम
 आनन्द मगन भय नन मनधारे हैं ॥
 भगवान राम के रूप का वरण
 हीरन जग्नि मोद्रे माये प मुक्कट मजु,
 आनन की आप काटि काम हू लजाई है ।
 एक कर धनु हूजो अभय पदान करे
 पीठ की तूनार मन्त्र भक्तन सहाई है ।
 मिहामन राज राम साथ मिय मातजी के,
 नव मिय मिगार सब मुषर सुहाई है ।
 मेवक सुख दाता ओ आता नव-भाग्य के
 मरे मन एषी प्रभु मूर्त समाइ है ॥

१६८-गोपालप्रसाद 'मुद्गल' - प्रापका जन्म २ जुलाई सन् १८२१ का
 भरतपुर जिलान्तर्गत डींग बस्ते म प० रघुनाथप्रसाद के यहाँ हुआ । अपन पिता
 के धनुरूप आप भी सग्ल स्वभाव और परिश्रम गील हैं । डींग हाई स्कूल मे

हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर आप शरणार्थी बालका का शिक्षा देने के लिये प्राथमिकशाला छात्रा (दीग) में अध्यापक नियुक्त हुए। तभी से अध्यापन कार्य कर रहे हैं और साथ में विद्याध्ययन भी। हिन्दी की एम० ए० परीक्षा तथा बी० एड की ट्रेनिंग करने के पश्चात् आपका घर की उच्चतर माध्यमिक शाला में वरिष्ठ अध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया है।

मुद्गलजी का वचन सही का यक प्रति विनाय अभिरुचि है। आपकी सब प्रथम कविता 'भारत भू का भय पताका प्रमुदित होकर लहराए १५ अगस्त सन् १९४७ को लिखी गई। इस कविता की प्रशंसा से कवि हृदय का प्रात्साहन मिला और वे सुन्दर रचनाएँ करने लग। यद्यपि मुख्यतया आप शृंगार रस की ही कवि मान जाते हैं किन्तु आजकल सामाजिक समस्याओं का लेकर भी आप लिखने लगे हैं। आपकी रचनाएँ बहुत मरल मरस और प्रभावात्पादक होती हैं। कविताओं के अतिरिक्त आपने कई नाटक भी लिखे हैं जिनमें 'प्रायश्चित्त' 'दहेज तथा निर्दोष अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कवि और नाटककार हान के साथ २ आप निबंध और कृतानी लेखक भी हैं। राजभाषा और खड़ी बोली दोनों पर ही आपका समान अधिकार है। आपकी कविताओं के उदाहरण दक्षिण —

कवित्त

आवरी अनद तर अगना क माहि गाज
तोह तो ह सग मखि काहू को न भावरी ।
भावरी मोहे तरा सोच सखि छाटिय अब
चातक सी ह्ये के रट काहू कू लगावरी ।
गावरी सवरे ही सवरे काग मुडरी प
वाह कर ऊची अजमाल उडि जावरी ।
जावरी न खाली साची रागुन है प्रभाती का
धीर घर खाली आन हारी आज आवरी ॥

सखी

आवरी अनग अग अगन के माहि जब
पिय पिन सग मखि काहू को न भावरी ।
भावरी क्वत्त नहिं सूझ कोऊ पथ अत
क्वत्त दिग मेरो मन दौरि २ जावरी ।
जावरी न लव तू ता बानन बनाव बडी
आज कल कहिये माहे काहू कलपावरी ।

पावैरी न जीते माय सखि ममभाऊ तोय
जा वे श्रौधि वीत आनहारा नाहि आवरी ॥

गीत

घन जाआ विग्हन मत जारो रे ।

डर मारो घर नाय घरवागो रे ॥

(१)

काहे घिर २ आत मेरा जिवा घररात
पिय विन दिन रात नन नीर वरमात
ताप तू हू डरपात वन कारा र । घन जाआ ॥१॥
बजरारे कर शार मत बानन तू फार
कहू तोते कर जोर नक मानो कही मार
जाआ दश जह पियारी का पियारो रे । घन जाआ ॥२॥
तेरी बुदियन मार माऊ हुई दुसवार
ताप शीतल बयार और बीजुरी प्रहार
अब नुम्ही कही कस हा गुजारा र । घन जाआ ॥३॥
इक सी म काप गात दूजे मदन सतान
तीज रेन डस आत चौथ तूहू घुमडात
जान इकली बिरहन मत मारो र । घन जाआ ॥४॥
घन पिय ढिग जाआ डार रूद ममभात्रा
पिय विग्हन बुलाआ काहू विधि द आआ
सग लाआ गुण गाऊ में निहागो रे । घन जाआ ॥५॥

कवि म

गा कवि युग के गीत पुरातन फिर गा लना ।
गाआ अवनि के गीत गगन के फिर गा लेना ।
जब मानवता की रक्षा को चपला भी खडग बुलाती है ।
तब क्या स्वर लहरी नान और पायल भनकार भानी हैं ।
अब सुरा सुदरी पाने को श्रु गागी छत्र न भाते है ।
क्याकि हाली के गीत त्रिवाली का नही गाय जाते हैं ।
अब हीरा पन्ना पाल दुनाला गिलम गलीचा के मत गा ।
अब गा मानव के गीत मदन क फिर गा लेना ।
गा कवि युग के गीत पुरातन फिर गा लना ।
गाआ अवनि के गीत अमन क फिर गा लेना ॥१॥

कनेडी की विजय पर

ढलते मूरज ना कौन भुषाना है माथा
 आत मूरज का सभी सलामा न्त है
 लाग्य नयन चुम्पन कर्त उम व्याहुन का
 जब सहम ० वह टाली का आती है ।
 पर उड जान पर रग गुनावी गाला का
 काई भी नजर न उम पर चम्प हुलाती है ।
 गिरत हुआ की कौन खुगामा करता है
 उठती रेखा की सभी गमाहा देत है ।
 ढलत मूरज ॥१॥

१६६—गापेग शरण शमा —इनका ज म भग्नु (राजमान) के एक
 सुप्यद्विज परिवार म आपाठ जुहा २ (रथ यात्रा) मम्बर् १६८६ विक्रमी का हुआ ।
 इनके पिता प० गावाल शरण शमा पशनर है तथा भरतपुर के एक प्रसिद्ध कवि
 एक शायर हैं । ये सन् १६५३ ई० मे महाराना श्री जया कालज भरतपुर स बी०
 ए० की परीक्षा पास करने के उपरा न अभ्यापक क पद पर नियुक्त हुए अब ये
 एम० ए० बी० एड है तथा हिन्दी के मोनियर टीचर है ।

अपन पिता के कवि एक शायर हान के कारण उनक मत्मग म उनके
 अन्दर बाल्य काल से ही साहित्य प्रेम और विशेष कर कविता का अकुर प्रस्फुटित
 हाने लगा । विद्यार्थी जीवन मे अनुकूल वातावरण मिलन क कारण उसका पापण
 होता रहा । फलस्वरूप ८ वी कक्षा से ही कुछ कुछ लिखना प्रारम्भ कर दिया ।
 वातावरण के अनुरूप अविकसित फुटकर कविताए खडी बोली म ही लिखी, यद्यपि
 समस्या पूर्ति क सवध म यदा-कदा ब्रज भाषा म भी कतिपय कविता की रचना
 की । कवि हान क साथ साथ प्राय एक कुशन यत्ता एक नखक भी है । उन्हाहरण
 देविया —

अज चांद अपना हा रहा है ।

चाँद चौकीदार न मूरज बुलाया दोम म जम,
 कुपित हाकर के कुमुदिनी मा गई द पत्र घूँघट ।
 निगा की नीरव घडी म रश्मि कर स उठा कर फिर,
 कर लिया मुख सामन आय हृदय म भाव घिर-घिर ।
 कुमुदिनी का क्रोध मारा शीघ्र मपना हो रहा है
 लहर का सकेत है—अब चाँद अपना हो रहा है ।
 नूपता का जब हृदय की गगन का मुख नीन जाना

उदधि ने निज अक् का वाक्क दिया क्तव्य माना ।
 पर अमा की निगा का गिगु का द्विपाया व्योम न जब
 जलधि उर हाकर मशकित धडकन फिर-फिर लगा तव
 पूरिमा का इदु वा जब मुमकराना हा रहा है
 ऊर्मि कर उठन मचन अत्र चाद अपना हा रहा है ।
 प्रम की पीडा ममभन का-जलन का जानने का
 धधनत उर स विरह की वह विरलता मानन का ।
 चाच म तकर चकारी जत्र नगी अगात्र चुगन
 गृध्र शीतल मी उग की लग गई तत्र ग्राम करन ।
 विहमते निमल निगाकर का निरलना हो रहा है
 तव चकारी ने कहा अत्र चाद अपना हा रहा है ।
 नह की वातें निराती गदर आवपित हुआ है
 तन धरा पर मन गगन का मोत वन पुलकित हुआ है ।
 बुद्धिवादी मानवा की विनता विमान स मिल
 सगसता को साखनी मी गुप्कना के साथ हिल-मिल ।
 चल पटी उटकर गगन का शब्द कितना हा रहा है
 हम हुए उमकें कहा अत्र चाद अपना हो रहा है ।
 ठीक है तुम चाँद का अपना बना कर ही रहोग,
 प्राप्त करन में उसे जा यानना होगी, सहाय ।
 पर धरा पर तुम कतको को कही लेकर न आना,
 ज्यात्सना आर्टि स्वयं तुम कानिमा का ले न आना ।
 दखना म्यत्र वहां जिनसे चमकना हो रहा है
 स्वच्छ मन करके दिखाना-चाद अपना हो रहा है ॥
 विक्राम

अनान निगा हा दूर जागरण जाग पडा
 स्वतन्त्र मूम प्रकटित स्वनेग उठ हुआ मडा
 दामतव शृंखला शिथिल, मुनभ नि स्वाम जगे
 जगमगी भूमि भारत, मगक मत्र गोक मग
 अधिनिगम नियम निज वन चेतना जाग उठी
 लो । प्रजातत्र प्रयक्ष वेत्ना भाग उठी
 हिमगिरि क निभर भर-भर कर हो मुक्त भर
 वह उठी नगी इठना उठला उमान भर
 धन धाय मजग हा गटा-उठा अम मानय वा

विकसित स्वप्न प्ररूप घुटा दम दानव का
निम्साधनता हा दूर जुटे उठ मर माधन
वन गय श्रमिक कृपका क कर्त्तन आराधन
वह प्रकृति नटा अपना यौवन उभा लिय
खुल पडी दश के लिय मधुर माता लिये
श्रमिका क कन हल, कल पावर किलकार बन्
अगडाई फमल, भू क अकुर उठ गये
उच्छ हूलता नदिया की रोका बाधा न
मिचन अनुकूल किया विद्युत् दी बाधा न
विद्युत् कण द्रुत गति लिय चल विद्युत् न
उन गाँवा का निग अधकार जा थ पहन
ग्रामा की कुटिया अब भवना म बदल उठी
डावर की सडक धूसर पथ पर विफल उठी
तमसो मा ज्यातिगमया का मने लिय
शिक्षक स्वदेश के अपना सद् उपदेश लिय
चल पडे चेतना ग्राम ग्राम का देने को
भोली जनता से क्या विकास है ? कहन का
जो माय हो भारत वासी अब ता जागा
अरविद समान खिलो-उठलो आलस त्यागो

१७०-रामबाबू वर्मा-इनका ज म वार्तिक गुह्ला ५ सवत् १९८९ वि०
को भरतपुर म श्री निवचरनलाल स्वर्णकार के यहाँ हुआ । य अधिक पने लिखे
तो नही है, किन्तु कविया के समग म रहन से कविता की आर रचि हो गई ।
इनके काय गुरु श्री कुम्भनलाल कुल नेपर है । आपकी रचनामा म भाषा और
रस का धारावाहा प्रवाह मिलता है । ये रघुराय उपनाम से कविता करते हैं ।
इनकी रचना क कुछ उगाहरण प्रस्तुत हैं —

मानवता

अब क्षीर नीर की भाति सभी भाई मिल मेल करो मन म ।
फिर गङ्गा सूत बाधो सब का मन मुक्ता बिखर बन र म ।
उर अ तर क कपाट खालो सब पाप पु ज का क्षार करो ।
निज द्वेष भाव का भेद त्याग सब समता का व्यवहार करो ।
रघुराय मभा सामथ वान वन जन समाज कत्याण करो ।
इम मानव हो मानव नान मानवता का निर्माण करो ॥

कवित्त

चूमन गहन मिथु बज मजु चानन
 का सुधीति गान गगन बुलिन्दो है ।
 हृदय विगाल औ उदार दुग्ध धार मदा
 मव सुय देनी नित्य गग औ कलिनी है ।
 रघुगाय जेत जोर मनुज दनुज दव,
 गव मा मकल मृष्टि कहन कविनी है ।
 हिमगिर अमर गीत मुकट विगजन है
 भाग्य मा भात पर विनी नम हिंदी है ॥

सवया

मानुपना जन के मन हा जनता मत्र भानि सुगील लवाव ।
 गीति मदा उर धाम कर सब क मन मात्र अपार निवाव ।
 द्वप न हा जग म रघुगाय न चितित हा नहि काइ दुख्याव ।
 हाय सुगग्य तव परि पूग तव दिन त्वन का यह आव ॥

धना गरी

मान मग्यादा भेड दूट जाता गमविन गुम्ब विन गूट जान भूगि कौन मग्ना ।
 मिथु क मथया दव दानव विकन हात गमु तान हात विप पान कौन करनी ।
 बूढ जान ब्रज के पुरदर प्रकाप मम काह जा न हान भूमि भार कौन हरनी ।
 रघुराय मृष्टि के समूह मत्र नष्ट हान गप जो न हान तो धग को कौन घरनी ॥

मवया

सुय बान गुगीत मुद्गा वनी मजनी मत्र माज सजे मग्नी ।
 हिय हाग हजाग्न हीग्न क इथ फूनन हम छटा बरसी ।
 रघुगाय नलाट सस विदिया दमक दुति शमिनि भी दरसी ।
 गनि रभहु रूप नजान वधू विकसी परिपूग बना धग्नी ।

तुम मानव हो मानव नात मानवना का निमाण करा ।
 माने का समय व्यतीत हुआ मैं आज जगान आया है ।
 मा के लाला की किस्मत की यहाँ व्यथा सुनाने आया है ॥
 सीधे सच्चा का काम कहाँ जहाँ दगा फरेवी छाई हो ।
 लूटा खासी गुडे वाजी सब के मन मोहि समाई हो ॥
 मानव मानव का उक्त चूसना पाप शोन का वाद करो ।
 तुम मानव हो मानव नाते मानवना का निमाण करो ॥

जो कभी स्वर्ग थी भारत भू वह आज नव त्रियलाती है ।
 सोने चादी के टुकड़ो पर यहाँ इज्जत बेची जाती है ॥
 ऊँची मीनार एक आर नहि भापडियाँ रहन का है ।
 अम्बर शम्बर सम एक ओर नहि वस्त्र गीत महने का है ॥
 मानव क निमल जीवन पर मत दानवता क वार करा ।
 तुम मानव हो मानव नात मानवता का निमाण करो ॥
 माया के वशीभूत हाथर क्या दीन जना का म्ना रहे ।
 दया धम की आड लगा क्या स्वर्ण-मर्त्य का जला रहे ॥
 स्वामी के नात सबक पर तुम नाना जुन्म डहाभा ना ।
 अपना अस्तित्व जमान का मनमाना कम कराभा ना ॥
 रक्षक के नात भक्षक बन जन जन स मत म्विलवाड करा ।
 तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निमाण करा ॥

१७१—हरिश्चन्द्र 'हरीश' —ररण पीती क उदीयमान कवि हरीश का जन्म नगला कल्याणपुर के प० ईशवरीप्रसाद के यहा कार्तिक वृष्णा १ सम्बत् १९८६ म हुआ । प्राथमिक शिक्षा (हिन्दी उर्दू, मगीत) स्वर्गीय पंडित वीर नारायण के देख रेख म घर ही पर हुई । पंडित जी ग्रामीण जिकडी भजन आदि बनाया करते थे अत सन् ४५ से आपको भी जिकडी भजन बनान का चमका लग गया । कॉलेज जीवन म आपकी काय प्रतिभा का सस्कार और निखर उठा । अनका कवि सम्मेलना म भाग लेकर आपकी रयानि का एक विशेष सम्मान की प्राप्ति हुई । आपन एम० ए० तथा साहित्य रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण करके शिक्षा विभाग मे नौकरी कर ली थी किन्तु खेद की बात है कि आप भगवती सरस्वती की सरग रचनाआ क सुरभित सुमना से समुचित अचना करन से पहले ही ससार स प्रयाण कर गए । स्थानीय कवि समाज का आपका अभाव सदव ही खटकता रहेगा ।

आपन सब प्रथम अज भाषा मे रचना आरम्भ की कि तु युग के प्रवाः के साथ खी वाली म भी रचना करन लग । आप कवित्त और सबया भी बनाते थे जिनका बड़े सरस एव प्रभावात्पादक ढग स सुनात थ । आपकी रचनाआ मे कना पक्ष और भाव पक्ष दोना का निर्वाह बडे ही आकपक ढग से हुआ है । जीवन क पिछन प्रहर म आप महाकवि निराला क परम भक्त हा गय ये और उही की रचना गली अपनाली थी । आपकी रचनाआ म दाशनिक गाम्भीय के साथ २ सरलता भी प्रचुर मात्रा म विद्यमान है और प्रसाद गुण का सबत्र प्राधाय परनभित हाता है । इनके प्रम पीडा की कमक थानाओ को भी कसका देती थी -

प्राण । तुम आओ
 आगया नीम म बीर प्राण । तुम आओ ।
 टहनी टहनी के अघरा पर,
 है मुमकाहट छाड ।
 सोये माये पान पान न
 ली उठकर अगटाई ।

हरे भर यौवन का हूँकर, महक लठी पुरवाई ।
 भूम भीरा के भीर प्राण । तुम आओ ।
 अवा-जमुनी न पहनी,
 चिक्की अममानी सागी ।
 और कठ म उनके
 कावित न भग्नी किलकारी ।

ला पलाश जल गया, न बुझ पायेगी यह चिनगारी ।
 वरसें रम-मधु क दौर प्राण । तुम आओ ।
 आज नहा कर नभ गगा मे,
 निखर गई ताराण ।
 मद मन् मुमकान
 नीत अचल म बिखरी जाण ।

जिह लूटन चला पवन पर पाव नही पड पाए ।
 सूनी है मन की ठीर प्राण । तुम आओ ।
 उघर छाकर की खुगबू म,
 अग जग हुआ जाता ।
 पर जान क्या उमस
 मग मनवा ऊरा जाता ।

बडे भाग से अरी वावरी आज महरत आया ।
 हा जाय न या ही भार प्राण । तुम आओ ।

वरमात
 वादल हुए कि और ही गगत वदन गई ।

उटठा था गार मार का
 वग्ली को चूमन ।
 पुर वाई आई नीम की-
 बोहा मे भूमन ।

राहा मेता के दाह को
 महाने लगा काह ।

बादल धिर कि और ही रगत बन्द गई ।
 दा बूद क्या पडा,
 म अमृत म नहा गया ।
 गन् गन् खडा रहा
 न इधर ही उधर गया ।

किरणो म रहा बन गया,
 घटा का घू घट उठा ।

वहान का मर साथ व मायत मचल गई ।
 बादल हुए कि और ही रगत बन्द गई ।
 दादुर उछल पडे-
 कि हम गान भी ता दा ।
 भीगुर मचल पडे-
 कि हम जान भी ता दो ।

अबुर भी क्या फूट
 मिटटी के अरमा निबन पडे ।

दो ही दिना म मृष्टि की सूरत बदल गई ।
 बादल हुए कि और ही रगत बन्द गई ।
 तफ तफ ने पात पात न
 पाया नया जीवन ।
 निखरे धरा के गान धुल
 छाया नया जीवन ।

जागा किमान श्रमका-
 नव उलाम जग उठा ।

हर खेत की हर ब्यार की किम्मत बन्द गई ।
 बादल हुए कि और ही रगत बन्द गई ।

प्रकाश क नता

जब हम कर चन्दा सायगा
 जब हस कर सूरज जागगा ।
 धामिर वह तिन कब आयगा
 वाला प्रकाश क नताओ ।

जब मधुर जीत क गीत-
 तियाय गायगी तिल खोलकर ।

कलिया के घू घट उठा
डालिया दवेंगी हिल डोलकर,
उड भूम भूम कर भवर,
वजायेंगे वीणा नव रस भरी।

सुन कोयलिया की तान-
हिय का कन-कन भर भर आयेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोना मधु ऋतु की लतिकाया।

बादल वरमा कर प्यार
बुभायेंगे जब धरती की तपन।
बोलेंगे पपिया मार-
नयन हरयावल मे हागे मगन।

ऐटम के शीतल प्राण
खिलायेंगे गुशबू का गाद मे,

सी शरदा तक विस्तार-
माद के जीवन का हो जायेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो सावन की सरिताया।
हिम कर न बढा पायेगा,
सरमा की मागी की ओर जब।
दिन कर न कटा जायेगा
तिनका के रतना का चार जब।

फमलें अम्बर की ओर,
न फलायेंगी अपने हाथ जब।

तूफाना के आगे—,
फूला का माथ नहीं भुक् पायेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो जन भाग्य विधाताया ?

रवाइयाँ

भृङ्ग का गुजन कली पर जा अढा है।
शलभ का क्रन्दन गिखा पर जा चढा है।
बौन अपने प्राण को छाडे अवेला।
यह गगन इस भूमि को घेरे खटा है।

क्या बड़ी बत्ती का जा छू स्वग पा ।
 आगियाँ पर रिजनियाँ देनी गिरा ।
 है बड़ी वह दून, जा मिट्टी प रह ।
 ऊबे, उजडे मनना कर दी हर ।

क्या दखता है कायन है कानों,
 तू उमक मुर की उहार का दम ।
 क्या देखता है, मागर है मारी
 तू उमक मानी की धार का दम ।

क्या दखता है है जग यानी
 है दह खाली है भाग पाली ।

हा आख तो त इस आदमी क आदमियत न दुलार को दम ।
 दुख विपमता का भग, मुख म पग दुनियाँ ।
 कम म अपने लगे-उमाह से दुनियाँ ।
 भर चुकी लय खूब, वीणा बादिनी त अथ-
 एक मुर ऐसा उठा जिससे जगे दुनियाँ ।

१७२-दीनदयाल गोयल 'मुधाकर -आपका जन्म भरतपुर म एक माध्यमिक स्थिति के परिवार मे पहली जनवरी सन् १९३३ का हुआ । आपके पिता का नाम किशनलाल गोयल है । तेरहवी कक्षा पास कर आप अध्यापक हो गये और उसी अध्यापन काय म आपन एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की । आप इस समय 'राजकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भरतपुर' म अध्यापक के पद पर काय कर रहे हैं । आपको बचपन से ही अताक्षरी एवम् 'यगात्मक' काव्य से अधिक रचि है । आपकी भाषा सरल सरस और मधुर है । उदाहरण देखिए —

समस्या- निर्माण करो

ह इस युग क भगवान हमारा भी ता कुछ उपकार करो ।
 दा दिला नोकरे लडके का, कुछ थोडा सा एहसान करो ॥
 हम बहुत दूर स ग्राम हैं तुम से सब कुछ आना लकर ।
 तुम बहुत गरीबनिवाज प्रभो, लिया अलबारा क ऊपर ॥
 केवल इतना ही नहा प्रभा दा चार चिट्टियाँ लाये है ।
 तुम निकट हमार सबधी, हम पता लगा यह लाय है ॥

मरी चाची की भुआ की लडकी की जा दौरानी है ।
 उसक भी कुटुम्ब की लडकी तुम्हरे कुटुम्ब म व्याही है ॥
 नात म जीजा लगते हा, कुछ साल का ता ख्याल करो ।
 गर कोई खाली जगह नही, दा चार नई निर्माण करो ॥

सका—एक दिन मादूट म यह बात आई
 क्या नारी न टा चाटी हैं लटकाइ ?
 समाधान—हिन्दुआ का देग भागत वप है ।
 मिरप चाटी रगना ही हमारा वम है ॥
 चाटी हमारी जान थी ईमान थी ।
 विद्व योछावर कर यह हिन्दुआ की आन थी ॥

लकिन—अगरजी पमन का हम पर या भूत सवाग हुआ ।
 चोटी मिलवाइ वालो म सब आन वान का काम हुआ ॥
 लकिन भारत की नारी यह कब सह सकती थी ।
 चाटी का अपमान भला कप कर सकती थी ॥
 इसी लिय उमन प्रतिभा रपन का नर की ।
 अपनी सनति म यह रीति चलाई ।
 और नागि न दा चाटी ह या लटकाई ॥
 एक नर की एक अपनी ?

अमर प्रीति
 प्रीति अमर बन गई गमा की और गलभ की

चला उसासैं सदाग देने प्रियतम का ।
 चली बदलिया निगि की याकुलता कहन को ॥
 किसी वियागिन की आम्बो से अश्रु टपकत ।
 आगा प्लावित नश्र वरमन का थ कहत ॥
 वरसी बदला रोक न पाया व्यथा हृदय की ।
 धार एक बन गई अश्रु की और और अश्रु का ॥
 व्यथा अमर बन गई अश्रु की और हृत्प की ।
 प्रीति अमर बन गई अश्रु की और हृत्प की ॥

अरे दूर हा गलभ निवट नहिं आना मेर ।
 मिल कर मुभम प्राण जलाना अपन मेरे ॥

तुम चकोर की तरह देखते रहो चाँद को ।
 रजनी की ही तरह निभाते रहा प्रीति का ॥
 पर परवाना धाया चाह लिय मिलने की ।
 मिलन राख बन गई प्रेम की और प्रीति की ॥
 राख अमर बन गई शमा की और गलभ की
 प्रीति अमर बन गई, शमा की और गलभ की ॥

१७३-गौरीशंकर 'मयक' - 'मयक' नाम से संबोधित श्री गौरीशंकर का जन्म भरतपुर के एक निधन ब्राह्मण परिवार में १४ जून, १९३४ ई० का हुआ । महान् आर्थिक सकट से अधिराम सघप करते हुये आपने भरतपुर के महाराणी श्रीजया कालेज से बी० कौम परीक्षा उत्तीर्ण की । आपका बाल्यावस्था से ही काव्य सृजन की रुचि है । आपकी भाषा व शली सुगम सरस प्रवाहमयी एवं हृदयाकषक है । आप करुण एवं हास्य रस के जान माने कवि हैं । उदाहरण देखिए -

हिंदी

हिरी-भाषा हिंद राष्ट्र की,
 नई नवेला दुलहन है
 करो सुमंगल आरती ॥
 अंगरेजी उठू सौत है ।
 कहती इसका रंग काला है ॥
 भारत के घर का काम ।
 कभी नहीं इससे चलने वाला है ॥
 गूँगी सी अछावत भावा का ।
 मुखर नहीं कर सकती है ॥
 लगडी सी, राकिट युग गति के ।
 भी साथ नहीं चल सकती है ॥
 कोई नहीं समझ सकता ।
 अंतर में भरी क्लिस्टना ॥
 फिर भी सौत हमें डसने को ।
 नागिन सी फुफकारती ॥

— गणतंत्र दिवस —

जनता का ग़ासन, जनता के लिये कि जनता द्वारा ।
 जब जाता जहा चलाया, जाता गणतंत्र पुकारा ॥

एवीम जनवर्गी जिमका, हमन गग गामन पाग ।
 भागन क कविया द्वाग युग युग जायगा गाया ॥
 आजागी की वती ए अगणित बलिदान हण जय ।
 हमन ध्वननता पाड हमका गगनन मिता नव ॥
 उम दिन स मभी उन हैं हम अपन नाग्य विधाता ।
 मुव ह्य त्रति अवनति क हम उर ही उत्तर पाता ॥

अज्ञान अज्ञिता म उठ राखिव मभा पहिनात ।
 व्यक्तिगत ध्यान म उच हम गच्छ हिता का मान ॥
 उपजाय अत्र अज्ञित हम आद्यागिक वस्तु बनाय ।
 अत्रवा का मान विज्ञी हा । क्या प्रति वष मगाय ॥
 व्यक्तिगत क्रिया अनुप्राणित जव गच्छ हिता म हागा ।
 बस हागी तभी स्व-चित नव आजागी का गी ॥
 एन क एन एन म वचक मत्र वान कर महाराी ।
 ता क्षण म हन न जाय, य विवट ममस्या माग ॥
 यति जाति धम गुट वती भाषाया भेन मुनाद ।
 अत्र विजयी विद्व निरगा, जन गन मन म तदगण ॥
 ता मय अहिमा मवा म त्रिनि गीत्र आयगी ।
 नहए का चिर अमिताया भा पूरी हा जायगा ॥

विक्रम का एक कपना
 अमराता चाह घन म रगिया का गता एगाना ।
 श्री रगिया चाह रहा ह निज माम्पवाए फताना ॥
 व्यापारी चाह रह ह एन दाना का तदवाना ।
 बिना युद्ध क कमे हा आवर ताए खजाना ॥
 ना जान कभी कियर म वार्ड गनट वन जाय ।
 श्रीर उम दिन ही यह टुनिया भन मारर म तर जाय ॥

१०१-शक्तिस्वरूप त्रिनेदी तम० ए०-आपका जम प० नथीतात
 त्रिनेदी क यहा म० १८८३ म हुआ । आप कवि श्रीर लखक गाना एक माय हैं ।
 आपक पिता नत्थीतान स्वय कवि ह अन आपका काल्य-बला क प्रति अभिभूति
 विगनन क रूप म प्राप्त हुई । या हिन्दी मात्थिय ममिति एवम् स्थानीय कानत्र
 द्वाग आयाजित कवि नम्ननता म आपका कान्य मृजन शक्ति अदिक पुष्पित
 एक पत्रवित्त टु । आपता गृत्गीय व्यक्तित्व एवम् इविना कर्त्त का टु

अत्यधिक प्रभावोत्पात्क है। आपन वार्डि अथ ता नो त्रिगा, हिन्तु फुत्कर रचनाए बहुत को ह। आपका गमन गतना गरी प्राची म है। नयी गली म प्रेमपरक रचनाए अधिक श्रुति-मधुर है। लगन-गरी म दागनिर गाम्भीय का अभाव हात हुए भी आपका रचनाए मर्म हैं। आपका भू-गान पर लिखा हुआ निरध राजस्थान मरवार तारा पुरदान का चुरा २। का रचनाए उदाहरण रूप म प्रस्तुत २ —

प्रम गीत

मन प्यार मरा दुःखसा।

तुमने मन म प्यार बसा कर गर नया समार रमाता
मधुर प्रना जीवन धना का नना म अमृत छत्राया
जीवन म मुधा बहा कर अब विप का वरमाशा ॥ मन०
क्यू जीवन का उतभन मय य प्रना गड महु हाता
अधरा म भरा हुआ है तर आमव का प्याना
तुम बनकर साकावाला पीवाना मुक्त बनाया ॥ मन०
तर सपना म आवर अपन गाना का गाऊ
तुम थिरक थिरक कर नाचा म मन की ताल बजाऊ
म माज बना है तर तुम रागिनी बन जाया ॥ मन०
क्यू जग का गीत मुनाऊ ?

अपन अतर का ज्वाना का अवमादा का मधुहाता का
जग स लन श्रुगिया माल वाल क्यू उमकी भट चटाऊ ॥ क्यू ०
अवमा मरे अपन ता है है अपनी राहा का गहरा
फिर दा क्षण का बन मत्त अर क्यू जग का भापा म डठलाऊ ॥ क्यू
पय दगाता मरे य पत्त ह य कायत वाती है
इन का बामनी का मधु न म जावन अय चडाऊ ॥ क्यू ०
क्यू बकन है जग क पीछ, तरा जीवन है अनमोल,
य साम दा चार घटी ह जिन पर तू भरमाया
माया क निष्ठुर भाव न मन का पीष बुझाया,
आहृति कर प्रम रूप का अतर क पट पाल ॥ क्यू ०
गत अधरा न जावन म अधकार फलाया
ज्योति अत यान हा गड भाइ मन का हाया
विषम सावना हुद न पूरा, रही हितार डान ॥ क्यू ०

जन परिवार म २१ अप्रन मन् १८७० की दृष्टि। आपक पिता श्री प्याग्नात गुप्ता
स्वामीय मगन जत्र क यहा पगजार हैं। मन्त्रिक पगे ता के तनतर आपन विगा
रद और गाम्त्री पगेनाए उतीग की ह। समेग जन प्रतिभा सम्पन्न कवियित्री
हैं। इनके कविता पाठ का तग बहन मन्त्र है। आपका रचनाआ पर कई
गार पुरस्कार भी मिल हैं। उदाहरण दमिया —

मन्त्रार रग मन्त्राग करा

जत्र अनात्रुगि हा जाती हा, ग्रामा किमान ग्या जाती हा।

मुना नगी रा जाता रा गन गन मा जाती रा।

तत्र पीतिन नाति मानव रा—

मन्त्राग हरा मन्त्रार करा ॥ मन्त्रार०

जत्र धू धू करती आपरी जत्र तग तना निद्रा गहरी।

प्रम जगता ह किमान प्रगी मन्त्र मुन मुन ग्रामा गिहरी।

तत्र मन्त्र त्रुन पमान रा—

कृत् ना म म प्राभाग करा ॥

मित्र, निग तिन जा कि चनाता रा जा तत्र मन्त्राय गतना हा।

मर पत्र तत्र त्रिवा त्रिनाता रा मित्र मात्रिक मन्त्र मन्त्रा हा।

गिगु-गार गत्र टुहग का त्रुन

मन्त्राग रा जय जत्र राग करा।

जग का भाता गिगु ना प्राणा भाता मा मन भाती वागी।

तान म प्राण प्रतिष्ठा की यत्र तान रूप या नाताती।

जत्र बह भूसा जा ताना तत्र

उमका कुठ ना उन्नाग करा ॥

यह धरती मन्त्रा भग्ता है, यत्र मन्त्र उन्ना पर मन्त्रा है।

यह मन्त्रा मन्त्र कुठ करती है फिर क्या मन्त्रति दुग्य भग्ती है ?

राहा पर पत्र त्रिदुग्या रा—

कुद्र त्रुपरा वा ध्यागाग करा ॥

अपनी ग्रहें ग्या जात हा अपन गाम्गित का पीत हा।

रा दूक हत्य का मीत हा भग्ता-भग्ता भा पीत रा।

उम अथित अमित गाम्गित जन क—

अम-वगा म निज अन्तिमारा करा।

अम का पत्र अमिक नगी पान, कुद्र नाग उहें ग्याये गने,

फिर भा गवार ही बहनात मान्यता प्राप्त कर सकुचात।

ये है त्थोचि ते अम्यि गप
इनका प्राणा स प्यार रगे ॥

१७६-मोतीलाल अरीडा -आपका ज म भरतपुर क एक प्रतिष्ठित खत्री परिवार मे स० १९७२ वि० को हुआ । आप यहाँ क प्रसिद्ध व्यापारी नाना रामस्वरूप बजाज क आत्मज हे । आप आगरा काज क एफ० एम मा० क ता तक विद्यार्थी रहे है । इनका बचपन मे ही हिं ती और टिं ती माण्डिय समिति मे विशेष प्रेम ह । समिति के नवीन भवन निर्माण मे आपन अनिवचनाय सह्याग दिया है । आप गन तीन ग्रप से समिति क उपप्रधान पद पर काज कर रह है । विनोती एवम् सरम स्वभाव क हान क कारण आपकी कविताए हास्य रम प्रधान हाती है । आप 'पत्नीवाद क अनुयाया ह और अपना मधुर रचनाया द्वारा उमका प्रचार भी करत रहत ह 'मंगलान' उपनाम मे इ होन पत्नी स्तात्र नामक पुस्तक लिखा ह । आपका सरम रचना क उदाहरण प्रस्तुत है -

गृह बाग मारी मिट जाय धन वाय भरा फिर घर हागा ।
मनका मुख गानि मिल जाय तो गम हागा न फिर हागा ॥
खुट कामा मे जी लग जाय फिर कभी न र्दे मर हीगा ।
जय देवीजी ही खुग हागो तब किम साने का डर हागा ॥

इस नगर पिता का कहना है भ्रष्टाचारी वह नर होगा ।
जा पत्ना भक्ती मे विमुख है राष्ट्र का क्या दिन कर हागा ॥
गाना प्रेमा भा कहत ह यह गीता का उपदग सुना ।
जा पत्नी की मवा करना ह उस क्या न भक्त निष्काम गिना ॥

पत्नी भक्ती का त्थी निय घर र प्रचार करना हीगा ।
पत्नीव्रत का अवतम्बन कर अपना सुधार करना हागा ॥
समाज मे पदा हुआ तप उमका विकार हरना हीगा ।
जा उन्नत राष्ट्र बनाना है निर्माण चरित्र करना हीगा ॥

पत्नी भक्ति क साधन मे क्या चीज नही नर पा सकता ।
कितना यत्न मुनभ उपाय मिना जा घर का स्वय बना सकता ॥
जा एसा सुगम तरीका भी ना प्रमल मे अपने ला सकता ।
वह मूत्र नही तो फिर क्या गृह लक्ष्मी जा न मना सकता ॥

१७७—वृजेद्रिहारी—आपका जन्म १३ अगस्त मन् १९३६ का भरतपुर निवासी प० घनश्यामलाल के यहाँ हुआ। आपन स्थानीय कॉलेज से बी० ए० पगिया उत्तीर्ण की है। हिन्दी साहित्य समिति के कवि सम्मेलना में भाग लेने के परिणाम स्वरूप आप मुद्गर रचनाएँ लिखने लगे हैं। आप प्रगतिशील कवि और सफल गीतकार हैं। आपकी रचनाएँ मरम और प्रभावान्पादक होती हैं।
उत्तराखण्ड दक्षिण —

चीन के नाम

(१)

हर द्वार पर हाथीमार मचाता क्या
मान भी मिट्टी में जहर मिलाता क्या
अगणत आचन में धून मजाना क्या

(०)

मग तग मानवता का नाता है
क्या आगो रगनर उमका भडकाता है
अर जि रगी का क्या मान घड़ाना है

(०)

अगर टमी स्वर में तुम गाये जायाग
हर घर का गमगान बनाये जायोग
फूनों पर अगार बिठाये जायागे

(४)

गीतो के हगवान बनेगे गालिया
जा ल्टी माजन घर जानी गालिया
पुछती गइ अगार माये का गालिया

(५)

तो धरनी का हर बटा नर जायगा
ऊचा अम्बर धरती में गढ़ जायगा
हर गारा मोती एटम बन, जायगा

(६)

स्मीलिय मन छेरो हगनी फुनसाडी
माजन के घर का जानी घ्याटून नाडी
मन सीची तुम रेगार्ये निरली प्राणी

(७)

ग्राज कहीं हिन्दी चाना भाई भाई
पचगीत व नताप्रा व हमगरी
मानवता व हमी या चाय एन नार्द

(८)

मन भावो वगिया प्रागन प्रना प्राग
धरती पर तुमम प्रागन वगा प्राग
निवत भाग्न वा गमगान प्रना प्राग

(९)

निव्वन पर हर वार की आनाज है
मेरी मा व प्यार की आनाज ह
मुभतो नहम् स बट पर नाज है

(१०)

हर पठार वदमीग कगर वयारा है
नफा की हर वस्ती दिली प्यारी है
हम भाई भाई माँ एव हमारी ह

(११)

ज्वार वाजर का दुलहिन मी वनिया को
घू घट स मुमवानी कामल कलिया का
सत्य अहिमा से मुपरित इन गलिया का

(१२)

भारत लाहु लुहान नही हाने दगा
मरघट का सामान नही हान दगा
परत्नी ईमान नही हाने दगा

(१३)

वचन चघा ज्वाला मुखी बनाप्रा ना
निस्ता की लहरो म जग उठाप्रा ना
दुनिया म बाग्नी जाल रिद्धाप्रा ना

(१४)

अभी तेग म फगी दरारें बाकी हैं
अधियार की वद किवारें बाकी है
परन्ती पनभार वहार बाका ह

(१५)

मन छेड़ो चुपचाप हिमालय रहने दो
बन्ता हुआ कागधा पथ पर वहन दो
तुम्हें बुद्ध का बेटा घर घर कन्न दा

(१६)

गगर ठा नूफान नाना मुक्किल है
हर तिन व अगार बुभाना मुक्किल है
धरती का शृगार वचाना मुक्किल है

(१७)

मन माना तुम मग द्वार जग गग
चीनी मिट्टी पर त्योहार मना लाग
अपनी मा व धावा का महारा लाग

(१८)

मरी तरी मा का घडकन एक है
घुटनी सामा का उत्पाडन एक है
माया की चारर श्री चिलमन एक है

(१९)

मुन गा नही साम की कीमन घट जाण
दुनिया की विस्मन यीमा म वर जाण
गान्ती बाहा म मौन मिमट जाण

(२०)

मुझ म्यात है कुद मिट्टी मागा का
मर तर बीच पुरान धागा का
दो बुद्धा म धधरी त्रिपमय आगा का

(२१)

मौनिय तर घर भेज रहा पाणी
लुट न जाण जिमम मानवता की धानी
जत न जाण धरती की दूध भरी धानी

कवि नामावलि (अकारादिक्रम)

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अश्वमेध		२६ गौराशकर मयक	२४८
अजीतमिह (गवगाजा)		१०५ गगाय	१६
अमृतवीर (महागानी)		६८ गगाप्रमान	१९८
अनुभूपग		२०१ गगावम्प	१०१
उत्थराग		८९ धनप्याम	१६५
उत्थराय		१५१ चतुगराय	६५
कन्हैनातान		१५८ चतुमु ज मित्र	११०
कमना जन		२१० चतुमु जगाम चतुर्वेणी	१८९
कागीगाम		१०० चम्पानात 'मनुज	२०२
किपागीनात		१७९ इन्द्रमत	११९
कुम्भनलान कुतपापर		१८२ इन्द्रनलान	२३६
कगव		२८ छाननात भट्ट	१८५
रुगागाम		११० जयन्व	७०
कृष्णनात		१७ जयशकर चतु रा	२०१
ब्रह्मनात		१५० जमगाम	५८
गगाय		५८ जावाराम	१०१
गिर्गाजप्रमान 'मित्र		१०१ जुगलकिपाग	१६३
गिरिगजकु वर (माजी)		१५८ जुनकरन	२१
गुलान मिश्र		११५ टटवन	६६
गुनाजगिह (धाऊ)		११६ ठाकुरनात	१२६
गुलाम माहम्मद		४८ तुनमागाम चतुर्वेणी	२०२
गाकुनचल नाशित		१०६ रत्त	८
गाशागाम		८ त्रिगम्बर	११५
गापाललान माहन्वगी		२१६ तीनप्यात	२६९
गापानमि जमानार		८० रव (महानवि)	८०
गापानप्रमान मुदान		२५ रशीगाम	१०२
गापानागण		२२८ रवागाम	११०

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
दवदवर	५०	वीरभद्र	२७
दवीप्रकाश अक्मशी	१६५	वशीरर	४७
धनेश	६०	व्रजचन्द्र	८१
धरानन्द (घासीराम)	७०	व्रजचन्द्र	८०
वौकल मिश्र	५४	व्रजेन्द्रविद्यार्थी	२५२
नत्थीलाल	१८०	व्रजेश	१६
नधुआसिंह	८३	भागमन	५५
नवलकिशोर	१८६	भूषण	३८
नवीन (गापालमिह)	८७	भालानाथ	४०
नरहरिदाम	८३	भालानाथ	८८
नानिगराम	२०१	मगिन्द्र	११८
नन्दकुमार	१८८	मन्मथनाथ गुप्त अग्र	२१०
पतिराम	३२	माधौराम	२१
पद्म	८०	मुकुन्द	१३
पद्माकार (महाकवि)	५१	मुन्नीधर	३६
प नीलाल	१७७	मुरलाधर	५३
प्यारलाल	१३६	मुरलाधर जमादार	१४७
प्यारलाल	१७८	मूलराय	५०
पीरू	१०८	माताराम	८०
प्रभूदयाल 'दयालु	१६६	मानीराम	६५
प्रसिद्ध	६०	मातीनाथ अराटा	२५०
बदुकनाथ	८६	माहननाथ	४८
बन्धुमिह (महाराज)	२०	मगलदत्त	१७०
बलदेव	८६	मगलमिह	१४४
बलदेवमिह (महाराज)	२८	यदुगजमिह (रावजी)	२०६
बलवन्तमिह (महाराज)	६७	युगलकिशोर	१११
बलदेवप्रसाद	१६८	रघुवरनाथ	१८३
बहादुरमिह रत्न	१५०	रमण	६१
बालकृष्ण	४८	रमणचन्द्र चतुर्वेदी	२३१
बालमुकुन्द	१३८	रमनाथ	६३
बिहारी	८५	रमणसि	८२
बिहारीनाथ	१८१	रमानन्द	८८

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
राजेग	७७	मावलप्रसाद चतुर्वेदी	१८१
राम	२८	मुसदवगगाविगोग मित्र	६०
राधाकृष्ण	२२०	मुत्तरनाथ	८२
राधागमन वद	१६८	मुत्तरनाथ	११८
रामकृष्ण	८१	मुधाकर	२८
रामचन्द्र विद्यार्थी	१८०	मून (मन्वावि)	२३
रामन्याय	१३८	मूरनगम	५८
रामद्विज	१२८	मूयनागयन गाम्त्री	१३१
रामगुन	१२८	मनागम	१०८
रामनारायण	१८	माभ	२
रामप्रिया माधुर	१८१	मामनाथ	१
रामवर्ण	१०८	गत्तिस्वल्प निरुपी	२८८
रामवर्ण	११७	ग्यामलाल	१८३
रामवावू वमा	२८०	गिवगम	२१
रामलाल	७७	गिवचरणनाथ	१०७
रामानन्द	१०७	गिवन्त गमा	२१६
रुपराम	१०२	गाभनाथ	८२
रुगलाल	२६	गाभागम	१०३
रुगलाल	३८	गगरनाथ	११८
रागय राधव (टाक्टर)	२१६	श्रीधर	८५
रालिनाप्रसाद	८८	श्रीनिवाम ब्रह्मचारी	२१३
रामीनारायण	१०७	हनुमान	११५
रामीनारायन बाजी	१५६	हरिप्रसाद	११
राल	२८	हरिविग	१०
राल	६४	हरिनागयन ठाकुर	१२०
रवप्र धु गाम्त्री	२२१	हरिकृष्ण कमल	१७६
रुनाथ	६६	हरिचन्द्र हरीग	२८२
रुनारायन कविगदन	१६०	हागलान	१६८
रुणान्त	२२७	हुनामी	५०
रुगम	१२८		

शुद्धि-पत्र

खेद है, प्रक की यथोचित व्यवस्था न होने के कारण प्रस्तुत पुस्तक में अनेक अशुद्धियाँ रह गई हैं। निम्नांकित भूलों अधिक भ्रमोत्पादक हैं, पाठक कृपया सुधारण —

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
०	०५	वर्णन	वर्णन
३	२६	प्रकृष्ट	उत्कृष्ट
५	१	कविदन	कविदन
१४	२६	'जयमनस्वमेध'	जमिनास्वमेध
१८	१५	मस	सम
	२८	ठिग	दिग
१९	३	सू आनद	सु आनद
	७	तत्तिरीत	तत्तरीम
२२	०३	वाभन	वामन
२३	१३	ये	धे
२८	५	कविताए	कविताए
३०	८	रचि	रचि
३१	१८	रूपया	रपया
३२	१५	बिब	शिव
	२५	कृतृत्व	कृतृत्व
३३	२०	नायका	नायिका
३४	७	रही	नही
	२१	परे	परें
३६	३०	कवि	कविमन
३८	२९	सूरजभल्लमुत	सूरमल्ल मुत
४७	१०	कछु	कछु
६०	३	फिर गिन	फिरगिन
७३	३	प्रधिक	अधिक
७४	८	एप्द	छन्द
७६	९	सूत्र तमन सगन तगन	सूत्र तगन सगन नगन
७६	२५	उहरण	उदाहरण

७६	३२	प	प
७७	६	भाइ	पान
७८	२६	दरि	मार्द
८३	१४	भूलो	दुरि
९७	१८	प्रभाकर	भूल्यो
११४	३०	तल्ल	प्रभा भर
११५	०	अतिश्य	तह
११५	७	अमराव	अतिग्य
११५	१०	वधे	अमरख
११६	२५	प	वध
११८	६	वन	प
१३८	११	नीत	वान
१३६	२८	तीछन	नील
१५०	६	ताधरी	तीछन
१६२	५	पृष्ट	ता घरी
१७५	२८	उदयो	पृष्ठ
१८६	१३	किसके	उदयो
१८६	१८	इद मिथ्या	किमने
१९६	७	जाउगो	इद मित्यम्
२०४	११	अ योक्तया	जाऊगो
२०४	२३	शोकम	अ-योक्तियो
२११	१७	चाय	शाक्य
२११	१८	चार	चार
२१५	२	निवाहो ही	(निकालिये)
२२४	२६	निष्प्राण	निवाही
२२४	३०	अलिगन	निष्प्राण
२२४	३१	शशन	अलिगन
२३४	१७	हालिया	शशव
२३४	३०	दत	हालिया
२३६	२६	स्वतन्त्र	दत
२४८	१५	हिरी	स्वतन्त्र
			हिदी

